UNIVERSAL LIBRARY

OU_180439

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No H83/R16K Accession No. H.291

Author राजकुमार

Title कंकाल

This book should be returned on or before the date last marked below.

1957

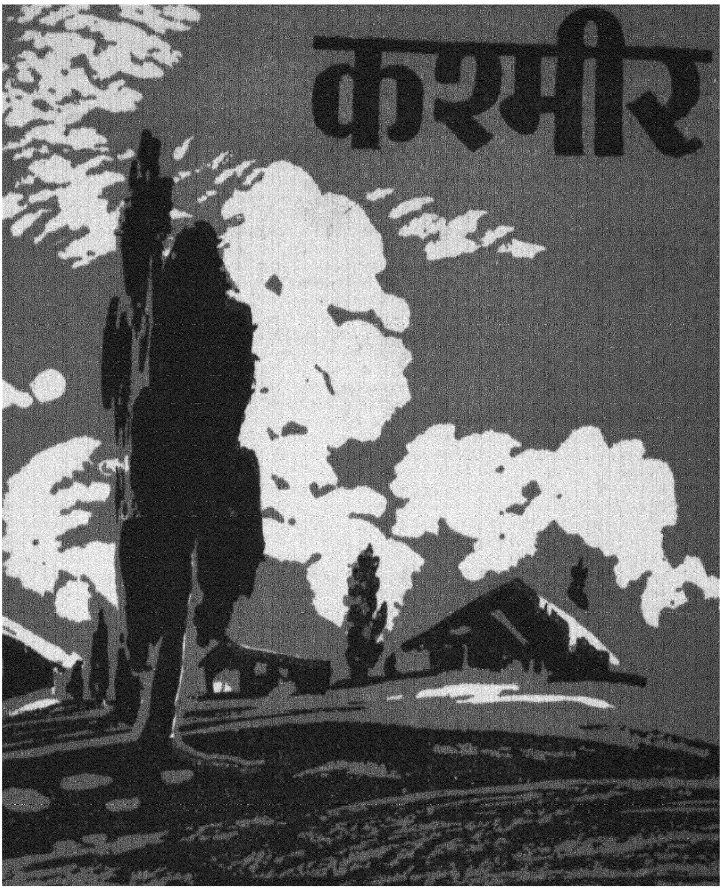
कश्मीर

क श्मी र

[illegible]

[illegible]

राजकुमार

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

वाराणसी ।

प्रकाशक : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पो० बक्स नं० ७०,
ज्ञानवापी, वाराणसी ।

मुद्रक : दुर्गा प्रेस, आदिविश्वेश्वर, वाराणसी ।

आवरण : कांजिलाल

संस्करण : प्रथम—११००; अक्तूबर, १९५७

मूल्य : चार रुपये मात्र

भूमिका

बारामूला फना हो गया और फना हो गयी वहाँ की जिन्दगी जो अपने चारों ओर खड़ी बर्फीली पहाड़ियों पर फिसलनेवाली बाल-सूर्य की रक्तिम किरणें देखकर लोगों की आँखें बचाने के लिए प्रियतम के पास से दबे पाँव भागनेवाली नवयौवना के शोख कदमों की मधुर कल्पना के सरोवर में की चंचल ऊर्मियों में उछलती कूदती रहती थी, जो दोपहर के सूर्य की स्वर्णिम किरणों के पारदर्शी पर्दे के पीछे से अलसगात यौवना की भाँति पहाड़ियों को अंगड़ाइयाँ लेते देखकर भार हल्का करनेवाली मीठी नींद का अनुभव करती थी, जो सन्ध्या की उदासी में पहाड़ियों को आकाश की ओर निहारते देखकर मिलन-बेला की मधुरिम कल्पनाओं से भर उठती थी और जो रात में चाँदी के तारों से बनी सीढ़ी के सहारे चाँद की पहाड़ियों के पास आते देखकर आहिस्ता-आहिस्ता अपने पलक-कपाट भी बन्द-बन्द कर लेती थी।

उक्त पंक्तियों में जिस घटना या दुर्घटना का संकेत किया गया है वही है प्रस्तुत उपन्यास का आधार। यह पृथ्वी के उस स्वर्ग की कहानी है जहाँ मूर्तिमान नरक उतर आया था। हिम से सदा ढके रहनेवाले तुंग गिरि शृङ्ग, चीड़ और देवदारु के घने जंगलों से हरी-भरी पर्वत मालाएँ, दिगन्त-व्यापी श्यामल वनराजि, मखमल के समान कोमल लम्बी घास की विस्तीर्ण चरागाहें, नृत्य करते हुए झरने, गाती हुई सरिताएँ, मीठे जल के सरोवर, साँप के सदृश बल खाते हुए नाले, गगनचुम्बी सफेदे के पेड़ों की पंक्तिबद्ध सुन्दर सड़कें, स्वादिष्ट फलों और मनोहर पुष्पों की रम्य वाटिकाएँ देखकर जहाँ आँखें अपने अस्तित्व की सार्थकता सिद्ध करती है उसी पृष्ठ भूमि में प्रस्तुत उपन्यास के लेखक श्री राजकुमार ने अपनी कल्पना के कस्तूरी मृग को स्वच्छन्द चौकड़ी भरने के लिए छोड़ दिया है। इस स्वच्छन्दता में भी एक सुंदर छंद है, इस प्रलय-कथा में एक लय है और सब मिलाकर यह है भारत में कश्मीर के विलय की कहानी।

यों तो राजनीतिक उपन्यास प्रायः कमी लिखे जाते हैं और उनमें भी समकालिक राजनीतिक घटनाओं पर लिखे गये उपन्यास और भी दुर्लभ हैं। ऐसी स्थिति में श्री राजकुमार ने प्रस्तुत उपन्यास की रचना कर एक बड़ा काम किया है। हमारी हिन्दी की यह विशेषता है कि उसके लेखक पिटी पिटाई सड़कों पर तो वह सरपट दौड़ लगाते हैं कि रेस के घोड़े भी मात खा जायँ परन्तु साधारणतया एक नयी पगडंडी तक स्वयं निर्मित करने का कष्ट गवारा नहीं करते। जो करते भी हैं वे कुछ-ऐसी किम्भूत किमाकार वस्तु सामने पटक देते हैं कि उसकी दुरूहता ही उसकी श्रेष्ठता का पर्याय बन बैठती। ऐसे लोग उपन्यास का शरीर तो क्षत-विक्षत करते ही हैं, उसकी आत्मा तक की हत्या कर डालते हैं। भाव- भाषा और घटनाओं की मनोरंजकता ही उपन्यास या यों कहिये कि कथा साहित्य का प्राण होता है परंतु हिन्दी के नामी-गिरामी लेखक प्रगति और प्रयोग के नाम पर कभी-कभी ऐसे उपन्यास प्रस्तुत कर बैठते हैं कि पढ़कर तबीयत झक्क हो जाती है। उदाहरण के लिए श्री अज्ञेय के 'शेखर एक जीवनी' का उल्लेख किया जा सकता है जिसे पढ़ने में उपन्यास का नहीं बल्कि योगवाशिष्ठ का मजा आता है। ये उपन्यास कितने लोकप्रिय होते हैं इसका प्रमाण यही है कि ये पाठ्य-क्रम में न रखे जायँ तो केवल दीमकों के आहार बनें। हमें हर्ष है कि श्री राजकुमार का यह उपन्यास वस्तुतः उपन्यास है। इसका कथा भाग मनोरंजक है और इस प्रकार इसमें उपन्यास की आत्मा सुरक्षित है।

श्री राजकुमार अब तक कहानियाँ और नाटक लिखते रहे हैं। यह उनका पहला उपन्यास है परंतु अपनी प्रथम कृति में ही उन्होंने जो कृतित्व दिखाया है उससे आशा बँधती है कि भविष्य में उनकी लेखनी और भी अच्छे-अच्छे उपन्यास प्रस्तुत कर हिन्दी के कथा साहित्य को अभिनन्दनीय करेगी। ऐसा ही हो।

'रुद्र' काशिकेय, एम्० ए०, बी० टी०

कबायलियों के शोर-गुल से बारामूला की पहाड़ियाँ काँप उठीं और काँपती दिखाई दी क्रोध से वे लपटें जो उनकी मुट्ठियों में जकड़ी मशालों से निकल रही थीं। देखते-देखते सारा बारामूला धाँय-धाँय कर जलने लगा। ऊँची-ऊँची लपटें हवा का झोंका खाकर लोटती तो लगता कि सैकड़ों राक्षस अपनी-अपनी जिह्वा निकाल कर, बारामूला के चीखने और चिल्लाने वाले निवासियों को अपने अपने खूँखार जबड़े के नीचे खींच लेना चाहते थे। पहाड़ियों से टकरा कर लौटने वाली, खूनी और वहशी कबायलियों की गुर्राहट की प्रतिध्वनि पत्थरों का भी कलेजा चाक

करती दिखाई देती और जब आँखें ऊपर उठतीं तो घोर अन्धकार का कलेजा चीरने वाली लपलपाती लपटों के प्रकाश में बारामूला की निश्चल पहाड़ियाँ थर-थर काँपती नजर आतीं। इस कम्पन की रफ्तार तब सौ-गुनी अधिक बढ़ जाती जब आतंक-ग्रस्त किसी नागरिक के आश्रय-आकांक्षी शरीर को निश्चल लाश के रूप में बदलने वाली बंदूक से निकलीं गोली के साथ 'धाँय-धाँय' की आवाज भी कर्ण-कुहरों से जा टकराती। दूर से देखने पर मशालों की रोशनी में लूट-पाट और रक्तपात में भिड़े कबायली प्रेतच्छाया के अनेक भयावह रूपों की भांति दिखाई पड़ते।

पाकिस्तान के फौजियों के नेतृत्त्व में बारामूला पर आक्रमण करने वाले कबायलियों ने मासूम बच्चों का रक्त चूसा और अशक्त वृद्धों का कलेजा छलनी बना डाला; माताओं का सिन्दूर पोंछा और बहनों की लाज लूटी ; इंसानियत को नीलाम किया और हैवानियत के कदम चूमें।

बारामूला फना हो गया और फना हो गयी वहाँ की जिंदगी जो अपने चारों ओर खड़ी बर्फीली पहाड़ियों पर फिसलने वाली, बालसूर्य की रक्तिम किरणें देखकर, लोगों की आँखें बचाने के लिए प्रियतम के पास से दबे पाँव भागने वाली नवयौवन के शोख कदमों की मधुर कल्पना के सरोवर की चञ्चल ऊर्मियों में उछलती-कूदती रहती थी, जो दोपहर के सूर्य की स्वर्णिम किरणों के पारदर्शी पर्दे के पीछे से अलसगात यौवना की भांति पहाड़ियों को अँगड़ाइयाँ लेते देखकर भार हल्का करने वाली मीठी नींद का अनुभव करती थी, जो सन्ध्या की उदासी में पहाड़ियों को आकाश की ओर निहारते देखकर मिलन बेला की मधुरिम कल्पनाओं से भर उठती थी और जो रात में चाँदी

के तारोंसे बनी सीढ़ी के सहारे चाँद को पहाड़ियों के पास आते देखकर आहिस्ता-आहिस्ता अपने पलक-कपाट भी बन्द कर लेती थी।

यह सब राकेश ने अपनी आँखों से देखा था। सम्भव था कि आगे की खूँरेजी का गवाह भी उसे बनना पड़ता लेकिन ऐसा हुआ नहीं। बारामूला पर कबायलियों के आक्रमण की पहली रात को ही गोली उसकी जाँघ में लगी थी और वह बेहोश होकर गिर पड़ा था।

कई दिनों के बाद श्रीनगर के अस्पताल में होश में आने पर उसे पता चला था कि उसके शरीर पर बर्छियों के भी अनेक घाव हैं। आक्रामकों ने अपनी ओर से उसे मार ही डाला था। यह तो उसका भाग्य था जो वह बच गया।

नर्स से राकेश का पहला सवाल था—'सुचित कहाँ है?'

नर्स का जवाबी सवाल था—'सुचिता कौन?'

'क्या मेरे साथ यहाँ कोई नहीं आया!' राकेश की पुतलियाँ खिंच उठी थीं।

'नहीं।' नर्स का छोटा-सा उत्तर था।

तब राकेश का रोम-रोम रो उठा था। उसके भरे हुए कण्ठ से यह आवाज निकली थी—'मैं जा सकता हूँ?'

'नहीं।'—नर्स ने उत्तर दिया था इस प्रकार, मानो बोलने से उसे कोई रोक रहा हो।

'नहीं!'—एक क्षण बाद ही कातर स्वर में बोल उठा था राकेश—'मुझे जाना ही होगा। मैं रुक नहीं सकता।'

'लेकिन आप जायँगे कैसे!' नर्स के स्वर में सहानुभूति थी—'बड़ी मुश्किल से आपकी जिन्दगी बच सकी है। असमय में ही अस्पताल छोड़ने पर वह फिर खतरे में पड़ जायगी।'

'काश्, मुश्किल से बचने वाली यह जिन्दगी समाप्त हो गयी होती!'

'यह मायूसी क्यों ?'

'नर्स ?'

'जी।'

'तुम्हारे माता-पिता जीवित हैं ?'

'नहीं।'

'और कोई भाई ?'

नर्स मौन रह गयी थी। हृदय पर धक्का-सा लगा था। आँखें भर आयी थीं। मुश्किल से वह स्वयं को सँभाल सकी थी यह कहते हुए—'लेकिन आप यह प्रश्न पूछ क्यों रहे हैं ?'

राकेश ने मानो सुना ही नहीं था। वह अपनी ही धुन में था—'वह तुम्हें प्यार करता है ?'

नर्स अपने को सम्भाल न सकी थीं। आँखों से आँसू की दो बूँदें ढुलक कर कपोलों पर आ गिरी थीं। राकेश की नजर उसके मुँह पर पड़ी थी और वह चौंक उठा था—'तुम रो क्यों रही हो ?'

यह प्रश्न बारूद बन गया था हृदय के आवेग की लहरों को रोकने वाले बाँध के लिए। नर्सकी आँखों से आँसुओं की अजस्र धार फूट पड़ी थी। रुद्ध कण्ठ से बोली थी वह—'भाई था। मुझे प्यार भी बहुत करता था। बरामूला में कबायलियों ने उसे मार डाला।'

राकेश पर पहाड़ गिर पड़ा था। कण्ठ तक आये स्वर जबान तक न बढ़ सके थे। आँखों के सामने आ टिका था, सहमी हुई सुचिता का कल्पना-चित्र जिसकी ओर बर्बर कबायली भूखे भेड़िये की भांति बढ़े रहे थे। चीख उसके मुँह से निकलने ही वाली थी कि नर्स बोल उठी थी—'आप चुप क्यों हो गये ?'

राकेश की तन्द्रा टूट गयी थी। धीरे से गरदन घुमाकर उसने

अपनी आँखें नर्स के मुँहपर जमा दी थीं। फिर धीमे स्वर में बोला था—'सुचिता, मेरी बहन का नाम है।'

नर्स ने आँखें झुका लीं थी और बोली थी—'कहाँ है वह?'

राकेश ने कहा था—'जब कबायलियों ने बारामूला पर आक्रमण किया था, वह मेरे साथ थी। वहाँ मुझे गोली लगी और मैं बेहोश हो गया। यहाँ आँखें खुलीं तो.....।'

'टन' की आवाज ने शाम को साढ़े पाँच बजने की सूचना दी थी। नर्स अपने स्थान पर उठ कर खड़ी हो गयी थी। सामने की खिड़की के बाहर नजर आने वाले चिनार के वृक्षों की कतार के पास उसे एकाकी पक्षी अपने नीड़ की ओर जाता दिखायी दिया था। वह उसे तब तक देखती रही जब तक वह उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गया था। फिर बोली थी—'समय हो गया। मैं जा रही हूँ।'

'नर्स?'

'हाँ।'

'मेरा समय कब होगा?'

'अभी घाव पर टाँके लगे हैं।'

उसने फिर राकेश को बोलने का मौका नहीं दिया था और चली गयी थी।

दूसरे दिन नर्स गुलरुख ने 'वार्ड' में प्रवेश किया तो राकेश नजर नहीं आया। उसने तत्काल सुपरिण्टेण्डेण्ट को खबर दी। जाँच-पड़ताल शुरू हुई। बहुत कोशिश करने पर भी किसी को इससे अधिक कुछ और ज्ञात न हो सका कि पिछली रात तक राकेश अपने कमरे में देखा गया था। अस्पताल से बाहर निकलते उसको किसी ने नहीं देखा था। कोई नहीं बता सका था कि वह कहाँ गया।

सारा दिन बीत गया। गुलरुख खोई-खोई-सी रही। सायंकाल

अवकाश मिलने पर जब वह घर पहुँची तो अँधेरा हो चला था। उसे अंधकार अच्छा लगा। उसने बिजली नहीं जलायी। अन्धकार में ही वह खिड़की के पास आकर खड़ी हो गयी। दूर नजर आने वाले चिनार के वृक्षों का समूह उसे मातम मनाता दिखाई दिया। कुछ दिनों पूर्व एक बार पहले भी उसे ऐसी मनहूस फिजाँ दिखाई दी थी। उस समय कबायली और पाकिस्तानी सिपाही श्रीनगर से सत्रह मील दूर तक पहुँच चुके थे। महोरा का बिजली घर उन्होंने नष्ट कर दिया था, जहाँ से श्रीनगर को बिजली मिलती थी। श्रीनगर का भाग्य अधर में लटक रहा था। महाराज यहाँ से हटकर जम्मू जा चुके थे। प्रजा को आक्रमणकारियों के प्रति अपने क्रोध का बल-मात्र प्राप्त था। उस समय गुलरुख को श्रीनगर भय और आशंका की काली चादर में लिपटा नजर आया था।

फिर वातावरण बदला। भारतीय सेना श्रीनगर में पहुँची। उसके विजय अभियान का समाचार आशादीप बनकर जगमगा उठा। श्रीनगर में नयी जिन्दगी करवट लेने लगी।

बीते हुए दिनों की स्मृति से गुल रुख का दिल कुछ हल्का अवश्य हुआ। खिड़की के पास से हटकर उसने बिजली जगायी और सोफे पर लेटकर यह सोचने लगी कि राकेश कहाँ गया होगा। इससे पूर्व, दिन में भी यह प्रश्न कई बार उसके मस्तिष्क में चक्कर काट चुका था लेकिन काम की भीड़ ने उसे कहीं टिकने नहीं दिया था। मौका पाकर उसने फिर पैर जमाने की कोशिश की। यह प्रश्न भी उससे टक्कर लेने को आ धमका—राकेश मेरे नजदीक क्यों पहुँच गया है?

जिस समय गुलरुख की मनःस्थिति ऐसी थी, राकेश बस्ती से दूर, सुनसान में पड़ा कराह रहा था। सर्दी से उसके दाँत कटकटा रहे थे। घावों की पीड़ा कलेजे में बर्छी-सी चुभ रही थी। वह बार-बार यह

सोचकर पश्चाताप् कर रहा था कि अस्पताल से भाग कर मैंने अच्छा नहीं किया ।

इस स्थिति में ही वह सुबह से तबतक कई बार मृत्यु से मिलने के लिए व्याकुल हो चुका था । लेकिन वह उसके पास नहीं आयी । ऐसे मौके पर वह कभी आती भी नहीं । जबरदस्ती जिन्दगी का भार ढोने वालों का अनुभव यही है । गनीमत थी कि बहोशी ने उसे अपनी गोद में ले लिया था, वरना न जाने होता क्या !

जब आँखें खुली तो सूरज आसमान पर चढ़ चुका था । रोंएँदार मोटे कम्बल की गर्मी ने उसे करवट लेने लायक बना दिया था । उसने करवट ली तो सामने एक खूबसूरत नौजवान बैठा नजर आया । वह एकटक उसकी ओर देखने लगा ।

सहानुभूति भरे स्वर में नौजवान ने पूछा—'कैसी तबीयत है ?'

राकेश ने उत्तर देने की कोशिश की लेकिन कण्ठ से आवाज नहीं निकलीं । विकल होकर उसने आँखें बन्द कर ली । तभी नयन कोर में दबी आँसू की बूँद पलक का दबाव पाकर चू पड़ी ।

नौजवान ने समझा, मेहमान को पोड़ा सता रही है। राहत देने के उद्देश्य से वह उसके लिए चाय लेने चला गया ।

कुछ देर में वह चाय लेकर लौटा । चाय का प्याला राकेश की ओर बढ़ाते हुए आत्मीयता का रस उड़ेल कर उसने कहा—'पी लो ।'

राकेश की आँखें फिर खुल गयीं । उसने उठने की कोशिश की तो नौजवान ने उसे सहारा दे दिया । राकेश ने धीरे-धीरे चाय पी ली और फिर खोया-खोया सा बोला—'तुम कौन हो ?'

नौजवान ने धीरे से कहा—'मोहम्मद अजीज ।'

राकेश ने पूछा—'मैं यहाँ कैसे आया ?'

मोहम्मद अजीज ने उत्तर दिया—'मारने वाले से बचाने वाला ज्यादा ताकतवर है न।'

उत्तर सुनकर राकेश ने अपनी आँखें अजीज के मुख पर जमा दीं और बोला—'क्या यह सच है?'

'तुम्हें शक क्यों हो रहा है?'

'शक नहीं कर रहा हूँ', कमरे को गर्म रखने वाली अंगीठे के बुझते हुए अंगारों की ओर देखते हुए राकेश ने कहा—'उस पर विजय प्राप्त करने की कोशिश कर रहा हूँ।'

अजीज समझ न सका कि राकेश कह क्या रहा है। सम्भव था कि उसका अभिप्राय समझने की चेष्टा वह करता लेकिन उसी समय अकस्मात् उसका दूर का रिश्तेदार इश्तियाक उसके पास आ धमका और सलाम-दुआ से पूर्व ही आवेश में बोला—'मुसलमान होकर भी मुसलमानों के साथ गद्दारी करने में तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम हिन्दू राजा के इस फैसले की हिमायत कर रहे हो कि कश्मीर, भारत को सुपुर्द कर दिया जाय!'

'इश्तियाक', अजीज ने शान्ति से उत्तर दिया—'बहस से कोई फायदा नहीं है। तुम्हारा और मेरा रास्ता अलग-अलग है। तुम मुसलिम कांफ्रेंस की फिरकापरस्त नीति के कायल हो। मैं नेशनल कांफ्रेंस की खिदमत करता हूँ जिसकी निगाह में कश्मीर में रहने वाला कश्मीरी है—वह हिन्दू हो या मुसलमान। मजहब के नाम पर खूंरेजी से मुझे नफरत है।'

'तुम इसलाम के दुश्मन हो'—इश्तियाक ने जहर उगला।

'मुझे इन्सानियत से मोहब्बत है'—अजीज ने जवाब दिया।

'मजहब के साथ दगाबाजी करने का अंजाम अच्छा नहीं होता अजीज', इश्तियाक ने समझाने की कोशिश की—'हमें पाकिस्तान की

मदद करनी चाहिये। वहाँ के लोग कश्मीर की आजादी के लिए अपना खून बहा रहे हैं।'

'तुम भूल कर रहे हो इश्तियाक', अजीज अविचलित भाव से बोला 'जिसे तुम आजादी समझ रहे हो, वह गुलामी से भी बदतर होगी। आजादी पसन्द करने वाले दूसरों की आजादी की भी कद्र करते हैं। इन हमलावरों ने क्या किया, जानते हो तुम? उन्होंने बारामूला को लूटा, हिन्दू और मुसलमान का खयाल किये बिना सारी बस्ती फूँक डाली! औरतों को मसजिदों और गुरुद्वारे में ले जाकर उन पर बलात्कार किया, सेण्ट जोसेफ गिरजाघर की सबसे बड़ी महिला पादरी को गोली से उड़ा दिया! क्या यही आजादी का जङ्ग है?'

'देखता हूँ कि तुम भारत के उस बुड्ढे फकीर के रङ्ग में पूरी तरह रङ्ग गये हो जो मोहब्बत के नाम पर बुजदिल बनाना सिखा रहा है'— इश्तियाक तैश में आकर बोला—'जङ्ग के मैदान में दुश्मन को फना करना ही हर बहादुर सिपाही का फर्ज होता है।'

अपने स्थान से उठकर इश्तियाक की ओर बढ़ते हुए तीव्र कण्ठ-स्वर में अजीज ने कहा—'फिरकापरस्ती ने तुम्हें अन्धा बना दिया है इश्तियाक। तुम्हारे लिए यह समझना मुमकिन नहीं है कि कौन बहादुर है, कौन बुजदिल। तुम्हारी निगाह उन्हें बहादुर समझती है जिन्होंने कश्मीर पर कब्जा करने के लिए उन अंग्रेजों की कदमबोसी की जिन्होने दुनिया के हर कोने में मुसलिम रियासतों को नेस्तनाबूद करने में कुछ उठा नहीं रखा। तुम्हारी निगाह में बहादुर वह हैं जिन्होंने कश्मीर पर कब्जा करने की गरज से यहाँ नमक, तेल और पेट्रोल तक का आना बन्द कर दिया और बहादुर तुम उन्हें समझते हो जिन्होंने चोरों की तरह चुपके से कश्मीर पर हमला करके बारामूला, उरी, नौशेरा, झाँगर, कोटली और मीरपुर में जुल्म और सितम के पहाड़ ढा

दिये। मैं इन्हें बुजदिल और हैवान समझता हूँ। मेरी निगाह में बहादुर हैं मकबूल शेरवानी ऐसे लोग। उसने जो कुरबानी की है, वह इतिहास में सुनहले हरफों में लिखी जायगी। उससे हमलावरों को धोखे में रखकर श्रीनगर को बचाने में अपनी जान दे दी लेकिन श्रीनगर पहुँचने का सही रास्ता नहीं बताया। जिन्हें तुम बहादुर कहते हो, उन्होंने उसे शहर के बीच एक खम्भे से बाँधा। उसके हाथों और पैरों में कसाई की तरह कीलें ठोंक दीं। उसके नाक-कान काट लिये। इस पर भी जब उस जाँ निसार ने मुँह नहीं खोला तो उन्होंने गोलियाँ चला कर उसका बदन छलनी बना डाला। तुम जाओ इश्तियाक, हमारा रहनुमा मकबूल शेरवानी है।'

'फिर सोच लो अजीज,' इश्तियाक ने जाते जाते कहा—'पाकिस्तान के साथ मिलने से हमें कोई रोक नहीं सकता।'

इश्तियाक चला गया। अजीज पुनः अपनी जगह पर आकर बैठ गया। खुले हुए दरवाजे की राह से सर्द हवा का एक तीखा झोंका कमरे में आया। अंगीठी के अङ्गारों पर जमीं राख की परत उड़ गयी। अंगारे दहक उठे। उनकी रक्तिम आभा अजीज के मुख पर पड़ी और वह लाल-लाल दिखाई देने लगा। इसी समय कमरे में दूसरी ओर से प्रवेश करने वाली उसकी बूढ़ी माँ खातून बीबी की कमजोर निगाह बेटे के चेहरे पर नजर आने वाली तेज सुर्खी का ठीक-ठीक कारण नहीं समझ सकी। उसने समझा अजीज किसी वजह से क्रोधित हो उठा है। कारण जानने के लिए वह व्याकुल हो उठी। जबान खोलने से पूर्व उसने एक बार राकेश के मुख की ओर देखा। वह जर्द और मायूस नजर आया।

अपनी परेशानी मिटाने के लिए खातून बीबी ने बात का सिलसिला शुरू किया—'मेहमान की हालत कैसी है अजीज ?'

'पहले से अच्छी है माँ'—अन्यमनस्क सा बोला अजीज—'तुम इनकी देख-भाल करना। मैं जरा बाहर जा रहा हूँ।'

खातून बीबी ने कहा—'सुबह हुए भी तीन घण्टे बीत गये। तुमने अभी नाश्ता तक नहीं किया।'

'नाश्ता बाहर कर लूँगा।'

'लेकिन काम कौन-सा आ पड़ा जो इतनी जल्दी मचा रखी है'

'इश्तियाक आया था। वह खुराफात जारी रखने पर तुला बैठा है।'

इश्तियाक का नाम सुनकर खातून बीबी चिहुँक उठी। उसे उससे नफरत थी। वह जानती थी कि लोगों को लड़ा-भिड़ा कर अपना उल्लू सीधा करना इश्तियाक का पेशा हो गया है। नेक अजीज से उसकी तनिक भी नहीं पटती।

खातून बीबी चिन्ता में पड़ गयी। अजीज को मौका मिला तो वह बाहर निकल गया। राकेश ने करवट बदली और मुख दरवाजे की ओर कर लिया। ओस से भींगी जमीन पर अजीज के पैरों के निशान उसकी आँखों में गड़ गये। मानस तन्तु यह बोलते सुनाई दिये—मञ्जिल की राह यही है।

सम्भव था, उसके विचार, श्रृङ्खला का रूप धारण कर लेते यदि बीच में ही खातून बीबी के यह शब्द उसके कर्णरन्ध्रों से टकरा न पड़ते—'इस हालत में पहाड़ी के पास बियाबान में तुम पहुँचे कैसे थे बेटा?'

'किस्मत ले गयी थी मा।' मुँह घुमाये बिना ही राकेश ने उत्तर दिया।

राकेश का सम्बोधन सुनकर खातून बीबी पुलकित हो उठी। सहसा दूसरा प्रश्न उसके मुँह से निकल न सका। राकेश के सामने

आकर वह उसका मुँह निहारने लगी जो तबतक अपनी आँखें बन्द कर चुका था।

खातून बीबी ने समझा कि राकेश आराम करना चाहता है। उसे न बुलाना ही उसने उचित समझा। सामने का दरवाजा उसने धीरे से बन्द किया और कमरे से बाहर निकल गयी। राकेश के मस्तिष्क में उठे तूफान का आभास तक उसे न मिला। गुजरी हुई अनेक घटनाएँ उसका मस्तिष्क झकझोर रही थीं। अन्ततः उसकी स्मृति की नौका गुलरुख के स्वभाव की सरिता के साहिल पर आ टिकी और सोचने लगा वह—मुझे अस्पताल में न पाकर क्या सोचा होगा उसने? भाई की मौत का सदमा वह किस तरह बरदास्त करती हैं? माता-पिता भी नहीं हैं। अकेली है वह। इतनी हमदर्दी उसे कैसे मिली और मिली तो भाई की मौत उसे, उससे छीन क्यों नहीं सकी?

रक्त-स्राव से क्लांत मस्तिष्क स्मृतियों और कल्पना का अधिक बोझ सम्भाल न सका शायद। राकेश की आँखें लग गयीं। वह अपनी सुध-बुध खो बैठा। उसे स्वप्न में भी यह गुमान न हुआ कि जिसकी स्मृति मीठी नींद बन कर उसकी आँखों में उतर आयी थी, वह स्वतः अस्पताल में एक निहायत हसीन रोगिणी के उपचार में दत्त-चित्त थी जिसका नाम था मल्का पोखराज। अस्पताल के आफिसर इंचार्ज ने विशेष रूप से उसकी देखभाल करने का आदेश गुलरुख को दिया था और गुलरुख इस आदेश का पालन कर रही थी बिना यह जाने-समझे कि वह किस रोग से आक्रांत है।

वास्तव में मल्का पोखराज किसी रोग से पीड़ित न थी। रोग तो बहाना मात्र था अस्पताल में भर्ती होने का। यह बहाना ढूँढ़ा था उसने कुछ लोगों का परिचय प्राप्त करने तथा उनके निकट पहुँचने के उद्देश्य से। अंशतः अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल भी हुई वह;

क्योंकि जब से पड़ी थी अस्पताल में, गुलरुख बराबर उसके पास थी। उसने उसे देखा, उसे समझा। जब गुलरुख के चेहरे के भोलेपन ने उसका यह विश्वास पक्का कर दिया कि 'यह मासूम है, दुनिया के फरेब से अछूती'—तो उसने बात भी आरम्भ कर दी शुरुआत इस प्रकार हुई—'तुम्हारा नाम क्या है ?'

'गुलरुख।'

'रहती कहाँ हो ?'

'यहीं, श्रीनगर में।'

'और कौन-कौन है साथ में ?'

'कोई नहीं।'

'कोई नहीं !'

'हाँ, कोई नहीं। मा-बाप बचपन में ही चल बसे। भाई था, उसे भी मौतने छीन लिया।'

'शादी नहीं हुई ?'

'नहीं।'

'होने वाली है ?'

'नहीं', कहते-कहते गुलरुख खिजला उठी। उसे ये प्रश्न अच्छे नहीं लगे। यह समझ कर कि मल्का उसका पिंड नहीं छोड़ेगी, उसने बात का सिलसिला बदलने की कोशिश की यह पूछ कर—'आप श्रीनगर में कहाँ रहती हैं ?'

'एक्सचेञ्ज रोड पर।'

'घर में कौन-कौन है ? यहाँ आया नहीं कोई !'

'भाई है जो कश्मीर की आजादी के जंग में फँसा है।'

गुलरुख चुप हो गयी। उसकी समझ में ही नहीं आया कि आगे कौन-सा प्रश्न पूछे। मल्का को मौका मिल गया। उसने पुनः अपना

कदम आगे बढ़ा दिया यह कह कर कि 'अस्पताल से जल्दी ही चली जाऊँगी। सम्भव है, एक-दो दिन में ही हट जाऊँ। कभी-कभी मेरे घर चली आना। आओगी न?'

'कोशिश करूँगी।' गुलरुख ने कहा—'अब जा रही हूँ। दूसरी नर्स आपके पास आ जायगी। मेरे अवकाश का समय हो गया।'

मल्का की निगाह गुलरुख के बढ़ते हुए कदमों पर जम गयी। जैसे-जैसे उसके कदम आगे बढ़ रहे थे, वैसे मल्का के ओठों पर जमी मुस्कान की परिधि भी बढ़ती जाती थी। इसमें एक राज छिपा था जिसे सिर्फ मल्का जानती थी या जानते थे उसके सरपरस्त पाकिस्तानी जो प्रति सप्ताह उसके पत्र की बाट देखने का अपना इरादा उसे बता चुके थे।

पहला पत्र भेजने की घड़ी आ पहुँची थी। गुलरुख के सामने से हटते ही मल्का ने अवसर का लाभ उठा लेना मुनासिब समझा। उसने पास के टेबुल पर पड़ा लेटर पैड उठाया और जल्दी-जल्दी कलम चलाकर एक पन्ना भर डाला। उसने उसे पैड से अलग किया और मोड़कर लिफाफे में रखने के बाद लिफाफा बन्द कर दिया।

निश्चित स्थान पर पत्र भेजने में मल्का को किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। सिर्फ पाँच रुपये के नोट के बल पर उसका यह काम हो गया। वह रुपये खर्च न करती तो भी सम्भवतः उसका काम रुकता नहीं; क्योंकि पत्र ले जानेवाला कर्मचारी यह समझ कर ही उसे ले गया था कि मल्का अपने भाई को अस्पताल में बुलाना चाहती है।

प्रेम और विरह की अनुभूतियों में डूबे रहने वाले चित्रकार अशोक को, भारत के विभाजन से एक मास पूर्व की राजनीतिक हलचलें भी दिल्ली से कश्मीर जाने से रोक न सकीं। वह पहुँच गया पाम्पुर जो केसर के मादक रंग और मस्ती-भरी सुगंध में डूबा रहता है। यह स्थान उसे अत्यन्त सुहावना लगा। लगता भी क्यों नहीं? यहाँ प्रकृति-नटी केसरिया साड़ी के आंचल में मुँह छिपाकर सदा मुस्कराया करती है। वायु-दोलित केसर की क्यारियों का रूप दूर से उड़ते हुए आंचल-सा दिखाई देता है। इन क्यारियों में बैठकर कोई मिलन के

गीत का राग छेड़ता है तो लगता है कि वह चंचला यौवना को छेड़ने का बहाना ढूँढ़ रहा है। निस्तब्ध रात्रि में विरह के गीत रूपहली चांदनी की गोद में डूबी क्यारियों को छेड़ते हैं तो प्रतीत होता है कि नूपुर की मादक ध्वनि को अपने अंतर में समेट कर खामोश बैठी प्रियतमा का छेड़ने का बहाना ढूँढ़ रहा है परदेशी प्रियतम।

पाम्पुर से घूमते-घूमते अशोक पहुँच चुका था बारामूला के पास उस समय जब पाकिस्तानी सैनिकों और कबायलियों ने उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। राह में उनके अत्याचारों की उड़ती-उड़ती खबरें मिली थीं जिनके कारण कारण वह श्रीनगर की ओर तेजी से लौट रहा था। इस दौरान में ही एक जगह उसे श्लथ श्रमिक के गीत का अनुभव कराने वाली कल-कल की ध्वनि से बर्फीली चट्टानों को गुंजरित करने वाला एक पहाड़ी नाला दिखाई दिया जिसके दूसरे किनारे पर किसी युवती की लाश हिल-डुल रही थी। उसे देखकर अशोक को बारामूला पर आक्रामकों के हमले की उड़ती हुई घटनाओं के विवरण की एक-एक बात याद आ गयी। मृत युवती के सुडौल शरीर और सुन्दर मुख को देखकर उसने अंदाज लगाया कि इसने आत्म-हत्या कर ली होगी। उसके कलेजे पर चोट-सी लगी। पैर आप से आप थम गये। वह किंकर्तव्य-विमूढ़ सा लाश को देखता रहा और उसकी तंद्रा तभी टूटी जब दूर सड़क के दोनों किनारों पर पंक्ति-बद्ध खड़े ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की ओर बढ़ने वाले पंक्षियों का कलरव उसके कानों से जा टकराया।

'थोड़ी ही देर में रात हो जायगी'—यह सोचते हुए अशोक अनिच्छापूर्वक कदम बढ़ाने के लिए तैयार हो गया। इससे पूर्व उसने यह सोचकर लाश का फोटो खींच लिया था कि शायद किसी भाग्यहीन के घर के इस चिराग का कुछ पता मिल जाय और किसी के आँसुओं की बाढ़ रोकने में वह कुछ सहायक सिद्ध हो सके।

मंजिल पर मंजिल तय करके अशोक जिस दिन श्रीनगर पहुँचा, उस दिन भारतीय सेना बारामूला पर अधिकार करने की स्थिति में हो गयी थी। यह उसे मालूम हुआ अपने मित्र क्षेमेन्द्र से जो दिल्ली से प्रकाशित होने वाले एक पत्र के संवाददाता के रूप में अपनी डाक भेजने की तैयारी कर रहा था।

अशोक को अकस्मात् अपने सामने देखकर क्षेमेन्द्र ने उससे पूछा—'कहाँ थे तुम! मैं तो समझता था कि तुम वापस दिल्ली लौट गये।'

अशोक ने जवाब दिया—'पाम्पुर में बहुत दिनों तक ठहर गया था। वहाँ से घूमता-घूमता बारामूला की ओर पहुँच गया। संयोग वश खतरे में पड़ने से पूर्व ही आक्रमण का पता चल गया। किसी प्रकार यहाँ पहुँच गया, बस यही समझ लो।'

'कुछ देखा तुमने अपनी आँखों से?'

'उजड़े हुए गाँव, फूँके गये मकान।'

कविता नहीं दोस्त, विवरण चाहिये।'

'वह फिर बताऊँगा'—कहा अशोक ने—'पहले यह बताओ कि इधर किसी युवती के गुम होने का कोई समाचार प्रकाशित हुआ है?'

अशोक का प्रश्न सुनकर क्षेमेन्द्र को हँसी आ गयी। उसने कहा—'समझ गया, तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं है। नादान दोस्त, गायब होने वाली युवतियों की संख्या सैकड़ों और हजारों तक पहुँच चुकी है।'

कुछ रुकने के बाद रोष भरे स्वर में पुनः बोला क्षेमेन्द्र—'बर्बर कबायलियों ने जिस अमानुषिक ढंग से युवतियों का अपहरण किया, उसकी स्मृति मात्र आँखों से अंगारे बरसाने लगती है।'

क्षेमेन्द्र चुप हो गया। अशोक भी विचारों में डूब गया। सहसा

अनेक बालकों का समवेत स्वर उनके कानों में पड़ा—'कश्मीर को बचायेंगे, हमलावरों को भगायेंगे।'

अशोक उठकर खिड़की के पास चला गया और सड़क की ओर देखने लगा। उसने देखा—नन्हें-नन्हें अबोध बच्चों का लम्बा जलूस जोश के साथ सड़क पार कर रहा था। वह क्षेमेन्द्र की ओर घूम गया और बोला—'यह क्या है?'

क्षेमेन्द्र ने उत्तर दिया—'पाकिस्तानियों के जहरीले प्रचार से विकल होने वाले कश्मीरियों का साहस कायम रखने के लिए नेशनल कांफ्रेन्स ने बालसेना संघटित की है।'

'तुम मजाक कर रहे हो क्या!' कुछ चिढ़ कर बोला अशोक।

'मजाक नहीं है। यही सचाई है।' क्षेमेन्द्र ने जवाब दिया—'इन बालकों का जोश देखकर बुड्ढों की रगों में भी खून दौड़ने लगा है। माँ-बहनें भी राइफल चलाने की ट्रेनिंग ले रही हैं। देखी है न तुमने अभी बाल-सैनिकों की सेना? इस सेना में हिन्दू बालक भी हैं, मुसलमान और सिख बालक भी। इन नौनिहालों को देखो। पंजाब में साम्प्रदायिकता की महाविनाशकारी ज्वाला धधकी, तब कश्मीर में कुछ नहीं हुआ। फिर पाकिस्तानियों ने जहरीला प्रचार आरम्भ किया, कश्मीर को भी पंजाब बनाने के लिए। दुर्भाग्यवश जम्मू में उनकी चाल सफल हो गयी लेकिन श्रीनगर के हिन्दू-मुसलमान और सिख अब भी नेशनल कांफ्रेंस के झंडे के नीचे एकत्र रहकर कश्मीर की रक्षा के लिए एक साथ खून बहाने को तैयार हैं।'

यह सुनकर अन्य बातों को जानने की अशोक की उत्कंठा तीव्र हो उठी। वह प्रश्न पर प्रश्न करने के लिए आकुल हो उठा किन्तु क्षेमेन्द्र ने यह कहकर उसका मुँह बन्द कर दिया कि 'सफर की थकावट मिटा लो। तब इतमिनान से बातचीत करेंगे।'

अशोक को जैसे भूली हुई बात याद आ गयी। उसे अपने शरीर की रग-रग टूटती मालूम हुई। उसने क्षेमेन्द्र की बात मान ली।

रात बीती, दिन आया। अशोक अन्य कामों से निवृत्त होकर क्षेमेन्द्र के कमरे में पहुँचा और बोला—'होटल में कमरे का किराया दे ही रहा हूँ। अब वहीं जा रहा हूँ। अवकाश मिलने पर वहीं चले आना।'

अशोक के स्वभाव से परिचित क्षेमेन्द्र मुस्करा कर रह गया। वह जानता था कि अशोक टिकेगा होटल में ही। एक दिन यहाँ रह गया, यही बहुत है। उसने सिर हिलाकर अपनी सम्मति दे दी। अशोक चला गया।

उसी दिन शाम को क्षेमेन्द्र होटल में पहुँचा, जहाँ अशोक टिका था। वह उस समय पलँग पर लेटा था। शायद तब भी थकावट मिटा रहा हो। क्षेमेन्द्र को आया देखकर भी वह उठा नहीं। उसी दशा में उसने कुर्सी पर बैठ जाने का संकेत किया।

क्षेमेन्द्र ने ही बातचीत शुरू की—'क्या सोच रहे हो?'

'इन्सान की फितरत।'

'वह असीम है।'

'मैं उसे अपनी तूलिका से सीमाबद्ध करना चाहता हूँ।'

'यह असम्भव है।'

हँसते हुए बोला अशोक—'तुम्हें चित्रकला की क्षमता का ज्ञान नहीं है। खैर, छोड़ो इस विवाद को। यह बताओ कि नौका है कहाँ? वह किनारे लगेगी या नहीं?'

क्षेमेन्द्र ने दार्शनिक की मुद्रा में आकर कहा—'कहानी लम्बी है और समय कम।'

'कहीं जाना है क्या?'

'मैं तो रुक भी सकता हूँ। फिक्र तुम्हारी ही है। 'मूड' की बात है न!'

'ओह, समझा गया।' अशोक ने उठकर बैठते हुए कहा—'तुम मेरी और मेरे 'मूड' की चिंता छोड़ दो। कहानी शुरू करो। उसको सुने बिना भावना चित्र-बद्ध न हो सकेगी।'

क्षेमेन्द्र सहसा गम्भीर हो गया। दम-दम पर भावों का उतार-चढ़ाव मुख पर नजर आने लगा, मानो वह मन ही मन घटनाओं की समीक्षा कर रहा हो अथवा यह सोच रहा हो कि पाकिस्तानी की वह-शियाना कारस्वाइयों के विवरण का सिलसिला कहाँ से शुरू किया जाय।

व्यग्रता के साथ क्षेमेन्द्र के बोलने की राह देखने वाले अशोक को यह अच्छा न लगा। उसने, उसका मौन भंग करने की चेष्टा की और तब बोला क्षेमेन्द्र—'भारत के विभाजन के बाद से ही पाकिस्तान के गवरनर जनरल मोहम्मद अली जिन्ना ने कश्मीर को हड़पने के लिए कूटनीति से काम लेना आरम्भ कर दिया था। पहले उन्होंने अपना विशेष दूत महाराज के पास भेजा। तब प्रधान मन्त्री काक साहब को प्रभावित करके अपना उल्लू सीधा करने की चेष्टा की। महाराज को कराची आमन्त्रित किया। इस पर भी दाल न गली तो श्रीनगर में आकर रहने की इच्छा जाहिर की लेकिन इस शर्त के साथ कि महाराज उन्हें आम-न्त्रित करें। जब उनकी सभी कोशिशें विफल हो गयीं तो उन्होंने जम्मू-भारतकी अढ़ाई सौ मील लम्बी सीमापर जम्मूकी ओर बसे गाँवों में साम्प्रदायिक दंगा करा दिया। पाकिस्तानियों के साथ वहाँ के सैनिकों ने नागरिक वेष में गाँवोंपर हमला किया, उन्हें जलाकर राख किया, सम्पत्ति लूटी और हत्याएँ की। पाकिस्तानियों का आचरण बर्बर और जंगली जानवरों-सा था।'

कुछ रुककर क्षेमेन्द्र पुनः बोला–'इस बीच कश्मीर के प्रधान मंत्री के पद पर श्री महाजन की नियुक्ति हो चुकी थी। उन्होंने और महाराज ने आक्रान्त गाँवों का दौरा किया। नागरिकों को समझाने-बुझाने की चेष्टा की। किन्तु सब व्यर्थ। पाकिस्तानका षड़यन्त्र-चक्र तेजीसे चलता रहा। हालत यह हो गयी कि यहाँ की प्रत्येक काररवाई की सूचना पाकिस्तान के अधिकारियों के पास पहुँचने लगी। ऐसी ही दशा में उन्होंने महाराज और प्रधान मन्त्री को गिरफ्तार करने और पाकिस्तान में कश्मीर के विलयन के दस्तावेज पर बलपूर्वक हस्ताक्षर कराने की योजना भी बना डाली।'

यहीं अशोक ने क्षेमेन्द्र को टोककर कहा—'जो कुछ तुम कह रहे हो, क्या वह सत्य है!'

'अभी तुमने सुना ही क्या है अशोक', क्षेमेन्द्र ने अशोक की उत्सुकता द्विगुणित करते हुए कहा—'सचमुच आश्चर्यजनक बातें तो अब तुम्हारे सामने आयेंगी। सीमा-क्षेत्रों का दौरा करने का महाराज और प्रधान मंत्री का कार्यक्रम दौरा के आरम्भ होने से पूर्व ही पाकिस्तानी अधिकारियोंके हाथ लग गया था और इसके आधार पर उन्होंने भीम्बर में दोपहर के भोजन के समय बख्तरबन्द मोटरों से हमला करके दोनों को गिरफ्तार करने की योजना बना डाली थी और यह योजना बनायी थी पाकिस्तान के एक मन्त्री ने।'

उत्सुक अशोक ने क्षेमेन्द्र को बीच में ही टोककर पूछा—'यह योजना विफल कैसे हुई?'

'भगवान की कृपा थी। बस, यही समझ लो।' क्षेमेन्द्र ने उत्तर दिया—'जम्मू का सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस पाकिस्तान का एजेण्ट बन चुका था। वह गिरफ्तार कर लिया गया। यही दशा मुसलिम चीफ

आव स्टाफ की थी। वह भी समय पर फौज द्वारा हिरासत में ले लिया गया।'

'लेकिन महाराज और प्रधान मन्त्री बचे कैसे?' अशोक पुन; बीच में ही बोल उठा।

'संयोगवश दोनों भीम्बर समय के बाद पहुँचे।' क्षेमेन्द्र ने कहा—'उधर पाकिस्तानी पूर्व योजनानुसार समय पर हमला कर चुके थे। इस प्रकार यह संकट टला। लेकिन आगे और भी भयावह संकट सिर पर मँडरा रहा था। मुजफ्फराबाद और वहाँ से बारामूला पर हमला करने की भी पूरी योजना बनायी जा चुकी थी। कश्मीर के महाराज और प्रधान मन्त्री को यद्यपि इसकी सूचना समय पर मिल गयी थी तथापि महाराजने पूरी सतर्कतासे काम नहीं लिया। उन्हें डोगरा फौज पर आवश्यकता से अधिक भरोसा था और यह पता ही नहीं था कि उनके अँग्रेज कमाण्डर-इन-चीफ ने सेना इस प्रकार विभाजित कर रखी थी कि सीमा के पास आक्रमण की दशा में वह मुकाबला कर ही नहीं सकती थी।'

अशोक ने एक बार और बीच में ही टोका—'क्या ब्रिटेन, पाकिस्तान के पक्ष में है?'

'इसमें शक नहीं है कि ब्रिटेन ने पाकिस्तान को कश्मीर दिलाने का आश्वासन दे दिया था और अधिकतर अँग्रेज अफसर पाकिस्तान के पक्ष में हो गये हैं।' क्षेमेन्द्र ने अशोक को बताया—'भारत के गवरनर जनरल माउण्टबैटन ने कश्मीर को पाकिस्तान में मिलाने का आग्रह स्वयं किया था। गनीमत समझो कि महाराज दबाव में नहीं पड़े और माउण्टबैटन का जादू उन पर नहीं चल सका।

अशोक के आग्रह पर क्षेमेन्द्र ने बीच की बात बीच ही मे छोड़

दी और पाकिस्तान के आक्रमण की कहानी इस प्रकार पुनः सिलसिलेवार आरम्भ की—'अँग्रेज कमाण्डर-इन-चीफ ने सात मजबूत बटालियनों को दूर-दूर भेजकर बेकार कर दिया था। एक बटालियन सीमा पर थी जहाँ से पाकिस्तान के फौजी अधिकारियों के नेतृत्त्व में कबायली कश्मीर की सीमा का अतिक्रमण कर सकते थे। इसमें तीन प्रतिशत मुसलिम थे जो पाकिस्तान के हाथ बिक चुके थे। प्रधान मन्त्री ने इस यूनिट को भंग करने का आदेश तीन बार कर्नल कमांडिग को दिया था जिसने प्रत्येक बार इस आधार पर हिदायत को मानना अस्वीकार कर दिया था कि 'सभी सैनिक वफादार हैं और बरमा में मेरे अधीन युद्ध कर चुके हैं।' यह उसका भ्रम था जिसका कुफल उसे भोगना पड़ा। कबायलियों ने जिस समय आक्रमण किया, मुसलिम सैनिक और अफसर उनसे मिल गये और उन्होंने कर्नल कमांडिग को उसके दफ्तर में ही मार डाला।'

यहीं रुक कर क्षेमेन्द्र ने कलाई में बँधी घड़ी पर आँख जमायी। आध-घण्टे का समय अपने पास और देखकर उसने वार्ता जारी की यह कहते हुए कि 'पाकिस्तान के गवरनर जनरल ने श्रीनगर में ही ईद मनाने का फैसला किया था। इस उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त उन्होंने अपने अँग्रेज कमाण्डर-इन-चीफ को यह आदेश दिया था कि सत्ताइस अक्तूबर को अर्थात् मुजफ्फराबाद पर कबायलियों के आक्रमण के तीन दिन बाद एक ब्रिगेड रावलपिण्डी और दूसरी स्यालकोट से कश्मीर भेजी जाय। स्यालकोट से जाने वाली ब्रिगेड जम्मू पर कब्जा करे और महाराज को गिरफ्तार कर ले। रावलपिण्डी से भेजी जाने वाली ब्रिगेड को श्रीनगर पर अधिकार करने का आदेश दिया जाय।' कश्मीर का भाग्य अच्छा था जो सत्ताइस अक्तूबर को ही त्रमान से भारतीय सेना के जवान श्रीनगर पहुँच गये। उधर पाकि-

स्तान के कमाण्डर-इन-चीफ ने भी एक उपनिवेश की सेना को दूसरे उपनिवेश पर आक्रमण के निमित्त भेजने से इनकार कर दिया था और इस प्रश्न पर स्वयं त्याग-पत्र देने को तैयार हो गया था।'

अशोक के मन में अनेक प्रकार के सन्देह एक साथ उठे। उसकी समझ में नहीं आया कि पहले ही भारतीय फौजों से मदद क्यों नहीं प्राप्त की गयी। उसने शंका-समाधान के निमित्त पूछा—'भारत से समय पर सहायता क्यों नहीं प्राप्त की गयी?'

क्षेमेन्द्र ने उत्तर दिया—'इस मामले में भारत सरकार के रवैये को समझने में अभी कुछ समय लगेगा। महाराज और प्रधान मंत्री ने स्वतः उससे सहायता की याचना की थी। जनता की राय बहाना न बन जाय, इसलिए एक मात्र जनसंस्था नेशनल काफ्रेंस के नेता शेख अब्दुल्ला को भी महाराजने बिना शर्त रिहा कर दिया था। शेख अब्दुल्ला का इरादा चाहे जो भी रहा हो, सहायता प्राप्त करने वह भी दिल्ली पहुँच चुके थे। इधर कबायली श्रीनगर की ओर बढ़ रहे थे, उधर उसकी सहायता का मसला भारत सरकार ने अधर में लटका रखा था। श्रीनगर की अजीब हालत थी। गनीमत यह थी कि बख्शी गुलाम मोहम्मद ऐसा नेता जनता का साहस बनाये रखने में जी-जान से जुटा था, यह समझा कर कि कबायली यदि श्रीनगर पहुँच गये और उनका सामना करने की तैयारी न की गयी तो सब मारे जायेंगे। अंततः भारत सरकार ने इस शर्त के साथ भारत में कश्मीर के विलयन का दस्तावेज स्वीकार कर लिया कि कश्मीर की जनता को शांति स्थापित होने के बाद आत्म-निर्णय का अधिकार दिया जायगा।'

क्षेमेन्द्र के चुप हो जाने पर अशोक बोला—'मानता हूँ दोस्त, इस

कहानी को चित्रित करना आसान नहीं है। अभी उपयुक्त समय भी नहीं आया है। कुछ और इन्तजार करना होगा।'

अशोक की बात सुनकर क्षेमेन्द्र मुस्करा उठा और अपने स्थान पर खड़ा होकर बोला—'इस समय भारतीय फौज मैदान पर मैदान मार रही है। फिर भी स्थिति नाजुक है। अच्छा, फिर मुलाकात होगी, अब मैं जा रहा हूँ।'

क्षेमेन्द्र चला गया। अशोक ने उसे रोका भी नहीं। वह अपने ही विचारों में डूबने-उतराने लगा। पंद्रह-बीस मिनट तक यही क्रम चला। इसके बाद दिल बहलाने का खब्त-सवार हुआ और वह होटल के बाहर निकल गया।

अशोक एक्सचेंज रोड पर पहुँचा ही था कि उसकी निगाह अत्यंत कीमती एक मोटर कार पर पड़ी। यहाँ उसे देखकर अशोक को कुछ आश्चर्य हुआ। यह स्वाभाविक भी था। समय और वातावरण सैलानियों की सैर का नहीं था। जान के लाले पड़े थे। बाहर का कोई व्यक्ति श्रीनगर में एक क्षण भी टिकना नहीं चाहता था। अशोक सोचने लगा—'किसकी हो सकती है यह मोटर कार? महाराज की? लेकिन महाराज जम्मू में है। फिर?'

सम्भव था कि अशोक के मस्तिष्क में और भी प्रश्न उठते यदि उसी समय कार में बैठने वाली एक महिला और उसके साथ के व्यक्ति पर उसकी निगाह न पहुँच जाती। कौतूहल और तीव्र हो उठा तो वह आगे बढ़ गया। यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि पुरुष और कोई नहीं बल्कि ···प्रसिद्ध सेठ चांदमल है। साथ की महिला पर उसकी निगाह पड़ी तो माथे पर आपसे आप बल पड़ गये। कश्मीर में करोड़पति भारतीय सेठ के साथ अंग्रेज महिला को देखकर अनेक विचार एक साथ उसके मस्तिष्क को कुरेदने लगे। थोड़ी ही

देर पूर्व उसने अंग्रेजों के सम्बन्ध में क्षेमेन्द्र से जो कुछ सुना था, उसकी याद ताजी थी।

अशोक वहाँ से सीधा क्षेमेन्द्र के घर की ओर चल पड़ा और कुछ ही देर मे उसके सामने पहुँच कर खड़ा हो गया। उसे देखकर क्षेमेन्द्र आश्चर्यचकित रह गया—'कुछ ही देर पूर्व मैं उसके होटल में था। अशोक फिर क्यों यहाँ आ पहुँचा!'

अशोक उसका भाव समझ गया। और कोई समय होता तो सम्भव था कि वह उसे परेशान करने के लिए मनगढंत तिलस्मी बातों का सिलसिला छोड़ देत, लेकिन इस समय उसके पेट में पानी पच नहीं रहा था। जो कुछ उसने देखा था, वही क्षेमेन्द्र को बताने के लिए वह व्याकुल था। किसी प्रकार की भूमिका के बगैर ही उसने कहना आरम्भ किया—'अभी-अभी मैंने के प्रसिद्ध करोड़पति सेठ चांदमल को एक अंग्रेज युवती के साथ देखा था। यही बताने के लिए मैं यहाँ तक चला आया। कुछ जानते हो इस सम्बन्ध में तुम?'

क्षेमेन्द्र बोला—'इतना ही जानता हूँ कि सेठ चांदमल काफी प्रसिद्ध है।'

'तुम्हें यह भी नहीं मालूम कि सेठ जी यहाँ कब आये?'

'यह भी मालूम है।'

'और अंग्रेज युवती?'

'तुम्हारे समाचार का दिलचस्प अंश यही है।'

'तुम्हारा मतलब?'

'इसके सम्बन्ध में कुछ छानबीन करने की इच्छा उत्पन्न हो गयी है।'

अशोक चुप रहकर कुछ सोचने लगा तो क्षेमेन्द्र ने पूछा—'क्या सोच रहे हो?'

'अंग्रेज युवती से चांदमल का सम्बन्ध क्या हो सकता है ?'

'व्यापार का।'

'यह असम्भव है।'

'कारण ?'

'कारण नहीं बता सकता', परेशान सा बोला अशोक—'व्यापार की बात बम्बई में होती। कश्मीर इसके लिए उपयुक्त स्थान नहीं है।'

'कहते तो तुम ठीक हो', क्षेमेन्द्र ने चुटकी ली—'लेकिन कभी-कभी व्यापार की बात तय करने से पूर्व दिल का व्यापार सम्भालना पड़ता है। खैर, अब देर हो रही है। तुम जाकर आराम करो। मैं शीघ्र ही किसी नतीजे पर पहुँच जाऊँगा।'

अशोक ने गम्भीर होकर निर्निमेष नेत्रों से क्षेमेन्द्र की ओर देखा। उसे भी कुछ गम्भीर पाकर उसे संतोष हुआ और वह लौट पड़ा। राह में बंगलों की खिड़कियों से छनकर बाहर आने वाले प्रकाश और गश्त लगानेवाले स्वयंसेवकों तथा पुलिस के जवानों के अतिरिक्त उसे और कुछ नजर नहीं आया।

उस समय कश्मीर के निवासियों में भले ही घबराहट रही हो किन्तु प्राकृतिक सुषमा तब भी पूर्ववत् थी। हरितिमा-लसित बाग-बगीचों पर दृष्टि पड़ती तो वहाँ किसी असीम सुंदरी की सौंदर्य छटा बिखरी-दिखाई देती जिसे देखने वाला स्वयं को भूल जाता, स्वप्न सागर में डूब जाता। दृष्टि हिमाच्छादित चोटियों पर पहुँचती तो मानसिक आकांक्षाओं का अस्तित्त्व लुप्त हो जाता और नित्य नूतन दिखाई देने वाले सौंदर्य का विराट् स्वरूप आँखों के सामने नाचने लगता। बिल्लौरी चमक का कवच धारण कर प्रशांत भाव से सीमा की सुरक्षा के लिए तत्पर प्रहरी की भाँति

दृष्टिगत होने वाले पहाड़ों के पास बहने वाले नालों का स्फटिक जल विराट् में विलय की आकांक्षा के वशीभूत होकर कठोर तपश्चर्या की अग्नि में देह को तपाकर अनुपम दीप्ति प्राप्त करने वाले योगी की भाँति नजर आता। सौंदर्य के अनेकानेक रूप तब भी वहाँ बने थे। कोई किसी रूप को देखकर सुखी होता। कोई रूप किसी की दुःखद अनुभूतियों जो जगा देता। कोई उदास होता, कोई मुस्करा उठता। कोई मुग्ध हो जाता, कोई सुध-बुध खो बैठता। लेकिन प्रत्येक अनुभूति में एक अजीब सी सिरहन होती जिसका अनुभव मनुष्य को कदाचित् स्वप्न में ही होता है।

शाही चश्मे की रमणीयता का पूछना ही क्या! चलने-फिरने के योग्य हो जाने के बाद राकेश प्रायः यहीं आकर घंटों पड़ा रहता। यहाँ उसे राहत मिलती। इसका प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर पड़ा और वह तेजी से अपनी खोयी हुई ताकत प्राप्त करता दिखाई देने लगा।

उस दिन भी वह शाही चश्में के पास बैठा था। तभी कुछ दूरी पर उसे गुलरुख नजर आयी। किसी अज्ञात शक्ति की प्रेरणा से वह शीघ्रता से उसके सामने पहुँच कर खड़ा हो गया।

भौंचक गुलरुख कुछ समझ सके, इसके पूर्व ही बोल उठा राकेश —'मैं क्षमा चाहता हूँ।'

गुलरुख रह गयी ठगी-सी, खोयी-सी। उसकी समझ में ही नहीं आया कि क्या कहे। राकेश ने उसकी मुसीबत कुछ हल्की की— 'जिसने सेवा की, उसका धन्यवाद भी नहीं किया मैंने।'

गुलरुख तब भी कुछ न बोली। राकेश के कलेजे में टीस-सी उठी—'सुचित्रा की याद ने मुझे पागल बना दिया था अन्यथा····।'

सुचिता का नाम गुलरुख के लिए सहारा बन गया। वह बीच में ही बोल उठी - 'कुछ पता चला सुचिता का ?'

'नहीं।'

'नहीं !'

'आपका नाम ?'

'गुलरुख।'

इसके बाद राकेश को उसी समस्या का सामना करना पड़ा जो पहले गुलरुख के मुँह पर ताला लगाये हुए थी। उससे लगातार बात करने की उसकी इच्छा बरसाती नदी की भाँति उबाल खा रही थी लेकिन सिलसिला शुरू करने के लिए कोई बात ही नजर नहीं आती थी।

गुलरुख ने शायद उसकी परेशानी समझ ली। उसकी समस्या हल कर दी उसने यह पूछ कर—'बिना किसी से कुछ कहे आप अस्पताल से चले क्यों गये थे ?'

डूबते को तिनके का सहारा मिल गया। राकेश ने कहा—'जिंदगी से छुटकारा पाने की तीव्र इच्छा ही मुझे अस्पताल से बाहर ले गयी थी।'

'आप गये थे कहाँ ?'

'बस्ती से दूर, सुनसान में।'

'वहाँ क्या हुआ ?'

'घावों की पीड़ा बर्छी सी चुभने लगी।'

'और तब ?'

'तब मन में यह विचार उठा कि अस्पताल से भाग कर मैंने गलती की।'

इसके पश्चात् गुलरुख ने कोई प्रश्न नहीं पूछा। राकेश ने स्वयं ही आगे की घटना सुना दी। इस सिलसिले में इश्तियाक का नाम भी

सामने आ गया जिसे सुनकर गुलरुख कुछ चौंकी-सी दिखाई दी। राकेश ने कारण पूछा तो उसने जवाब नहीं दिया। उलटे उसकी हुलिया के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछ डाले। उत्तर सुन-सुन कर उसका मुख गम्भीर होता जाता। यह देखकर राकेश को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा—'इश्तियाक को जानती हैं यह क्या!'

उसकी समझ में कोई बात नहीं आयी। वह व्याकुल-सा हो उठा। बार-बार गुलरुख से कुछ पूछने की इच्छा होती और हर बार वह यह सोचकर उसे बलपूर्वक दबा देता—सम्भव है, गुलरुख इस प्रकार का प्रश्न सुनना पसन्द न करे।

उधर गुलरुख विचारों में इस प्रकार डूब गयी थी मानो कोई पहेली हल कर रही हो। उसका यह सन्देह क्षण-प्रतिक्षण पक्का होता जाता था कि यह इश्तियाक, वही इश्तियाक है जो मल्का से कई बार मिल चुका है और उस दिन मल्का ने जिससे उसका परिचय कराया था। ज्यों-ज्यों उसका यह सन्देह पक्का होता जाता, त्यों-त्यों मन ही मन में यह प्रश्न जड़ पकड़ता जाता कि मल्का भी कश्मीर-विरोधी कार्यों में संलग्न है क्या?

राकेश की भाँति ही गुलरुख भी किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सकी। वह गुलरुख की भाव-भंगिमा देखकर परेशान था और गुलरुख मल्का के प्रति उत्पन्न होनेवाले सन्देह को सोच-सोच कर। दोनों अपनी-अपनी आशंकाओंका स्पष्टीकरण चाहते थे, फिर भी एक ने दूसरे से कोई प्रश्न नहीं पूछा। यह तो संयोग था कि बात ही बात में मतलब की बात का सिलसिला भी आपसे आप आरम्भ हो गया।

राकेश जाने लगा तो गुलरुख बोली—'अब आपका इरादा क्या है?'

'सुचिता को खोजने की फिक्र है ।'

'कहाँ ढूढ़ियेगा ?'

'यह तो स्वयं नहीं जानता ।'

'मैं काम आ सकती हूँ ?'

'सहानुभूति के लिए कुछ साथियों की जरूरत है ही ।'

गुलरुख चुप हो गयी । राकेश ने उसका मौन भंग किया—'क्या सोच रही हैं आप ?'

गुलरुख को जैसे कोई भूली बात याद आयी । तत्काल ही बोल उठी—'मल्का के सम्बन्ध में सोच रही हूँ ।'

'मल्का कौन ?' राकेश ने सिलसिला जारी रखा ।

'मल्का पोखराज ।'

'यह तो नाम हुआ । परिचय.....?'

'परिचय..... !'

'जी ..... !'

'उसके कथनानुसार भाई उसका जंगमें फँसा है और.....!

'आप चुप क्यों हो गयीं ?'

'जिस इश्तियाक का नाम लिया था आपने', मल्का बोली, 'मुझे लगता है कि वह उसका साथी है ।'

राकेश को परिचय दिलचस्प लगा । बात को समाप्त न होने देने की गरज से उसने कहा—'मल्का सहेली है क्या ?'

'नहीं ।' गुलरुख का जवाब था—'अस्पताल में मुलाकात हुई थी । मरीज बन कर आयी थी । मर्ज क्या था, यह भगवान जाने । अजीब-अजीब प्रश्न पूछती थी । अस्पताल से जल्दी ही चली गयी । एक दिन राह में मुलाकात हो गयी तो घर ले गयी । तब से दो-एक बार

अपने मन से भी वहाँ हो आयी हूँ। वहीं इश्तियाक को देखा था। आज उसका नाम सुना तो कई बातें याद आ गयीं।'

गुलरुख के चुप हो जाने पर राकेश बोला—'आपकी बातें दिल-चस्प मालूम होती हैं।'

'सच!'

'हाँ।'

'मल्का से मिलेंगे आप?'

'मैं!' राकेश को इस प्रश्न के सामने आने की आशा न थी। वह चकपका गया।

न जाने क्यों उसे देखकर गुलरुख को हँसी आ गयी। हँसी तो वह नहीं लेकिन मुस्करायी जरूर। मुस्कान उसकी राकेश को बड़ी भली लगी। कुछ राहत-सी मिली उसे। इच्छा उत्पन्न हुई एक बार और गुल-रुख को मुस्कराते देखने की। यह इच्छा व्यक्त करने को उद्यत हुआ वह, तो लज्जा आ गयी। गुलरुख यह भाँप गयी। उसने आँखें उठाकर उसके मुख पर जमा दीं। राकेश की आँखें पहले से ही जमी हुई थीं उसके मुख पर। एक क्षण के लिए आँखें चार हुईं। फिर दोनों की पलकें आप से आप झुक गयीं। गुलरुख कुछ सकुचायी भी। राकेश ताड़ गया। उसने यह भी देखा कि गुलरुख उसके सामने से हट जाना चाहती है। उसका अनुमान सही था। दूसरे ही क्षण वह कह बैठी—'अब जा रही हूँ।'

राकेश ने उसे रोकना चाहा। बोला—'मल्का के सम्बन्ध में कुछ कहा था आप ने?'

'ओह, भूल ही गयी।' गुलरुख ने कहा—'मिलना चाहते है आप उससे? खूबसूरत है, बहुत खूबसूरत। यहाँ आ जाती है तो यहाँ की खूबसूरत फिजाँ भी फीकी पड़ जाती है।'

राकेश ने फिर कुछ नहीं कहा। वह हँस पड़ा। गुलरुख को भी हँसी आ गयी। एक क्षण के लिए दोनों एक साथ मुस्करा उठे। इसी समय सामने से आने वाला बादल का एक टुकड़ा उनके सिर पर पहुँच चुका था। मालूम नहीं कि दोनों में से किसी एक ने भी उसे देखा या नहीं, क्योंकि दोनों के मस्तिष्क में एक अजीब-सी हलचल मची हुई थी।

राकेश तबतक तो अपने स्थान से हिला नहीं जबतब गुलरुख नजर आती रही किन्तु ज्योंही वह आँखों से ओझल हुई, उसकी आँखों के सामने अजीज का चित्र आ खिंचा। उससे मिलने की गरज से वह तेजी से एक ओर चल पड़ा।

जिस समय राकेश घर पहुँचा, सूरज डूबने वाला था। अजीज की मा चूल्हा सुलगा रही थी और अजीज का पता नहीं था। वह उसकी मा खातून बीवी के पास जा बैठा। उसे देखकर खातून बीवी बोली—'आज बहुत देर कर दी बेटा। अभी सेहत ठीक नहीं हुई। हवा में इतनी देर बाहर रहने से जिस्म में दर्द पैदा हो सकता है।'

राकेश की मा उसके बचपन में ही इस दुनिया से उठ चुकी थी। तब से माँ के प्यार की उसकी भूख मिटी नहीं थी। अजीज के घर में आने के बाद उसकी यह भूख कई बार काफी तीव्र हो चुकी थी। जब कभी वह खातून बीवी से बातें करता, उसकी आवाज में उसे मा का प्यार हिलोर लेता प्रतीत होता और वह अन्दर ही अन्दर तड़प उठता। कई बार उसके सीने से लग जाने की अपनी इच्छा वह बल-पूर्वक दबा चुका था। इस प्रकार हृदय पर जो भार लदता, वह हल्का तभी होता जब वह एकांत में दो-चार आँसू बहा लेता।

इस बार भी यही हुआ। खातून बीवी का स्नेह-स्नात कण्ठ-स्वर

उसके कर्ण कुहरों में पड़ा ही था कि कलेजे में एक टीस-सी उठी। वह अजीज को भूल गया और उसकी मा से ही बातचीत करने की लालसा तीव्र हो उठी। यह लालसा पूरी करने की चेष्टा करने का अवसर भी भाग्य ने उसे नहीं दिया। उसके मुँह खोलने से पूर्व ही अजीज आ टपका और किसी के बोलने की प्रतीक्षा किये बिना स्वयं ही बोल उठा—'तुम कहाँ गये थे राकेश ? तुम्हारे जाने के बाद मैं दो बार घर लौटा और दोनों बार तुम नदारद ! तुम घूम रहे थे। मा बरस पड़ी थी मुझपर—'कुछ तो खयाल रखा करो उसका। क्यों माँ, है न यही बात ?'

यह सब कह गया अजीज एक ही साँस में। मा की नजर उसकी ओर घूमी और वह मुस्करा पड़ी इस प्रकार मानों गोद के बच्चे की किलकारियाँ सुनने के सुख का अनुभव कर रही हो।

और राकेश ! वह कुछ नहीं बोला। उठते हुए उसने अजीज का हाथ पकड़ा और उसे दूसरे कमरे में ले गया।

शाम का वक्त घनीभूत होनेवाली उदासी की भाँति दिखाई दे रहा था जिस समय राकेश ने अजीज से यह कहा—'इस जिन्दगी में तुम्हारा अहसान मैं कभी नहीं भूल सकता अजीज।'

लापरवाही से बोला अजीज—'यही फालतू बात कहने के लिए मुझे यहाँ ले आये हो ? मालूम होता तो यहाँ आता ही नहीं। आखिर यही एक बात कबतक दोहराते रहोगे ? मानता हूँ कि मैंने बहुत बड़ा अहसान लाद दिया है—इतना बड़ा कि उसका भार जिन्दगी भर तुम्हें ढोना पड़ेगा। इसका यह माने तो नहीं कि तुम्हें और कोई बात ही न सूझे।'

राकेश ने आजिजी से कहा—'मेरी एक बात मान लो।'

'यही न कि कहीं और डेरा-तम्बू लगा लेने दूँ तुम्हें।' अजीज ने बात पूरी की।

'हाँ।'

'तुम मा से इजाजत ले लो। मैं तो हार गया।'

इसी समय खाना तैयार होने की सूचना देने खातून बीवी कमरे में पहुँच गयी। उसे देखते ही अजीज बोल उठा—'लो राकेश, मा आ-गयी। अब अपनी ख्वाहिश पूरी कर लो।'

खातून बीवी अपनी बात भूल गयी और बोल उठी—'क्या बात है बेटा?'

'यह राकेश साहब हैं न मा,' अजीज ने जवाब दिया—'अपना घर अलग बसाना चाहते हैं और चाहते हैं कि तुम इजाजत दे दो।'

खातून बीवी ने 'घर बसाने की बात' सुनी तो हजार-हजार दुआएँ माँग डालीं। राकेश की बुरी हालत हो गयी। गलतफहमी दूर करने के लिए वह बोला—'तुम गलत समझी मा। अजीज की तो आदत पड़ गयी है टेढ़ी-मेढ़ी बात कहने की।'

'सीधी बात इन्हीं से सुन लो अम्मा।' अजीज ने पुनः शरारत की,—'खुशखबरी मैं सुना नहीं सका ठीक से।'

खातून बीवी बोली—'मैं समझ गयी। शर्म आती है राकेश को। मैं खुद पूछ लूँगी। इस समय खाना ठंढा हो रहा है। पहले चल कर तुम लोग खाना खा लो।'

अपनी बात समाप्त करके खातून बीवी लौट गयी। अजीज खिड़की के पास खड़ा होकर मुँह से सिटी बजाने लगा। राकेश कट कर रह गया।

खाना खाकर अजीज और राकेश पुनः दूसरे कमरे में आ डटे।

कम्बल पैरों पर डालते हुए राकेश ने कहा—'आज भी बाजी तुम्हारे हाथ ही रही। खैर, कभी मेरे हाथ भी लगेगी।'

अजीज बोला—'यह दुनियादारी तो चलती रहेगी राकेश। इस समय इस पर जोर न देना ही मुनासिब है। तुम्हारा दिल बहलाने के लिये कभी-कभी मजाक कर लेता हूँ। यों मेरे दिमागमें दिन-रात अपने वतन की आजादी का सवाल चक्कर काटा करता है। भारतीय फौजें मोर्चे पर हमलावरों को खदेड़ रही हैं लेकिन हमारे घरों में भी दुश्मन मौजूद हैं। इन्हें काबू में रखने की जिम्मेदारी हमारी है।'

अजीज की बात सुनकर राकेश को गुलरुख की बातें याद आ गयीं। वह यह समझ ही नहीं सका कि जो बात कहने के लिए वह शाही चश्मे से लौटा था, उसे वह भूल कैसे गया। खोया हुआ रास्ता पाकर उसे कुछ तसल्ली हुई और उसने कहा—'जो बात मैं तुमसे कहना चाहता था, वह भूल ही गया था।'

इसके बाद राकेश ने अजीज के प्रश्न की प्रतीक्षा किये बिना ही इश्तियाक और मल्का के सम्बन्ध में गुलरुख से सुनी सभी बातें उसे बता दीं। उन्हें सुनकर राकेश की भाँति उसे भी कौतूहल हुआ। मल्का की खूबसूरती के जिक्र से उसे प्रथम महायुद्ध के समय काम करने वाली जर्मन जासूस माताहारी की याद आ गयी। वह सोच में पड़ गया। राकेश चुप था ही। सन्नाटा ऐसा छाया मानो सारे कमरे को खामोशी ने आगोश में ले लिया हो।

अन्ततः यह कहकर अजीज ने निस्तब्धता भंग की—'मल्का का पता मालूम है?'

'नहीं।' राकेश ने उत्तर दिया। मल्का का पता न पूछने की अपनी भूल की कीमत तब उसने महसूस की।

अजीज ने सहारा दिया—'गुलरुख तुम्हें उसका पता बता सकती है ?'

प्रश्न सुनकर राकेश चिहुँक-सा उठा। यह सोचकर उसे स्वयं पर गुस्सा आया कि 'जरा-सी बात भी मेरी समझ में नहीं आती।'

उसे चुप देखकर अजीज ने अपना प्रश्न दोहराया। तब राकेश बोला--'गुलरुख से पता मालूम हो जायगा।'

राकेश ने उसी समय गुलरुख से मिलने का इरादा जाहिर किया लेकिन अजीज ने ठंढ को उसके लिए हानिकर बता कर उसका रास्ता रोक दिया और बोला—'तुम्हें कोई एतराज न हो तो गुलरुख के नाम खत लिखकर दे दो। मैं मल्का का पता पूछ लूँगा।'

अजीज के स्वभाव से राकेश परिचित हो चुका था। वह जानता था कि काम आ पड़ने पर आँधी और तूफान भी उसका रास्ता नहीं रोक पाते, अतः उसे रोकने की कोशिश करके उसने समय बरबाद नहीं किया और गुलरुख के नाम पत्र लिखने के लिए तैयार हो गया।

अजीज चारपायी से उठा। उसने ओवर कोट पहनते-पहनते कागज और फाउण्टेनपेन राकेश के सामने रख दिया। राकेश ने फाउण्टेनपेन उठाया। जितनी तेजी से उसे उठाया था उसने, उतनी तेजी से कागज पर चला न सका उसे वह। सोचने लगा—'किस प्रकार आरम्भ करूँ।'

कुछ सोच न सका राकेश। लाचार होकर उसने नाम पता लिखने के बाद ही मजमून लिख दिया। तब तक अजीज कपड़े पहन कर तैयार हो गया था। उसने राकेश से पत्र लेकर पाकेट में रखा और घर से बाहर निकल गया।

अन्धकार को अपना पैर पसारे सिर्फ दो घंटे ही बीते थे, जब अजीज पहुँचा था गुलरुख के घर। वह अस्पताल जाने की तैयारी कर

रही थी। अजीज ने सीधे-सीधे दो मिनट में उसे अपना परिचय दे डाला और राकेश का पत्र उसकी ओर बढ़ा दिया।

अजीज के सम्बन्ध में गुलरुख सभी बातें राकेश से सुन चुकी थी। उसे बचाने वाले को अपने सामने देखकर उसे सन्तोष ही हुआ। उसने राकेश का पत्र पढ़ने के बाद अजीज की ओर देखा तो उसे मालूम हुआ कि अजीज खड़ा ही है। अपनी भूल पर वह लज्जित हुई और उसने अजीज से बैठने का आग्रह किया।

अजीज ने कहा—'कभी फुर्सत के समय। इस समय मुझे मल्का का पता चाहिए।'

गुलरुख भी उसकी इच्छा की पूर्ति के मार्ग में बाधक नहीं हुई। उसने अजीज को मल्का का पता बता दिया। अजीज ने उसका धन्यवाद किया और एक बार पुनः सड़क पर एक ओर तेजी से बढ़ता दिखाई देने लगा।

जिस समय वह मल्का की कोठी के पास पहुँचा, वह दरवाजे के अन्दर कदम रखने ही वाली थी। अजीज एक बार तेजी से उसकी ओर बढ़ा किन्तु दूसरे ही क्षण ठिठक कर खड़ा हो गया यह सोचकर कि 'मिलने का बहाना क्या होगा।'

हमेशा साथ देने वाले उसके दिमाग ने इस बार भी धोखा नहीं दिया। इश्तियाक को खोजने के बहाने वह मल्का की ओर बढ़ा। तब तक मल्का सीढ़ियों पर पहुँच चुकी थी। यह देखकर भी अजीज ने कुछ न देखने का बहाना किया और बिजली की घंटी के बटन पर हाथ रखकर अँगुली से बटन को दबाने के बाद किसी के आने का इन्तजार करने लगा।

'कौन हैं?' एक सुरीली और मधुर आवाज उसके कानों में पड़ी।

अजीज ने मौका देखकर दरवाजे के अन्दर कदम रखा और जीने पर खड़ी मल्का की ओर देखकर बोला—'मैं ऊपर आ सकता हूँ ?'

भरा-पूरा, रोबदार अपरिचित चेहरा। उत्तर देने से पहले सोचा मल्का ने—कौन है यह ? तब तक अजीज ने एक बार पुनः पूछा—'क्या मैं ऊपर आ सकता हूँ ?'

मल्का बोली—'आप किससे मिलना चाहते हैं ?'

अजीज ने उत्तर दिया—'इश्तियाक साहब से।'

'वह मौजूद नहीं हैं।'

'कब मुलाकात होगी उनसे ?'

'यह आप उनके घर जाकर पूछिये।'

'ओह, गलती हुई ! माफी चाहता हूँ।'

अजीज ने वापस लौटने का बहाना किया और यह बहाना काम कर गया। मल्का ने पुकारा—'सुनिये।'

वह घूमकर मल्का के सामने आया तो दूसरा प्रश्न तैयार था—'कुछ काम है आपको उनसे ?'

'जी, मिलना चाहता था।' अजीज ने उत्तर दिया।

'कहाँ से आ रहे हैं आप ?'

'यहीं, श्रीनगर में रहता हूँ।'

'आइये, शायद मुलाकात हो जाय।'

अजीज को किसी न किसी बहाने मल्का से कुछ बातचीत करनी ही थी। इसलिए ही यहाँतक पहुँचा था वह, पर इसका मौका जब मिला तो वह हिचकिचाया और सोच में पड़ गया—'इस प्रकार यकायक मिलना क्या उचित होगा ?'

उसे अविचल देखकर मल्का ने कहा—'कब तक खड़े रहेंगे वहाँ ?'

'फिर मुलाकात हो जायगी'। अजीज ने उत्तर दिया—'मेरा नाम अजीज है। आप बता दीजियेगा।'

अजीज चला गया। वहाँ से वह घर आया। राकेश तब भी जाग रहा था। उसने पूछा—'कुछ पता चला ?'

'बस मुलाकात भर हुई।'

'इश्तियाक से ?'

'नहीं, मल्का से।'

अजीज ने राकेश को यह भी बता दिया कि 'मैं अपना नाम बता आया हूँ।' राकेश को उसका यह कार्य अच्छा न लगा। अजीज ने यह कहकर उसे समझाने की चेष्टा की कि 'इश्तियाक के मन में किसी प्रकार का सन्देह उत्पन्न न होने देने के लिए ही मैंने ऐसा किया।'

राकेश यद्यपि सन्तुष्ट न हुआ तथापि वह विवाद में भी नहीं पड़ा। वास्तव में उसे दूसरी ही फिक्र सताने लगी थी और वह सोच रहा था—'मल्का को बीच में मैं लाया। उसका जिक्र मुझसे गुलरुख ने किया था। मल्का से गुलरुख परिचित है। इश्तियाक यह जानता है। वह मुझे यहाँ देख चुका है। किसी प्रकार उसे गुलरुख से मेरे परिचय का हाल मालूम हो गया तो उस पर मुसीबत आ सकती है।'

राकेश उद्विग्न हो उठा। जरा-सी बात इतना तूल पकड़ सकती है, इसकी कल्पना भी नहीं की थी उसने। मस्तिष्क थकता-सा लगा। आँखों से नींद गायब हो गयी। प्रकाश कम था, अन्यथा उसकी बेचैनी अजीज की तेज निगाहों से छिपी न रहती। यों भी अजीज निःशंक नहीं था। वह समझ गया था कि 'राकेश अकारण ही मौन नहीं है।' वह चुप था केवल यह तय न कर सकने के कारण कि 'इस

समय राकेश से बात करना उचित होगा या नहीं। उसे आराम की आवश्यकता है। बातचीत का सिलसिला आरम्भ होने पर काफी देर भी हो सकती है।'

नींद अजीज की आँखों से भी गायब हो चुकी थी। आखिर उससे नहीं रहा गया। लेटे ही लेटे उसने धीरे से आवाज दी—'राकेश।'

राकेश बोला—'तुम जाग रहे हो अजीज ?'

'हाँ, नींद नहीं आ रही है।

'यही हाल मेरा भी है।'

'क्यों ?'

'तरह-तरह के खयाल परेशान कर रहे हैं।'

'कुछ मैं भी सुन सकता हूँ।'

यह प्रश्न सुनकर राकेश ने जो रुख अख्तियार किया, वह इस बात का सबूत था कि वह ऐसे प्रश्न का इन्तजार ही कर रहा था शायद। उसने निस्संकोच भाव से अपनी आशंका व्यक्त कर दी जिसे सुनकर कुछ सोचने के लिए अजीज को मजबूर होना पड़ा; क्योंकि वह गुलरुख को भूल चुका था।

उसे चुप पाकर राकेश ने कहा—'क्या सोच रहे हो ?'

अजीज से सहसा उत्तर देने न बन पड़ा। उसने यह कहकर प्रश्न को टालने की कोशिश की—'रात बढ़ती जा रही है। आराम करो। जो कुछ होगा, देखा जायगा।'

बात करने का बहाना भी न रह गया। बाध्य होकर राकेश ने अपनी आँखें बंद कर लीं। उसने यह जानने की भी चेष्टा नहीं की कि अजीज सो रहा है या जागता है।

प्रातःकाल जब राकेश की आँखें खुलीं तब अजीज अपनी चारपायी पर नहीं था। उसकी जगह मौजूद था इश्तियाक जिस पर निगाह पड़ते

ही न जाने क्यों वह सहम गया और उसने पुनः अपनी आँखें बन्द कर लीं।

कुछ देर तक इस प्रकार वह पड़ा रहा और सोचता रहा कि 'इश्तियाक अवश्य यही जानने के लिए आया है कि अजीज मल्का के पास कैसे पहुँचा।'

अजीज के लौटने के बाद उसकी यह धारणा तब और भी पुष्ट हो गयी जब उसे देखकर इश्तियाक बोला—'आध घंटे से तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ। कुछ पूछना चाहता हूँ लेकिन एकांत में।'

उत्तर में अजीज ने लापरवाही से कहा—'तुम जो कुछ कहना चाहते हो, कह सकते हो। मैं पोशीदा तौर पर की जाने वाली बात-में यकीन नहीं करता।'

इश्तियाक को उसका व्यवहार अच्छा नहीं लगा और क्षुब्ध होकर बोला वह—'तुम्हारा दिमाग तो नहीं खराब हो गया है अजीज ? बात बात में उलझन पैदा करना अक्लमंदी नहीं है।'

'इसमें उलझन पैदा करने की क्या बात है',—अजीज ने उत्तर दिया—'मैं बात करने से तो इनकार कर नहीं रहा हूँ।'

'लेकिन तुम यह जरूर चाहते हो कि जो कुछ हमारे बीच में गुजरे, उसका गवाह एक तीसरा व्यक्ति भी रहे।' आवेश में कहा इश्तियाक ने।

राकेश ने महसूस किया कि बातचीत का क्रम यही रहा तो झड़प होने में देर न लगेगी। उसने स्वयं ही वहाँ से हट जाना मुनासिब समझा।

उसकी मंशा का सही अनुमान लगाकर अजीज भी तैश में आ गया और तीक्ष्ण दृष्टि से इश्तियाक की ओर देखकर बोला—'क्या कहना चाहते हो तुम ?'

इश्तियाक भी मतलब की बात पर आ गया—'अब तुम जासूसी भी करने लगे हो ?'

'तुम्हारा मतलब ?'

'तुम मल्का के घर गये थे ?'

'हाँ।'

'इरादा वही था जो तुमने बताया था ?'

उपयुक्त उत्तर न सूझ पड़ने के कारण अजीज ने बात का रुख बदलने की कोशिश की—'आखिर तुम कहना क्या चाहते हो ? तिल को ताड़ बनाने का मतलब क्या है ? एक-दो बार उस मकान में जाते मैंने तुम्हें देखा था। कल उधर से गुजर रहा था। योंही तुमसे मुलाकात करने की इच्छा उत्पन्न हो गयी तो आवाज दे बैठा। इसे ही तुम जासूसी समझते हो तो मुझे कोई एतराज नहीं है।'

इश्तियाक ठंढा पड़ गया। बात का यह पहलू उसके दिमाग में आया ही नहीं था। अजीज ने भी ख्वाब में यह नहीं सोचा था कि अनायास उसके मुँह से ऐसी कारगर बात निकल जायगी। इश्तियाक की जबान सहसा बन्द होते देखकर उसने संतोष की साँस ली।

इश्तियाक कुछ सोचकर बोला—'हो सकता है कि जो कुछ तुमने कहा है, वह सच हो। फिर भी मुझे शक है। यह बढ़कर किसी खतरनाक अंजाम की शक्ल अख्तियार न कर ले, इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम्हें कभी मुझसे मिलना ही हो तो घर पर मिलो।'

अजीज ने पिंड छुड़ाने के लिए उसकी सलाह मान ली।

इश्तियाक वापस चला गया। वह सीधा मल्का के घर पहुँचा। वह, उसका इंतजार ही कर रही थी। वास्तव में उसके इशारे पर ही इश्तियाक को अजीज के घर सुबह-सुबह ही जाना पड़ा था। उसे वापस आया देखकर बोली मल्का—'क्या खबर मिली ?'

'कोई खास बात नहीं है।'

मल्का ने मुस्कराते हुए कहा—'मैं तो पहले ही कहती थी कि कभी उसने यहाँ आते तुम्हें देख लिया होगा, इसलिए चला आया था। संयोगवश, सामने एक खूबसूरत औरत पड़ गयी, इसलिए दो-चार मिनट रुक गया था।'

इश्तियाक ने कहा—'अपनी खूबसूरती पर इतना नाज है तुम्हें?'

मल्का ने जवाब दिया—'वह खूबसूरती ही क्या जो गरूर न पैदा करे।'

इश्तियाक ने कहा—'वह गरूर ही क्या जो सितम न ढाये।'

मल्का ने जवाब नहीं दिया। मुस्करा कर चुप रह गयी वह। फिर बोली—'क्या अजीज से मेरी मुलाकात नहीं हो सकती?'

'मल्का!'

'इसमें हैरत की बात क्या है!'

'लेकिन तुम अजीज से क्यों मिलना चाहती हो?'

'तुमने कहा था न कि वह नेशनल कांफ्रेस का वफादार कार्यकर्त्ता है?'

'ऐसे कार्यकर्ता तो बहुत हैं यहाँ।'

'इनमें से दो-चार से मुलाकात हो जाय तो हर्ज क्या है।'

'लेकिन कोई फायदा भी तो नहीं होगा।'

'हो सकता है कि तुम्हारा कहना ठीक हो। लेकिन....।'

'लेकिन क्या?'

कुछ गम्भीर होकर मल्का ने कहा—'हम शतरंज का खेल, खेल रहे हैं। कौन सा मोहरा किस समय काम आ जायगा, यह कोई नहीं बता सकता।'

इश्तियाक ने चेतावनी दी—'विश्वास अपने ही मोहरे पर किया जाता है। प्रतिद्वंद्वी के मोहरे पर नहीं।'

मल्का का जवाब था—'राजनीति की शतरंज में प्रतिद्वंद्वी का मोहरा कभी-कभी ज्यादा कारगर साबित होता है।'

इश्तियाक को मल्का का तर्क रुचिकर न लगा। फिर भी वह उसका खंडन न कर सका। चाहता वह यही था कि मल्का की मुलाकात अजीज से न हो। अपनी इस इच्छा का ठीक-ठीक कारण बता सकना उसके वश की बात न थी। मल्का ने जिस तन्मयता से अजीज की शक्ल-सूरत का वर्णन किया था, शायद उसकी स्मृति अपना रंग ला रही हो, क्योंकि मल्का से उसकी दोस्ती का उद्देश्य पाकिस्तान की सेवा मात्र ही न था।

हारकर इश्तियाक को मल्का का आग्रह स्वीकार करना पड़ा और उसको अजीज से मिलानेका वादा उसने कर लिया।

४

नयी दिल्ली से आने वाले हवाई जहाज से मार्लिन मेटकाफ श्रीनगर के हवाई अड्डे पर उतरी। उसके हाथ में चमड़े का एक छोटा-सा बैग था जिसे वह सम्भाल कर पकड़े हुई थी। किसी को ढूँढ़ने वाली उसकी आँखें बार-बार इधर-उधर घूम रही थीं। कुछ ही मिनटों में हवाई अड्डे की ओर आने वाली भूरे रंग की कारपर उसकी दृष्टि पड़ी और वह ठिठक कर खड़ी हो गयी।

निश्चित स्थान पर कार रोक कर कैम्पबेल बाहर निकला ही था कि मार्लिन ने उसे पहचान लिया और तेजी से कार की ओर बढ़ने लगी। उसके पास आने पर कैम्पबेल

ने मुस्करा कर उसका अभिवादन किया और कार में बैठने का संकेत करके उसकी ओर देखने लगा।

'एक्सलेटर' को पैर से दबाते हुए कैम्पबेल ने कहा—'नयी दिल्ली की यात्रा के लिए बधाई।'

'महत्त्वपूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद मिस्टर कैम्पबेल', मार्लिन बोली—'नयी दिल्ली के कूटनीतिक क्षेत्र में अच्छी-खासी हलचल है।'

'कश्मीर में भी काफी सरगर्मी है', कैम्पबेल ने कहा-'भारतीय सेना नौशेरा, झांगर और कोटली का घेरा तोड़ने में सफल रही लेकिन मीरपुर की ओर नहीं बढ़ सकी।'

मार्लिन बोली—'नयी दिल्ली में चर्चा है कि कश्मीर का मसला सुरक्षा-परिषद में पेश कर दिया जायगा।'

कैम्पबेल ने यह सुना तो मुस्करा उठा। मार्लिन यह लक्ष्य न कर सकी, अतः इसका कारण पूछने का अवसर ही नहीं उत्पन्न हुआ। यों भी वह अपनी धुन में थी। नयी दिल्ली में उसने जो कुछ देखा सुना था, उसे शीघ्रातिशीघ्र मल्का को बताना ही उसका लक्ष्य था। इसलिए ही उसने कैम्पबेल से पूछा—'मल्का से भेंट हो सकेगी न?'

कैम्पबेल ने उत्तर दिया—'वह हमारा इन्तजार कर रही होगी। तुम्हारे आगमन का समाचार उसके पास भेज कर ही मैं हवाई अड्डे की ओर बढ़ा था।'

मार्लिन ने संतोष की साँस ली और चुप रह गयी।

कार तेजी से नगर की ओर बढ़ रही थी। एक से एक लुभावने दृश्य पीछे छूटते जाते थे। कोई और समय होता तो मार्लिन बीच में ही रुकने का लोभ संवरण न कर पाती। बर्फीली पहाड़ियों और हरे जंगलों में घूमने का उसे शौक था। अपने इस शौक की दृष्टि से वह

कैम्पबेल को नीरस समझती थी। वास्तव में कैम्पबेल को लड़ाई के मैदान के पास सेना के शिविर के इर्द-गिर्द चुपके से दबे पांव घूमने में जो आनन्द प्राप्त होता, वह जंगलों और पहाड़ों की सैर में नहीं मिलता था। इस पर भी कभी दोनों में विवाद नहीं हुआ; क्योंकि दोनों का अपना-अपना शौक काम के लिहाज से एक दूसरे का पूरक बना हुआ था।

मल्का के बंगले के पास पहुँच कर कैम्पबेल ने कार रोक दी और मोटर का 'हार्न' बजाया। कार और बंगले का दरवाजा साथ-साथ खुला। कार से पहले कैम्पबेल उतरा। फिर सहारा देकर उसने मार्लिन को उतारा। इसके बाद दोनों बंगले में चले गये।

अंदर एक सजे-सजाये कमरे में मल्का उनका इंतजार कर रही थी। सामने एक ओर टेबुल पर थकावट मिटाने का साज-सामान सजा था। मार्लिन और कैम्पबेल के पहुँचते ही मल्का ने उनका अभिवादन किया और बैठने के लिए कुर्सी की ओर संकेत करते हुए बोली—'काफी या शराब?'

मार्लिन ने काफी पीने की इच्छा प्रकट की। कैम्पबेल ने धन्यवाद प्रकाश के बाद स्वयं ही बोतल की ओर हाथ बढ़ा दिया। सिगरेट सुलगाने में मल्का ने उसकी सहायता की। फिर बातचीत शुरू हो गयी।

मार्लिन ने चमड़े का बैग खोला और उसमें से पतला-सा एक कागज निकाल कर बोली—'भारत-सरकार कश्मीर में युद्ध जारी रखने के पक्ष में नहीं मालूम होती। उसकी ओर से मामला किसी भी समय संयुक्त राष्ट्रसंघ को निर्दिष्ट किया जा सकता है।'

मल्का ने पूछा—'भारत की शिकायत का आधार क्या होगा?'

मार्लिन ने जवाब दिया—'इसके सम्बन्ध में ठीक-ठीक कुछ भी

कह सकना मुश्किल है। अनुमान है कि पाकिस्तान की कारवाई विश्व-शांति को संकटापन्न करने वाली बतायी जायगी।'

मार्लिन के चुप हो जाने पर कैम्पबेल ने कहा—'तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आयी मार्लिन। कश्मीर में इस समय भारतीय सेना का पक्ष बीस पड़ रहा है। दूसरी ओर अभी यहाँ के काफी बड़े भाग पर पाकिस्तान का कब्जा है ही। ऐसी हालत में युद्धबन्दी का कोई कार्य भारत के लिए लाभप्रद नहीं हो सकता। फिर, वह राष्ट्रसंघ में कश्मीर का मामला पेश करने के लिए किस आधार पर उत्सुक हो सकता है?'

मार्लिन ने जवाब दिया—'कोई भी सहसा तुम्हारी आशंका को निर्मूल नहीं बता सकता, मिस्टर कैम्पबेल। तुम्हारी जगह मैं होती तो मेरे भी विचार तुम्हारे ही विचारों-से होते। फिर भी, इतना मैं निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि भारत-सरकार की दृष्टि सर्वथा भिन्न है। जो कुछ मैं बता चुकी हूँ, उसकी ही सम्भावना अधिक है।'

कैम्पबेल कुछ कहना ही चाहता था कि मल्का बोल उठी—'कश्मीर के लोगों पर भारत की कार्रवाई का असर क्या होगा?'

मार्लिन ने कहा—'यहाँ की स्थिति का ज्ञान मुझसे अधिकार कैम्पबेल को है। तुम्हारी क्या राय है मिस्टर कैम्पबेल?'

'मुसलिम कांफ्रेस के कार्यकर्त्ता अधिक सहायक सिद्ध नहीं हो रहे हैं' कैम्पबेल ने बताया—'यहाँ की सुरक्षा पुलिस और नेशनल कांफ्रेस के नेता जनता पर छाये हुए हैं। जबतक स्वतंत्र कश्मीर के खूबसूरत ख्वाब का नक्शा उनके दिमाग में बैठा न दिया जाय, कुछ भी कह सकना मुश्किल है।'

'यह काम पूरा करने की कोशिश तो की जा रही है,' मल्का बोली—'लेकिन मुसीबत यह है कि प्रधान मंत्री और उपप्रधान मंत्री

इस समय पाकिस्तान को हमलावर बताने के सिवा और कोई बात ही नहीं करते। एक तो नेशनल कांफ्रेन्स योंही मुसलिम कांफ्रेस से अधिक ताकत पा रही है। दूसरी बात यह है कि इस समय हुकूमत भी नेशनल कांफ्रेन्स के नेताओं के हाथ में है जिन्हें भारत सरकार का समर्थन प्राप्त है।'

'इस समय भारत की कार्रवाई का असर यहाँ की जनता पर चाहे जैसा भी हो,' कैम्पबेल ने कहा—'यदि युद्ध बन्द हो गया तो लाभ पाकिस्तान का होगा। स्वतंत्र कश्मीर राज्य की स्थापना के लोभ का प्रसार तब अधिक आसानी से किया जा सकेगा।'

मार्लिन और मल्का ने भी जब कैम्पबेल की राय से सहमति प्रकट कर दी तो यह प्रसंग समाप्त हो गया और कैम्पबेल ने यह पूछकर वार्ता का रुख घुमा दिया कि 'इश्तियाक के दोस्त अजीज का क्या हाल है मल्का ?

कुछ परेशान-सी बोली मल्का—'अजीज कब्जे में नहीं आया।'

कैम्पबेल ने चुटकी ली,—'तुम्हारी खूबसूरती का जादू उस पर नहीं चला क्या ?'

यह सुनकर मल्का लजा-सी गयी। उसके रक्तिम कपोल और भी लाल हो गये। बात का रुख पलटने के लिए उसने कहा—'अजीज है तो तेज लेकिन उलझी हुई बातों को समझना उसके दिमाग के बूते के बाहर की बात है। सम्भव था कि कब्जे में आ जाता। लेकिन उसके दोस्त राकेश ने शक-शुबहे से उसका दिमाग भर रखा है।'

राकेश का नाम सुनकर मार्लिन बोली—'यह राकेश कौन है ?'

मल्का ने जवाब दिया—'उसके सम्बन्ध में कुछ अधिक नहीं मालूम हो सका।'

चेतावनी से भरे स्वर में मार्लिन बोली—'अभी हमारा काम शुरू हुआ है। दायरा बहुत अधिक नहीं बढ़ना चाहिये।'

मल्का ने अपनी गलती पर खेद प्रकट करते हुए कहा—'जो कुछ होना था, हो चुका। अब या तो किसी न किसी प्रकार राकेश को अजीज से अलग करना होगा या अजीज को ही रास्ता से हटाना होगा। कोई हम लोगों पर नजर रखे, यह ठीक नहीं है।'

कैम्पबेल ने कहा—'इश्तियाक कुछ मदद कर सकता है?'

मल्का ने जवाब दिया—'इश्तियाक काफी चालाक है। वह कई बार अजीज के सामने पाकिस्तान का समर्थन खुलकर कर चुका है। फिर अजीज उसका कुछ नहीं बिगाड़ सका। इश्तियाक को लोग फिरकापरस्त ही समझते हैं, इससे अधिक कुछ नहीं।'

'लेकिन इससे हमारी समस्या कैसे हल होगी?' उद्विग्न होकर बोली मार्लिन,—'राकेश या अजीज, कोई इस बँगले पर नजर तो नहीं रखता मल्का?'

मल्का ने कहा—'अजीज की ओर से तो कोई खतरा नहीं मालूम होता लेकिन राकेश की उपेक्षा नहीं की जा सकती।'

सिगरेट का कश खींचने के बाद धुँआ उड़ाते हुए खिड़की से बाहर नजर आने वाले दृश्य पर दृष्टि जमाकर गम्भीरतापूर्वक कैम्पबेल ने कहा—'राकेश से तुम्हारा या इश्तियाक का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। इसका अर्थ यही हुआ कि हमें अजीज से ही समझना होगा।'

मल्का ने कैम्पबेल का समर्थन किया और बोली—'मैं भी यही समझती हूँ। इसलिए ही अजीज और इश्तियाक के बीच तनातनी बढ़ाने का मेरा काम जारी है।'

यह सुनकर मार्लिन की भौं पर बल पड़ गये। उसे मल्का का रास्ता पसन्द न आया और यह कह कर उसने अपनी राय प्रकट भी

कर दी कि 'इस रास्ते पर चलने से इश्तियाक को ही खतरा पहुँचने की अधिक सम्भावना है।'

मल्का ने इसका प्रतिवाद किया। उसने मार्लिन और कैम्पबेल को यह समझाने की कोशिश की कि इश्तियाक तेज और तर्रार है। अजीज शांत और गम्भीर है। संघर्ष होने पर बाजी इश्तियाक के ही हाथ रहेगी।

मल्का की बात से किसी को सन्तोष न हुआ, फिर भी किसी ने इस चर्चा को तूल नहीं दिया। सम्भवतः इसका कारण यह भी हो कि सेठ चाँदमल से अपनी मुलाकात का जो समय कैम्पबेलने निर्धारित किया था, वह निकट आता जा रहा था। घड़ी की ओर देखकर वह बोला—'फिर मुलाकात होगी। हम जा रहे हैं मल्का। मेहमानमार्जा के लिए धन्यवाद।'

मार्लिन और कैम्पबेल के चल जाने के बाद मल्का सभी बातों पर नये सिरे से विचार करने लगी। मार्लिन से प्राप्त समाचार को पाकिस्तानी अधिकारियों के पास भेजने का निर्णय करके इस ओर से वह निश्चिंत हो गयी, लेकिन राकेश और अजीज से सम्बन्धित समस्या का कोई हल उसे नजर न आया। वेश बदलकर अनेक बार राकेश का पीछा करने के बावजूद वह यह जान न सकी कि कश्मीर में और किससे उसकी जान-पहचान है। इश्तियाक भी इस मामले में उसकी कोई मदद न कर सका था। मदद करने की कोशिश उसने पूरी तरह से की थी—मल्का को इस पर सन्देह था। सच तो यह है कि उसके साथ अधिक समय तक रहना वह स्वयं ही पसन्द नहीं करती थी। कारण, इश्तियाक उससे अपनी मुलाकात के समय इश्क और मोहब्बत का फिसाना छेड़ने का बहाना ढूँढ़ ही लेता था। मल्का को

उसका यह रवैया जरा भी अच्छा न लगता था। यही वजह है कि वह स्वयं भी इश्तियाक से खिंची-खिंची रहती थी।

मार्लिनकी चेतावनी का मल्का पर गहरा असर पड़ा था, इसलिए वह किसी चौथे व्यक्ति को बीच में नहीं लाना चाहती थी। मार्लिन से बात न हुई होती तो सम्भव था वह इस मामले में गुलरुख को भी खींचने की कोशिश करती। अब इस रास्ते पर चलने का साहस भी उसमें नहीं रह गया था।

मल्का इस ऊहापोह में पड़ी ही थी कि इश्तियाक आ गया और आते ही उसने कहा—'कोई नयी बात ?'

मल्का ने अनिच्छा से उत्तर दिया—'कोई खास बात नहीं है।'

'उदास क्यों हो ?'

'दिल उचट-सा गया है।'

'अजीज तो नहीं याद आ गया ?'

मल्का ने एक बार तीव्र दृष्टि से उसकी ओर देखा। दूसरे ही क्षण अकस्मात् उसकी आँखें चमक उठीं। उसने इश्तियाक की बात का जवाब नहीं दिया और खिड़की के पास पहुँच कर खड़ी हो गयी। सोचने लगी मल्का— इश्तियाक के कलेजे में जलन पैदा करके क्या उसे अजीज का शत्रु नहीं बनाया जा सकता ? यदि इश्तियाक की जानकारी में अजीज से मिलना-जुलना बढ़ा दिया जाय तो उसका नतीजा क्या होगा ?'

इसी समय इश्तियाक ने उसकी तन्द्रा भंग करते हुए कहा—'मुझ से बात करना भी अच्छा नहीं लगता ?'

मल्का ने घूमकर उसका सामना करते हुए कहा—'मैं यह समझ नहीं पाती कि बात-बात में तुम अजीज को क्यों घसीट लाते हो।'

'उसका नाम लेना भी गुनाह है क्या ?'

'किसी को बदनाम करना गुनाह है न ?'

'मैंने तुम्हें बदनाम करने की कोशिश नहीं की।'

'मुझे न सही, अजीज को तो बदनाम कर रहे हो।'

'तुम कहना क्या चाहती हो ?'

'यही कि अजीज ने तुम्हारा कुछ बिगाड़ा नहीं है', क्षुब्ध होने का बहाना करते हुए मल्का ने कहा—'फिर भी तुम बार-बार यह बताने की कोशिश करते हो कि उसने तुम्हारा रास्ता रोक रखा है। हो सकता है कि तुम्हारा शक ठीक हो। लेकिन....!'

'लेकिन इसके लिए अजीज गुनहगार नहीं है !' मल्का की बात बीच में ही काटकर बोला इश्तियाक—'यह खेल मुझे पसन्द नहीं है।'

'मैं तो कोई खेल नहीं खेल रही हूँ', मल्का ने कहा—'मुझे अजीज से मिलने का भी कोई शौक नहीं है। तुम उसे मुझसे मिलने से रोक सकते हो तो रोक दो। मुझे एतराज न होगा।'

तीर निशाने पर बैठा। इश्तियाक का ध्यान मल्का से हटकर अजीज पर केन्द्रित हो गया। दूसरे ही क्षण उसने इस मामले में अजीज से ही निबटारा करने का फैसला कर लिया और शीघ्र ही पुनः मिलने की सूचना मल्का को देकर उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना तेजी से कमरे से बाहर निकल गया।

मल्का मुस्करा उठी। उसने सोचा—'काम बन गया।' उसे क्या मालूम था कि इस प्रकार की उलझन यों ही नहीं सुलझा करती। फिर अजीज की क्षमता के सम्बन्ध में भी उसका अनुमान सही नहीं था। अजीज में और चाहे जो दुर्बलता रही हो, व्यर्थ ही स्थिति को संकटपूर्ण बनाते उसे कभी किसी ने नहीं पाया था।

मल्का के बँगले से बाहर निकल कर इश्तियाक सीधा अजीज के

घर जा धमका। इस समय अजीज दो पहर का भोजन समाप्त करके उठा था। राकेश वहाँ था नहीं। प्रातःकाल ही वह कहीं चला गया था और जाते-जाते यह कह गया था, 'मुझे लौटने में देर भी हो सकती है।'

इश्तियाक जला-भुना था ही। अजीज का सामना होते ही वह बरस पड़ा—'मेरी समझ में नहीं आता कि हर जगह मेरे रास्ते में आने में तुम्हें क्या मजा मिलता है।'

उसके स्वभाव से भली-भांति परिचित अजीज को उसकी बात सुन कर तनिक भी आश्चर्य न हुआ। उसने समझ लिया कि कहीं से पिट कर आया है वह और अपना बुखार यहाँ उतार रहा है। लापरवाही से बोला वह—'तुम्हारा और मेरा रास्ता अलग-अलग है। मैं तुम्हारे रास्ते पर चल ही नहीं सकता। तुम्हें कुछ भ्रम हो गया है शायद।'

इश्तियाक ने कहा—'मेरा मतलब मल्का से है। उससे तुम्हारा मिलना-जुलना मुझे पसन्द नहीं है।'

इश्तियाक की बात सुनकर अजीज को हँसी आ गयी। गनीमत यह थी कि उसकी यह हरकत इश्तियाक की नजरों में पड़ी नहीं क्योंकि वह बात तो कर रहा था अजीज से लेकिन देख रहा था बाहर जहाँ पारदर्शी सुनहली चादर के रूप में जाड़े की धूप फैली हुई थी।

अजीज ने कहा—'भूल क्यों जाते हो इश्तियाक कि मल्का से मेरा परिचय तुमने ही कराया था। रह गयी बात मिलने-जुलने की। मुझे इसका शौक नहीं है। फिर भी सामना हो जाने पर लाठी लेकर उसके पीछे दौड़ नहीं सकता।'

इश्तियाक निरुत्तर-सा हो गया। वह मन ही मन स्वयं को कोसने लगा, यह सोच-सोच कर कि मैं मल्का को अजीज के पास न ले जाता तो यह नौबत न आती। आवेश में उसे यह स्मरण न रहा कि

पहले-पहल अजीज स्वयं ही मल्का के बँगले पर गया था—उद्देश्य उसका चाहे जो रहा हो।'

उसने चुपचाप लौट जाना चाहा। फिर भी जाते-जाते यह कह गया, 'मल्का से अधिक न मिलना-जुलना ही तुम्हारे लिए हितकर है।'

इश्तियाक चला गया तो अजीज सोचने लगा—'यह किस चक्कर में पड़ गया! उसकी और मल्का की मुलाकात का रहस्य क्या है? मल्का के प्रति मेरा शक निराधार तो नहीं है? वास्तव में मुझे अब तक कोई ऐसी बात नजर भी नहीं आयी जो सन्देह उत्पन्न करने वाली हो। उसका कोई भाई है या नहीं, यह जानने का कोई साधन मेरे पास नहीं है। ऐसी हालत में यह मान लेना भी उचित नहीं कि वह झूठ बोल रही है।'

अजीज एक-एक करके सभी पुरानी बातो पर विचार करने लगा। पर्याप्त समय तक चिन्तन करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इश्तियाक से मल्का के परिचय की बात सुनकर ही मल्का के प्रति सन्देह उत्पन्न हुआ था। इस सन्देह की उत्पत्ति का कारण इश्तियाक का आचरण रहा। माताहारी की कल्पना दिमाग का फितूर ही हो सकता है।

अजीज ने यह मान लिया कि यदि कश्मीर पर हमला न हुआ होता और हमलावरों तथा भारतीय सेना के बीच युद्ध न छिड़ गया होता तो मल्का पर सन्देह करने का अवसर सामने न आता।

उसके मस्तिष्क की हलचल शान्त हो गयी। उसने एक पुस्तक उठायी और उसे लेकर चारपाई पर लेट गया। पुस्तक के पन्ने उलट कर उसने कुछ पढ़ने की चेष्टा की ही थी कि दिमाग पुनः बहक गया।

आँखों के सामने से अख्तर तो गायब हो गये और स्मृति के सहारे मल्का का चित्र सामने आ गया। उसे मल्का में कोई ऐब नजर न आया।'

किसी की पद-चाप सुनकर उसकी तन्द्रा टूटी। नजर घुमा कर उसने दरवाजे की ओर देखा जिसे पार करके राकेश उसकी ओर बढ़ रहा था। अजीज बोला—'कहाँ गये थे तुम ?'

उदास भाव से बोला राकेश—'सुचिता की खोज में टक्कर मार रहा था।'

उसकी बात सुनकर अजीज विचलित हो उठा। इतने दिनों में वह अच्छी तरह समझ गया था कि राकेश सुचिता को बेहद प्यार करता है। जब तक सुचिता का पता न लगेगा, उसका खाना-पीना, उठना-बैठना हराम रहेगा। उसने अपनी ओर से भी सुचिता का पता लगाने की चेष्टा कई बार की थी। प्रत्येक बार उसे निराश होना पड़ा था। बार-बार विफल होने के कारण यह धारणा उसके हृदय में घर कर गयी थी कि सुचिता या तो कबायलियों के हाथ में पड़ गयी या इस दुनिया से कूच कर गयी। लेकिन यह ऐसी बात थी जिसे राकेश को बताने का साहस उसमें नहीं था। सोचता था वह—किसी के जख्म की जलन ठंढी करने के लिए यदि मलहम नहीं दिया जा सकता तो उसे छेड़ना भी नहीं चाहिये।

राकेश का दिल बहलाने की गरज से उसने कहा—'इधर गुलरुख से मुलाकात नहीं हुई ?'

दिल बहलाने का बहाना ढूँढ़नेवाले राकेश को बहाना भी मिल गया। अनायास ही उसके मुँह से ये शब्द निकल पड़े—'देखता हूँ, गुलरुख तुम्हें बहुत याद आने लगी है।'

अजीज ने कहा—'तुम कुछ भी समझो। उसके लिये सहानुभूति

की कमी मेरे पास नहीं है। उसकी जिन्दगी क्या कम गमगीन है? माँ-बाप हैं नहीं। भाई था, वह भी वहशी कबायलियों का शिकार हो गया। अब रह क्या गया है उसके लिये जिन्दगी में? फिर भी, देखते हो न तुम, जिन्दगी से जूझती चली जा रही है। यह तो तुम कह नहीं सकते कि गम उसे नहीं सताता या उसकी आँखों में आँसू नहीं आते। फिर भी, शायद ही कभी मुलाकात होने पर तुमने उसे मुस्कराते न पाया हो।'

अजीज की बातों ने राकेश को पुनः जहाँ का तहाँ ला पटका। खेद और विषाद से भरा मन जिस रास्ते को छोड़कर जरा-सी राहत महसूस कर सका था, अजीज की बातें पुनः उसे उसी मार्ग पर खींच लायीं। अन्दर ही अन्दर वह छटपटाने-सा लगा। गुलरुख से अपनी मुलाकात की एक-एक बात उसे ताजी होती दिखाई देने लगी। स्मृति ने झकझोरा तो उसकी आँखें खुल गयीं। गुलरुख की वह शकल उसके सामने आ गयी जो पहली मुलाकात के समय दिखाई दी थी और जिसे देखकर उसने कहा—'तुम रो क्यों रही हो?' फिर तो उसकी आँखों से बहनेवाले आसुओं की अजस्र धार का दृश्य भी नेत्रों से ओझल न रह सका।

मौन राकेशकी आँखें भर आयीं। सामने अजीज न होता तो सम्भव था खुलकर रो पड़ता।

उसे चुप देखकर इश्तियाक ने कहा—'कुछ सोच रहे हो क्या?'

'हमें लगता है कि जिन्दगी खुद अपने लिए बेरहम बन चुकी है।'

'परेशानियों से छुटकारा पानेका बहाना तो नहीं ढूँढ़ रही है वह!'

साँस खींच कर कहा राकेश ने—'बात यही होती तो जिन्दगी को मौत मिल गयी होती।'

अजीज चाहता था कुछ और हो गया कुछ और ही। कोशिश की थी उसने राकेश का दिल बहलाने की लेकिन हाथ पड़ गया फफोलों पर। सहानुभूति से उसका हृदय भर उठा। फिर भी उसने कुछ कहा नहीं—रह गया चुप। जानता था अजीज कि ऐसे अवसर पर सहानुभूति, दिलके आवेग को रोक रखने वाले बाँध के लिऐ डाइनामाइट बन जाती है।

कमरे में सन्नाटा छा गया। वातावरण में उदासी घनीभूत होने लगी। समय था दोपहर का, किन्तु लगता था कि रात उतर आयी है। एक ओर अजीज करवटें ले रहा था और दूसरी ओर राकेश। कुछ ही देर में दोनों नींद की गोद में जाकर अपनी-अपनी थकावट मिटाने लगते यदि उसी समय अजीज की माँ खातून बीवी अजीज को पुकारते-पुकारते कमरे में न पहुँच जातीं।

माँ की आवाज सुनकर अजीज उठ बैठा और जब वह सामने पहुँच गयी तब एक टक उसकी ओर देखने लगा।

खातून बीवी की निगाह राकेश पर नहीं पड़ी थी। वह बोली—'राकेश सुबह से गया है, अभी तक लौटा नहीं। घर तो सब बसाते हैं लेकिन इस तरह दिन-दिन भर कोई गायब नहीं हो जाता।'

विषादके उस दौर में भी अजीज और राकेश को हँसी आ ही गयी खातून बीवी की बात सुनकर। वह हँसी का कारण समझ सके, इसके पहले ही राकेश बोल उठा—'माँ, मैं तो कब से आकर बैठा हूँ। तुम व्यर्थ ही परेशान हो रही हो।'

खातून बीवी भर्त्सना-सी करती हुई बोली—'ऐसा आना भी

किस काम का। आये और चादर तान कर पड़ गये। खाना खा लेते तो क्या बिगड़ जाता?'

'देर हो रही थी, इसलिये खाना मैंने बाहर ही खा लिया'—राकेश ने कहा—'अपने आनेकी सूचना तुम्हें नहीं दी, यह गलती जरूर की।'

खातून बीवी ने कहा—'अभी यह हाल है। बीवी के आने पर शक्ल भी नहीं दिखाओगे।'

राकेश इसका उत्तर क्या देता? चुप रह गया। अजीज से चुप न रहा गया। उसे शरारत सूझी तो बोल उठा—'बात यह है अम्मा कि राकेश थोड़ी-सी बताता है और बहुत-सी छिपा लेता है।'

यह सुनकर खातून बीवी ने कहा—'उसका दोष नहीं है बेटा! कुछ भी हो जाय, पराये लोग पराये ही रहते हैं।'

राकेश तड़प उठा। आजिजी से उसने कहा—'मुझे समझने में भूल न करो माँ! तुम्हें पाकर मैं माँ की ममता का अनुभव कर सका हूँ। तुम न मिलतीं तो इस दृष्टि से मेरा हृदय शून्य ही रह जाता। जिससे इतनी बड़ी नियामत मिली है, उसको पराया कैसे समझ सकता हूँ।'

'तुम खुश रहो बेटा,' खातून बीवी ने कहा—'मेरे लिए जैसा अजीज वैसे तुम। कुछ दिनों से न जाने कैसी आग लग गयी है, वरना इस दरवाजे पर भी अब तक शहनाई बजती होती। मरने से पहले अजीज की शादी करने की ख्वाहिश पूरी कर लेना चाहती हूँ।'

खातून बीवी का कंठ भर उठा, आँखें छलछला पड़ीं। फिर उसने न तो किसी की कोई बात सुनने की प्रतीक्षा की, न स्वयं ही बोली। चुपचाप कमरे से बाहर चली गयी।

राकेश ने अजीज की ओर देखकर कहा—'तुम्हारी जगह मैं होता

तो माँ की इच्छा पूरी करने में कुछ भी उठा न रखता। अपनी औलाद की खुशी के लिए माँ कदम-कदम पर अपनी खुशी लुटाती रहती है; फिर भी बदले में कुछ नहीं चाहती। माँ तुम्हारी शादी के लिए बेकरार है तो इसलिए नहीं कि उसे कुछ मिल जायगा बल्कि इसलिए कि तुम्हारी जिन्दगी में आराम का एक नया दौर शुरू हो जायगा।'

'जानता हूँ राकेश,' मायूस-सा बोला अजीज—'लेकिन परिस्थितियाँ कैसे बदल दूँ। जिस धरती में पला हूँ। उसकी रक्षा के लिए एक ओर लोग अपना खून बहा रहे हों और दूसरी ओर मैं ब्याह रचाऊँ, यह अच्छा नहीं लगता। शहनाई की आवाज भी अनुकूल वातावरण में ही अच्छी लगती है।'

राकेश ने कहा—'शहनाई की आवाज अच्छी लगे, क्या इसलिए माँ के दिल को बे-आवाज बना देना मुनासिब है?'

बेटे के लिए माँ का दिल कभी बे-आवाज नहीं होता राकेश।'

'लेकिन शर्त यह है कि बेटा जल्लाद न हो जाय।'

'राकेश!'

'मैंने गलती तो नहीं की अजीज?'

'मुझे गलत न समझो राकेश,' विह्वल-सा बोला अजीज—'माँ से मुझे भी उतनी ही मोहब्बत है जितनी किसी को भी हो सकती है। फर्क इतना ही है कि मेरी आँखें बंद नहीं हुई हैं। मुसीबत के बादल कब किसकी जान के ग्राहक हो जायेंगे, यह कोई नहीं बता सकता। मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से किसी मासूम की हयात का गुंचा खिलने से पहले ही मुरझा जाय।'

'तुम्हारी भावना की कद्र करता हूँ अजीज,' राकेश ने कहा—'अपने निर्णय पर फिर विचार करो। आज जो समस्या उत्पन्न हो

गयी है, वह कल समाप्त होने वाली नहीं है। पाकिस्तान जिन मुल्कों के हाथ में खेल रहा है, आग लगा कर तमाशा देखना उनका पेशा है। जो आग लग चुकी है, उसे वह भड़काते रहेंगे। प्रत्येक काम के सम्बन्ध में हमारा निर्णय इस तथ्य पर ही आधारित होना चाहिये।'

'तुम्हारी राय से मैं असहमत नहीं हूँ,' अजीज ने कहा—'लेकिन देख रहे हो न, भारतीय फौजें बढ़ती जा रही हैं। रफ्तार यही रही तो जल्द ही हमलावर कश्मीर से बाहर खदेड़ दिये जायेंगे।'

राकेश कुछ कहना ही चाहता था कि हवा का एक तेज झोंका आया। दरवाजे और खिड़कियों के पल्ले दीवारों से टकरा कर भड़भड़ा उठे। बाहर वृक्षों की हरहराहट और हवा की सनसनाहट गूँजने लगी। राकेश बोला—'तूफान शायद आ गया। दरवाजे बन्द कर दो, अजीज।'

बहुत प्रयत्न करने के बाद भी क्षेमेन्द्र जब सेठ चाँदमल से मार्लिन मेटकाफ की मैत्री का रहस्य न जान सका तब उसने अख-बारी हथकण्डे से काम लिया और अपने समाचार-पत्र में इस आशय का समाचार प्रकाशित करा दिया कि "कश्मीर की घाटी में भारत के कुछ पूँजीपति सेठों और विदेशी युवतियों की हवाखोरी की यहाँ काफी चर्चा है। जितने मुँह उतनी बातें सुनायी पड़ती हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह गठ-बन्धन आकस्मिक नहीं है।"

५

जिस समय कैम्पबेल और मार्लिन दोनों सेठ चाँदमल के पास पहुँचे, वह उपर्युक्त

समाचार पढ़ रहे थे। ज्योंही उनकी नजर अपने विदेशी अतिथियों पर पड़ी उन्होंने अखबार रख दिया और उठकर दोनों का अभिवादन करने के बाद अपने स्थान पर चुपचाप बैठ गये।

मार्लिन और कैम्पबेल के लिए यह सर्वथा नया अनुभव था। इससे पूर्व सेठ चाँदमल ने उनके साथ कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया था। उनके आने पर सेठ जी हजार काम छोड़ कर भी बातचीत में मशगूल हो जाते थे। सेठ जी को अनभ्यस्त रूप में मौन देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। दोनों अर्थभरी दृष्टि से एक, दूसरे की ओर देखने लगे।

सेठ चाँदमल किसी विशेष चिन्ता में निमग्न न थे। वह सिर्फ यह सोच रहे थे कि समाचार की ओर मार्लिन और कैम्पबेल का ध्यान आकृष्ट करना चाहिये अथवा नहीं। उन्हें चिन्ता इस बात की थी कि मार्लिन समाचार का उलटा अर्थ न समझ ले अथवा भयभीत न हो जाय। उन्हें यदि इस बात पर तनिक भी विश्वास होता कि मार्लिन की दृष्टि में ऐसे समाचार का कोई महत्त्व नहीं है, तो उन्हें चिंतित न होना पड़ता। वास्तव में मार्लिन अथवा कैम्पबेल के लिए भयभीत होने का प्रश्न ही नहीं उठता था। दोनों का कार्य सुनिश्चित योजना का अंग था।

कैम्पबेल ने शांति भंग की—'कुछ चिन्तित मालूम पड़ते हैं आप ?'

सेठ चाँदमल ने कहा—कोई खास बात नहीं है। यही सोच रहा था कि अखबारवालों के लिए कोई नियम-कानून भी है या नहीं !'

कुछ रुककर सेठ चाँदमल ने अखबार कैम्पबेल की ओर बढ़ा दिया और समाचार की ओर संकेत करते हुए कहा—'यह भी कोई समाचार है ! यह प्रकाशित किया गया है या तो कीचड़ उछालने के लिए या व्यर्थ ही सनसनी पैदा करने के लिए।'

समाचार पढ़ते-पढ़ते मार्लिन और कैम्पबेल की भौंहों पर बल पड़ गये किन्तु उन्होंने शीघ्र ही अपने को सँभाल लिया। ओठों पर बनावटी हँसी लाकर कैम्पबेल ने कहा—'इसके प्रकाशन का उद्देश्य न तो कीचड़ उछालना हो सकता है, न सनसनी पैदा करना। यह 'ब्लैकमेलिंग का प्रयास है सेठ जी—ब्लैकमेलिङ्ग का। हमारे मुल्क में ऐसा बहुत होता है।'

मार्लिन ने मन-ही-मन कैम्पबेल की उक्ति की सराहना की। उसने सचमुच ऐसी बात कह दी थी जो सेठजी को अधिक संगत मालूम हुई और उन्होंने यह स्वीकार कर लिया कि किसी से रुपये ऐंठने के लिए ही यह समाचार प्रकाशित किया गया होगा।' इसके बावजूद वह पूर्णतः निःशंक न हो सके। सोचने लगे—समाचार देने वाले की नजर किस पर हो सकती है। उनकी मनःस्थिति पर 'चोर की दाढ़ी में तिनका' यह कहावत अच्छी तरह चरितार्थ हो रही थी, यद्यपि सावधानी से इसका आसार उन्होंने नजर न आने दिया।

कैम्पबेल कहा—आप व्यर्थ ही चिन्तित हैं। यह कोई नयी बात नहीं है यह तो होता ही रहता है।'

मार्लिन ने भी कैम्पबेल की हाँ में हाँ मिलायी और बोली—'जिन अखबारों का कोई 'स्टैण्डर्ड' नहीं होता, उनमें ऐसे ही समाचार प्रकाशित होते हैं।'

सेठ चाँदमल को यह बात जँची नहीं क्योंकि जो अखबार उनके सामने था, वह काफी प्रतिष्ठित था। उसकी धाक भी अच्छी थी फिर भी उन्होंने कोई आपत्ति न प्रकट की और ऐसा भाव दर्शाया मानो उन्हें समाचार की तनिक भी परवाह नहीं है।

कैम्पबेल ऐसे अवसर की प्रतीक्षा ही कर रहा था। सेठ जी को

उसने स्वाभाविक मुद्रा में पाया तो बोल उठा—'लड़ाई की वजह से कार-बार ही घपले में पड़ गया है।'

मार्लिन ने कहा—'आप तो 'इण्डस्ट्रियलिस्ट' (उद्योगपति) हैं। आपको काफी क्षति उठानी पड़ रही होगी।'

सेठ जी को कुछ कहने का मौका दिये बिना ही कैम्पबेल बोल उठा—'ऐसी हालत में भी आप चाहें तो हमारी कम्पनी आप से मशीनों का सौदा कर सकती है।'

सेठ चाँदमल ने कहा—'मिस्टर कैम्पबेल, क्या आप समझते हैं कि भारत और पाकिस्तान में लड़ाई छिड़ जायगी।'

कैम्पबेल ने उत्तर दिया—'मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। स्थिति बड़ी बेढंगी है। भारतीय सेना हमलावरों को पीछे हटाती जा रही है। उसका यह क्रम जारी रहा और वह पाकिस्तान की सीमा पर पहुँच गयी तो दोनों देशों के बीच युद्ध की नौबत आ सकती है।'

इस बार मार्लिन ने सेठजी को बोलने का मौका न दिया और कहने लगी, 'भारत और पाकिस्तान के शासकों की राय भले ही कुछ हो लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि पड़ोसियों के बीच एक बार लड़ाई छिड़ गयी तो वर्षों तक चलती रहेगी। इतिहास कम से कम यही बताता है।'

सेठ चाँदमल ने कहा—'स्थिति मुझे भी ठीक नहीं मालूम पड़ती। लगता है कि मामला आसानी से न निबटेगा। कश्मीर की सीमा पाकिस्तान के अलावा अफगानिस्तान, चीन और रूस तक न फैली होती तो बात दूसरी थी। इसकी भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि बात बढ़ने पर दूसरे देश भी दिलचस्पी लेने से बाज न आयेंगे।'

सेठ चाँदमल के चुप होते ही कैम्पबेल बोल उठा—'आप ठीक कहते हैं सेठजी। यह लाभ उठाने का मौका है। चीन और रूस कम्युनिस्ट देश हैं। वे ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में रहते हैं, क्योंकि पड़ोसी को अपनी मैत्री के नाटक से प्रभावित करने के बाद उसके देश में अपने एजेण्ट भेजना आसान हो जाता है। कम्युनिस्ट एजेण्ट क्या करते हैं, यह आप जानते ही होंगे।

मार्लिन ने बात आगे बढ़ायी—'पाकिस्तान मजहबी जजबात के बल पर कायम हुआ है। उसके नेताओं की विचार-धारा देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वह कम्युनिस्ट देशों से कभी न मिलेगा। यदि भारत और पाकिस्तान का युद्ध छिड़ गया तो पश्चिमी देशों की ओर हाथ पसारने के सिवा और कोई रास्ता उसके सामने न रह जायगा। ऐसी अवस्था में रूस और चीन को कश्मीर में अपना प्रभाव जमाने का अवसर मिलने की दूसरी सम्भावना है।'

सेठ चाँदमल ने कहा—'इस सम्भावना को समाप्त करने का उपाय क्या हो सकता है? उस पर अमल न करने पर हमारी आर्थिक स्थिति भी डावाँडोल हो जायगी। हमारा नब्बे प्रतिशत व्यापार पश्चिम के देशों से है।'

'इतना ही नहीं सेठ जी,' कैम्पबेल ने कहा—'और भी हानि होगी। पश्चिमी देशों से व्यापार की जो क्षति होगी, वह तो होगी ही। पाकिस्तान-भारत के बीच जो व्यापार चल रहा है, वह भी नष्ट हो जायगा। यह छिपी हुई बात नहीं है कि भारत के लिए अच्छा बाजार है। एक ओर यह दशा होगी, दूसरी ओर फौजी खर्च बढ़ जायगा। इस खर्च की पूर्ति के लिए नये टैक्स लगाये जायेंगे। व्यापार में वृद्धि के साथ टैक्स में वृद्धि हो तो वह अखरता नहीं। लेकिन एक

ओर व्यापार चौपट हो और दूसरी ओर टैक्स बढ़े तो व्यापार करने वालों का कचूमर निकल जाता है।'

'क्यों मार्लिन,' उसकी ओर विशेष रूप से देखकर सेठ चांदमल ने कहा—'तुम्हें कोई हल नजर आ रहा है?'

मार्लिन ने कहा—'युद्ध विराम के बिना कोई भी हल कारगर नहीं हो सकता। यों मैं समझती हूँ कश्मीर का भी विभाजन होने पर यह समस्या हमेशा के लिए हल हो जायगी।'

मार्लिन की बात सुनकर सेठ जी चौंक से पड़े। उन्होंने इसकी कल्पना भी नहीं की थी। कुछ परेशान-से बोले वह—'यह असम्भव है मार्लिन, भारतीय जनता यह बरदाश्त नहीं कर सकती।'

'अन्तर्राष्ट्रीय गुत्थियाँ जनता की भावुकता से नहीं सुलझतीं,' मार्लिन ने कहा—'भारत की जनता कश्मीर का विभाजन नहीं स्वीकार कर सकती तो पाकिस्तान की सरकार ही कश्मीर का उतना अंश छोड़ने को क्यों तैयार हो जायगी जिस पर उसने पैर जमा लिये हैं।'

सेठ जी चुप रह गये। बात का सिलसिला जारी रखने के उद्देश्य से कैम्पबेल ने कहा—'युद्ध और उसके परिणाम से बचने के लिए कश्मीर का विभाजन स्वीकार करने के सिवा और कोई रास्ता नहीं है। ऐसी दशा में देश पर अतिरिक्त आर्थिक भार लादे रहने तथा वाणिज्य-व्यापार को चौपट करने वाली नीति को अपनाये रहने से कोई लाभ नहीं है।'

सेठ चांदमल ने कहा—'कुछ समय तक हालत यही रही तो व्यापार चौपट हो ही जायगा। लेकिन किया क्या जाय? राजनीतिज्ञ, व्यापारी नहीं है और व्यापारी राजनीतिज्ञ नहीं है।'

सेठ जी का कथन सुनकर मार्लिन मुस्करा उठी और बोली—

'आप भी कैसी बातें करते हैं सेठ जी। अमेरिका को देखिये न। वास्तव में वहाँ सरकार की नकेल उद्योगपतियों के हाथों में है।'

चिंतना में संलग्न कैम्पबेल ने यहीं बातचीत का रुख बदल देना उचित समझा। इसलिए उसने सेठ चांदमल को बोलने का मौका नहीं दिया और मार्लिन की ओर अर्ध गम्भीर दृष्टि से देखकर बोला—'इन नीरस बातों पर अब मिट्टी डालो मार्लिन। चलो, कहीं घूमने चलें।'

'डल लेक में शिकारे पर सैर अच्छी रहेगी।' मार्लिन ने अपनी इच्छा व्यक्त की, 'लेकिन सेठ जी शायद इस समय न जा सकें।'

सेठ जी ने मार्लिन के कथन की पुष्टि की और कहा—'क्षमा चाहता हूँ। इस समय जा न सकूँगा।'

मार्लिन और कैम्पबेल चले आये। घूमने का जिक्र तो बहाना मात्र था, वास्तव में वे सेठ जी को उलझन में छोड़ देना चाहते थे। यह काम हो चुका था। सीधे अपने होटल के कमरे में पहुँचे। वहाँ मार्लिन ने कैम्पबेल से कहा—'ऐसा लगता है कि कुछ लोग हमारी गतिविधि पर नजर रख रहे हैं।'

कैम्पबेल ने उत्तर दिया—'अखबारवालों की बात छोड़ दो मार्लिन। उन्हें कोई न कोई शिगूफा चाहिये ही।'

'नहीं मिस्टर कैम्पबेल,' मार्लिन बोली—'बात उड़ाकर हम सुरक्षित नहीं रह सकते। अखबार हुकूमत की बन्द आँखें खोल देते हैं।'

कैम्पबेल ने कहा—'यदि तुम कुछ करना चाहती हो तो मुझे कोई एतराज नहीं है। मैं समझता हूँ कि केवल मल्का को सम्भाल लेने पर सब काम हो जायगा। अजीज से मिलकर उसने व्यर्थ ही एक बवाल पैदा कर लिया है। हाँ, राकेश के सम्बन्ध में कुछ पता लगा?'

मार्लिन ने उत्तर दिया—'राकेश और अजीज का पीछा कई बार

करके भी मैं इससे अधिक कुछ और नहीं जान सकी कि दोनों किसी वजह से मल्का के आस-पास अधिक चक्कर लगाते हैं। कारण क्या है, यह मुझे नहीं मालूम।'

कैम्पबेल ने शराब का प्याला ओठों से लगाया और गम्भीर होकर कुछ सोचने लगा। मार्लिन का ध्यान भी दूसरी ओर था। वह उस संवाददाता का पता जानने के लिए उत्सुक थी जिसने सेठ चांदमल को चिन्ता में डाल देने वाला समाचार प्रकाशित कराया था।

मार्लिन को यदि यह ज्ञात होता कि उसकी हरकतों पर नजर रखने में किसी कारणवश संवाददाता क्षेमेन्द्र स्वयं दिलचस्पी ले रहा है तो उसके सम्बन्ध में किसी और दृष्टि से ही उसे विचार करना पड़ता।

बात यह थी कि अशोक से बातचीत होने के बाद से ही क्षेमेन्द्र अवसर मिलने पर सेठ चाँदमल के पीछे लग जाता था। उसने स्वयं कई बार मार्लिन को सेठजीके साथ घूमते देखा लेकिन प्रयत्न करके भी वह इसके अलावा और कुछ न जान सका कि मार्लिन घूमने के लिए कश्मीर आयी है। बीच-बीच में एक-दो दिन के लिए वह दिल्ली भी चली जाती है। कैम्पबेल उसके परिचितों में था।

अपने इस प्रयास में कौतूहल उत्पन्न करने वाली एक बात क्षेमेन्द्र को अवश्य नजर आयी थी उसने कई बार अजीज तथा उसके साथ रहने वाले युवक पर मार्लिन को नजर गड़ाते देखा था। सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध अजीज को वह पहचानता था किन्तु साथ के युवक राकेश से उसका कोई परिचय न था। कोशिश करके भी वह जान न सका था कि मार्लिन की दृष्टि सचमुच अजीज पर थी या राकेश के कारण ही उसकी नजर अजीज पर भी पड़ जाती थी।

उस दिन बात ही बात में उसने यह 'खोज' अशोक को बता दी

जो सेठों और विदेशी युवतियों की मैत्री के समाचार के प्रकाशन का अर्थ न समझ सकने के कारण परेशान था। क्षेमेन्द्र के मुँह से नयी बात सुनकर उसका कौतूहल और बढ़ गया था और उसने क्षेमेन्द्र को अजीज से मिल कर उसे अपनी शंका की सूचना देने की राय दे दी थी। यही कारण था कि जिस समय मार्लिन और कैम्पबेल होटल में राकेश और अजीज की चर्चा कर रहे थे, क्षेमेन्द्र एक रेस्तराँ में काफी पीते-पीते अजीज से बातें कर रहा था। राकेश भी तब अजीज के ही साथ था।

क्षेमेन्द्र ने सीधे-सीधे अजीज से कोई बात नहीं की। कश्मीर के सम्बन्ध में पाकिस्तान के प्रचार की भूमिका बाँध कर उसने अपना समाचार सामने ला पटका और इस पृष्ठभूमि में ही एक-एक बात कह गया। अजीज पर मार्लिन की नजर का जिक्र उसने इस प्रकार किया कि उसे प्रश्नोत्तर में उलझ जाना पड़ा।

अजीज का पहला प्रश्न था—'क्या मार्लिन के साथ कभी कोई हिन्दुस्तानी औरत नजर नहीं आयी?'

'नहीं!' क्षेमेन्द्र का उत्तर था।

'कैम्पबेल कौन है?'

'किसी बहुत बड़ी विदेशी कम्पनी का एजेण्ट।'

किसी नतीजे पर न पहुँच सकने के कारण अजीज ने राकेश से पूछा—'मार्लिन तुमसे परिचित तो नहीं है राकेश?'

'किसी विदेशी युवती से मेरा कोई परिचय नहीं है।' राकेश ने उत्तर दिया—'मुझे तो सारी बातें अलिफलैला के किस्से-सी लगती हैं।'

अशोक तब तक चुप बैठा था। उसने अलिफलैला का नाम

सुना तो हँस पड़ा यह सोच कर कि सम्भव है, यह सब कहानी बन कर ही रह जाय।

अजीज कुछ गम्भीर अवश्य था। उसके दिमाग में यह बात चक्कर काट रही थी कि 'यदि मार्लिन और कैम्पबेल के साथ इश्तियाक या मल्का का परिचय हो तो फिर इन बातों के पीछे कोई षड्यंत्र भी अवश्य हो सकता है।' मुसीबत यह थी कि वह मल्का नाम जबान पर नहीं ला पा रहा था। मल्का को लेकर इश्तियाक से होने वाली झड़प के बाद से उसके सम्बन्ध में कुछ कहने से पूर्व सतर्क हो जाने की उसकी आदत पड़ गयी थी।

बातचीत जम नहीं रही थी और गम्भीरता से क्षेमेन्द्र को परहेज था। उसने अशोक की ओर देखकर चलने की इच्छा प्रकट की। राकेश भी ऊब चुका था। काफी का दाम चुकाने के लिए उसने जेब से मनीबेग निकाला और उसे खोलकर नोट निकालने लगा। अशोक की निगाह मनीबेग पर पड़ी तो वह उसमें लगा सुचिता का चित्र देख कर चौंक पड़ा। वह कुछ कहने ही वाला था कि रेडियो पर प्रसारित इस समाचार ने उसका ध्यान बँटा दिया—'भारत सरकार ने कश्मीर का मसला राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद में पेश करने का निर्णय किया है। भारत की ओर से कल शिकायत-पत्र जाब्ते से पेश कर दिया जायगा।'

यह समाचार सुनकर सब लोग एक बार सन्नाटे में आ गये। ऐसा लगा कि रेस्तराँ कोई है ही नहीं। दूसरे ही क्षण रेस्तराँ शोर-गुल से भर गया। प्रत्येक व्यक्ति नये समाचार की चर्चा में मशगूल हो गया। अशोक को खींचते हुए क्षेमेन्द्र ने कहा—'अब मैं एक क्षण भी नहीं रुक सकता। यहाँ की प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में मुझे शीघ्रातिशीघ्र अपने अखबार के लिए टेलीग्राम भेजना होगा।'

क्षेमेन्द्र ने फिर किसी की प्रतीक्षा नहीं की। अशोक को खींचता हुआ वह बाहर निकल गया। इस प्रकार अशोक के मुँह की बात मुँह में ही रह गयी और राकेश को यह पता न चल सका कि जिस सुचिता का पता पाने के लिए वह दिन-रात चिन्ता में घुला करता है, उसकी मौत का गवाह उसके सामने ही बैठा था।

उधर अशोक को बाहर रुकने का भी मौका नहीं मिला। क्षेमेन्द्र पास से गुजरने वाली टैक्सी को रोक कर उस पर सवार हो गया। अपने साथ ही उसने अशोक को भी बैठा लिया और टैक्सी से उसे नीचे उतारा तब जब वह उसके होटल के नीचे पहुँच गयी।

इधर राकेश और अजीज रेस्तराँ से बाहर निकलकर आम सड़क पर पहुँचे तो उन्हें अजीब तरह की हलचल से भरा दृश्य नजर आया। जिस मोटर पर उनकी नजर पड़ती, उन्हें उसकी रफ्तार जरूरत से ज्यादा तेज दिखाई देती। इस असाधारण रफ्तार से ही पचीसों कारें इधर से उधर और उधर से इधर आती-जाती दिखाई दे रही थीं। सतर्कता के लिए बजाये जाने वाले हार्नों ने दहशत से भरा विचित्र वातावरण उत्पन्न कर दिया था। पैदल चलने वालों के कदम इतनी तेजी से उठ रहे थे मानो लोग किसी अजीब जन्तु को देखने के लिए टूट पड़ना चाहते हों। कहीं भी कोई अकेला खड़ा नजर नहीं आता था। न चलने वालों पर जहाँ भी नजर पड़ती, वहाँ वे झुंड के झुंड नजर आते। सबका चेहरा विस्मय तथा आवेश से भरा दिखाई देता था। बातें लोग इस प्रकार कर रहे थे मानो, भूचाल आकर समाया हुआ हो।

अजीज का ध्यान नेशनल कांफ्रेंस के कार्यालय पर लगा था। इधर ही कदम बढ़ाने के बजाय यदि इस समय वह मल्का के बंगले की ओर बढ़ जाता तो उसके सम्बन्ध में अपनी धारणा पुनः बदलने के

लिए उसे बाध्य होना पड़ता, क्योंकि मार्लिन और कैम्पबेल तब तक वहाँ पहुँच चुके थे।

मल्का का कमरा चारों ओर से बन्द था और मार्लिन आवेश भरे स्वर से मल्का से पूछ रही थी—'मेरा समाचार तुम पाकिस्तान के अधिकारियों तक पहुँचा सकी या नहीं ?'

उत्तर में मल्का ने पहले मार्लिन का धन्यवाद किया और बोली—'सफलता के लिए बधाई। 'बास' का हुक्म मिला है कि 'लोगों को उत्तेजित करने वाला प्रचार तेज होना चाहिये। सुरक्षा-परिषद में भारत द्वारा शिकायत पेश किये जाने के बाद ही कश्मीर के किसी भी क्षेत्र पर तेज हमला किया जा सकता है। उस समय खौफ पैदा करने-वाली खबरें तेजी से फैला दी जायँ ताकि कश्मीर में आंतरिक शान्ति छिन्न-भिन्न हो जाय और हमारे एजेण्ट सरलता से अव्यवस्था उत्पन्न कर सकें। अब हमें अपने काम की रफ्तार तेज करनी होगी।'

मार्लिन ने कहा—'मुझे कल ही नयी दिल्ली पहुँच जाना होगा। तुम्हारी मदद के लिए मिस्टर कैम्पबेल यहीं रहेंगे। सारा काम साव-धानी से होना चाहिये। कल सुबह तक 'सिक्यूरिटी फोर्स' की निगाहें तेज हो जायँगी। वातावरण में उत्तेजना भरती जा रही है। सरकार गाफिल नहीं रह सकती। यह भूल न जाना मल्का कि कश्मीर सरकार को लड़ाई का मोर्चा सम्भालने की चिन्ता नहीं है। यह काम भारतीय फौजें कर रही हैं। सरकार का काम आंतरिक शांति को बनाये रखना है। इस फर्ज को अंजाम देने से वह बाज नहीं आयेगी। हम अशांति और उपद्रव चाहते हैं। सम्भावित संघर्ष का केंद्र-बिंदु यही है। इसको ओर से गफलत हमारी हस्ती मिटा सकती है।'

अपने उत्तर से जब मल्का ने दोनों को भली-भांति आश्वस्त कर

दिया तब कैम्पबेल ने कहा—'हम जा रहे हैं। मशीनों का सौदा तय करने के लिए, सेठ चांदमल ने यही समय निश्चित किया है।'

मल्का ने मुस्कराते हुए मार्लिन और कैम्पबेल को बिदा किया। कुछ ही मिनटों में उनकी कार सेठ चांदमल के बंगले के दरवाजे पर जा लगी। कैम्पबेल ने कार से नीचे उतर कर दरवाजे पर लगी घंटी बजायी। नौकर ने आकर दरवाजा खोला और उन्हें सूचना दी कि 'सेठ जी बाहर गये हैं।'

कैम्पबेल ने नौकर से पूछा—'कहाँ गये हैं?'

नौकर ने उत्तर दिया—'यह मालूम नहीं।'

मार्लिन को दूसरे ही दिन नयी दिल्ली के लिए रवाना होना था, अतः सेठ जी प्रतीक्षा करने के लिए वह तैयार न हुई। कैम्पबेल ने भी रुकने के लिए जोर नहीं दिया। वह केवल यही जानना चाहता था कि कश्मीर का मामला सुरक्षा-परिषद में पेश करने के भारत सरकार के निर्णय से सम्बन्धित समाचार की प्रतिक्रिया सेठजी पर कैसी हुई है। मार्लिन का इरादा कुछ और था। वह भारत सरकार के निर्णय के पक्ष में कुछ उद्योगपतियों द्वारा मत प्रकट कराने के कार्य में सेठ जी की सहायता प्राप्त करने की इच्छुक थी। सेठ जी से मुलाकात नहीं हुई तो उसने अपनी इच्छा कैम्पबेल को भी नहीं बतायी, क्योंकि ऐसा करने में बातचीत के फैलने का भय था और मार्लिन यह नहीं चाहती थी। हर हालत में दूसरे दिन नई दिल्ली में पहुँच जाना उसका प्रधान लक्ष्य था।

सुबह होते ही पहले हवाई जहाज से मार्लिन नई दिल्ली के लिए रवाना हो गयी। इधर रातो-रात कश्मीर की घाटी में हजारों पर्चे बांटे जा चुके थे जिनमें यह दावा किया गया था कि जंग के मोर्चे पर पिटने के कारण भारत अब राष्ट्रसंघ की शरण में जाना चाहता है। एक पर्चे

में कश्मीरवालों को शीघ्र ही गुलामी से रिहा करने का भरोसा भी दिलाया गया था और इस लाभ के नाम पाकिस्तान की मदद के लिए उनका आह्वान किया गया था।

इस काम में इश्तियाक का अच्छा-खासा हाथ था। काम उसने इतनी खूबसूरती से किया था कि मल्का भी दंग रह गयी थी। उसने कभी यह आशा नहीं की थी कि इश्तियाक ऐसी क्षमता का भी परिचय दे सकता है। इश्तियाक का सामना होने पर उसने खुलकर उसकी प्रशंसा की।

मल्का का बदला हुआ रुख इश्तियाक के दिल में धधकती आग को ठंठी न कर सका। कश्मीर को पाकिस्तान के हाथ में देखने की उसकी इच्छा पागलपन के रूप में बदल न चुकी होती तो वह मल्का द्वारा लुटायी जाने वाली प्रशंसा को 'कटे पर नमक' की संज्ञा प्रदान करने से बाज न आता। वह चाहता था मल्का से संघर्ष करना लेकिन ऐसा कर नहीं पा रहा था, क्योंकि कश्मीर में रहकर पाकिस्तान की सहायता करने में उसे रुपये-पैसे से जितनी मदद मल्का द्वारा प्राप्त होती थी, उतनी किसी अन्य से प्राप्त होने की आशा नहीं थी। मल्का की खूबसूरती के फलस्वरूप उसके प्रति उत्पन्न आसक्ति ने उसकी दुर्बलता और बढ़ा दी थी।

इश्तियाक की इस दुर्बलना से मल्का अनभिज्ञ न थी। उसकी सफलता और कार्य-कुशलता को देखकर मल्का ने उसकी दुर्बलता का ही सहारा लेकर उसे खुश करने की चेष्टा की। बात करने का उसका तरीका बदल गया, वह नशीली शक्ल में उभर आया। साधारण रूप में हिलने-डुलने वाले ओठ अपने अंतर में मादक नृत्य की थिरकन समेट कर सामने आ गये। आँख की पुतलियाँ खंजन की चपलता को मात करने लगीं। पलकें हिलतीं तो आमंत्रण का संकेत समेट कर।

कपोलों की रक्तिम आभा भावों के उतार-चढ़ाव के साथ आँख-मिचौनी खेलती प्रतीत होती। मोती-से दाँतों की चमक तभी दमकती जब ओठों की नजाकत को प्रकाश की आवश्यकता होती।

खोया-सा, ठगा-सा इश्तियाक यह समझ न सका कि यह इन्द्रजाल है अथवा वास्तविकता। उसकी आँखें यद्यपि खुली थीं, तथापि वह नींद में था। यही कारण है कि जब मल्का ने शराब का प्याला उसकी ओर बढ़ाकर उसे ग्रहण करने का आग्रह किया तो वह इस प्रकार चौंक उठा मानो निद्रावस्था में कसकर झकझोरा गया हो।

शराब के प्याले को भली-भांति हाथ में लेने से पूर्व उसे स्वप्निल आँखों से देखकर इश्तियाक ने कहा—'जरा से काम की इतनी बड़ी कीमत!'

मल्का ने मुस्करा कर जवाब दिया—'वह पैमाना ही क्या जिसमें शराब खुद-बखुद छलक न पड़े।'

'और वह शराब ही कैसी जिसे देखकर ही आँखें रंगीन न हो जायँ।' साहस बटोर कर बोला इश्तियाक—'मुझे डर लग रहा है मल्का। यह शोखी लम्बी तनहाई का पैगाम न साबित हो जाय।'

'तुम्हें तनहाई से इतना डर लगता है?'

'मंजिल के पास पहुँचकर उससे दूर होना तुम भी बरदाश्त नहीं कर सकती।'

'दरिया का किनारा देखा है?'

'हाँ।'

'और किनारे से टकराकर दूर चली जाने वाली मौजों को?'

'वे किनारे से टकराती हैं, टकराकर दूर हटती हैं;....और....।'

'और फिर किनारे की ओर लौट पड़ती हैं।'

मल्का हँस पड़ी। इश्तियाक को लगा जैसे बाजी उसके हाथ से निकल गयी, उसने मुस्कराने की कोशिश की।

मल्का ने पूछा—'तुम खुश हो ?'

इश्तियाक ने जवाब दिया—'गम इसलिए है कि यह खुशी छिन न जाय।'

मल्का बोली—'पहले गम को मिटा दो।

इश्तियाक ने पूछा—'कैसे ?'

मल्का ने जवाब दिया—'शराब पीकर।'

मल्का का उत्तर सुनकर इश्तियाक की निगाह हाथ में पकड़े हुए प्याले की ओर पलट गयी। वह लज्जित-सा हो गया। प्याला जैसे का तैसा था। शराब की एक बूँद भी कम न हुई थी।

इश्तियाक ने प्याला मुँह से लगाया और एक ही साँस में उसने प्याला खाली कर दिया।

मल्का बोली—'अब जाओ इश्तियाक, फिर मुलाकात होगी।'

उसका आग्रह स्वीकार करके इश्तियाक लौटना ही चाहता था कि दरवाजे के पास गुलरुख पर दृष्टि पड़ गयी। उठा हुआ कदम उठा ही रह गया। इश्तियाक सोचने लगा—'गुलरुख..... !'

तब तक गुलरुख कमरे के अन्दर पहुँच गयी जहाँ शराब की महक की लपट लहरा रही थी।

उसे देखते ही मल्का आगे बढ़ गयी और हाथ पकड़ कर आत्मीयता उँडेलती हुई बोली—'बाद मुद्दत यहाँ आई हो गुलरुख। कुछ खफा हो क्या ?'

गुलरुख ने इश्तियाक को देखकर संकोच प्रकट किया तो मल्का हँस पड़ी। इश्तियाक की ओर देखते हुए उसने कहा—'शाम को

तुम्हारा इन्तजार करूँगी। मिलने के स्थान की सूचना तुम्हें मिल जायगी।'

इच्छा के विपरीत इश्तियाक को वहाँ से हट जाना पड़ा। वह चला गया तो मल्का ने गुलरुख को बाँहों में भर कर पास के सोफे पर बैठा दिया और बोली—'बड़ी बेपीर हो गुलरुख। इतने दिनों के बाद आज खबर लेने आयी हो।'

'नौकरी करती हूँ न', गुलरुख ने कहा—'तुम आजाद हो। मेरा और तुम्हारा मुकाबला क्या!'

'लड़कर किसी से आ रही हो क्या?'

'लड़ने के लिए आयी हूँ।'

'किससे?'

'तुमसे।'

'मुझसे!'

'हाँ।'

'वजह?'

'तुमने इश्तियाक से मेरा परिचय इसलिए कराया था कि वह मेरा पीछा करे?'

मल्का को तत्काल इस प्रश्न का जवाब न सूझा। एक-दो मिनट तक कुछ सोचने के बाद बोली वह—'वह बेवकूफ है लेकिन आदमी बुरा नहीं है। शराब के नशे में तुम्हारे पीछे लग गया होगा।'

'शराब पीने के बाद भला आदमी भी बुरा हो जाता है', गुलरुख ने कहा—'मुझे उसकी हरकत पसन्द नहीं है। तुम चाहो तो उसे रोक सकती हो।'

मल्का ने इश्तियाक को समझाने का वादा गुलरुख से किया और बोली—'अब तो झगड़ा समाप्त हुआ न?'

गुलरुख मुस्करा कर रह गयी। मल्का ने ही पुनः बात छेड़ी—'अब तो जंग के रुकने का आसार नजर आने लगा है।'

गुलरुख ने सोफे से उठ कर कहा—'माफ करना। आज शिकायत करने ही आयी थी। अस्पताल का समय हो गया है। फिर कभी आऊँगी।'

और गुलरुख चली गयी।

आज भारत-सरकार के नये निर्णय के फलस्वरूप सारे कश्मीर का वातावरण बदल गया था। कहीं आशंका का जोर था। कहीं भय छाया हुआ था। कहीं सनसनी फैली हुई थी। मजदूर, इंजीनियर, क्लर्क, अधिकारी, दूकानदार, व्यापारी, डाक्टर और वकील, प्रत्येक वर्ग के लोग किसी न किसी प्रकार के मानसिक तूफान की चपेट में पड़ चुके थे। बरी रह गया था सम्भवतः इससे केवल अशोक। रेस्तराँ से उसे होटल तक पहुँचा कर क्षेमेन्द्र चला गया था कहीं हलचल की राजनीतिक जानकारी हासिल करने और जाते जाते इसका महत्त्व भी बताता गया था

अशोक को। लेकिन अशोक के माथे में नयी बात धँसी ही नहीं थी तनिक भी। उसके दिमाग में केवल एक बात चक्कर काट रही थी और इसका सम्बन्ध था राकेश के मनीबेग में नजर आने वाले सुचिता के चित्र से।

सोचता था कभी अशोक—'राकेश से इसका सम्बन्ध क्या हो सकता है?'—और कभी यह—'उसकी मौत का समाचार मालूम है क्या उसे?' इन दो प्रश्नों पर उसने अनेक बार अनेक प्रकार से विचार किया लेकिन सन्तोषजनक उत्तर तब भी हाथ न लगा। इतना विश्वास उसे अवश्य हो गया कि सुचिता की मौत की खबर राकेश को मालूम न होगी क्योंकि ऐसा न होता तो सुचिता की लाश, लावारिस औरत की लाश की भाँति नाले में पड़ी नजर न आती। लेकिन यह विश्वास भी दिल की तसल्ली के लिए ही था। सन्तुष्ट इससे भी नहीं था वह और असन्तुष्ट रहने का कारण एक नहीं था। कारण अनेक थे। उसकी विचार-धारा का स्रोत अनेक छोटी-छोटी धाराओं में विच्छिन्न होकर अपनी शक्ति खो बैठा था। ऐसी किसी भी एक धारा में किसी एक ही धारणा को बलपूर्वक बहा से जाने की शक्ति नहीं रह गयी थी।

इस ऊहापोह में सारा दिन बीत गया। फिर रात भी गुजर गयी। दूसरे दिन का सूर्य सिर पर चमकने लगा। फिर भी अशोक के मस्तिष्क की उलझन समाप्त न हुई। वह सुचिता की मौत की खबर स्वयं सुनाना नहीं चाहता था राकेश को, यह सोचकर कि न जाने कैसा प्रभाव पड़े इसका उस पर। यों ही, खोया-खोया-सा दिखाई देता है। वह भावुक भी मालूम होता है। सुचिता से उसका सम्बन्ध निकट का रहा हो तो सम्भव है उसकी मौत का समाचार सुनकर वह अपनी मौत को ही आमन्त्रित कर बैठे।'

जब मस्तिष्क में कोई बात न धँसी तब उसका ध्यान क्षेमेन्द्र की ओर आकृष्ट हुआ और सोचने लगा अशोक -- 'क्या यह राज क्षेमेन्द्र पर प्रकट कर देना चाहिये ? उसने राकेश को इसका हाल बता दिया तो ? राकेश को धक्का लगेगा। सम्भव है वह इसे बरदाश्त न कर सके और उन महत्त्वपूर्ण घटनाओं के नाटक से पृथक् हो जाय जिनका एक पात्र वह भी है। तब ? तब नाटक अधूरा भी रह सकता है।

अशोक किसी निर्णय पर न पहुँच सका। उसने अपने बक्स से सुचिता का वह फोटोग्राफ निकाला जो उसने पहाड़ी नाले के पास खींचा था। वह तन्मय होकर उसे देखने लगा। फोटोग्राफ उसे कविता के रूप में लगा—ऐसी कविता के रूप में जिसके आरम्भिक चरण में सौन्दर्य का निखार हो और अन्त हो जिसका वेदना से ओत-प्रोत।

चित्र देखते-देखते भावुक चित्रकार अशोक भावुकता में डूब गया काफी देर तक डूबा ही रहा भावुकता में। फिर वह उठा। उसने स्टैण्ड खड़ा किया। फ्रेम में कागज मढ़कर फ्रेम को स्टैण्ड पर टिकाया। रंग की प्यालियाँ निकालीं, कई रंग तैयार किये। तब उसने तूलिका हाथ में ली और फिर चल पड़ी सफेद कागज पर सधे हुए चित्रकार की मँजी हुई तूलिका। पहले रेखाएँ उभड़ीं—तिरछी, आड़ी और सीधी। फिर रेखाएँ एक-दूसरे में मिलीं और नजर आने लगी आकृति। तब बारी आयी रूप और रंग के निखार की। अशोक ने सुचिता का फोटोग्राफ अपने सामने रख लिया और उसका चित्र बनाने में हो गया दत्तचित्त।

उसे न तो भूख लगी, न प्यास। सारा दिन गुजर गया। यह भी ज्ञात हुआ उसे तब, जब प्रकाश प्राप्त न होने की सूचना आँखों ने मस्तिष्क को दी। मस्तिष्क से निर्देश पाकर हाथ रुक गया और रुक गयी उसके साथ-साथ तूलिका की गति।

अशोक ने स्वप्निल नेत्रों से देखा खिड़की की ओर। हिमाच्छादित पहाड़ों की ऊँची-नीची चोटियाँ अन्तरिक्ष की सफेदी में घुल-मिल गयी थीं, सूनी-सूनी हिमानी उपत्यकाओं पर कुहासे की चादर-सी थी। उपत्यकाओं से पहले—खिड़की की ओर झील का जल अपनी गति खो कर जड़-सा हुआ दिखाई दे रहा था। उसके किनारे लगा हुआ था एक शिकारा, जिसकी पतवार तो पानी में डूबी हुई थी किन्तु आरोही कोई नजर नहीं आ रहा था। झील के किनारे से सड़क तक फैली हुई वृक्ष-पंक्ति विश्राम के लिए उद्यत थके-हारे सैनिकों की पंक्ति की भाँति दिखाई देती थी। परिन्दा-पक्षी नाम के लिए भी नजर नहीं आ रहा था। नीचे सड़क का कालाहल शान्त प्राकृतिक सुषमा और सांसारिक मोहमाया के बीच विभाजन रेखा का भान करा रहा था। यत्र-तत्र जलने वाले बिजली के लट्टुओं का प्रकाश इसके प्राण का कम्पन बना हुआ था।

कठोर श्रम के बाद विश्राम की इच्छा पूरी करने के निमित्त हाथ से कुदाल जमीन पर रखने वाले श्रमिक की भांति अशोक ने तूलिका हाथ से छोड़ दी। चित्र उसने एक कपड़े से ढँक दिया और उसके सहित स्टैण्ड को ले जाकर खड़ा कर दिया एक कोने में।

मस्तिष्क क्लांत था; शरीर श्लथ। अशोक ने बिजली नहीं जलायी। अन्धकार में ही लेट गया पलंग पर चुपचाप! नींद की आकांक्षा बलवती हो गयी। फिर भी नींद आयी नहीं। उसके लिए अशोक के हृदय का आग्रह ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता, त्यों-त्यों वह दूर भागती जाती। इसके फलस्वरूप उत्पन्न मानसिक व्यथा की अनुभूति को अशोक ने करवटों से ढँक देना चाहा लेकिन उसे सफलता न मिली। अन्त में उसने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। वह उठ कर खड़ा हो गया। उसने बिजली जलायी, कपड़े बदले और कमरे से

बाहर निकल कर बरामदे में खड़ा हो गया। दो-चार मिनट तक वह सड़क पर नजर आने वाले जन-आलोड़न को देखता रहा। फिर होटल से बाहर निकल कर स्वयं भी भीड़भाड़ में घुल-मिल गया।

वह चला जा रहा था—निरुद्देश्य, निर्लक्ष्य। मानसिक दशा यह थी कि मोटर या गाड़ी जब तक बिलकुल पास न आ धमकती, वह उससे बचने का उपक्रम न करता। इस दशा में ही घूमते-फिरते वह चाँदमल के बँगले के पास पहुँच गया जहाँ उसके पैर आप से आप थम गये और वह टकटकी लगाकर बँगले की ओर देखने लगा। संयोगवश दो-तीन मिनट पूर्व ही मल्का के साथ इश्तियाक बँगले से बाहर निकला था। दूसरे किनारे खड़ी कार पर सवार होने से पूर्व ही उसकी निगाह अशोक पर पड़ गयी। उसे एक टक बँगले की ओर निहारते देखकर इश्तियाक विस्मित हुआ। उसने बहाना करके मल्का का साथ छोड़ दिया और जब मल्का चली गयी तब एक ओर रुक कर अशोक की गति-विधि पर नजर रखने लगा।

सेठ चाँदमल के बँगले के सामने पैर थम क्यों गये थे, यह अशोक स्वयं ही नहीं जानता था। अर्धचेतनावस्था में वह पाँच-सात मिनट तक अपने स्थान पर खड़ा रहा। इसके पश्चात् वह स्वयं ही आगे बढ़ गया। उसे यह ज्ञात न हो सका कि इश्तियाक उसका पीछा कर रहा है।

आध घण्टे की पद-यात्रा के बाद अशोक जा पहुँचा अजीज के घर। उसने राकेश को पुकारा जो संयोगवश उसी समय बाहर से लौटा था। आवाज सुनकर वह दरवाजे से बाहर निकला। अशोक को सामने देखकर उसे कुछ आश्चर्य हुआ क्योंकि दो ही दिन पूर्व रेस्तराँ में उससे उसका परिचय हुआ था।

राकेश ने कहा—'आप !'

दार्शनिक की भांति बोला अशोक—'दिखावटी तहजीब की जरूरत नहीं है। 'तुम' से ही काम चल जायगा।'

राकेश के हृदय में कौतूहल जाग उठा। उसने एक बार आँखें भर कर अशोक की ओर देखा। फिर मुस्कराते हुए बोला—'यहीं सही, अन्दर आ जाओ।'

अशोक को भी हँसी आ ही गयी। हँसते हुए ही उसने राकेश का हाथ पकड़ा और अन्दर चला गया।

दूर खड़ा इश्तियाक यह सोच रहा था–'मुझे भी मकान में दाखिल होना चाहिये या नहीं।' तब तक 'पट्' की हलकी-सी आवाज उसके कानों में पड़ी। उसने निगाह ऊपर उठायी तो सामने दरवाजा बन्द नजर आया। यह देख कर उसने मकान के अन्दर जाने का इरादा छोड़ दिया।

उधर कमरे में पहुँचते-पहुँचते राकेश ने अशोक से पूछा—'मुझे याद करने का कारण?'

'अशोक ने उत्तर दिया—'एक उलझन को सुलझाने का प्रयास।'

'सुन सकता हूँ?'

'पहले एक बात बताओ,' बैठते हुए अशोक ने कहा—'तुम कुछ उदास रहा करते हो?'

राकेश को प्रश्न विचित्र-सा लगा। वह मजाक के लहजे में कुछ कहना ही चाहता था कि सुचिता की याद आ गयी। सोचा राकेश ने–'कुछ जानना है क्या अशोक को सुचिता के सम्बन्ध में?'

तत्काल उत्तर न पाकर अशोक ने अपना प्रश्न दोहराया तो राकेश की तन्द्रा टूटी। उसने कहा—'हो सकता है, तुम्हारा अनुमान ठीक हो।'

'मेरा अनुमान !' अशोक बोला—'मेरा अनुमान तो यह है कि तुम्हारा कोई अजीज तुम से खो गया है और उसका गम तुम्हें सताया करता है ?'

'अशोक !'

'तुम्हें आश्चर्य हो रहा है राकेश ?'

'हाँ।'

'क्यों ?'

'क्योंकि तुम ऐसी बात कह रहे हो जो बिलकुल ठीक है।'

अशोक सोच में पड़ गया, फलतः उसने तत्काल दूसरा प्रश्न नहीं पूछा। राकेश को मौन खलने लगा। उससे रहा नहीं गया। आतुरता से उसने पूछा– 'तुम्हें यह मालूम कैसे हुआ ?'

अपनी उद्विग्नता को बलपूर्वक दबाकर अशोक ने कहा—'पहले यह बताओ कि उससे तुम्हारा सम्बन्ध क्या था ?'

भावोद्रेक से अवरुद्ध कण्ठ-स्वर को स्पष्ट करने का प्रयास करते हुए राकेश ने कहा–'मेरी बहन है सुचिता। दुनिया में उससे अधिक प्यार मुझे और किसी से नहीं है। उसके अतिरिक्त कोई और रह भी नहीं गया है मेरा इस संसार में। जिस समय बारामूला पर कबायलियों ने आक्रमण किया था, वह मेरे साथ थी। वहाँ मुझे गोली लगी और मैं बेहोश हो गया तब से उसका पता नहीं है।'

राकेश का कंठ भर आया। वह चुप हो गया। आँखों से आँसू बहने लगे। अशोक का चित्त भी खिन्न हो उठा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि 'इस विषय की चर्चा क्यों की मैंने ?' अर्ध विक्षिप्त-से व्यक्ति-सी दशा थी उसकी। राकेश को सांत्वना देने के लिए शब्द नहीं सूझ पड़ते थे। दशा अपराधियों-सी हो गयी थी।

विह्वल होकर कहा राकेश ने—'कुछ जानते हो तुम अशोक ?'

अशोक ने कहा—'उसका कोई चित्र है तुम्हारे पास ?'

उत्तर में राकेश ने अपना मनीवेग खोलकर अशोक को वही चित्र दिया, रेस्तरा में देखकर जिसे अशोक चौंक पड़ा था। एक बार पुनः उस चित्र के सामने आने पर अशोक ने वृश्चिक-दंशन-सी पीड़ा का अनुभव किया और मन ही मन अपनी जल्दबाजी पर पश्चात्ताप करने लगा।

आशा और निराशा के बीच झूलने वाले राकेश ने ही इस बार भी शांति भंग की यह पूछकर—'पहचानते हो अशोक ?'

मौन अशोक ने अपनी आँखें राकेश के मुख पर जमा दीं। उसका भोलापन देखकर उसे पीड़ा हुई। उसे लगा कि कुछ न बोलने पर राकेश की आँखें छलछला उठेंगी और वह रो पड़ेगा। उसकी अपनी दशा भी कम विचित्र नहीं थी। सत्य बात कहने का साहस नहीं हो रहा था। सत्य की भांति प्रतीत होने वाली असत्य बात मस्तिष्क को सूझ नहीं रही थी। झुँझलाहट का आवेग इतना प्रबल था कि उसे बलपूर्वक दबाना पड़ रहा था।

राकेश को एक-एक क्षण भारी लग रहा था। उससे इंतजार करते न बन पड़ा। कहा उसने—'तुम्हारा मौन अशुभ कल्पनाओं को जन्म दे रहा है अशोक। आखिर तुम बोलते क्यों नहीं ? तुम्हें कुछ मालूम है तो बता दो मुझे। मैं कलेजा पत्थर का बना लूंगा।'

स्वप्न-विमूढ़ सा बोला अशोक—'मुझे क्षमा करना राकेश। मैं नहीं समझता था कि स्वप्न इतना सत्य हो सकता है। सुचिता के सम्बन्ध में मैं ठीक-ठीक कुछ भी नहीं बता सकता। मेरी जिज्ञासा अपने स्वप्न पर आधारित थी।'

राकेश ने पूछा—'स्वप्न देखा था तुमने !'

'हाँ।' अशोक का छोटा-सा उत्तर था।

'क्या देखा था तुमने स्वप्न में ?'

'मरघट पर जलती हुई चिता, जिसके पास खड़े होकर आँसू बहा रहे थे तुम।'

राकेश ने अपना मुँह दोनों हाथों से ढँक लिया। उसका कलेजा फट-सा रहा था। असह्य वेदना से तड़फड़ा कर कहा उसने—'सब कुछ स्वप्न ही था तो इतनी गम्भीरता से बात करने की क्या आवश्यकता थी अशोक ! तुमने मेरी शेष आशा भी नष्ट कर दी। नहीं मालूम था कि भाग्य इतना क्रूर मजाक भी कर सकता है !'

अशोक ने कुछ नहीं कहा। चुपचाप अपने स्थान से उठकर बढ़ गया वह दरवाजे की ओर। वहाँ एक क्षण तक रुककर उसने राकेश की ओर देखा। इतनी ही देर में आँसू की एक बूँद उसके नयन कोर में उमड़ पड़ी। अशोक ने मुँह घुमा लिया और दरवाज खोलकर बाहर निकल गया।

अशोक आवश्यकता से अधिक उद्विग्न था। उसे यदि पता लग जाता कि इश्तियाक चोर की भांति उसके पीछे लगा हुआ है तो परिणाम की परवाह किये बिना वह उससे बुरी तरह उलझ जाता। लेकिन वह अवसर उत्पन्न नहीं हुआ। एक तो अशोक स्वयं ही गाफिल था, दूसरे, इश्तियाक भी बड़ी सावधानी से उसका पीछा कर रहा था।

मार्ग में कहीं रुके बिना वह सीधा होटल में पहुँचा और कमरे में पहुँच कर कपड़े बदले बिना ही पलंग पर लेट गया। इश्तियाक ने यह देख लिया। उसके ओठों पर मुस्कराहट नाच पड़ी। अपनी सफलता का समाचार मल्का को सुनाने के लिए वह उसके बंगले की ओर चल पड़ा।

इस दिन पहली बार मल्का ने रात के समय इश्तियाक को अपने कमरे में मौजूद पाया था। वह ताड़ गयी कि इश्तियाक कोई न कोई खास बात सुनाने के लिए ही इस समय आया है। भूमिका बाँधकर समय नष्ट करने का मौका उसे न मिले, इस गरज से कमरे में उसका कदम पड़ने के साथ ही वह बोल उठी—'कौन-सा तीर बैठ गया है आज निशाने पर ?'

इश्तियाक आतुर था ही। चट से बोल उठा—'जो तुम्हारी नाकामयाबी का सबूत बन चुका है।'

'तुम्हारा मतलब ?'

'कम से कम राकेश के एक दोस्त का पता मैंने लगा ही लिया।'

मल्का हँस पड़ी। यह तथ्य उसकी समझ में आ चुका था कि वासना-विदग्ध व्यक्ति इच्छित नारी के समक्ष अपनी नगण्य सफलता का उल्लेख करने में भी पर्याप्त गौरव का अनुभव करता है। फिर भी उसने इश्तियाक का दिल तोड़ने वाली कोई बात नहीं कही क्योंकि वह बेपैसे का गुलाम हो रहा था और मल्का को ऐसे गुलाम की आवश्यकता थी।

इश्तियाक को उसकी सफलता पर मल्का ने बधाई दी और आश्वासन दिया समय आने पर समुचित रूप में पुरस्कृत करने का।

इश्तियाक लौट गया, यद्यपि इतनी जल्दी लौटने की न तो उसकी इच्छा थी, न उसने इसकी कल्पना ही की थी।

उधर अशोक के लौटते ही राकेश की आँखों से आँसुओं की अजस्र धारा फूट पड़ी। इसे रोकने की जितनी चेष्टा करता वह, उतनी ही अधिक प्रबल हो उठती वह।

जब अजीज घर पहुँचा, तब भी यह क्रम जारी था। राकेश की

दशा देखकर उसे काठ-सा मार गया। वह समझ ही नहीं सका कि राकेश को हो क्या गया है। उसकी आँखें सूजी हुई और लाल थीं। मुँह पर मुर्दनी छाई थी। होश-हवास भी शायद गुम था। उसने आवाज दी —'राकेश।'

राकेश ने रूमाल से मुँह पोंछते हुए गर्दन झुका ली। उसे चुप देखकर अजीज पुनः बोला—'क्या हो गया है तुम्हें!'

इस बार भी राकेश ने उत्तर नहीं दिया तो अजीज यह कहते हुए कमरे से बाहर जाने लगा, 'मत बताओ तुम, मैं जाकर अम्मा से पूछता हूँ।'

राकेश को मौन तोड़ना ही पड़ा। आवाज देकर उसने अजीज को माँ के पास जाने से रोक दिया। अजीज ने उसकी बात मान ली और उसके पास पहुँच कर बोला—'बताओ, क्या बात है?'

राकेश ने धीरे-धीरे अशोक के आगमन से लेकर स्वप्न-चर्या तक की सभी बातें अजीज को बता दीं। सारी कथा सुनकर अजीज का मन भी विषाद से भर उठा लेकिन उसने अपना भाव प्रकट नहीं होने दिया और सान्त्वना भरे स्वर में बोला—'दिल इतना छोटा करने से कुछ बनेगा नहीं राकेश। मुसीबत के समय हिम्मत से काम लेने वाला ही बिगड़ी बात बना सकता है। मानता हूँ कि सुचिता का पता न लगने से तुम्हारे दिल पर गहरा धक्का लगा है। यह स्वाभाविक है। फिर भी, हाथ-पैर बाँधकर बैठ जाना तो उचित नहीं है। तुम अपनी बहन के लिये चिन्तत हो। मेरे साथ किसी दिन शरणार्थी कैम्प में चलकर वहाँ का भी दृश्य देखो। अनेक दुधमुहें बच्चों की माताओं का पता नहीं है। अनेक भाई गुम होने वाली अपनी बहनों के लिये और बहनें अपने भाइयों के लिए तड़प रही हैं। अस्मत लुट जाने की वजह से बेजान होकर लाश की तरह सफेद पड़ी दिखाई देनेवाली मासूम जवान लड़कियों

की संख्या भी कम नहीं है। यदि सबकी हालत तुम्हारी-सी ही हो जाय तो इंसान क्या हैवानियत से लड़ने की हिम्मत कर सकता है ? राकेश, जिन्दगी नाम है उसका जो मौत से हाथ मिलाने के वक्त भी खुश नजर आती है।'

अर्जीज के चुप हो जाने पर राकेश ने कहा—'मैं कमजोर हूँ अजीज, बहुत कमजोर। दुर्भाग्यवश मैं तुम्हारे ऐसा साहस प्राप्त नहीं कर सका। मुझे क्षमा करो। मैं तुम्हारी मित्रता के योग्य नहीं हूँ। जाने दो मुझे। जिसके भाग्य में आँसू बहाना ही लिखा है, उसके आँसू तुम रोक भी कैसे सकते हो ?'

'छिः, कैसी बहकी बहकी बातें कर रहे हो राकेश', अजीज ने कहा—'गुलरुख की ओर देखो। वह औरत है, तुम मर्द हो। इस दुनिया में उसका अपना रह नहीं गया कोई। बेसहारा औरत का शबाब भी उसका दुश्मन बन जाता है, यह भी तुम जानते ही होगे। गुलरुख की जवानी अँगड़ाइयाँ ले रही है। फिर भी, इस गरीब को किसी से कोई शिकायत नहीं, कोई शिकवा नहीं है। मरीजों की सेवा करने में ही सारा दिन गुजार देती है। मैं जानता हूँ कि दिल हल्का करने के लिए वह भी कभी-कभी रोती होगी लेकिन पूरे इतमीनान से कह सकता हूँ कि हिम्मत शायद ही छोड़ी हो कभी उसने। और.....'

इन बातों में राकेश के लिए शायद सुख और सन्तोष निहित थे। उसे राहत मिल रही थी। अजीज का सहसा चुप हो जाना उसे अच्छा नहीं लगा। पाँच-सात कौर गले के नीचे उतार कर क्षुधा की पीड़ा से मुक्ति का अनुभव करने वाले बुभुक्षित व्यक्ति की जो दशा हाथ से आठवाँ कौर छिन जाने पर हो सकती है, प्रायः वही दशा राकेश की हुई। व्यग्रता से बोला—'तुम चुप क्यों हो गये अजीज ?'

अजीज की गम्भीरता बढ़ गयी। भौंहों के ऊपर बल पड़ गये। आवाज को दबाने का प्रयास करते हुए उसने कहा—'इस हालत में भी कुछ कुत्ते इस गरीब के लिए मुसीबत बन गये हैं। आज राह में गुलरुख से मुलाकात हुई थी। वह उदास थी। तुम्हें पूछ रही थी। काफी कोशिश करने के बाद मैं उससे यह जान सका कि इश्तियाक उसका पीछा किया करता है। इस वजह से वह बेचैन है। इस मुसीबत से पनाह पाने की गरज से आज वह मल्का के पास भी गयी थी।'

अजीज की बातों ने जादू-सा असर किया। राकेश की व्यथा काफूर-सी उड़ गयी। आश्चर्य-मिश्रित रोष से कहा उसने—'तुम क्या कह रहे हो अजीज !'

किसी प्रकार की उत्तेजना प्रकट किये बिना अजीज ने कहा—'जो गुलरुख ने मुझसे कहा था।'

'इश्तियाक की मंशा क्या हो सकती है ?' राकेश ने अजीज से पूछा—'वह पागल तो नहीं हो गया है ?'

'वह पागल नहीं है राकेश', अजीज ने उत्तर दिया—'इस समय इश्तियाक का कोई भी काम मतलब से खाली नहीं हो सकता। मुझे उसके हर काम में दगाबाजी और मक्कारी की बू आती है।'

'यही बात है तो हमें गुलरुख की मदद करनी चाहिए',—राकेश ने कहा।

राकेश के मुख पर दृष्टि गड़ाकर अजीज ने कहा—'पीछे तो नहीं हटोगे ?'

'कदापि नहीं।'

'याद रखो, गुलरुख औरत है।'

'जानता हूँ।'

'वह जवान है।'

'यह भी मालूम है।'

'वह शादी-शुदा भी नहीं है।'

यहीं राकेश सहसा कुछ कह न सका। कुछ सोचते हुए वह बोला—'लेकिन आशंकाओं का कारण क्या है?'

अजीज ने उत्तर दिया—'वह साफ है। इश्तियाक नीचतापर उतारू हो गया तो हिन्दू और मुसलमान का सवाल उठाकर गुलरुख पर कीचड़ उछाल सकता है। ऐसी दशा में गुलरुख पर जो बीत सकती है, उसकी कल्पना तुम कर सकते हो।'

'तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो अजीज', राकेश ने कहा—'सुचिता के गुम हो जाने के कारण मैं अपने जीवन से ऊब जरूर गया हूँ लेकिन दूसरे के जीवन का मूल्य समझता हूँ।'

'खुदा तुम्हारी मदद करे', अजीज ने कहा—'सुबह गुलरुख से मिल लेना। मुझसे शायद तुम्हारी मुलाकात न हो सके। कश्मीर के खिलाफ पाकिस्तान के एजेण्टों की साजिश जारी है। उनका सामना करने के सवाल पर कल बैठक होने वाली है। मैं सुबह ही चला जाऊँगा।'

राकेश ने बात समाप्त न होने दी और बोला—'कश्मीर का मसला सुरक्षा-परिषद् में पेश करने के भारत सरकार के फैसले का बुरा प्रभाव पड़ रहा है क्या?'

'यह तो समय बतायेगा। इस समय यही दिखाई दे रहा है कि पाकिस्तानी एजेण्टों ने प्रोपेगैण्डा की अपनी मशीन की रफ्तार तेज कर दी है।' अजीज ने पाकिस्तानी पर्चों के वितरण की बात राकेश को बता दी और उनके मजमून से भी उसे अवगत करा दिया।

राकेश ने फिर कुछ नहीं पूछा। अजीज ने उठकर कपड़े बदले और भोजन करने चला गया। राकेश पड़ गया। कुछ ही देर में उसे नींद आ गयी।

सुबह यद्यपि राकेश की आँख समय से पहले ही खुल गयी थी तथापि अजीज से भेंट नहीं ही हुई। वह जा चुका था। नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर राकेश जिस समय गुलरुख के निवास स्थान की ओर जाने के लिए घर से बाहर निकला सुबह के आठ बज चुके थे। सूर्य के किरण-वितान में चमक नहीं उत्पन्न हुई थी। वह तब भी नम था।

राकेश आध घंटे में ही गुलरुख के निवास-स्थान पर पहुँच गया। वह उस समय शाल ओढ़कर लेटी-लेटी अखबार पढ़ रही थी। कानों में आवाज पड़ी किसी के पुकारने की तो आँखें अखबार से हट गयीं। वह न तो अपने स्थान से हिली, न उसने आवाज ही दी। उठने से पूर्व शायद वह आवाज को पहचान लेना चाहती थी। राकेश ने दूसरी बार आवाज दी। गुलरुख तब भी चुप रह गयी। तीसरी बार राकेश ने जरा अधिक जोर से पुकारा तो गुलरुख के पैर आप से आप धरती पर पड़ गये और जल्दी में नंगे पांव ही वह दरवाजे पर जा पहुँची।

न जाने क्यों राकेश को सामने देखकर वह ठिठक-सी गयी। मुँह से आवाज तक न निकली। गनीमत यही थी कि राकेश यह लक्ष्य नहीं कर पाया और बोला—'मैं आ सकता हूँ?'

तब गुलरुख ने उसका अभिवादन किया और उसे अपने कमरे में ले आयी। राकेश पहली बार यहाँ आया था। कमरे में पैर रखते ही उसने एक बार चारों ओर अपनी नजर दौड़ा ली। कमरा साफ-सुथरा था। अधिक तड़क-भड़क न थी। खिड़कियों पर सादे रंगीन पर्दे पड़े थे। एक ओर पलंग बिछा था। उसके पास ही एक छोटा-

सा टेबुल लैम्प पड़ा था। लट्टू लगा था उसमें नीले रंग का। पलंग से कुछ दूर एक ओर छोटा-सा टी-टेबुल पड़ा था, जिसके चारों ओर चार कुर्सियाँ थीं। तीसरी ओर एक आलमारी थी जिसमें शायद कपड़े रखे थे। दीवार पर गिने-गिनाये चार-चित्र टँगे थे। चित्र थे कश्मीर के लुभावने दृश्यों के। पलंग के ऊपर सिरहाने की ओर उसके भाई का फोटोग्राफ टँगा था।

राकेश को गुलरुख के चेहरे और कमरे की सादगी में कोई अंतर नजर न आया।

गुलरुख ने कहा—'बैठियेगा नहीं।'

हल्की-सी लाली राकेश के मुख पर दौड़ गयी। वह कुर्सी पर बैठ गया, लेकिन बोला तब भी नहीं। गुलरुख ही बोली—'चाय या काफी?'

प्रयास करके दबे हुए कंठ से कहा राकेश ने—'अभी किसी चीज की आवश्यकता नहीं है।'

गुलरुख बोली—'नाचीज की याद कैसे आयी?'

जमीन कुरेदने वाले अपने पैर के अंगूठे पर नजर गड़ा कर राकेश ने कहा—'कल अजीज से भेंट हुई थी आपकी?'

'तो उन्होंने ही आपको भेजा है!'

'जी।'

'शुक्रिया।'

'तबीयत कैसी है?'

'कुछ सर्दी लग गयी है। आज अस्पताल से छुट्टी ले चुकी हूँ।'

'अजीज से मेरे सम्बन्ध में कुछ पूछा था आपने?'

गुलरुख ने जवाब नहीं दिया। सिर झुका कर कुछ सोचती-सी दिखाई देने लगी। राकेश की आँखें शायद इस अवसर की प्रतीक्षा

कर रही थीं। वे गुलरुख के मुख पर जम गयीं। कमरे में यद्यपि सन्नाटा था, तथापि राकेश को ऐसा लग रहा था कि दूर कहीं, किसी निर्जन प्रांत में कोई गीत गा रहा है और हल्का, बहुत हल्का-सा स्वर उसके कानों में रस उँडेल रहा है। दो-चार मिनट तक और उसे इस प्रकार ही बैठे रहने का अवसर मिलता तो सम्भवतः तन्द्रा उसे घेर लेती। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। गुलरुख बोल उठी—'गुनाह तो नहीं किया मैंने ?'

राकेश को दूसरी बात न सूझी। उसे याद आया—उस दिन भी शाही के चश्मे के पास गुलरुख ने इस प्रकार ही कविता की भाषा में बात की थी। तभी हृदय कान में यह कहता-सा प्रतीत हुआ—नारी स्वभावतः भावुक होती है। गुलरुख भी भावुक है। वह भावुकता प्रकट कर सकती है। यह उसकी विशेषता है। इस विशेषता से युक्त नारी में आकर्षण भी विशेष होता है। इससे बातचीत शुरू होने पर उसका सिलसिला तोड़ने की इच्छा नहीं होती।

यहीं राकेश की विचार-धारा अवरुद्ध हो गयी। लगा—'मुझमें कोई खामी है। मैं बात नहीं कर पा रहा हूँ। आखिर क्यों ?'

गुलरुख ने एक बार और उसकी तन्द्रा भंग की यह पूछकर—'कुछ सोच रहे हैं आप ?'

यह प्रश्न चुनौतीरसा लगा राकेश को। तब वह चुप न रह सका। उसने कहा—'गुनहगार तो मैं हूँ। उस दिन शाही चश्मे के पास भी यही कहा था मैंने। लगता है, आपने माफ नहीं किया।'

'माफ वह करता है, जिसके पास कुछ अपनी ताकत होती है।' गुलरुख ने कहा—'औरत योंही कमजोर होती है। मैं तो बेसहारा भी हूँ, बेपनाह भी।'

'गुलरुख····!' सम्बोधन बिजली का करेण्ट बन गया राकेश के

लिए। वह बुलाना चाहता था गुलरुख को इस प्रकार जरूर, लेकिन बुला भी सकता है इस प्रकार, यह खयाल कल्पना में भी नहीं आया था उसकी।

उसका यह मानसिक द्वन्द्व छिपा नहीं रहा गुलरुख से। उसने कहा—'आप चुप क्यों हो गये? नाम लेने पर संकोच होता है कुछ क्या?'

राकेश बोला—'आपका अनुभव?'

गुलरुख ने कहा—'नहीं, यों पूछिये तुम्हारा अनुभव।'

'गुलरुख!'

'जी।'

'तुम नजदीक आती जा रही हो।'

'आप दूर हटाना चाहते हैं?'

राकेश तत्काल उत्तर न दे सका। कुछ सोचकर कहा उसने—'सवाल मुश्किल है।'

गुलरुख बोली—'मैं वापस ले लेती हूँ अपना सवाल।'

'लेकिन इस प्रकार वह हल तो नहीं होता।'

'जिन्दगी का हर सवाल हल भी तो नहीं हुआ करता।'

'तुम एक पहेली हो गुलरुख।'

'हाँ। लेकिन यह पहेली हल होती रहती थी। अब.....।'

'अब क्या?'

'इसे हल करते रहनेवाले को कबायलियों ने बारामूला में मार डाला।'

गुलरुख की बात समाप्त होते-होते राकेश कल्पना-लोक से धरती पर आ गया। बारामूला का नाम सुनते ही घाव ताजा हो गया। सुचिता की याद ने फिर उसकी शान्ति भंग कर दी। नये सिरे से उसे

सभी बातें याद आने लगीं। क्रम जब अशोक के स्वप्न की चर्चा तक पहुँचा तो वह काँप उठा। तभी गुलरुख ने कहा—'सर्दी मालूम हो रही है?'

'नहीं', राकेशने उत्तर दिया और फिर आप से आप दिल हल्का करने के रास्ते पर चल पड़ा। उसने तन्मयता से अशोक से हुई अपनी बातचीत गुलरुख को सुना दी और बोला—'भयानक सपना था।'

सहानुभूति भरे स्वर में कहा गुलरुख ने—'सपना, सपना होता है। आप दिल छोटा न करें। सुचिता का पता लग भी सकता है।'

'इस आशा के भरोसे ही जी रहा हूँ।'

'मेरी दशा का अनुमान भी लगा सकते हैं।'

यह सुनकर सहसा राकेश का हृदय सहानुभूति से भर उठा। उसने महसूस किया कि 'गुलरुख की दशा सचमुच मुझ से भी अधिक दयनीय है।' उसे अपने पर लज्जा आयी, यह सोच कर कि गुलरुख नारी होकर भी इतनी शांत है और मैं पुरुष होकर भी क्षण-क्षण पर विह्वल हो उठता हूँ। जीवन से ऊब जाता हूँ।' उसे पिछली रात को अजीज से हुई बात याद आने लगी और तब यह भूली बात भी याद आ गयी उसे कि इश्तियाक किसी वजह से गुलरुख के पीछे लगा है और उसकी इस हरकत से गुलरुख त्रस्त है। उसने पूछा—'इश्तियाक तुम्हें कब से जानता है?'

गुलरुख ने जवाब दिया—'बहुत दिन नहीं हुए। मल्का ने उससे मेरा परिचय कराया था।'

राकेश का दूसरा प्रश्न था—'तुम्हें शक है, या सचमुच वह तुम्हारा पीछा करता है?'

'जिस दिन अजीज के साथ उसने मुझे देखा था', गुरुलख ने बताया—'उस दिन से ही वह सामना हो जाने पर मेरे पीछे लग जाता

है। मैं नहीं जानती कि उसकी मंशा क्या है लेकिन उसकी आँखें मुझे खौफनाक मालूम होती हैं।'

'इश्तियाक अच्छा आदमी नहीं है गुलरुख', राकेश ने कहा—'न जाने कैसे-कैसे षड्यन्त्रों में शामिल रहता होगा वह। उसकी हरकत का जवाब ढूँढ़ना होगा।'

बेबसी जाहिर करती हुई बोली गुलरुख—'मेरी अकेली जान है। कर भी क्या सकती हूँ। मल्का से आरजू-मिन्नत कर चुकी हूँ। अजीज को अपनी परेशानी बता ही दी है। यही बताने के लिए आपसे भी मिलने की इच्छा थी।'

राकेश ने कहा—'तुम मुझसे क्या चाहती हो?'

गुलरुख ने जवाब दिया—'यह मैं स्वयं नहीं जानती। इतना ही कह सकती हूँ कि परेशानी जाहिर करने के बाद दिल का भार कुछ हल्का हो जाता है।'

राकेश फिर बोला नहीं। कुछ देर तक मौन रहकर न जाने क्या सोचता रहा। तत्पश्चात् उसने धीरे से कहा—'काफी समय हो गया, अब जा रहा हूँ।'

गुलरुख ने बैठने का आग्रह करते हुए उससे कहा—'पहली बार आये हैं। चाय तक नहीं ली आपने।'

'तुम्हें आराम की जरूरत है। फिर कभी पी लूँगा।' राकेश ने कहा।

'दो कप चाय तैयार करने में आराम छिन न जायगा।' गुलरुख ने जवाब दिया।

गुलरुख का स्वर आत्मीयता की भावना से तराबोर था। राकेश से दोबारा इनकार करते न बन पड़ा। गुलरुख ने स्टोव जलाकर चाय तैयार की। एक तश्तरी में पहले उसने कुछ मेवे राकेश के सामने रखे,

फिर चाय ले आयी। राकेश ने आग्रह किया तो स्वयं भी चाय-पान में शामिल हो गई।

दोनों मौन थे। दोनों ही अपने-अपने विचारों में तल्लीन थे, अतः चाय-पान में स्वाभाविक रूप से कुछ देर लग गयी। वह समाप्त हुई तो राकेश उठ खड़ा हुआ। उसने गुलरुख को नमस्कार किया और चला गया। खोयी-खोयी-सी गुलरुख कुछ कह न सकी, कुछ पूछ न सकी।

नौशेरा में चार हजार पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा भारतीय सेना पर आक्रमण का समाचार श्रीनगर में बिजली की तरह फैल गया था। तरह-तरह की अफवाहों का बाजार गर्म था। अधिकतर अफवाहें पाकिस्तान का पक्ष प्रबल सिद्ध करने वाली ही थीं। उन पर विश्वास करने वाले के सामने यह स्वीकार करने के अलावा दूसरा कोई मार्ग ही नहीं रह गया था कि भारतीय सेना को बहुत क्षति उठानी पड़ी है, पाकिस्तानी हमलावर आँधी और तूफान की तरह बढ़ रहे हैं, भारतीय फौजों का सर्वनाश निकट है और पाकिस्तान विजय-दुंदुभी बजाने ही वाला है।

७

लोग बोलना कम और सुनाना अधिक पसन्द करते थे, क्योंकि पाकिस्तानी प्रचारकों के अन्धाधुन्ध प्रचार ने व्यापक भ्रम पैदा कर दिया था। जो संयम से काम ले सके थे, वे इस गुत्थी को सुलझाने में व्यस्त थे कि सुरक्षा-परिषद में कश्मीर का मसला पेश किये जाने के बाद दूसरे ही दिन नौशेरा पर पाकिस्तान के व्यापक आक्रमण का अर्थ क्या हो सकता है।

श्रीनगर गहरी सैनिक हलचल का भी केन्द्र बना हुआ था। नीचे फौजी मोटर गाड़ियों की दौड़ और ऊपर हवाई जहाजों की हरहराहट की आवाज दम-पर-दम सुनायी पड़ती थी। जीवन का नियमित व्यापार ठप सा हो गया था, अशांति का आतंकपूर्ण रूप अपना सिक्का जमाता जा रहा था, विभीषिकापूर्ण युद्ध की कल्पना क्षण प्रति क्षण दृढ़ होती जा रही थी। गनीमत यही थी कि लोगों की आँखें खुली थीं, वे जाग रहे थे। नींद में पड़े होते तो उन्हें आग उगलने वाली राइफलों की धाँय-धाँय, मशीनगनों की कड़कड़ाहट और बमों के धमाके की आवाज ही सुनायी पड़ती। युद्ध का अंचल यद्यपि श्रीनगर से दूर था लेकिन लगता था कि युद्ध कहीं पास में ही हो रहा है।

इस वातावरण से दूर, बहुत दूर पहाड़ियों के निस्तब्ध और निर्जन अंचल में मल्का पोखराज बेतार के तार के एक छोटे-से यन्त्र से काम लेने में व्यस्त थी। हवा सर्द थी फिर भी उसके माथे से पसीने की बूँदें टपक रही थीं। मार्लिन और कैम्पबेल उसकी सहायता कर रहे थे। मार्लिन जल्दी-जल्दी कागज पर कुछ नोट करती जा रही थी। शिकारी की वेश-भूषा में सजा कैम्पबेल हाथ में राइफल लिए सतर्कता-पूर्वक इधर-उधर देख रहा था। आध घण्टे तक तीनों अपने-अपने काम में व्यस्त रहे। इसके बाद मल्का ने बोलना बन्द कर दिया। वह उठकर अपने स्थान पर खड़ी हो गयी। वह हाँफ रही थी। केश अस्त-

व्यस्त से हो गये थे। लगता था जैसे उसने कठोर परिश्रम किया हो अथवा किसी से संघर्ष करने के बाद स्वयं को मुक्त कर सकी हो।

उसके आश्वस्त होने पर मार्लिन ने कहा—'अब पृथक्-पृथक् हो कर हमें श्रीनगर पहुँच जाना चाहिये। इस समय यहाँ तुम्हारी आवश्यकता भी नहीं है मल्का। तुम्हें दिल्ली जाना है। जिस अखबार ने यहाँ विदेशियों के बारे में तरह-तरह की शंकाएँ उत्पन्न कर रखी हैं, उसके मालिक पर काबू पाने की योजना मैं तुम्हें बता चुकी हूँ। इस समय एक जमे-जमाये अखबार का हमारे हाथ में होना आवश्यक है। ऊपर-ऊपर का काम मैं समाप्त कर चुकी हूँ। अब तुम्हें मशीन का बटन मात्र दबाना है। यह काम तुम्हें सावधानी से पूरा करना होगा। ऐन वक्त पर गिरे हुए शिकार को उठाने के लिये मैं सेठ चाँदमल को तैयार कर लूँगी।'

मार्लिन यह सब एक साँस में कह गयी। मल्का या कैम्पबेल ने भी उसे बीच में कहीं टोका नहीं। उसके चुप हो जाने के बाद कैम्पबेल ने कहा—'मैं इश्तियाक के पास जा रहा हूँ। दो घण्टे के बाद होटल में मेरा इन्तजार करना, मार्लिन। शाम का खाना मैं तुम्हारे साथ ही खाऊँगा।'

हाथ में पकड़े हुए रूमाल को हवा में उड़ाकर मार्लिन ने उसे बिदा दी। कैम्पबेल चला गया। कुछ देर बाद मार्लिन और मल्का ने भी अपना-अपना रास्ता पकड़ा।

जिस समय कैम्पबेल अपनी मञ्जिल तय करके इश्तियाक के घर पहुँचा, वह वहाँ अनुपस्थित था और अशोक के होटल में उसके कमरे पर निगाह गड़ाये एक ओर बैठकर काफी पी रहा था। उससे मुलाकात न होने पर कैम्पबेल यह सोच कर मल्का के बँगले की ओर चल पड़ा कि शायद वहाँ मुलाकात हो जाय।

मल्का को अपने बँगले पर पहुँचे पाँच-सात ही मिनट व्यतीत हुए थे कि कैम्पबेल पहुँच गया। उसे देख कर मल्का ने पूछा—'इश्तियाक से मुलाकात नहीं हुई क्या ?'

कैम्पबेल ने कहा—'उसे ढूँढ़ने के लिए ही तो मैं यहाँ तक चला आया। मालूम नहीं, कहाँ चक्कर काट रहा है।'

मल्का को हँसी आ गयी। कैम्पबेल ने इसका कारण पूछा तो उसने जवाब दिया—'मेरा खयाल है कि वह या तो अस्पताल का चक्कर काट रहा होगा या गुलरुख के मकान का।'

'गुलरुख कौन ?'

'अस्पताल में नर्स है। बहुत भोली लड़की है। खूबसूरत तो है ही।'

'उससे इश्तियाक का क्या सम्बन्ध है ?'

'यह मैं नहीं जानती।'

कैम्पबेल चुप हो गया। उसे इश्तियाक की हरकत नागवार मालूम हुई। योजना के बाहर जाकर दायरा बढ़ाने का काम उसे पसन्द न आया। इस सम्बन्ध में मार्लिन की चेतावनी उसे भूली नहीं थी और उसका औचित्य वह स्वीकार कर चुका था। उसने अपना विचार मल्का पर प्रकट किया तो वह इसे टाल गयी। वास्तव में वह स्वयं इश्तियाक की हरकत नापसन्द करती थी, फिर भी वह उसे छेड़ना नहीं चाहती थी। उसकी तुनुकमिजाजी वह देख चुकी थी। मामला ऐसा था कि उससे पृथक् होने के लिए वह इश्तियाक पर जोर डालती तो वह उसके गले पड़ जाता। यों, उसे कुछ राहत थी। इश्तियाक उसके सामने कभी अड़ता न था।

इश्तियाक से भेंट होने की कोई सूरत नजर न आने पर कैम्पबेल ने लौट जाना चाहा। तब तक मुँह-से सीटी बजाते हुए इश्तियाक उसके

सामने पहुँच गया। वह बेहद खुश नजर आ रहा था। हाथ में एक चित्र उसने इस प्रकार पकड़ रखा था कि मल्का की निगाह उस पर पड़ जाय। भाग्यवान् का हल भूत जोतता है। उसका प्रयास सफल हो गया। मल्का यह पूछ ही बैठी, 'यह तसवीर किसकी लाये हो ?'

इश्तियाक ने जवाब देने के बजाय चित्र उसकी ओर बढ़ा दिया। मल्का ने चित्र देखा। वह पहचान न सकी कि चित्र सुचिता का है। उसकी जाने बला। सुचिता का नाम भी नहीं सुना था उसने। पूछा उसने—'यह कौन है ?'

रोब जमाने की मुद्रा में इश्तियाक बोला—'क्यों, कैसी है ?'

मल्का ने कहा—'लेकिन यह है कौन ?'

'यह पूछ कर क्या करोगी', इश्तियाक ने उत्तर दिया—'देखकर आँखें भर लो। इतना ही काफी है तुम्हारे लिए।'

कैम्पबेल को यह नाटक तनिक भी पसन्द नहीं आ रहा था। बे-वक्त की शहनाई सुन कर वह कुढ़ता जा रहा था। अन्ततः उससे नहीं रहा गया तो उसने कहा—'इश्तियाक, तुम चित्र लेकर घूम रहे हो! नौशेरा के मोर्चे का समाचार प्रचारित कैसे होगा ?'

निहायत बेफिक्री से इश्तियाक ने जवाब दिया—'पाकिस्तान की सहायता करना मेरा पहला फर्ज है। आप निश्चिन्त रहें। इस काम में मुझसे कभी भूल नहीं हो सकती। जन्नत के इस टुकड़े को पाकिस्तान के हाथ में देखने के लिए मैं खुद बेकरार हूँ।'

'हिटलर को अपनी ताकत पर जरूरत से ज्यादा भरोसा था,'—कैम्पबेल ने कहा—'उसे धोखा हुआ।'

'इसलाम खतरे में है' इश्तियाक ने जवाब दिया, 'कायदे आजम को इस नारे की ताकत पर पूरा भरोसा था। वह कामयाब हुए। दुनिया के सबसे बड़े इसलामी मुल्क की शक्ल में पाकिस्तान हमारे

सामने है। आप इतमीनान रखें कैम्पबेल साहब, आप लोगों की मदद मिलती रही तो कश्मीर, पाकिस्तान में मिल कर रहेगा।'

कैम्पबेल ने समझ लिया कि इश्तियाक बहस करने के योग्य नहीं है। चुपचाप उससे काम लेते रहना ही उचित होगा, अतः उसने चुप रह जाना ही ठीक समझा। इश्तियाक ने इसका अर्थ यह लगाया कि कैम्पबेल ने मैदान छोड़ दिया और अपनी पराजय स्वीकार कर ली। विजयी की भांति गर्वोन्नत होकर मुस्कराते हुए उसने मल्का की ओर देखा। इच्छा न रहते हुए भी जवाब में मल्का को मुस्कराना पड़ा। उसे हाथ से बाहर न होने देने के लिए वह सदा सतर्क रहती थी। यह व्यापार कैम्पबेल की समझ में तनिक भी नहीं आया। उसे अधिक रुकना निरर्थक लगा। दंड-प्रणाम की सभ्यता का फर्ज पूरा करके उसने अपना रास्ता नापा।

कैम्पबेल के चले जाने के बाद मल्का ने इश्तियाक से पूछा—'गुलरुख का क्या हाल है?'

इश्तियाक ने जवाब दिया,—'उसका नाम न लो। मुझे उससे नफरत है। वह इसलाम पर धब्बा है।'

आश्चर्यचकित-सी बोली मल्का—'तुम क्या कह रहे हो!'

'जो कुछ मैंने अपनी आँखों देखा है,' इश्तियाक ने कहा—'राकेश की निगाहे-करम उसकी जिन्दगी हो रही है।'

'उस दिन रात को तुम यही बताना चाहते थे?'

'नहीं, राकेश के उस दोस्त का नाम अशोक है।'

'काफी दूर तक पहुँच गये हो तुम!'

'कलेजे में आग धधक रही है। गाफिल कैसे रह सकता हूँ?'

कुछ गम्भीर होकर मल्का ने कहा—'राकेश, गुलरुख, अशोक—इन पर तुम्हें सन्देह क्यों है!'

'नादान न बनो मल्का,' चेतावनी भरे स्वर में बोला इश्तियाक—'भारत के एजेण्ट भी गाफिल नहीं हैं। हमारी बदकिस्मती से अजीज ऐसे दोस्त भी उन्हें मिल गये हैं।'

'सावधान रहने के लिए मैं तुम्हारी प्रशंसा करती हूँ,' मल्का ने कहा—'काम की बात सिर्फ इतनी ही है कि गुलरुख से कोई वास्ता नहीं है।'

इश्तियाक ने कहा—'तुम्हारी निगाह में गुलरुख ही क्यों गड़ी?'

मल्का ने जवाब नहीं दिया, क्योंकि वह यह कहना मुनासिब नहीं समझती थी कि 'औरत तुम्हारी कमजोरी है।' इससे विवाद बढ़ सकता था और विवाद वह इश्तियाक से करना नहीं चाहती थी।

उसे चुप देखकर इश्तियाक ने कहा—'अजीज की ओर से बेफिक्र रहना क्या मुनासिब है?'

मल्का ने जवाब दिया—'बेफिक्र हमें किसी की ओर से नहीं रहना है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि हम अपनी कार्रवाई से दूसरों को अपनी ओर खिंच आने की दावत दे बैठें।'

इश्तियाक ने कहा—'मैंने तुम्हारा मतलब नहीं समझा।'

मल्का ने उत्तर दिया—'मेरी बात याद रखो, यही काफी है।'

'यानी अजीज और उसके दोस्तों को छोड़ दूँ।'

'फिलहाल यही मुनासिब है।'

'देखता हूँ कि अज़ीज तुम्हारी कमजोरी बनता जा रहा है।'

इश्तियाक के दिमाग का फितूर खत्म करने की गरज से मल्का ने मुस्करा कर सुचिता के चित्र की ओर संकेत करते हुए कहा—'और यह चित्र?'

यह बात इश्तियाक के मन की थी। वह मन ही मन खुशी से भर उठा यह सोचकर कि चित्र लाने का उद्देश्य पूरा हुआ। लेकिन वास्तव

में बात उलटी थी। मल्का ने उसकी दुर्बलता भांप ली थी। चित्र का जिक्र उसने इश्तियाक को गुमराह करने के लिए ही किया था। इसमें वह सफल हुई। इश्तियाक वास्तविकता समझ न सका। सुचिता का चित्र उसके लिए नियामत हो गया। केवल मल्का को दिखाने के उद्देश्य ही उसने जाने से पूर्व भरपूर निगाह से उस चित्र को देखा और ऐसा बहाना किया मानो चित्र देखते-देखते कल्पनाओं के सागर में डूब गया हो वह।

जिस समय वह यह नाटक रच रहा था, अशोक सचमुच चित्र की याद में डूबा हुआ था। कमरे में लौटने के बाद चित्र को अपने स्थान पर न पाकर उसकी बुरी हालत हो गयी थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि चित्र को गायब करने वाले ने केवल चित्र ही क्यों गायब किया था। इश्तियाक पर शक करने का कोई कारण न था। उसका नाम तक नहीं जानता था वह। वह ऐसी हालत में यह सोच ही कैसे सकता था कि उसका पीछा करने तथा उस पर निगाह रखने का शौक रखने वाले इश्तियाक ने ही सुचिता का चित्र गायब किया है और गायब किया है यह सोचकर कि उसे देखकर मल्का में शायद रश्क पैदा हो जाय और वह यह समझने लगे कि उसकी भी पूछ है कहीं।

लाख-लाख बार सिर पटकने पर भी अशोक किसी निर्णय पर पहुँच न सका। हालत यह हो गयी कि किसी नये विचार के मस्तिष्क में आने से पूर्व ही वह अपने पर झुंझला उठता था। अशांत तो इतना हो गया था कि जब से कमरे में घुसा था तब से सैकड़ों बार अपने कदमों से उसकी लम्बाई नाप चुका था। चेहरे की हालत ऐसी हो गयी थी मानों दौलत लुट गयी हो। गनीमत यही थी कि क्षेमेन्द्र वहाँ पहुँच गया था, अन्यथा न जाने अशोक की दशा क्या होती।

उसकी अस्त-व्यस्त हालत देखकर क्षेमेन्द्र को आश्चर्य हुआ।

दूसरा अवसर होता तो वह उसका मजाक उड़ाने में ही दस-बीस मिनट खो देता। लेकिन उस समय उसके दिमाग में दूसरी ही हलचल ने घर कर रखा था। वह उसे यह बताने आया था कि सेठ चाँदमल पर मार्लिन और कैम्पबेल का जादू चल गया है और अब वह इस मत के हो गये हैं कि कश्मीर का विभाजन स्वीकार कर लेने में ही भारत की भलाई है।

अशोक ने उसके मुँह से यह बात सुनी तो हक्का-बक्का-सा रह गया। सुचिता का चित्र गायब होने की घटना अपना प्रभाव यद्यपि खो नहीं सकी तथापि उसका महत्त्व गौण अवश्य हो गया। अविश्वास-सा प्रकट करते हुए उसने कहा—'तुम्हें भ्रम तो नहीं हो गया, अशोक!'

क्षेमेन्द्र ने उसे समझाया कि कवि और चित्रकार दोनों भावुक होते हैं और किसी बात को भूल जाना उनके स्वभाव की विशेषता है। फिर उसने अशोक को यह स्मरण दिलाया कि 'सेठ चांदमल पर पहले तुम्हें ही शक हुआ था, उनकी ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया था तुमने ही। आज तुम्हें मेरी बात पर आश्चर्य हो रहा है। क्यों?'

अशोक ने पूछा—'तुम्हारी धारणा का आधार क्या है?'

क्षेमेन्द्र ने बताया—'नौशेरा पर पाकिस्तानियों के ताजा आक्रमण के बाद से ही सेठ चाँदमल अपने मिलने-जुलने वालों से यह कहते पाये गये हैं कि कश्मीर की लड़ाई के अन्त का एकमात्र रास्ता यही है कि उसका विभाजन स्वीकार कर लिया जाय। ऐसा न हुआ तो उद्योग-व्यापार सब चौपट हो जायगा। कश्मीर में भारत अपनी सेना को बनाये रखने लिए बाध्य होगा। इससे अतिरिक्त व्यय का बोझ बढ़ेगा और भारत की आर्थिक दशा गिरने लगेगी।'

अशोक ने कहा—'हो सकता है कि सेठ चाँदमल का यही विचार

हो। केवल इतने से ही यह समझ लेना क्या उचित है कि वह किसी की प्रेरणा से इसका प्रचार कर रहे हैं ?'

क्षेमेन्द्र ने उत्तर दिया—'अपनी धारणा को यथार्थ सिद्ध करने के लिए मेरे पास कोई सीधा-सीदा प्रमाण नहीं है। समझता मैं यही हूँ कि यह विचार सेठ चाँदमल का अपना विचार नहीं हो सकता।'

स्पष्टीकरण प्राप्त करने की आशा में अशोक कुछ कहना ही चाहता था कि उसकी दृष्टि कमरे में प्रविष्ट होने वाले राकेश और अजीज पर पड़ी। उनके आगमन पर वह अपना आश्चर्य प्रकट कर सके, इसके पूर्व ही अजीज बोल उठा—'तुम्हें खोजते-खोजते यहाँ तक पहुँच गया, क्षेमेन्द्र। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है। मैंने तुम्हें जल्दी से जल्दी यह बता देना आवश्यक समझा कि मुसलिम कांग्रेस के नेताओं के नाक का बाल इश्तियाक कश्मीर में पाकिस्तानी प्रचार की जड़ में है। उसने विरोधी पक्ष के लोगों से मिलने-जुलने का नाटक ऐसे अच्छे ढङ्ग से रच रखा है कि किसी को उस पर शक नहीं होता। अधिकारी निश्चित प्रमाण के अभाव में यह सोच कर उसे गिरफ्तार नहीं करना चाहते कि इससे पाकिस्तानी रेडियो को प्रचार का एक मसाला और मिल जायगा। इसका असर मुसलिम कांफ्रेंस के अन्य हिमायतियों पर हो सकता है जो इस समय दबे हुए हैं। किन्तु मौका मिलते ही जो उभड़ सकते हैं, क्योंकि हमारे कुछ नेताओं की ताकत भी ऐसे ही लोगों के हाथों में है।'

राकेश और अजीज को बैठाते हुए क्षेमेन्द्र ने कहा—'यह बात मुझसे अधिक अधिकारियों को समझनी चाहिये।'

अजीज बोला—'इस प्रयास में मैं हूँ। तुम्हें इसका ज्ञान मैंने इसलिए कराया है कि उचित समझो तो अखबार में भी एक शिगूफा छोड़ दो। यह तो तुम्हें मालूम ही होगा कि इश्तियाक जासूसी भी करने

लगा है और यह जान गया है कि हम सब मल्का, मार्लिन और कैम्पबेल को शक की निगाह से देखते हैं। सेठ चाँदमल से मार्लिन और कैम्पबेल के परिचय तथा उसके परिणाम के सम्बन्ध में मैं तुमसे बातें कर ही चुका हूँ।'

क्षेमेन्द्र विचारों में डूब गया। अशोक बात करने के 'मूड' में था ही नहीं, क्योंकि राकेश को देखते ही पुनः सुचिता का चित्र गायब होने की घटना ताजी हो गयी थी और वह उसके सम्बन्ध में उठने-वाले विचारों में ही डूबने-उतराने लगा था। राकेश का सम्बन्ध इन बातों से उतना ही था जितना समय काटने के लिए किये जानेवाले काम से हो सकता है। अजीज उसकी दिलचस्पी को जगाता तो वह जाग जाता, वरना सोयी रहती।

मौन भङ्ग करके क्षेमेन्द्र बोला—'इतने दिनों से नाटक चल रहा है। अभी तक घटना-क्रम में जान नहीं आयी। घटनाओं की गति भी धीमी है। कोई बात जम नहीं पायी। समझ नहीं पा रहा हूँ कि मल्का, मार्लिन और केम्पबेल का यदि किसी षड्यन्त्र में हाथ है तो गुप्तचरा की आँखें उन पर पड़तीं क्यों नहीं!'

उसकी जिज्ञासा शांत करने की कोशिश करते हुए अजीज ने कहा—'असली लड़ाई दिमाग की है। शासन को उलटने वाले इनकलाब का साज तो सजाया नहीं जा रहा है कि बम, गोला या पिस्तौल रिवाल्वर मिल जायगा। रह गयी बात इधर से उधर समाचार भेजने की। यह मुश्किल नहीं है। कश्मीर-पाकिस्तान की सीमा काफी लम्बी है। दो-चार व्यक्तियों का इधर से उधर आना-जाना कोई मुश्किल बात नहीं है। कौन कह सकता है कि शरणार्थियों की शकल में यहाँ आने वालों में पाकिस्तानी एजेण्ट होते ही नहीं है।'

क्षेमेन्द्र ने फिर कुछ नहीं कहा। कुछ कहने के लिए था भी नहीं।

कश्मीर पर पाकिस्तान के आक्रमण की कार्रवाई को वह स्वतः कश्मीर में साम्प्रदायिक उन्माद भड़काने तथा भारत पर दबाव डालने का हथकण्डा समझता था। नियमित युद्ध होता तो और बात थी। लेकिन वहाँ तो स्थिति ही और थी। कश्मीर के अञ्चल में लड़ रहे थे पाकिस्तानी और भारतीय सैनिक, फिर भी दोनों में से किसी एक ने भी दूसरे के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं की थी। दायरा सीमित था। नियमित कार्य में रुकावट नहीं मालूम होती थी। युद्ध में तीव्रता थी नहीं। कूटनीतिक हलचल की भूमिका तैयार हो रही थी। क्षेमेन्द्र का यह विश्वास था कश्मीर का मसला सुरक्षा-परिषद में पेश किये जाने के बाद अन्य देशों का हस्तक्षेप आरम्भ हो जायगा। इस अवसर की ही प्रतीक्षा में था वह।

बातचीत जमी नहीं। अजीज और राकेश जाने लगे तो क्षेमेन्द्र ने कहा—'तुम्हारी इच्छा पूरी करने का प्रयत्न करूँगा। वचन इसलिए नहीं दे सकता कि अखबार का मालिक नहीं हूँ।'

८

उस दिन रात की रुपहली चाँदनी में कुतुबमीनार का समीपवर्ती रूमानी वातावरण अंगूरी शराब की मादकता में डूबी हुई जवानी की भांति नजर आया जब एक ऊँचे टीले पर छिटपुट फैली झाड़ियों के बीच पूरी ऊँचाई में खड़ी मल्का ने अपनी ओढ़नी के दोनों छोर दोनों हाथों की अंगुलियों में दबाकर बगल में बाहें फैलाते हुए ओढ़नी तान दी और वह उसके सिर के ऊपर हवा के थपेड़े खाकर फड़फड़ाने लगी। नारी के प्रति पुरुष की स्वाभाविक दुर्बलता को उद्दीप्त करने-वाले इस दृश्य को देख सका था केवल वह व्यक्ति जो मार्लिन की

आँखों में गड़ने वाले अखबार का मालिक था और जिससे मल्का का परिचय कराया था मार्लिन के उन मित्रों ने जो बेसब्री से रंगीन सैर-सपाटे के अवसर की प्रतीक्षा किया करते थे।

शोख जवानी के नशे का खुमार प्रकट करने का बहाना मल्का कर ही रही थी कि मोटर के हार्न की आवाज कानों में पड़ी। नजाकत को भी अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए मजबूर करती हुई मल्का तब धीरे-धीरे टीले के नीचे उतर आयी और सामने आकर खड़ी होने वाली कार के पास पहुँच गयी। कार से नीचे उतरने वाले व्यक्ति ने घबराहट जाहिर करने का बहाना करते हुए जरा तेज आवाज में अखबार के मालिक का पता पूछा और जब वह सामने आ गया तो उसने सूचना दी—'प्रेस में आग लग गयी है। गहरी क्षति होने का अनुमान है।'

यह समाचार तुरन्त रवाना होने का सिगनल था। दूसरे ही क्षण कार सड़क पर सरपट दौड़ती नजर आने लगी। मल्का रास्ते में खामोश ही रही। अपना मौन भङ्ग किया यह कहकर उसने तब, जब कार प्रेस की इमारत के पास पहुँच गयी—'ओफ, भयानक आग है।'

आग का रूप सचमुच भयानक था। लाल-लाल लपटें इमारत की ऊँचाई नाप रही थीं। चटाख-पटाख की आवाज भी रह-रहकर सुनाई पड़ जाती जो भीड़ लगाने वाले तमाशबीनों के दिलों में दहशत उत्पन्न कर देती। चिनगारियों का फौवारा छोड़ते हुए जब भी आवाज होती लोगों में भगदड़ मच जाती। इससे आग बुझाने के विकट कार्य में लगे फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों के कार्य में बाधा पड़ती और अखबार के मालिक का कलेजा बैठ जाता। इस दशा में ही एक घंटे तक आग और बुझाने वालों में युद्ध होता रहा तब कहीं आग काबू में आ सकी। धुँए के बादल उस समय भी उड़ रहे थे।

मल्का ने जी भर कर दुःख प्रकट किया और चली गयी। वहाँ से

वह सीधी अपने होटल में आयी जहाँ पाश्चात्य देशों के गुंडों की वेश-भूषा में सजे तीन-चार व्यक्ति उसकी प्रतीक्षा कर रहे। उसने जल्दी-जल्दी, किन्तु धीमे-धीमे तीन-चार मिनट तक उनसे बातचीत की और उन्हें विदा किया—प्रत्येक के हाथ में ताजे नोटों का एक-एक बण्डल कितने रुपयों का था, यह या तो मल्का जानती थी या रुपये प्राप्त करने वाले व्यक्ति।

मल्का ने रात बड़ी बेचैनी से गुजारी। सुबह श्रीनगर जाने वाले हवाई जहाज की रवानगी से एक घंटा पूर्व उसने होटल त्याग दिया और एक घंटे के बाद वह हवाईजहाज में सवार होकर श्रीनगर की ओर रवाना हो गयी।

श्रीनगर के हवाई अड्डे पर उसने मार्लिन को अपनी प्रतीक्षा में खड़े पाया। उससे ही मल्का को मालूम हुआ कि कैम्बेल सेठ चाँदमल के साथ उनके बँगले पर है ताकि सेठ जी बातों में उलझे रहें और आवश्यकता पड़ने पर उनसे सरलतापूर्वक मुलाकात की जा सके।

कार के रवाना होते ही मार्लिन ने मल्का से पूछा—'काम पूरा हो गया न?'

मल्का ने सन्तोष की साँस लेते हुए कहा—'हाँ, काम तो हो गया लेकिन अभी वह अधूरा है।'

मार्लिन बोली—'किसी को शक तो नहीं हुआ?'

मल्का का उत्तर था—'केवल आग लगाने वाले ही यह जानते हैं कि आग कैसे लगी। रुपयों से उनका मुँह बन्द किया जा चुका है।'

इसका अर्थ यह हुआ कि अब सेठ चाँदमल को नयी दिल्ली रवाना कर देना चाहिये', मार्लिन ने कहा—'ताकि वह डूबते हुए अखबार को आर्थिक सहायता देकर उबार लें।'

'योजना के अनुसार तो यही होना चाहिए', मल्का बोली—मैंने यह कल्पना भी नहीं की थी कि यह खतरनाक काम इतनी आसानी से हो जायगा।'

यह सुनकर मार्लिन हँस पड़ी। हँसी की आवाज इतनी तेज जरूर थी कि मल्का के साथ-साथ कार के ड्राइवर के कानों में भी पड़ जाती। अपने हाथ में मल्का का हाथ लेकर मार्लिन ने कहा—'दौलत के लिए अपना ईमान बेचने वालों की कमी इस मुल्क में अब भी नहीं है।'

मल्का ने जवाब दिया—'सोचने का यह तरीका ठीक नहीं है मार्लिन। हमें अपनी कमजोरी पर भी ध्यान देना चाहिये। जवानी की नुमाइश लगाना कोई शान की बात नहीं है।'

कोई अन्य अवसर होता तो मार्लिन उसे मूर्ख बताकर उसकी उपेक्षा करने से बाज नहीं आती। अनुभव ने उसे समय देखकर बात करने का हुनर सिखा दिया था। उसने मल्का की बात एक कान से सुनी और दूसरे कान से निकाल दी फिर मल्का का ध्यान दूसरी ओर खींचने के लिए बोली—'कई महीने लग गये तुम्हें दिल्ली में। बहुत-सी बातें मालूम हुई होंगी। सुरक्षा-परिषद द्वारा नियुक्त कश्मीर कमीशन जल्दी ही कराची पहुँचने वाला है।'

'जानती हूँ', मल्का ने कहा—'भारत के अखबार इस समय अपना पक्ष प्रस्तुत करने में भिड़े हुए हैं। कश्मीर की समस्या के हल के रूप में उसके विभाजन का प्रस्ताव भी कोई अखबार इस समय सामने ले आये तो हमारा काम कुछ आसान हो जायगा।'

मार्लिन ने बताया कि 'सेठ चाँदमल इस विचार के पक्ष में हो गये हैं। अपने दोस्तों के सामने वह इसका जिक्र करते ही रहते हैं। अखबार पर उनका कब्जा हो गया तो यह प्रकाशित भी हो जायगा।

इस समय तक कार मल्का के बँगले के पास पहुँच चुकी थी।

मल्का कार से उतर पड़ी और यह कह कर उसने मार्लिन को विदा किया कि 'दो घण्टे में मैं सेठ चाँदमल के यहाँ पहुँच जाऊँगी।'

मार्लिन को निश्चित समय से अधिक समय तक मल्का की प्रतीक्षा करनी पड़ी। ठीक दो घण्टे के बाद मल्का उसके पास पहुँच गयी जहाँ कैम्पबेल और सेठ चाँदमल से बात करने में वह मशगूल थी। उसे देखकर सेठ चाँदमल ने कहा—'कई महीने तक दिल्ली में टिक गयीं।

मुस्करा कर मल्का बोली—'एक जगह अधिक दिनों तक टिकी नहीं। सारा समय इधर-उधर घूमते ही बीत गया। रंज और गम का सामना इतने समय में कहीं नहीं करना पड़ा। अन्त में किस्मत ने इसका भी सामना करा ही दिया। उस अखबार के दफ्तर में आग लगने की खबर तो आप सुन ही चुके होंगे।'

सेठ चाँदमल ने कहा—'तुम्हारे आने से पहले मार्लिन सारा हाल बता चुकी हैं।'

'लेकिन वह शायद यह न बता सकी होंगी कि अखबार के मालिक से मुझे दिल्ली में काफी सहायता मिली थी।' मल्का ने मतलब की बात शुरू की, 'इस नुकसान से मुझे भी कम तकलीफ नहीं हुई। अब अखबार खतरे में पड़ गया है। मालूम नहीं कि प्रकाशित होता रहेगा या बन्द हो जायगा।'

मल्का के चुप होते-होते मार्लिन बोल उठी—'कैम्पबेल, किसी अखबार के प्रकाशन के सम्बन्ध में तुमसे सेठजी बात करने वाले थे?'

कैम्पबेल बोला—'मुझे मौका ही नहीं मिला बात करने का। चाहता मैं अब भी यही हूँ कि कोई अखबार अपना हो जाय ताकि व्यापार-जगत तक हम अपनी बात पहुँचा सकें। इस समय सभी अखबार हर सवाल को राजनीतिक पहलू से ही देखते हैं।'

मार्लिन ने कहा—'व्यापार तुम्हारे सिर पर भूत की तरह सवार रहता है।'

कैम्पबेल ने उत्तर दिया—'दुनिया को खुशहाल रखने का यही तरीका है मार्लिन। देख रही हो न, इस समय भारत और कश्मीर में मँहगी बढ़ती जा रही है। एक ओर यह स्थिति है, दूसरी ओर मोर्चे पर प्रतिदिन लाखों रुपये खर्च किये जा रहे हैं। यह स्थिति व्यापार-व्यवसाय को चौपट करने तथा उस पर तरह-तरह के प्रतिबन्ध का खतरा उत्पन्न करने वाली है।'

कैम्पबेल के चुप हो जाने पर सेठ चाँदमल ने कहा—'मैं भी तुम्हारी राय से सहमत हूँ कैम्पबेल। भारत और पाकिस्तान, दोनों के बचाव का रास्ता यही है कि कश्मीर का विभाजन स्वीकार कर लिया जाय।'

सेठ चाँदमल के विचार सुनकर अन्य सभी इस प्रकार मुस्करा उठे मानो इनकी प्रतीक्षा ही कर रहे थे। मार्लिन ने अवसर उपयुक्त देखा तो बोल उठी—'आप चाहें तो कश्मीर के विभाजन का प्रस्ताव भली-भांति प्रचारित हो सकता है।'

मार्लिन की ओर हसरत भरी निगाह से देखते हुए सेठ चाँदमल ने कहा—'मैंने क्या कभी तुम्हारा कोई सुझाव अस्वीकार किया है।

मार्लिन ने मुस्करा कर दूसरा हाथ रक्खा—'यह तो मैं जानती हूँ। मुझे स्वयं ही संकोच होता है।'

'मैं समझ गया', सेठ चाँदमल ने कहा—'तुम यही चाहती हो कि आर्थिक सहायता देकर डूबते हुए अखबार को उबार लिया जाय। मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन अखबार का फायदा उठाने की जिम्मेदारी तुम्हें लेनी होगी मार्लिन!'

अन्धे को दो आँखें मिल गयीं। अपनी सफलता पर मार्लिन मन

ही मन फूली न समायी। उसने प्रसन्नता प्रकट करते हुए बोतल उठायी और सेठ चाँदमल के सामने रक्खा प्याला लबालब भर दिया फिर तो शराब का दौर चल निकला। मल्का ने नाम के लिए ही अन्य लोगों का साथ दिया। शराब से उसे नफरत थी। कभी-कभी पी लेती थी; क्योंकि दूसरों को खुश करने के लिए कभी-कभी पीना जरूरी हो जाता था।

ज्यों-ज्यों मात्रा बढ़ती गयी त्यों-त्यों सेठ चाँदमल की आँखें भी अधिकाधिक सुर्ख होती गयीं। इन आँखों में एक लालसा रहती थी जिसका मतलब मार्लिन से छिपा न था। उसने सेठजी की आँखें देखीं और फिर आँखों ही आँखों में कैम्पबेल से कुछ कह डाला। कैम्पबेल ने विलम्ब करने का उलाहना दिया मार्लिन को। मार्लिन ने खेद प्रकट किया उठते हुए। मल्का तो ऊब ही चुकी थी। सुबह फिर मुलाकात होने की बात तय पायी। सब चले गये किन्तु सेठ चाँदमल का आसन न हिला। एक ओर मल्का, मार्लिन और कैम्पबेल ने कमरे से बाहर पैर रक्खा और दूसरी ओर सेठ चाँदमल ने अपने सामने पड़ा खाली प्याला पुनः भर दिया।

बँगले से बाहर आकर मार्लिन और कैम्पबेल एक ओर चले गये और मल्का लौटी अपने मकान की ओर, जिसके दरवाजे के सामने खड़ा होकर अजीज उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

अकस्मात् यहाँ उसे देखकर मल्का को आश्चर्य हुआ, आँखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर देखती हुई बोली वह—'आप.....!'

शराब की भभक अजीज को नाक में घुसी तो दिमाग भन्ना उठा उसका। उसके दिल को धक्का-सा लगा। तब तक उसकी ओर देख कर मल्का ने मकान के अन्दर आने का इशारा किया और स्वयं दरवाजा पार करके जीने पर पहुँच गयी।

कमरे में प्रवेश करते-करते मल्का बोली–'शराब की बू ने नफरत भड़का दी होगी।'

अजीज ने उत्तर दिया—'गोरे लोग हमारे समाज को भी आजादी का नया सबक पढ़ा चुके हैं। खास तौर से उनकी शागिर्दी करने पर भी उनका असर न पड़े, यह मुमकिन कैसे है।'

आदमकद आईने के सामने खड़ी होकर मल्का बोली—'आपका इशारा समझ गयी।'

अजीज ने आईने की ओर देखते हुए कहा—'शुक्रिया।'

मल्का ने पीठ आईने की ओर घुमा दी और कुर्सी की ओर संकेत करके बोली—'बैठिये।'

अजीज कुर्सी पर बैठ गया तो मल्का ने कहा—'पीनेवालों को सहानुभूति की जरूरत होती है, नफरत की नहीं।'

अजीज बोला—'नफरत से मुझे यों ही परहेज है। औरतों की मैं कद्र करता हूँ। उनसे नफरत करने का सवाल ही पैदा नहीं होता।'

मल्का ने पूछा—'औरतों पर इस तरह की मेहरबानी की कोई खास वजह है क्या?'

'नहीं'—अजीज ने जवाब दिया—'औरत से इंसान की जिन्दगी की खूबसूरती समझने की तालीम मिली है। उसका ही असर समझ लीजिये।'

'आप फिलासफर हैं या शायद?'

'मैं महज इंसान हूँ।'

मल्का चुप हो गयी। वह कुछ सोचने लगी थी। अजीज ने उसकी तन्द्रा भंग की—'इजाजत हो तो कुछ अर्ज करूँ?'

अनमनी-सी बोली मल्का—'क्या चाहते हैं आप?'

'जिस रास्ते पर आप चल रही हैं, वह गलत है।'

'मैं आपका मतलब नहीं समझी।'

गम्भीर होकर कहा अजीज ने—'मैं सबूत नहीं दे सकता, लेकिन मुझे मालूम है कि आप पाकिस्तान की मदद कर रही हैं।'

मल्का ने कहा—'यह मान भी लिया जाय कि आपका कहना ठीक है तो भी आपकी दस्तन्दाजी मुनासिब नहीं समझी जा सकती।'

'यह मैं भी समझता हूँ लेकिन...।'

'लेकिन क्या?'

'हर बात तर्क की कसौटी पर नहीं कसी जाती।'

'हार को छिपाने का यह बहाना नया नहीं है।'

'आप गलती पर हैं।'

'यह तो आप पहले ही कह चुके हैं।'

'हार मेरे पास फटक भी नहीं सकती।'

'यहाँ तक आने को तकलीफ गवारा करना क्या जीत की निशानी है?'

साहस भरा ऐसा तीखा व्यंग सुनने की कल्पना अजीज ने नहीं की थी। वह सोच में पड़ गया। सम्भवतः अपनी बात कहे बिना ही वह चला जाता। लेकिन इस बीच इश्तियाक पहुँच गया था। अजीज को देखते ही उसका क्रोध भड़क उठा। गुर्राते हुए बोला वह—'सियार की मौत आती है तो वह शहर की ओर भागता है।'

अजीज को इश्तियाक का व्यवहार अच्छा नहीं लगा। उसकी हिमाकत देखकर वह तिलमिलाया जरूर, फिर भी उसने अपनी गम्भीरता नहीं खोयी और बोला—'कभी अपने दरवाजे पर देखना तो ऐसी बातें कह लेना।'

इश्तियाक ने तीखे स्वर से कहा—'मैंने तुम्हें मल्का से दूर रहने की चेतावनी दी थी।'

'और यह भी समझ लिया था कि मैं तुम्हारा हुक्म बजाता रहूँगा।' अजीज ने उत्तर दिया—'अभी अजीज ने गुलामी का पट्टा नहीं लिखा है इश्तियाक।'

एक कदम और आगे बढ़ कर इश्तियाक ने कहा—'यह आजादी मँहगी साबित हो सकती है।'

अजीज का जवाब था—'तुम आजादी की कीमत ही नहीं जानते।'

'हिमाकत से बाज आ जाओ अजीज।'

'और इससे इनकार करूँ तो ?'

'तो अञ्जाम अच्छा न होगा।'

'इरादा क्या है ?'

'बता चुका हूँ।'

'मुझे धमकियों की परवाह नहीं।'

यह सुन कर इश्तियाक क्रोधोन्मत्त हो उठा। दूसरे ही क्षण उसके हाथ में एक तेज छुरा चमकने लगा। दोनों की बहस से तफरीह करने वाली मल्का ने छुरा देखा तो चौंक उठी। उसने तेजी से आगे बढ़कर आवाज दी—'इश्तियाक.....।'

इश्तियाक तैश में बोला—'तुम चुप रहो मल्का। तुम्हारी नासमझी काफी गुनाह कर चुकी है।

'पागल हो गये हो इश्तियाक', मल्का ने कहा—'खूँरेजी ही पसन्द है तो कोई और जगह खोज लो।'

'आग यहाँ भड़की है। वह बुझेगी भी यहीं।' इश्तियाक ने गुस्से में भर कर जवाब दिया।

परेशान मल्का आजिजी से बोली—'मान जाओ इश्तियाक! गुस्सा अच्छा नहीं होता। वह आदमी का होश-हवास छीन लेता है।'

इश्तियाक ने मल्का की बात पर ध्यान नहीं दिया और अजीज की ओर देखकर चुनौती भरे स्वर में बोला—'अब क्या इरादा है अजीज।'

'मेरा इरादा अब भी वही है, जो पहले था।' अपने स्थान पर खड़ा होकर बोला अजीज—'इस बंदरघुड़की का असर मुझ पर नहीं हो सकता।'

गर्जकर बोला इश्तियाक—'देखता हूँ तुम्हारी शामत ही तुम्हें यहाँ खींच लायी है।'

मल्का ने उसे फिर टोका और आगे बढ़कर उसकी कलाई पकड़ने की कोशिश करती हुई बोली–'मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूँ इश्तियाक, पागल न बनो।'

मल्का का हाथ झटक कर बोला इश्तियाक—'शराब का घूँट पिला कर नशे में होने की शिकायत करती हो मल्का। उठा हुआ हाथ फैसला होने के बाद ही नीचे गिरेगा।'

इश्तियाक का क्रोध शांत न होते देखकर मल्का, अजीज की ओर बढ़ी और बोली—'यह तमाशा दिखाने के लिए ही आप यहाँ आये थे?'

'मुझे अफसोस है मल्का', अजीज ने संजीदगी से कहा—'मैं जा रहा हूँ।'

अजीज दरवाजे की ओर बढ़ा तो इश्तियाक ने उसका रास्ता रोक लिया और बोला—'जाने से पहले तुम्हें वादा करना होगा कि फिर कभी मल्का से मिलने की कोशिश न करोगे।'

अब तक अपना आक्रोश दबा रखने वाला अजीज इस बार उबल पड़ा। इश्तियाक की गुण्डई बरदाश्त न हुई तो कड़क कर कहा

उसने—'मेरे रास्ते से हट जाओ इश्तियाक। गीदड़ों से शेर का रास्ता नहीं रुकता।'

अजीज के मुँह से निकली बात समाप्त हो ही रही थी कि हवा में छुरा तान कर इश्तियाक उसकी ओर झपटा, लेकिन दूसरे ही क्षण अजीज के हाथ में पिस्तौल चमकती देख कर उसने बढ़ा हुआ कदम पीछे हटा लिया। अजीज ने कहा—'बहादुरी का हौसला ही आज-माना चाहते हो तो फिर मौका मिल जायगा। दूसरे की गलती का फल मल्का को न भोगना पड़े, इसलिए तुम्हारी जान बख्श रहा हूँ। मेरे रास्ते से दूर हट जाओ।'

अजीज चला गया तो मल्का बोली—'तुमने अच्छा नहीं किया। झगड़ा-फसाद हमारी दिक्कतें बढ़ा देगा।'

इश्तियाक को मल्का का उपदेश कटे पर नमक-सा लगा। झल्ला कर बोला वह—'पहले आग लगायी, अब बुझाने चली हो। जो कुछ हुआ, उसकी जिम्मेदारी से तुम बरी नहीं हो सकती।'

उसे शान्त करने की चेष्टा करती हुई मल्का ने कहा—'मैंने गलती की थी तो तुम्हें सँभाल लेना चाहिये था। गलती पर गलती करके तुमने उलटे मामला और टेढ़ा कर दिया।'

'देखा जायगा', इश्तियाक ने लापरवाही से उत्तर दिया—'मैं जानना चाहता हूँ कि अजीज से तुम्हारी मेल-मुलाकात क्या अब भी जारी रहेगी?'

इश्तियाक के प्रश्न में समायी हुकूमत की बू मल्का को तनिक भी अच्छी न लगी। उसका स्वाभिमान तिलमिला-सा उठा। लेकिन उसने अपना रोष उभड़ने न दिया। मामला काफी आगे बढ़ चुका था। इश्तियाक को नाराज करके वह नयी मुसीबत नहीं मोल लेना चाहती थी। उसने जवाब दिया—'अजीज से मिलने मैं नहीं गयी

थी। यहाँ भी मैंने उसे नहीं बुलाया था। मेरी बदकिस्मती ही उसे यहाँ ले आयी थी।'

'मल्का!'

'हाँ।'

'मुझे खिलौना समझने की भूल न करना।'

'मल्का नादान नहीं है।'

'ज्यादा होशियारी से भी कभी-कभी धोखा होता है।'

'शुक्रिया, सबक याद रखूँगी।'

इश्तियाक फिर नहीं बोला। वह जाने लगा तो उसका गुस्सा ठंढा करने की गरज से मल्का ने जानबूझ कर सुचिता के चित्र का जिक्र छेड़ दिया और बोली--'वह तसवीर कहाँ है?'

'मेरे पास।'

'मुझे दे दो।'

'क्यों?'

'तुम अजीज को मेरे पास नहीं देखना चाहते, मैं तसवीर को तुम्हारे पास नहीं देखना चाहती।' मल्का ने मुस्करा कर कहा—समझौता मंजूर है?'

इश्तियाक ने कहा--'मजाक कर रही हो मल्का!'

मल्का बोली --'मजाक से नफरत है क्या?'

'हाँ, यदि वह बेवक्त की शहनाई की तरह हो।'

'मैंने मजाक नहीं किया है।'

'तुम तसवीर क्यों चाहती हो?'

'इसकी वजह से तुम किसी और से झगड़ा न कर बैठो इसलिए।'

इश्तियाक को ऐसा लगा मानो मल्का ने उपके मुँहपर कसकर

तमाचा जड़ दिया हो। उसकी आशा थी कुछ और; मल्का ने कह दिया कुछ और ही। वह तिलमिलाया जरूर लेकिन उसने मुँह नहीं खोला। चुपचाप वहाँ से चला गया। मल्का का प्रश्न जहाँ का तहाँ रह गया।

मल्का के मकान से बाहर आने के बाद अजीज अपने मकान की ओर बढ़ चला। रास्ते में कहीं रुका नहीं इसलिए शीघ्र ही अपने घर पहुँच गया। लेकिन इश्तियाक का क्रोध ठंढा नहीं हुआ था। वह घर जाने के बजाय गुलरुख के मकान पर पहुँच गया। वह उसी समय अस्पताल से लौटी थी। इश्तियाक को आया देखकर उसे इस बात पर पश्चात्ताप होने लगा कि 'मैंने दरवाजा खुला क्यों छोड़ दिया था।'

गुलरुख ने कहा—'मैंने यहाँ आने के लिए मना किया था!'

इश्तियाक ने लापरवाही से उत्तर दिया—'यह जरूरी नहीं है कि मैं तुम्हारी बात याद रखूँ।'

'आप आये क्यों है?'

'यह कहने के लिए कि इसलाम की सफेद चादर पर धब्बा न बनो।'

'आपका मतलब?'

'तुम मुसलमान हो।'

'जी।'

'राकेश हिन्दू है।'

'जी।'

अपनी आँखें गुलरुख के मुँह पर जमाकर इश्तियाक वजनदार आवाज में बोला—'एक बेपनाह मुसलिम नौजवान लड़की का किसी हिन्दू नौजवान से मिलना गुनाह है।'

गुलरुख को गुस्सा आ गया। उत्तेजित होकर उसने कहा—'आप यहाँ से चले जाइये। इस तरह की वाहियात बातें सुनने की फुर्सत मुझे नहीं है।'

इश्तियाक अपनी जगह पर ही जमा रहा। उसकी मुद्रा ऐसी थी जैसे या तो उसने कुछ सुना ही नहीं या गुलरुख ने कुछ कहा ही नहीं। यह देखकर गुलरुख का क्रोध और तीव्र हो गया। उसके नथुने फड़कने लगे। पैर काँपने लगे। इच्छा तो हुई कि इश्तियाक को जबरदस्ती दरवाजे के बाहर ढकेल दे लेकिन शारीरिक दुर्बलता के ध्यान ने उसका मार्ग अवरुद्ध कर दिया। अपनी बेवसी पर वह फूट पड़ना चाहती थी कि राकेश आ पहुँचा। उसे देखकर गुलरुख में भरोसा उत्पन्न हुआ। साथ ही आँखों से आँसू भी टपकने लगे। राकेश समझ न सका कि मामला क्या है। वह कभी गुलरुख की ओर देखता कभी इश्तियाक की ओर। जब कोई बोलता नजर न आया तो उसने ही शांति भंग की गुलरुख से यह पूछकर—'तुम रो क्यों रही हो, खैरियत तो है?'

गुलरुख के उत्तर देने से पूर्व ही अपने स्थान से उठते हुए इश्तियाक ने कहा—'इसे हँसाना और रुलाना तुम्हारे हाथ में है राकेश। फैसला कर लेना, मैं जा रहा हूँ।'

इश्तियाक की बातों का अभिप्राय न समझ सकने के कारण उसके चले जाने के बाद राकेश ने गुलरुख की ओर देखा और बोला—'मुझसे कुछ गलती हो गयी है?'

उत्तर में गुलरुख ने उसे इश्तियाक की एक-एक बात सुना दी। उसके चुप हो जाने पर राकेश को लगा जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो। उसका हृदय वेदना से भर उठा। सोचने लगा वह इश्तियाक का कहना ठीक ही है। गुलरुख से इस प्रकार मेरा मिलना-जुलना इसके लिए कभी भी मुसीबत का पहाड़ बन सकता है। यह अकेली है। किस-किस का मुँह बन्द कर सकेगी। भगवान् न करे, अस्पताल के अधिकारियों ने अफवाहों का अर्थ उलटा-सीधा लगा लिया तो जीवन

का बोझ ढोने का सहारा भी हाथ से जाता रहेगा। अस्पताल का आफिसर इंचार्ज किसी न किसी वजह से मल्का से प्रभावित है ही। मल्का और इश्तियाक, दोनों ने मिलकर खुराफात करने की चेष्टा की तो गुलरुख संकट में पड़ जायगी।

जिस परिस्थिति को आधार बनाकर राकेश चिन्ता-मग्न हो उठा था, उसकी सम्भावना की ओर अजीज उस दिन ही उसका ध्यान आकृष्ट कर चुका था जिस दिन उसने उसे गुलरुख से मिलने की सलाह दी थी। राकेश को यह स्मरण न आया। सम्भव था कि इसकी स्मृति से उसे कुछ सहारा मिल जाता। लेकिन भाग्य-चक्र की गति कोई नहीं मोड़ सकता। राकेश अपवाद न था।

उधर गुलरुख पर भी इश्तियाक की धमकी का काफी असर हो चुका था। रह-रहकर असहायावस्था का भयावह चित्र उसकी आँखों के सामने आ जाता था। मस्तिष्क मैं जैसे और कुछ रह ही नहीं गया था। साहस बँधाने वाली बात राकेश के मुँह से सुनने की जो आशा थी, वह भी राकेश के मौन के कारण क्षीण होती जा रही थी।

ऐसी ही दशा में अतीत की स्मृतियाँ भी जाग उठती हैं। गुलरुख को भी अपना अतीत याद आ गया। राहत उसको इससे भी न मिली। उलटे यह स्मरण आते ही वेदना तीव्र हो उठी कि भाई जीवित होता तो इश्तियाक की जबान खींच लेता। कितना प्यार करता था वह ? उसके सामने किसी ने कभी आँख उठाकर देखने की जुर्रत तक न की। और आज····

सूखी हुई आँखें फिर आर्द्र हो उठीं। थके हुए मुसाफिर के रुक-रुक कर उठने वाले कदमों की भाँति उसकी दोनों आँखों से ढुलकने वाली आँसू की दो बूंदें धीरे-धीरे आगे बढ़कर कपोलों पर आ थमीं। राकेश की दृष्टि उसके मुख पर पड़ी तो वह चौंक-सा उठा। गुलरुख

उस समय वेदना की प्रतिमूर्ति-सी लग रही थी जिसे देखकर किसी का भी हृदय हिल सकता था। उससे भी न रहा गया। बोल ही उठा राकेश —'दिल को छोटा न करो गुलरुख। मेरी वजह से तुम्हारे दामन पर धब्बा न लगेगा। कश्मीर अन्य लोगों की आँखों को चाहे जितनी भी ठंढक पहुँचाता हो, मेरे हृदय के लिए वह शूल बन गया है। मैं चला जाऊँगा, इश्तियाक और उसके ऐसे अन्य लोगों की नजर नहीं पहुँच सकती जहाँ। चाहो तो कभी-कभी याद कर लेना।'

राकेश की बातें सुनकर गुलरुख स्वयं को सँभाल न सकी। आँसुओं के प्रवाह को रोकने वाला बाँध टूट गया। बड़ी मुश्किल से अपने को सँभालते हुए उसने कहा—'मालूम नहीं कि किस्मत कहाँ ले जाकर पटकने वाली है। बदकिस्मत को मौत भी नहीं पूछती। न जाने किस-कित गुनाह की सजा मिलने वाली है। काश्, यह जिंदगी खत्म हो सकती!'

सांत्वना देने की चेष्टा करते हुए कहा राकेश ने—'हिम्मत छोड़ने से मुसीबत बढ़ती ही है गुलरुख। धीरज से काम लो। अजीज इंसान की शक्ल में फरिश्ता है। वह तुम्हारी सहायता करने से बाज नहीं आयेगा। तुम्हें नहीं मालूम, वह प्रतिदिन तुम्हारा हाल-चाल लेने की चेष्टा करता रहता है। उसका सहारा भी यदि इश्तियाक की आँखों में गड़ा तो वह उसका सामना कर लेगा। अजीज दिल से भले ही केवल इंसान हो लेकिन दुनिया की निगाह में वह पहले मुसलमान है। मैं बड़े भाई की तरह उसकी इज्जत करता हूँ। तुम उस पर भरोसा कर सकती हो।'

राकेश को यदि यह ज्ञात होता कि भरोसा गुलरुख को उस पर भी था तो शायद वह कुछ और ही कहता। उसमें न तो सोचने की शक्ति रह गयी थी, न समझने की। ऐसी दशा में यह समझना उसके

लिए सम्भव नहीं था कि गुलरुख की आशा उसके सामने ही टूक-टूक होकर गिर चुकी थी। शेष रह गया था मातम, जो उसके कलेजे से चिपका हुआ था। इससे मुक्ति दिला सकती थी मौत जो उससे दूर थी बहुत दूर; वहाँ—जहाँ राकेश की दृष्टि पहुँच नहीं सकी थी।

गुलरुख को और अधिक छेड़ना राकेश को उचित न लगा। अपने स्थान से उठते हुए उसने कहा—'जा रहा हूँ गुलरुख।'

गुलरुख तब भी कुछ न बोली। उसने गर्दन ऊपर उठायी और आँखें राकेश के मुँह पर जमा दीं। उसकी पुनरम आँखें राकेश के पैरों की बेड़ियाँ बनीं अवश्य लेकिन ज्वार की भाँति उभड़ने वाली उसकी निराशा ने इन बेड़ियों को छिन्न-भिन्न कर दिया। वे रोक न सकीं राकेश को। वह चला गया। इस बीच गुलरुख की आँखों से दो आँसू एक साथ ढुलके। एक कपोल पर थमा रह गया, दूसरा धरती पर चू पड़ा।

परिस्थितियों के निर्मम उपहास से व्यथित राकेश जब घर पहुँचा, तरह-तरह के विचारों में डूबा अजीज चारपाई पर लेटा हुआ था। कमरे में फैला अंधकार खिड़की की राह अन्दर आनेवाली हल्की-सी शशि-किरण-प्रभा का मजाक उड़ाता-सा दिखाई दे रहा था जो अजीज के पैरों पर लोटी हुई थी।

राकेश को विलम्ब से लौटा देखकर भी अजीज बोला नहीं। उधर राकेश भी चुपचाप अपने कपड़े समेटने में व्यस्त हो गया। इस कार्य से अवकाश मिलने पर वह अटैची सँभालने लगा तो अजीज बोला—'कहीं जाने की तैयारी कर रहे हो?'

'हाँ।'

'इस समय! रात को कहाँ जाओगे?'

'जहाँ किस्मत ले जायगी।'

'मैं समझा नहीं।'

'जिन्दगी का मजाक है न अजीज', राकेश ने कहा—'वह किसी की समझ में नहीं आता।'

अजीज ने कहा,—'इस समय मत जाओ राकेश। मैंने तुमसे कभी मदद नहीं माँगी। अब मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है। मेरा ठिकाना नहीं है। अम्मा घर में अकेली है। उसकी चिन्ता से मुक्त रहने के लिए तुम्हें यहाँ मौजूद चाहता हूँ।'

राकेश चिन्ता में पड़ गया। अजीज ने अपनी माँ का जिक्र न किया होता तो वह उसका अनुरोध ठुकरा भी सकता था। खातून बीवी से उसे भी उतनी ही मोहब्बत हो गयी थी जितनी किसी बेटे को अपनी माँ से हो सकती है। एक बार ममता ने उसे फिर जकड़ना चाहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अजीज को क्या उत्तर देना चाहिये।

उदासी से भरी आवाज में पुनः बोला अजीज—'इश्तियाक की हिमाकत जरूरत से ज्यादा बढ़ गयी है। आज उसने छुरा निकाल लिया था। जवाब में रिवालवर दिखाकर मैं चला आया। वह कमीनी तबीयत का आदमी है। कब क्या कर बैठेगा, यह बता सकना मुश्किल है।'

इश्तियाक का नाम सुनकर राकेश चौंक उठा। कुछ ही देर पहले उसके सामने ही उसने गुलरुख को धमकी दी थी। अजीज के मुँह से उसका नाम सुनकर गुजरी हुई घटना ताजी हो गई।

राकेश ने अजीज से एक-एक बात पूछ ली। जब उसकी कहनी समाप्त हो गयी तो राकेश ने आप-बीती सुनाकर अजीज का क्रोध भड़का दिया। लेकिन अजीज ने अपना क्रोध प्रकट नहीं किया। उसे समय अनुपयुक्त लगा। तब उसने राकेश को अपनी चेतावनी की बात याद दिलायी और याद दिलाया उसका वादा। राकेश रोजा छुड़ाना

चाहता था, नमाज गले पड़ गयी। अजीज को संकट में छोड़कर जाने की कल्पना उसे अच्छी न लगी। उसकी और उसकी माँ की सेवाएँ उसे याद आ गयीं। अजीज ने उसकी जान बचायी थी। उसे अपने साथ अपने मकान में रख रहा था। उसके खाने-पीने और उठने-बैठने पर खातून बीवी इतना अधिक ध्यान रखती थीं कि राकेश को किसी गैर के घर में रहने का अनुभव ही नहीं हुआ कभी।

उसकी विचार-धारा को भंग करते हुए अजीज ने कहा—'तुमने अपना इरादा गुलरुख पर प्रकट नहीं किया था?'

'बता चुका हूँ।'

'उसने कुछ नहीं कहा?'

'मेरे लिए वह पहेली हैं।'

'और उसके लिए तुम····!'

'मुसीबत।'

'गुलरुख यह मंजूर करेगी?'

'जो तथ्य स्वयंसिद्ध है, उसके लिये प्रमाण ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है।' राकेश ने कहा—'गुलरुख से मेरी मुलाकात न होती तो इश्तियाक उसे नीचा नहीं दिखा सकता था। मेरी जगह पर यदि तुम होते तो शायद वह धमकी भी नहीं दे सकता था।'

अजीज बोला—'गुलरुख अकेली है राकेश।'

राकेश ने उत्तर दिया—'जानता हूँ।'

'उसे मददगार चाहिये।'

'वह मजबूत बाहोंवाला होना चाहिये।'

'और तुम?'

'सुचिता के गुम होने की घटना ने मुझे कमजोर बना दिया है

अजीज,' राकेश ने कहा,—मैं स्वयं को ही सँभाल नहीं पाता। दूसरे की मदद कैसे कर सकता हूँ।'

'पागल न बनो राकेश,' अजीज ने कहा—'वक्त तुम्हारा इम्तहान ले रहा है।'

'मत रोको अजीज' व्यग्रता से बोला राकेश,—'मुझे सूनी पहाड़ियों में भटकने के लिए छोड़ दो। वहीं राहत मिलेगी मुझे।'

'नसीब की ठोकरें खाकर घबरा उठे हो शायद।' अजीज बोला—'जाना ही चाहते हो तो जाओ। मुसीबतों के सामने मैं सिर नहीं झुका सकता। मेरे लिए तो वह मौत भी जिन्दगी है जो उसे ऊपर उठाती हैं।'

चाँद ऊपर उठ चुका था, इसलिए खिड़की की राह से कमरे में आनेवाला उसका हल्का प्रकाश और भी हल्का हो गया था। राकेश ने हाथ में अटैची उठायी और उठकर खड़ा हो गया। उसने एक बार दरवाजे की ओर देखा, फिर अजीज की ओर। अंधकार में नजर ही क्या आता उसे। सिर झुकाकर तेजी से कमरे से बाहर चला गया वह।

रात बीती। दिन आया। प्रतिदिन की भांति उस दिन भी खातून बीवी ने सुबह का नाश्ता तैयार किया और अजीज तथा राकेश की प्रतीक्षा करने लगीं। काफी समय बीत जाने पर भी दोनों में से कोई उनके पास नहीं पहुँचा। तब वह स्वयं ही अजीज के कमरे में पहुँचीं। वहाँ राकेश की चारपायी खाली पड़ी थी। अजीज पड़ा-पड़ा निर्निमेष दृष्टि से छत की ओर देख रहा था। वातावरण में अजीब-सी मनहूसियत छायी थी। अजीज के पास पहुँच कर खातून बीवी ने कहा—'सूरज निकले भी दो घंटे हो गये। अभी तक चारपायी पर पड़ा है। राकेश कहाँ है?'

उसी प्रकार पड़े-पड़े अजीज ने उत्तर दिया—'राकेश चला गया अम्मा।'

'चला गया! नाश्ता तो कर लेना था।'

'रात को नाश्ता करने का कहाँ वक्त था!'

खातून बीवी समझ न सकीं कि अजीज क्या कह रहा है। अजीज के मुँह पर आँखें जमाती हुई बोलीं—'तू क्या कह रहा है अजीज! क्या राकेश रात को घर नहीं आया?'

'आया था, अपने कपड़े लेने। कपड़े लेकर चला गया।'

'चला गया। कहाँ गया है? मुझसे मिला नहीं।'

'कहाँ गया है, मैं नहीं जानता।'

'कब लौटेगा?'

'यह भी नहीं जानता।'

'अजीज!'

'अम्मा, मुमकिन है कि कभी फिर आ जाय। लेकिन गया है न लौटने के इरादे से ही।'

खातून बीवी अजीज पर बरस पड़ीं यह जानकर कि जिन्दगी से मायूस होने के कारण ही राकेश कहीं चला गया और अजीज उसे रोक नहीं सका। उसने इस बात पर भी क्षोभ प्रकट किया कि अजीज ने रात को ही राकेश के जाने की बात नहीं बतायी। वह मन मारकर रह गयीं। कर भी क्या सकती थीं। प्रपंच उनकी समझ में नहीं आता था। विवाद कर नहीं सकती थीं। प्यार और आवेश उभड़ता तो दो-चार बातें कर लेती थीं। रंज और गम के वातावरण में उनके मुँह पर ताला लग जाता था। इस प्रकार बिना कहे-सुने राकेश के चले जाने से उन्हें बहुत दुःख हुआ था। जब से राकेश आया था, वह अजीज की ओर से कुछ निश्चिन्त हो गयी थीं।

उनके दिल में राकेश के लिए भी मोहब्बत पैदा हो गयी थी। शुरू-शुरू में राकेश घंटों उसके पास बैठा रहता था। कई बार उसने खातून बीवी से यह कहा था—अम्मा, पहले केवल अजीज ही तुम्हारा बेटा था। अब दो बेटे हो गये। मुझे भी माँ मिल गयी है। भाग्य फूट गया था जो उसका सुख अब तक नहीं मिला। सुचिता के मोह ने ही जिन्दगी से ऊबने नहीं दिया। सहसा उसके भी विछोह का सामना करना पड़ा तो जिन्दगी का मोह भी जाता रहा। माँ-बाप द्वारा छोड़ी हुई दौलत का अम्बार भी सुख भोगने की लालसा उत्पन्न न कर सका। अस्पताल से निकलकर मौत के मुँह तक जाने का कारण यही था। अजीज ने जान बचायी है। तुमने बेटे की तरह प्यार किया है। हो सका तो यहीं पड़ा रहूँगा। सुचिता को ढूँढ़ने के लिए यों भी कश्मीर में रहना जरूरी है ही।

चिन्तित माँ की चिन्ता और अधिक न बढ़ाने के उद्देश्य से अजीज ने चारपायी छोड़ दी थी और सभी कार्यों से निवृत्त होकर नाश्ता करने के लिए पहुँच गया था। नाश्ता भी किया था उसने अनिच्छापूर्वक ही। पूर्ववर्ती दिन की घटनाएँ उसके मस्तिष्क पर छायी हुई थीं। न तो अन्य किसी बात की सोच पाता था वह, न कोई दूसरी बात उसे सूझ ही पड़ती थी। साधारण घटनाओं के इस असाधारण रूप की कल्पना जो नहीं की थी उसने।

नाश्ता समाप्त करने के बाद अजीज घर से बाहर जाने लगा तो खातून बीवी ने उससे कहा,—'कोशिश करना, शायद राकेश का पता लग जाय।'

अजीज के सामने कोई विशेष काम था नहीं। समय बिताने के लिए ही वह घर से बाहर निकला था। घूमते-फिरते वह क्षेमेन्द्र के घर पहुँच गया। वहाँ अशोक भी बैठा था जो सहानुभूति प्रकट करने के

लिए आया था यह जान कर कि जिस समाचार-पत्र में क्षेमेन्द्र काम करता था उसके दफ्तर और प्रेस में आग लग गयी थी। क्षेमेन्द्र भी उदास था। इस समाचार-पत्र से कई वर्षों से उसका सम्बन्ध था। उसके अस्तित्व के संकटापन्न होने के समाचार से वह खिन्न हो उठा था।

अजीज के पहुँचने पर यही चर्चा नये सिरे से छिड़ गयी और क्षेमेन्द्र ने अजीज से कहा—'कल नयी दिल्ली के लिए रवाना हो रहा हूँ। कोई काम हो तो बता दो।'

अजीज बोला—'वहाँ राकेश नजर आ जाय तो मेरी ओर से नमस्कार कर देना। उसकी वजह से आज काफी फटकार सुननी पड़ी है मा से।'

अजीज की बात सुनकर अशोक चौंक-सा पड़ा और इस प्रकार बोल पड़ा मानों उसकी बात पर विश्वास ही नहीं हुआ उसे—'क्या राकेश चला गया।'

'हाँ।' अजीज ने उत्तर दिया। अशोक ने पुनः पूछा,—'सुचिता के बारे में कोई समाचार मिला उसे?'

'सुचिता के गम ने ही तो उसका दिमाग खराब कर रखा है', अजीज ने कहा, 'पता नहीं कि अभागिन कहाँ पड़ी है।'

अशोक की इच्छा तो हुई यह बता देने की कि सुचिता इस दुनिया में नहीं रही, लेकिन न जाने क्यों उसने एक बार और अपनी यह इच्छा दबा दी। कारण पूछता कोई उससे इस आचरण का तो वह कुछ बता नहीं सकता था। इच्छा उसकी यह थी कि जिस प्रकार आकस्मिक ढंग से उसे सुचिता का तथा राकेश से उसके सम्बन्ध का पता लगा, उसी प्रकार आकस्मिक ढंग से आप ही आप दूसरे लोग भी वस्तुस्थिति से अवगत हो जाँय। सुचिता की मृत्यु का समाचार

स्वयं नहीं सुनाना चाहता था वह। यही कारण था कि चित्र के गायब होने की घटना का उल्लेख भी नहीं किया था उसने किसी के सामने, क्योंकि इससे अनेक प्रश्न उत्पन्न हो सकते थे और तब कोई यह भी पूछ सकता था कि चित्र था किसका।

'अशोक नहीं बोला तो क्षेमेन्द्र ने ही अजीज से पूछा—'क्या राकेश नयी दिल्ली में है।'

अजीज ने कहा—'कहाँ गया होगा, यह मैं नहीं जानता। सोचता हूँ कि शायद वहीं चला गया हो।'

आश्चर्यचकित-सा बोला क्षेमेन्द्र—'बता नहीं गया? नाराज होकर गया है क्या?'

उत्तर में अजीज ने सभी बातें बता दीं। क्षेमेन्द्र गौर से सुनता रहा। अजीज के चुप हो जाने पर उसने कहा—'विधि की विडम्बना को कौन समझ सकता है? पीछे पड़े हैं हम लोग सम्भावित कश्मीर-विरोधी षड्यंत्र के और सामने आ रही हैं ऐसी बातें जिनका स्थान उपन्यास या कहानी के कथानक में ही हो सकता है।'

अशोक ने कहा—'आज तुम्हें आश्चर्य हो रहा है! एक दिन तुमने मनुष्य के स्वभाव को असीम और उसे चित्रांकित करने के मेरे प्रयास को अव्यावहारिक बताया था। अब कहो तो चित्र बनाकर तैयार कर दूँ।'

अशोक की बात सुनकर अजीज और क्षेमेन्द्र दोनों हँस पड़े। अशोक ने इसका कारण पूछा तो क्षेमेन्द्र बोला—'व्यक्ति-विशेष के स्वभाव का चित्रण, मानव-स्वभाव का चित्रण नहीं हो सकता, चित्रकार महाशय!'

'प्रतिवाद करते हुए अशोक ने कहा—लाक्षणिक प्रयोग द्वारा

प्रस्तुत अभिव्यञ्जना स्वतः असीम होती है। आकाश के रूप में मानव-स्वभाव का चित्रण हो तो।'

क्षेमेन्द्र को उत्तर सूझ न पड़ा। उसने यह कह कर विवाद समाप्त करना चाहा कि 'चित्रकार का उत्तर कवि ही दे सकता है। यह मेरे वश की बात नहीं है। हाँ अजीज, तुम मेरी मदद कर सकते हो?'

मुस्कराकर अजीज ने कहा—'आज नहीं, फिर कभी। पहले इंसान की शक्ल में शैतान को देख लेने दो।'

'सावधान रहना अजीज', अशोक ने कहा—'कहीं खतरा न पैदा हो जाय। मैं समझता हूँ, तुम्हारी दृष्टि इश्तियाक पर है।'

अजीज बोला—'हाँ, उसकी असली सूरत देखना चाहता हूँ।'

क्षेमेन्द्र को मानो अवसर मिल गया। अजीज का मुँह बन्द होते-होते वह बोल उठा—'मनुष्य के स्वभाव का यह विकराल स्वरूप प्रशांत आकाश के चित्रण द्वारा अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।'

अशोक कुछ कहना ही चाहता था कि सहसा खिड़की से बाहर सड़क पर दृष्टि पड़ते ही वह चुप हो गया और एकटक बाहर की ओर देखते हुए बोला—'इश्तियाक शायद तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है अजीज।'

अजीज और क्षेमेन्द्र ने एक साथ खिड़की से बाहर देखा। सामने नजर आनेवाली सड़क के किनारे इश्तियाक खड़ा था। क्षेमेन्द्र ने अजीज की ओर देखकर कहा—'तुमसे और राकेश से उलझने के बाद अब वह शायद मुझसे भी उलझना चाहता है।'

अजीज ने उत्तर न दिया और बाहर जाने के लिए उद्यत हुआ। क्षेमेन्द्र ने उसे रोक लिया। उसने कहा—'अभी समय अनुपयुक्त है। आवेश में आने के बजाय हमें धैर्य से काम लेना चाहिये।'

अजीज ने उत्तर नहीं दिया। क्षेमेन्द्र का परामर्श उसे उपयुक्त

लगा। गुलरुख बीच में न होती तो सम्भव था कि वह उसकी सलाह को मानने से इनकार भी कर देता। अन्य किसी की चिन्ता उसे नहीं थी क्योंकि गुलरुख की ही भांति कोई और भी निराश्रय नहीं था—कमजोर नहीं था। जब तक राकेश था, अजीज इस ओर से निश्चिन्त था। उसके चले जाने के कारण गुलरुख की सुरक्षा का प्रबन्ध उसे अपने उत्तरदायित्व के अन्तर्गत प्रतीत होने लगा था क्योंकि इस झमेले में गुलरुख स्वयं नहीं फँसी थी। उससे इश्तियाक की दुश्मनी का कारण वह स्वयं को तथा राकेश को समझता था।

अशोक की भी विचित्र हालत थी। उसे कश्मीर आये काफी दिन हो चुके थे। अब वह लौटना चाहता था। कुछ ही देर पूर्व वह अपना विचार प्रकट भी कर चुका था क्षेमेन्द्र के सामने, किन्तु राकेश के चले जाने तथा इश्तियाक द्वारा जासूसी की जाने की घटना ने उसके विचार को पुनः हिलोरना आरम्भ किया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी न किसी समय कोई भी गम्भीर घटना घट सकती है जो उसके मित्रों से ही सम्बन्धित होगी। ऐसी स्थिति में यहाँ से हटना क्या उचित होगा?

कुछ समय के लिए क्षेमेन्द्र ने यह कहकर उसकी कठिनाई हल कर दी कि 'मैं तो कल नयी दिल्ली के लिए रवाना हो जाऊँगा। एक सप्ताह का समय लग सकता है वहाँ। इस बीच तुम्हें सतर्कता से रहना होगा अशोक। यदि यह सही है कि शरारत के लिए इश्तियाक मेरी ओर झुका हुआ है तो वह तुम्हारे सामने भी आ सकता है। यों, यह शंका समझ में आने योग्य है। मैंने तो विदेशियों से साठ-गाँठ पर प्रकाश डालनेवाला समाचार प्रकाशित कराया था। तुमने यद्यपि ऐसा कोई कार्य नहीं किया है, तथापि मुझसे तुम्हारी मित्रता ही षड्यन्त्रकारियों को बौखला देने के लिए काफी हो सकती है।'

क्षेमेन्द्र की चेतावनी सुनकर सहसा अशोक के मस्तिष्क में यह विचार उठा—सुचिता का चित्र गायब होने में कहीं इश्तियाक का हाथ तो नहीं है ? फिर, वह विचारों में डूब गया और सुचिता का चित्र चुराने वाले चोर को ढूँढ़ निकालने का उसका इरादा पक्का होने लगा। उसने कहा—'तुम चिन्ता न करो। अजीज यहाँ है ही। मैं परदेशी हूँ तो क्या हुआ, कुछ लोग तो परिचित हैं ही। आवश्यकता पड़ने पर तुम्हारी अनुपस्थिति में मुझे उनसे भी सहायता प्राप्त हो सकती है।'

गोष्ठी समाप्त हो गयी। अशोक तो रुका रहा लेकिन अजीज चला गया। क्षेमेन्द्र के घर से चलकर वह सीधा अस्पताल में जा पहुँचा। वहाँ पता चला कि गुलरुख बीमारी के कारण अनुपस्थित है। तब वह उसके घर गया।

गुलरुख बिस्तर पर पड़ी थी। अस्पताल की एक दूसरी नर्स भी उसके पास मौजूद थी। उसने अजीज को बताया कि 'टेम्परेचर अधिक है।'

अजीज ने कहा—'गुलरुख अकेली है। क्या अस्पताल में नहीं भर्ती हो सकती ?'

नर्स ने जवाब दिया—'जिद मेरी समझ में नहीं आती। कई बार कह चुकी हूँ अस्पताल चलने के लिए। वह तैयार ही नहीं होती।'

अजीज ने तब स्वयं चेष्टा की गुलरुख को समझाने तथा अस्पताल में भर्ती होने के लिए राजी करने की। लेकिन गुलरुख ने सहमति प्रकट न की। कारण असहमति का यह बताया उसने कि—वहाँ जिस मानसिक अशांति का सामना करना पड़ेगा, उसे बरदाश्त न कर सकूँगी।' अजीज उसकी बात से सहमत नहीं हुआ, फिर भी उसने

प्रतिवाद नहीं किया। गुलरुख की मुद्रा देखकर उसने यह अन्दाज लगा लिया था कि यह व्यर्थ होगा।

अजीज चिन्ता में डूब गया। कुछ खिजलाहट भी उत्पन्न हुई, क्योंकि वह उसकी जिद को निरर्थक समझता था और यह निरर्थक जिद उसके लिए सिर-दर्द हो गयी थी। वह मन मसोस कर रह गया। करता भी क्या ? गुलरुख दबाव डाले जाने की स्थिति में थी नहीं। अजीज दबाव देता भी तो किस नाते से। अन्त में उसने अपनी माँ को उसके पास भेजने का निर्णय किया और इसकी सूचना गुलरुख को देकर बोला—'तुमने इनकार किया भी तो मैं तुम्हारी बात नहीं मानूँगा।'

अपनी बात समाप्त करके वह घर लौट आया। यहाँ आने पर यह बात उसकी समझ में न आयी कि क्या कहकर गुलरुख के पास माँ को भेजे। गुलरुख के एकाकी जीवन से परिचित होने के बाद न जाने वह कौन-कौन-सा प्रश्न पूछ बैठगी। अजीज तब स्वयं पर झुँझला उठा यह सोचकर कि 'इस पर ध्यान दिये बिना ही मैंने माँ को भेजने की बात गुलरुख से कह क्यों दी !'

वह चिन्ता-सागर में गोते खा ही रहा था कि खातून बीवी पहुँच गयीं और उसे परेशान-सा देखकर बोलीं—'क्या बात है अजीज, राकेश का पता लगा ?'

माँ का प्रश्न सुनकर अजीज की खोयी हुई चेतना लौट-सी आयी उसने कहा—'कुछ पता नहीं लगा माँ ! खुद तो चला गया लेकिन मेरे लिए परेशानी छोड़ गया है। जिस नर्स ने अस्पताल में उसकी मदद की थी, वह अकेली है। इस समय बीमार है और घर पर पड़ी है। राकेश पर उसका एहसान है। उसकी अनुपस्थिति में नर्स की मदद कैसे करूँ, इसी चिन्ता में पड़ा हूँ।'

खातून बीवी बोलीं—'इतनी-सी बात के लिए मुँह लटकाने की क्या जरूरत है। एक-दो दिन की बात है। मैं चली जाऊँगी।'

हर्षोत्फुल्ल होकर अजीज ने माँ की ओर देखा। श्रद्धा और आदर से उसका माथा झुक गया। बुद-बुदाता-सा बोला—'तुम कितनी अच्छी हो माँ!'

खातून बीवी ने आगे बढ़कर उसकी ठुड्ढी पकड़ ली और मुँह ऊपर उठाते हुए उस पर अपनी आँखों से हृदय की सारी ममता उँडेल कर बोली—'मैं तेरे लिए ही तो जी रही हूँ अजीज।'

अजीज कुछ बोल न सका। उसकी आँखें छलछला उठीं।

क्षेमेन्द्र को अपने जीवन में शायद ही कभी इतना आश्चर्य हुआ होगा जितना अपने अखबार के सम्पादक के कार्यालय में सेठ चाँदमल और मार्लिन को देखकर हुआ था। बाद में जब यह पता चला कि सेठजी ने अखबार को चलानेवाले प्रतिष्ठान के सबसे अधिक हिस्से खरीद लिए हैं, तो उसे परेशानी भी हुई। उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि इस अखबार में सेठ चाँदमल की भी दिलचस्पी है और उस पर अधिकार जमाने के लिए वह अवसर की प्रतीक्षा में है। सारा परिवर्तन उसे गोरखधन्धा-सा लगा।

९

नयी दिल्ली से श्रीनगर लौट कर सबसे पहले उसने नयी व्यवस्था की चर्चा अशोक से की और अपना यह मन्तव्य भी प्रकट किया कि 'अखबार के मालिक नोटिस दें, इससे अच्छा यही है कि मैं स्वयं त्याग-पत्र भेज दूँ।' अशोक इस विचार से सहमत न हो सका और उसने क्षेमेन्द्र को यह समझाने की कोशिश की कि 'यदि प्रयत्न करके ही सेठ चाँदमल ने अखबार पर कब्जा जमाने की कोशिश की होगी, तो अखबार से सम्बन्ध कायम रहने पर उद्देश्य का पता भी चल जायगा।' क्षेमेन्द्र को यह परामर्श तर्कोचित लगा अवश्य, फिर भी न जाने क्यों इसे स्वीकार करने में उसे अपने अन्तर से पर्याप्त संघर्ष करना पड़ा। उसे लगा, जैसे वह कोई अपराध कर रहा हो।

उस दिन क्षेमेन्द्र जल-भुन उठा था जिस दिन प्रथम बार उसके अखबार में कश्मीर के विभाजन के पक्ष में जोरदार सम्पादकीय लेख प्रकाशित हुआ था। यद्यपि अखबार की नीति के लिए वह तनिक भी उत्तरदायी नहीं था, तथापि इस सम्पादकीय की आलोचना करने वालों ने इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया। कुछ लोगों ने क्षेमेन्द्र पर इस ढंगसे ताना कसा मानों वह लेख उसने स्वयं ही लिखा हो। उसका रास्ता चलना भी दूभर हो गया। पहले उससे मिलने और ताजा समाचार पूछने को लोग उत्सुक रहा करते थे। इस सम्पादकीय के प्रकाशन के बाद वह प्रतिष्ठा भी समाप्त हो गयी। लोग उसे देखते तो मुँह घुमा लेते मानो वह असामाजिक और अवांछनीय प्राणी हो। अपनी दुर्दशा देखकर उसे घोर कष्ट हुआ और वह यह सोच-सोचकर पश्चात्ताप करता रहा कि 'मैं व्यर्थ ही अशोक का परामर्श मान बैठा। त्याग-पत्र दे दिया होता तो यह दिन देखना न पड़ता।'

क्षेमेन्द्र का मानसिक क्लेश अपनी चरमसीमा तक पहुँच रहा था। दूसरी ओर कानाफूँसी का हथकंडा अपना कर इश्तियाक उसका रहा-

सहा मनोबल भी तोड़ देने पर तुला था। अजीब बात यह थी कि एक दिन पूर्व तक जो व्यक्ति इश्तियाक को संदेह की दृष्टि से देखते थे, वे ही अखबार और उसके सम्पादकीय लेख की चर्चा के समय क्षेमेन्द्र के विरुद्ध उसके दोषारोप को ही सही मान लेते थे। उसका यह प्रयास अशोक, क्षेमेन्द्र अथवा अजीज किसी की भी दृष्टि से छिपा न था।

अजीज को इश्तियाक की यह चाल खरतनाक लगती थी और उसकी धारणा थी कि 'इश्तियाक एक ढेले से दो शिकार मारने में सफल हो रहा है।' एक ओर वह क्षेमेन्द्र को बदनाम करने में सफल हो रहा था तथा दूसरी ओर इस स्थिति का लाभ उठाकर अपने प्रति लोगों को असंदिग्ध बना रहा था। दूसरी स्थिति अजीज के हृदय में शूल-सी चुभती थी क्योंकि वह समझता था कि इससे लोगों को गुमराह करने का कार्य इश्तियाक के लिए अधिक सुगम हो जायगा। परिस्थितियों के इस संकटपूर्ण क्रम को छिन्न-भिन्न करने के उपाय पर उसने अनेक बार विचार किया होगा लेकिन सफलता हाथ नहीं लगी। कानून का आश्रय लेकर इश्तियाक का मुँह बन्द नहीं किया जा सकता। कश्मीर की स्थिति-पाकिस्तानी आक्रमण के फलस्वरूप संकटापन्न अवश्य थी तथापि वहाँ संकटकालीन कानून नहीं लागू था जो देश-द्रोही आचरण का सन्देह मात्र होने पर सम्बधित व्यक्ति को सीखचों के पीछे पहुँचा सकता था। देश-द्रोही होने का प्रत्यक्ष प्रमाण उसके विरुद्ध था नहीं। फलतः अजीज यह महसूस करने लगा था कि इश्तियाक उसे कदम-कदम पर पछाड़ रहा है। राकेश को उसने उससे पृथक् कर ही दिया था। क्षेमेन्द्र की शक्ति भी समाप्तप्राय थी। अशोक की बुद्धि का कौशल सामने आया ही नहीं था। उसके अपने पक्ष की यह दशा थी और प्रतिपक्षियों के पास न तो साधनों की कमी

थी, न बुद्धि कौशल की। रोब भी कम नहीं था। मार्लिन, कैम्पबेल के कारण काफी धाक थी।

पर्याप्त चिन्तन और मनन करने के बाद अजीज इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि क्षेमेन्द्र को अखबार से अपना सम्बंध विच्छिन्न कर लेना चाहिये। अशोक की उपस्थिति में उसने अपना यह विचार क्षेमेन्द्र के समक्ष प्रकट भी कर दिया था। क्षेमेन्द्र स्वतः यही चाहता था, अतः उसे सहमत होते तनिक देर न लगी। अशोक ने एक बार और इसका प्रतिवाद किया और अजीज की राय से अपनी असहमति प्रकट की। उसने इस बात पर जोर दिया कि 'त्याग-पत्र देने के बजाय क्षेमेन्द्र को सेठ चाँदमल, मार्लिन और कैम्पबेल का विश्वास प्राप्त करना चाहिये और स्वयं को विशुद्ध पेशेवर संवाददाता सिद्ध करने का प्रयास करना चाहिये।' उसकी इस राय से असहमति प्रकट करते हुए अजीज ने बताया कि 'इस प्रकार लाभ होने की कोई आशा नहीं है।' इसका कारण था। कश्मीर के विभाजन के पक्ष में सम्पादकीय लेखके प्रकाशन के बाद क्षेमेन्द्र पर जो आफत आयी थी, उसके निराकरण के उद्देश्य से अजीज ने भी लोगों को यह समझाने की चेष्टा की थी कि 'जब से अखबार पर सेठ चाँदमल का अधिकार हुआ है, उसकी नीति बदल गयी है।' एक तो इस तर्क से साधारण बुद्धि के व्यक्ति का कोई लगाव न था, दूसरे सेठ चाँदमल भी कश्मीर छोड़कर अन्यत्र जा बैठे थे। फलतः अपने प्रयास में विफलता ही उसके हाथ लगी थी। यही कारण था कि वह अशोक के सुझाव को भी निरर्थक समझता था।

अशोक ने बहुत जिद की तो क्षेमेन्द्र ने एक बार उसके सुझाव की परीक्षा करना भी स्वीकार कर लिया। साथ ही उसने इच्छानुसार समाचार भेजते रहने का अपना निर्णय बताते हुए यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस स्वतंत्रता को नियंत्रित करने की चेष्टा मालिकों की ओर से की गयी मैं तो त्याग-पत्र दे दूँगा।'

इस निर्णय के बाद क्षेमेन्द्र ने पहला समाचार विवादास्पद सम्पादकीय पर जनता की प्रतिक्रिया के सम्बंध में ही भेजा। वह समाचार रुका नहीं और प्रकाशित हो गया। इससे क्षेमेन्द्र को बल प्राप्त हुआ। फिर तो उसने सम्पादकीय लेख के प्रभाव को नष्ट करनेवाले समाचारों का ताँता लगा दिया।

पासा पलटते देखकर अशोक और अर्जीज को प्रसन्नता हुई। अशोक अपने सुझाव की सफलता पर खुश था और अर्जीज प्रसन्न था इश्तियाक की पराजय से। वास्तव में इश्तियाक भी स्वयं को पराजित-सा समझने लगा था। इस भावना ने बदला लेने का उसका जोश दूना कर दिया था। दिन-रात वह इस चिन्ता में ही निमग्न रहता कि किस प्रकार अर्जीज और क्षेमेन्द्र को नीचा दिखाया जाय। संयोगवश उस समय यह मौका भी उसके हाथ आ गया, जब कैम्पबेल ने यह कहकर मल्का की उपस्थिति में उस पर ताना कसा कि 'इश्तियाक की मशीन में जंग लग गया है, अतः वह काम नहीं कर पाती। प्रचार का काम इसलिए ही ठप है। कश्मीर-कमीशन कराची पहुँच कर नयी दिल्ली लौट चुका है फिर यहाँ सारा काम ठप है।'

उत्तर में इश्तियाक ने यह कह कर कैम्पबेल को आड़े हाथ लिया कि 'अखबार पर सेठ चाँदमल का कब्जा करने के लिए अनेक षड्यंत्र रचे गये और अखबार पर कब्जा हो गया है उनका। फिर भी वह जहर उगल रहा है। उसका संवाददाता जो चाहता है लिखता है। कोई पूछनेवाला भी नहीं है। सब कुछ करने के बाद इस प्रकार ही मेहनत पर पानी फिरने वाला हो तो जहमत कौन मोल ले।'

मार्लिन ने बड़ी सफाई से इश्तियाक का समर्थन करके पारस्परिक खिंचाव की यह घड़ी टाल दी। बात जहाँ की तहाँ समाप्त हो गयी।

इश्तिताक को यह विश्वास हो गया कि क्षेमेन्द्र का कुछ न कुछ अहित होगा अवश्य तब अजीज से समझ लिया जायगा।

स्थिति में परिवर्तन के कारण अजीज का ध्यान इस ओर से हट गया था। उसका ध्यान कश्मीर-कमीशन पर लगा था और वह उत्सुकतापूर्वक उसके प्रयास के फल की प्रतीक्षा में था। अंततः लगभग एक मास के बाद वह भी सामने आ गया। समाचार-पत्रों में यह पढ़कर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा कि कश्मीर-कमीशन ने कश्मीर में पाकिस्तानी सेना के न होने का पाकिस्तान का दावा झूठा सिद्ध किया है और यह बताया है कि हमलावरों में पाकिस्तान की सेना भी शामिल है।

जिस दिन यह समाचार प्रकाशित हुआ, उसी दिन अजीज ने पहले अशोक को ढूँढ़ा और फिर उसे लेकर क्षेमेन्द्र के घर जा पहुँचा एवं उसका सामना होते ही बोला,—अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन ने पाकिस्तान का दावा झूट सिद्ध कर दिया। आज पाकिस्तान सारी दुनियां की निगाह के सामने अपराधी के रूप में खड़ा है। यहाँ की जनता में इससे अजीब उल्लास पैदा हो गया है। श्रीनगर के हर कोने में नयी जिन्दगी करवट लेती दिखाई दे रही है। पंचमांगियों का पैर कहीं टिक नहीं रहा है। तुम्हें एक ताजा और नया समाचार मिल गया क्षेमेन्द्र। खूब जमकर भेजना समाचार इस बार ताकि दुनिया को एक बार फिर मालूम हो जाय कि पाकिस्तान के हमले को यहाँ के निवासी कितनी हिकारत की नजर से देखते हैं।

क्षेमेन्द्र ने उत्तर देने के लिए मुँह नहीं खोला। मुस्कराते हुए उसने सामनेवाले टेबुल कर पड़ा एक लिफाफा उठाया और उसे अजीज की ओर बढ़ा दिया। अजीज ने तुरंत लिफाफा खोलकर उसमें रखा पत्र निकाला और एक साँस में उसे पढ़ गया। पत्र

पढ़कर उसके चेहरे का रंग बदल गया, उत्साह फीका पड़ गया। मुँह से आवाज न निकली। पत्र उसने अशोक के हाथ में दे दिया जिसे पढ़कर अशोक ने कहा—'एक न एक दिन यह होना ही था। दुःख यही है कि संवाददाता पद से पृथक् करने की यह सूचना जरा जल्दी मिल गयी।'

क्षेमेन्द्र बोला,—'तुम जिद न करते तो कूँचे से बेआबरू होकर न निकलना पड़ता।'

अशोक ने उत्तर दिया,—'यह कोरी भावुकता है। तुमने पहले ही त्याग-पत्र दे दिया होता तो अखबार को भी कश्मीर-विरोधी प्रचार में शामिल करने के षड्यंत्र का प्रमाण नहीं मिलता। फिर, त्याग-पत्र न देने से कुछ न कुछ भला ही हुआ। अब यह बात भी लोगों की समझ में आ जायगी कि वास्तव में दोषी कौन है!'

क्षेमेन्द्र इस विषय पर वाद-विवाद करने के लिए उत्सुक नहीं था, अतः उसने अशोक के कथन का प्रतिवाद नहीं किया। उससे कोई शिकायत भी न थी। संवाददाता पद से पृथक् कर दिये जाने पर भी दुःखी नहीं था वह। एक न एक दिन यह होना ही था। इसके लिए वह तैयार भी था। खेद था उसे केवल इस बात पर कि व्यर्थ ही बदनामी हाथ लगी और काम करने का एक भी वास्तविक अवसर मिलने से पूर्व ही हाथ कट गया। कश्मीर-कमीशन के इस मत से कि कश्मीर की भूमि पर पाकिस्तान की सेना मौजूद है, पाकिस्तान-समर्थकों के ऊल-जलूल प्रचार का मुँह तोड़ उत्तर देने का उपयुक्त अवसर सामने आ गया था। कमीशन के इस निर्णय ने पंचमांगियों को स्वतः दबा दिया था। दूसरी ओर से भी उन पर दबाव पड़ जाता तो वे चक्की के दो पाटों के बीच में आ जाते। सरकारी पक्ष की ओर से तगड़ा प्रचार आरम्भ हो गया होता तो भी क्षेमेन्द्र

संतुष्ट हो सकता था। किन्तु दुर्भाग्यवश इसका भी अभाव था। जो लोग कुछ कर सकते थे, वे आत्म-संतोष की मृग-मरीचिका में फँस गये थे। युद्ध-नीति का तकाजा यह नहीं था। क्षेमेन्द्र यह मानता था कि युद्धकाल में शत्रु पक्ष के मनोबल को तोड़ने वाले प्रचार के अवसर का भी पूरा-पूरा लाभ उठाया जाना चाहिये।

कश्मीर-कमीशन के पहले ही प्रस्ताव को बुनियादी तौर पर अपने प्रतिकूल देखकर मार्लिन, कैम्पबेल आदि भी चिन्तित हो उठे थे। उन्हें इसमें सन्देह नहीं था कि इस प्रस्ताव को आधार बना कर पाकिस्तान को झूठा और मक्कार सिद्ध करने में कोर-कसर न उठा रखी जायगी ताकि लुक-छिपे भी पाकिस्तान से सहानुभूति रखने वालों का दम टूट जाय। किन्तु कई दिन बीत जाने पर भी जब उन्होंने इस दिशा में किसी को विशेष रूप से प्रयत्नशील न देखा तो उनका हौसला फिर बँध गया और वे भविष्य मे अपने पैर जमाने की तैयारी नये सिरे से करने लगे। भाग्य से शीघ्र ही उन्हें पाकिस्तान से निर्देश भी मिल गया जो भविष्य का कार्य-पथ प्रशस्त करनेवाला था। यह कार्य भी मल्का ने काफी खूबसूरती से सम्पन्न किया था। मार्लिन और कैम्पबेल उसकी सफलता को पहले संदिग्ध मानते थे किन्तु जब मल्का ने उन्हें बता दिया कि कश्मीर-कमीशन के युद्ध-विराम के प्रस्ताव के पक्ष में वातावरण इस प्रकार तैयार किया जाना चाहिये कि उसे स्वीकार न करने पर कश्मीर के लोग भारत को युद्ध-लोलुप समझने लगें, तो उन्होंने यह मान लिया कि मल्का निर्देश प्राप्त करने में अवश्य सफल हुई है।

मल्का की बात सुनकर मार्लिन और कैम्पबेल अपनी बुद्धि की दुर्बलतापर लज्जित हुए बिना न रहे। मल्का को भी उनका उपहास करने में मजा आया और वह यह कह बैठी—'कश्मीर कमीशन के

प्रस्ताव में हमें अपनी दुर्बलता ही नजर आयी, यह कम आश्चर्य की बात नहीं है। मैं ठहरा अनुभवहीन, जो काम बता दिया जाता है, वह कर लेती हूँ। अपने मन से कुछ करना मुझे आता नहीं लेकिन आप लोगों को क्या हो गया था!'

मार्लिन को मल्का का व्यंग तीखा लगा फिर भी वह चुप ही रह गयी। करती भी क्या? मल्का का कहना ठीक ही था। कश्मीर-कमीशन के प्रस्ताव में यदि पाकिस्तान को झूठा सिद्ध करने वाला तथ्य मौजूद था तो उसे पैर जमाने का अवसर देनेवाले तथ्य का अभाव भी नहीं था। जिस समय कमीशन ने प्रस्ताव स्वीकार किया था, भारतीय सेना पाकिस्तानियों को मोर्चे पर पराजित कर रही थी। पाकिस्तानी-सैनिकों के कश्मीर से हटने तक अपना अभियान जारी रखने का उसका अधिकार कमीशन ने स्वीकार कर लिया होता तो कश्मीर में पाकिस्तानी सैनिकों की मौजूदगी स्वीकार करने का उसका कार्य अधूरा न होता और तब पाकिस्तान सही मानी में न्याय की कसौटी पर आ जाता। किन्तु कमीशन ने यह नहीं किया था। इतना ही नहीं, कश्मीर की भूमि से अविलम्ब पाकिस्तानी सैनिकों की वापसी के मामले में खामोश रहने के साथ-साथ उसने युद्ध-विराम का प्रस्ताव भी प्रस्तुत कर दिया था। यह प्रस्ताव भारत के विपक्ष में था क्योंकि इसे स्वीकार न करने पर भारत को युद्ध-लोलुप बताया जा सकता था और स्वीकार करने का अर्थ था अपने विजय-अभियान को रोकना तथा जितनी भूमि पर पाकिस्तान का कब्जा हो चुका था, उतनी भूमि पर उसे जमे रहने का मौका देना। प्रस्ताव की इस दुर्बलता को लक्ष्य करके ही पाकिस्तानियों ने युद्ध-विराम के पक्ष में वातावरण तैयार करने का निर्देश मल्का को दिया था और यही वह दुर्बलता थी जिसे मार्लिन और कैम्पबेल लक्ष्य न

कर सके थे। मल्का का व्यंग इस पर ही आधारित था, अतः मार्लिन का चुप रहना भी स्वाभाविक था।

कैम्पबेल की दशा भी यद्यपि वैसी ही थी जैसी मार्लिन की थी तथापि मल्का के सामने चुप रह जाना उसे अपमानजनक लगा, अतः वह चुप नहीं रहा और बोला—'युद्ध-विराम की तिथि चार-मास बाद आयेगी। इस बीच भारतीय सेना काफी आगे तक न बढ़ जायगी यह कौन कह सकता है?'

मल्का का उत्तर था,—'चार मास के अन्दर भारत, कश्मीर से पाकिस्तानी सैनिकों को पूरी तरह हटा नहीं सकता, यह असंदिग्ध है।'

कैम्पबेल ने यह कहकर इसका प्रतिवाद किया, 'असम्भव कुछ भी नहीं है। भारतीय सैनिक कश्मीर के युद्ध में विश्व का नया रिकार्ड कायम कर चुके हैं। आज तक किसी भी युद्ध में हवाई जहाजों को बर्फीले पहाड़ों पर तेरह हजार फुट ऊपर तक उड़ाकर सैनिक और युद्ध का सामान नहीं पहुँचाया गया था। भारतीय सैनिकों ने यह भी कर दिखाया।'

मल्का को कैम्पबेल की उक्ति सम्भवतः अच्छी लगी। खिन्न-सी बोली वह,—'युद्ध के किसी कोने में बहादुरी का शानदार उदाहरण पेश करके पूरे मोर्चे पर विजय नहीं प्राप्त की जा सकती। इतने लम्बे मोर्चे पर लड़ाई हो रही है। पाकिस्तानी सैनिकों ने चूड़ियाँ नहीं पहन रखी हैं जो हर जगह से पीछे हट जायँगे।

मार्लिन ने मल्का के तर्क से सहमति प्रकट की और कैम्पबेल को बोलने न दिया। मल्का ने यह सोचकर अपार सुख का अनुभव किया कि बुद्धि-विशारद समझे जानेवाले सफेद चमड़ीवाले को बुद्धि के मैदान में उसने शिकस्त दे दी। इस प्रकार यह मामला समाप्त हुआ।

मल्का घर जा पहुँची। वहाँ इश्तियाक मौजूद था। वह सुचिता

का चित्र लेकर आया था। मल्का के पहुँचते ही उसने सुचिता का चित्र उसकी ओर बढ़ा दिया और बोला,—'तुम इस तसवीर को चाहती थी न ?

मैदान पर मैदान फतह होते देखकर मल्का की खुशी उमड़ पड़ी। मुस्करा कर बोली वह,—'बस, इतनी ही मोहब्बत थी इससे।'

इश्तियाक ने कहा—'मेरी कमजोरी का मजाक उड़ा सकती हो लेकिन इसकी वजह भी हो तुम ?'

इश्तियाक की ओर से मुँह फेर कर चहलकदमी करते हुए मल्का ने कहा—'यही बात पहले तुमने किसी और से भी कही होगी।'

थम-थम कर उठनेवाले कदमों के सहारे मल्का की ओर बढ़ते हुए इश्तियाक ने कहा,—'केवल कल्पना के सहारे किसी पर इतना इलजाम लगाना क्या उचित है ?'

रुख को बदले बिना मल्का ने जवाब दिया,—'लिफाफा देखकर ही खत का मजमून बताया मैंने।'

इश्तियाक बोला,—'लिफाफा देखने में धोखा भी तो हो सकता है मल्का ?'

सुचिता का चित्र हाथ में लेकर मल्का घूम पड़ी और इश्तियाक की ओर देखने के बाद अपने मुँह की ऊँचाई तक दोनों हाथों से चित्र को उठा कर उसे देखती हुई बोली—'जानदार तसवीर है; बोलती भी है।'

इश्तियाक ने जवाब दिया,—'खूबसूरत है। इससे धोखा भी हो सकता है।'

मल्का ने मुस्कराते हुए कहा—'खूबसूरत औरत से धोखा जरूर हो सकता है। तुम्हारी बात मानती हूँ।'

यह सुनकर इश्तियाक झेंप-सा गया। मल्का भी कम खूबसूरत न

थी। जबरदस्ती हँसने का प्रयास करते हुए उसने कहा—'एक खूबसूरत औरत, दूसरी खूबसूरत औरत को देखकर उससे रश्क भी कर सकती है। इस तरह एक को सही-सही समझने में दूसरी धोखा भी खा सकती है।'

मल्का बोली—'खूबसूरत औरत बोलना भी सिखा देती है।'

इश्तियाक ने कहा,—'शर्त यह है कि नजदीक आने का मौका भी दे।'

बात का रुख बदलते हुए मल्का ने कहा,—'इश्तियाक, हम एक खरतनाक काम में लगे हैं।'

इश्तियाक ने कहा–'जानता हूँ, लेकिन खतरा उठाये बिना जिंदगी की खूबसूरती नजर भी नहीं आती।'

मल्का बोली,—'किसी भी समय मौत हमारा दामन पकड़ सकती है।'

इश्तियाक ने उत्तर दिया,—'वह जिन्दगी ही क्या, मौत जिसके पीछे न दौड़ती हो।'

मल्का बोली,—'जिन्दगी और मौत की दौड़ में बाजी मौत के ही हाथ लगती है।'

इश्तियाक ने कहा,—'खुद-बखुद दम टूट न जाय तो जिन्दगी हार की शिकायत नहीं करती।'

'यह एक खूबसूरत खयाल है।'

'बदसूरती से जवानी नफरत करती है।'

'जवानी की आँखें बन्द होती हैं।'

'ठोकरें खाने के बाद उसकी आँखें खुल भी जाती हैं।'

'तो, तुम ठोकर खा चुके हो?'

'तुम्हें शक है क्या!'

'सबूत ?'

'सबूत समय दिलाता है मल्का।'

'समय का इन्तजार कर सकते हो ?'

इश्तियाक की जबान रुक गयी। उसकी दशा, उस वकील की दशा-सी हो गयी जो भरी अदालत में प्रतिपक्षी के तर्कों का उत्तर देते समय किसी एक तर्क का उत्तर न दे सकने के कारण सहसा चुप हो जाता है।

मल्का को उस पर तनिक भी तरस न आया। वह उसे खिलौना समझती थी, उसने उसे खिलौना ही समझा।

सुन्दर सपना टूट जाने के बाद टूटे हुए हृदय को लेकर इश्तियाक सड़क पर चला तो अन्धा-सा होकर। उसे न तो दीन की खबर थी, न दुनिया की। मल्का पर काबू पाने का उपाय सोचने में वह तन्मय था।

इस अवस्था में ही वह कब और कैसे गुलरुख के मकान के सामने जा पहुँचा, यह उसे स्वयं ज्ञात न था। यहाँ पहुँचते ही उसकी खोयी हुई चेतना एक झटके से वापस आ गयी। उसे स्मरण आया—जब से राकेश का पता नहीं है, गुलरुख की 'जिन्दगी' खो-सी गयी है। शरीर का आब धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। उदासी उस सीमा तक बढ़ गयी है, जहाँ पहुँच कर वह स्वास्थ्य को चौपट कर डालने वाले घोर आलस्य का रूप धारण कर लेती है।

इश्तियाक सोचने लगा—गुलरुख क्या राकेश से मोहब्बत करती है ? इसका उत्तर तो उसे नहीं सूझा, उलटे अपनी दशा का रूप सामने आ गया। मल्का की एक-एक हरकत की याद ताजी होने लगी, वह हँसती भी है और बोलती भी है। मचलती भी है और

शायद रूठती भी है। जैसी पहले थी, वैसी ही अब भी है। न तो कोई परिवर्तन हुआ है, न उसका कोई आसार नजर आ रहा है।

तब लगा इश्तियाक को कि मल्का महज उसका मजाक उड़ा रही है। उसकी मीठी-मीठी बातों से उसके दिल का कोई लगाव नहीं है। बातचीत में नजर आनेवाली कशिश और तड़पन भी बनावटी है। सामने आने पर वह सफल अभिनेत्री की भांति अपनी भूमिका अदा करने लगती है सामने से हट जाने पर वह सब कुछ भूल जाती है। उसे याद रह जाता है केवल अपना काम—अपना नाम।

यह सोचते-सोचते इश्तियाक खिन्न हो उठा। यद्यपि मल्का सामने नहीं थी तथापि उस पर उसे क्रोध आ गया। क्रोध मनुष्य के मस्तिष्क का संतुलन खो देता है। फलतः जो क्रोधित होता है, वह यह समझ नहीं पाता कि उसका क्रोध उसकी अपनी ही दुर्बलता का परिणाम है, इश्तियाक भी यह समझ न पाया। उसके मस्तिष्क में यह विचार उठा तक नहीं कि मल्का के सम्बन्ध में नजर आनेवाली एक-एक बात उसके अपने जीवन पर घटती है। यदि मल्का की जिन्दगी में कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं हुआ था तो इश्तियाक भी जैसे का तैसा ही था। अन्तर दोनों में केवल इतना ही था कि मल्का का स्मरण आने पर इश्तियाक उसे पाने के लिए आकुल हो उठाता था और मल्का को निष्प्रयोजन इश्तियाक की उपस्थिति भी अच्छी नहीं लगती थी। इश्तियाक में वासना की प्रधानता थी और मल्का में पुरुष को आकृष्ट करके उसकी सहायता से अपना उल्लू सीधा करने की विशेषता। इश्तियाक को कभी-कभी मल्का की विशेषता का हल्का-सा भान तो होता था लेकिन वह टिक नहीं पाता था। चमक कर तुरन्त लुप्त हो जानेवाली बिजली-सी दशा होती थी उसकी इस आशंका की। अचेतन मस्तिष्क की इस चेतना का चेतन मस्तिष्क के कर्तव्य से कोई सम्बन्ध न था।

सारी रात बीत गयी लेकिन इश्तियाक किसी भी समय एक साथ दो घंटे तक सो न सका। आँख लगती थी लेकिन शीघ्र ही टूट जाती थी। नींद आती थी, पर जल्दी ही गायब हो जाती थी। यह आँख-मिचौनी सारी रात चलती रही। ज्यों-ज्यों रात बीतती गयी, त्यों-त्यों छल-कपट से मल्का पर काबू पाने का नया-नया उपाय इश्तियाक के मस्तिष्क में चक्कर काटता रहा। अन्ततः रात समाप्त हो गयी और समाप्त हो गया रात का अन्धकार, सुबह के सूरज के प्रकाश को देख कर। लेकिन इश्तियाक के मस्तिष्क में निर्णय-सूर्य का उदय नहीं हुआ, फलतः उसका मानस-जगत् अन्धकाराच्छन्न ही रह गया।

प्रातःकाल इश्तियाक जब चारपायी से उठा, उसकी आँखें सूजी हुई थीं। लगता था जैसे उन पर किसी नशीली वस्तु का गहरा प्रभाव पड़ा हो। उसने दर्पण में अपना मुख देखा तो अपनी आँखों पर उसे विश्वास नहीं हुआ। क्रूरता की हल्की-हल्की रेखाएँ उस समय मुख प्रदेश पर यत्र-यत्र उभड़ी हुई थीं।

श्रीनगर छोड़ने के बाद राकेश बराबर इस आशा में पुंछ और मुजफ्फराबाद के सीमावर्ती इलाके का चक्कर काटता रहा कि पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर क्षेत्र से आनेवाले किसी व्यक्ति से शायद मुलाकात हो जाय और वह सुचिता के बारे में कुछ बता सके। ऐसे व्यक्तियों से उसकी भेंट अवश्य हुई लेकिन सुचिता के बारे में कोई उसे कुछ न बता सका। अपनी-अपनी दुर्दशा की कहानी उसे सबने जरूर सुनायी। ऐसे प्रत्येक व्यक्ति की कहानी का कोई न कोई अंश रोंगटे खड़े करनेवाला अवश्य होता। इस अनुभव ने राकेश के विचारों को एक नयी दिशा प्रदान

१०

की थी। वह जब फुर्सत से बैठता, तब यही सोचता कि अपने कब्जे के क्षेत्र की जनता पर तरह-तरह के जुल्म का पहाड़ ढानेवाले कबायली और पाकिस्तानी सैनिक कश्मीर पर अधिकार के पाकिस्तानी शासकों के उद्देश्य की जड़ें नहीं खोद रहे हैं क्या ? न जाने कितने व्यक्तियों के मुँह से वह सुन चुका था कि 'पाकिस्तान-अधिकृत क्षेत्र में न तो किसी प्रकार का शासन है, न व्यवस्था। कबायली, पाकिस्तानी सैनिक और मुसलिम कांफ्रेंस के कुछ ऊँचे-ऊँचे नेता जो चाहते हैं सो करते हैं। महिलाओं को देखकर उनकी दशा भूखे भेड़ियों से हो जाती है। जुल्म और ज्यादती की शिकायत करनेवालों को गोली मार देना उनके बायें हाथ का खेल है। राशन न मिलने पर लोग पेट पर पट्टी बाँध कर सो जाना गवारा करते हैं लेकिन मुँह खोलने की हिम्मत नहीं करते। नागरिकों की दशा युद्ध के जमाने में 'कंसनट्रेशन कैम्प' (बन्दी शिविर) में रखे जानेवाले कैदियों-सी है। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' की कहावत चरितार्थ हो रही है वहाँ। जिस तरह का जीवन व्यतीत करने के लिए लोग बाध्य हो रहे हैं वहाँ, उससे मौत बेहतर समझी जाती है।

कश्मीर-कमीशन का प्रस्ताव प्रकाशित होने के बाद कई बार उसके मन में यह विचार उठा कि 'इन बातों का विवरण अजीज के पास में भेज दूँ' लेकिन वह इसे कार्यान्वित नहीं कर सका। वह समझता था कि अजीज को पत्र लिखने पर उसे अपने पते की सूचना देना भी आवश्यक हो जायगा, क्योंकि ऐसा न करने पर उसकी परेशानी और बढ़ जायगी। पता अपना वह सूचित नहीं करना चाहता था क्योंकि पुराना घाव ताजा हो सकता था। सोचता था राकेश— मैं पत्र लिखूँगा तो अजीज उत्तर देगा अवश्य। पत्र में वह अपनी माँ का जिक्र कर सकता है, अपनी परेशानियों का जिक्र कर सकता है।

गुलरुख को लेकर कोई नयी बात पैदा हुई होगी तो उसका भी उल्लेख वह अवश्य करेगा।'

राकेश को इस परिस्थिति का सामना करने में डर लगता था। अपने जीवन से वह यों ही काफी परेशान था। नयी परेशानी मोल लेने का उसमें साहस नहीं था। वस्तुस्थिति यह थी कि वह स्वयं को ही भूल जाना चाहता था। अजीज को पत्र लिखने पर इसमें बाधा उत्पन्न होने की पूरी-पूरी सम्भावना थी। यही कारण था कि बार-बार पत्र लिखने की इच्छा उत्पन्न होने के बावजूद वह पत्र नहीं लिख सका था।

उसका सोचना ठीक ही था। उसके जाने के बाद एक नयी बात पैदा हो गयी थी जिसके कारण अजीज काफी परेशान और चिन्तित रहता था। यह निश्चित था कि उसे राकेश का पता लग जाता तो वह उसे पकड़ कर पुनः श्रीनगर अवश्य ले आता।

गुलरुख की बीमारी के अवसर पर उसके पास रहते-रहते खातून बीवी उसकी ओर पूरी तरह आकृष्ट हो गयी थीं। स्वभाव, व्यवहार, रूप और गुण की दृष्टि से गुलरुख, खातून बीवी के दिल पर अपना सिक्का जमा चुकी थी और खातून बीवी का यह विचार दिन-प्रतिदिन जोर पकड़ता जा रहा था कि 'गुलरुख से अजीज की शादी हो जाती तो मेरे अरमान पूरे हो जाते।'

खातून बीवी ने जिस समय पहली बार अजीज के समक्ष अपना विचार प्रकट किया था, वह सन्न-सा रह गया था। इस प्रकार की चर्चा सुनने की उसने कभी कल्पना तक नहीं की थी। माँ के सामने उसकी जबान नहीं खुली थी, वह भी यह सोच चुप रह गयी थी कि शर्म ने अजीज का मुँह बन्द कर रखा है। लेकिन तथ्य कुछ और ही

था। गुलरुख और राकेश को लेकर अजीज ने एक सुन्दर सपना सजा रखा था। दोनों को प्रणय-सूत्र में आबद्ध करके साम्प्रदायिक बन्धनों को छिन्न-भिन्न करने का जीवित उदाहरण प्रस्तुत करने की सुखद कल्पना को बसा रखा था उसने अपने मस्तिष्क में। माँ का प्रस्ताव सुन कर उसे लगा था, जैसे किसी ने उसका कोमल और सुखद आकांक्षा पर निर्मम आघात किया हो। यह सोचकर चिन्तित भी हो गया था वह कि इस बला का सामना कैसे किया जायगा। वह जानता था कि माँ उसकी कल्पना पर विश्वास नहीं कर सकती है। किसी हद तक उसका सोचना ठीक भी था। हिन्दू युवक के साथ मुसलिम युवती के विवाह की बात खातून बीबीने शायद ही कभी सुनी हो। वह अधिक पढ़ी-लिखी नहीं थीं। तेजी से बदल रहे सामाजिक संस्कारो की गति का ज्ञान नहीं था उन्हें तनिक भी। अपनी उम्र का काफी बड़ा भाग उन्होंने अपने परिवार और सम्बन्धियों के बीच में बिताया था। बाहर निकल कर दुनिया देखने का अवसर कम मिला था। पति की मृत्यु के बाद पुत्र के प्रति असीम ममता के कारण उसे प्रसन्न रखने के लिए वह छोटे-मोटे सामाजिक कार्यों में भाग लेने लगी थीं। इसका महत्त्व उन्होंने कभी नहीं समझा था। यह तो स्वभाव की उदारता का परिणाम था कि सेवा-कार्य में लगतीं तो रुचि के साथ और जिसकी सेवा करतीं, उसे अपना बना लेतीं।

एक दिन खातून बीबी ने उत्तर प्राप्त करने के लिए जिद पकड़ ली। उसका रुख देखकर अजीज ने समझ लिया कि आज जान नहीं बच सकती। कुछ न कुछ बहाना करना आवश्यक देखकर उसने कहा—'अभी शादी करने का समय कहाँ आया है माँ। तुम देख रही हो कि लड़ाई छिड़ी हुई है। ऐसी हालत में कब क्या होगा, यह कौन कह सकता है। शादी का मौका आने दो, फिर जी भरकर जवाब ले लेना।'

खातून बीवी को अजीज के उत्तर से सन्तोष नहीं हुआ। एक मात्र पुत्र को विवाहित देखने की माँ की इच्छा बढ़ती हुई उम्र के साथ-साथ अधिकाधिक तीव्र होती जाती है। खातून बीवी अपवाद न थीं पिछले कुछ दिनों से वह यह महसूस कर रही थीं कि जिन्दगी की जर्जर गाड़ी अब अधिक समय तक नहीं चल सकती। फलतः विवाह करने लिए पुत्र को राजी करने की आकांक्षा ने प्रायः जिद का रूप धारण कर लिया था।

अजीज की बात सुनकर खातून बीवी बोलीं—'हमेशा एक न एक बहाना बनाता रहा है। लड़ाई हो रही है तो क्या हुआ। दुनिया के काम तो रुक नहीं गये। सभी जगह सब काम हो ही रहे हैं। अब तो यह भी सुनाई पड़ रहा है कि लड़ाई जल्द बन्द होनेवाली है। आज 'हाँ' कह देगा तो आज ही शादी हो नहीं जायगी। दो-चार महीने तक रुके रहने पर मुझे कोई एतराज न होगा। तू 'हाँ' कह दे। बात पक्की करने में कुछ समय लग ही जायगा। गुलरुख को भी तो तैयार करना होगा। उसका सरपरस्त कोई है नहीं। शादी की बात उससे ही करनी होगी। लड़कियाँ यों ही शर्मिली होती हैं। गुलरुख अकेली है, उसके मुँह पर इसलिए भी ताला लगा है। शादी की बात पक्की हो जाय तो फिर मैं कुछ न कहूँगी। जब जी में आये, निकाह पढ़ लेना।'

अनिच्छापूर्वक इतना लम्बा लेक्चर सुनने के कारण अजीज ऊब-सा गया। इससे बचने के लिए घर छोड़कर बाहर निकल जाने की इच्छा उत्पन्न हुई लेकिन यह इच्छा उसने दबा दी, क्योंकि इस प्रकार टरक जाना उसकी दृष्टि में माँ का अपमान था और अपमान माँ का वह कर नहीं सकता था। माँ को समझाने के लिए उसने कहा—'मैंने तो तुम्हें सिर्फ एक ही बात बतायी है अम्मा। हैं बहुत-सी

बातें। तुम तो जानती ही हो कि इश्तियाक की हरकतों से भी गुलरुख परेशान है। आज गुलरुख से मेरी शादी की बात पक्की हो गयी और इश्तियाक अपनी हरकतों से बाज न आया तो उससे दुश्मनी बुरी तरह बढ़ जायगी। वह गद्दारी करने पर यों ही तुला है। कब क्या कर बैठेगा, खुदा जाने। राकेश के यहाँ से जाने का असली कारण इश्तियाक ही है। मेरी राय है कि स्थिति जब तक ठीक न हो जाय, तब तक तुम्हें विवाह की चर्चा नहीं करनी चाहिये। समय आने पर काम आपसे आप हो जाता है।'

खातून बीवी बोलीं—'इश्तियाक क्या इतना शातिर है कि किसी का जीना हराम कर देगा? गुलरुख से उसका वास्ता ही क्या? अब तो गुलरुख भी उसकी शिकायत नहीं करती।'

अजीज ने कहा—'शिकायत क्या करेगी, वह तो यों ही घुल-घुल कर गिरती जा रही है। तुमने हालत नहीं देखी है उसकी?

खातून बीवी ने उत्तर दिया—'बीमारी ने उसका पीछा नहीं छोड़ा है, इसलिए सेहत गिर गयी है। बीमारी हमेशा तो लगी नहीं रहेगी। अकेले होने का गम भी तो खा रहा होगा। औरत खुदमुख्तार बन कर नहीं रह सकती अजीज। उसे किसी न किसी का सहारा चाहिये ही।'

खातून बीवी अपनी बात समाप्त कर ही रही थीं कि आजिजी से बोल उठा अजीज—'तुम नाहक इस समय जिद कर रही हो अम्मा। वक्त का इन्तजार इन्सान को करना ही पड़ता है।'

पुत्र के स्वर में समायी झुँझलाहट माँ से छिपी न रही। असीम ममता के कारण पुत्र की नाराजगी की सम्भावना की भावना हृदय में उदित हुई तो डर पैदा हो गया। खातून बीवी ने चर्चा को रोक देना ही मुनासिब समझा और बैठे हुए स्वर में बोली—'बेटे की खुशी के

लिए माँ की जिद में उसकी जिन्दगी भी होती है। इन्तजार करते-करते थक गयी हूँ अजीज। तू कहता है तो कुछ दिन और सही, लेकिन यह समझ ले कि मौत बहुत दिनों तक मेरा इन्तजार नहीं करने-वाली है।'

खातून बीवी का गला भर आया। आँखों में भी आँसू आ गये। यह देखकर अजीज के हृदय की वेदना तीव्र हो उठी। इच्छा तो हुई कि दौड़कर माँ के सीने से लग जाय और अपनी सहमति से उसका दुःख प्रसन्नता में बदल दे। लेकिन वह ऐसा कर नहीं सका। पैर उसके जड़ से हो गये। वह खड़ा रह गया मौन—अपराधी सा। खातून बीवी कमरे से बाहर निकल गयीं।

जीवन में ऐसा अवसर भी आता है जब सतत संघर्षशील व्यक्ति भी विरक्ति की भावना का अनुभव करने लगता है और 'कर्म' को प्रपञ्च समझ कर उससे मुक्ति पाने के लिए व्याकुल हो उठता है। ऐसे व्यक्ति को यदि सुप्त चेतना की आँखें खोलने वाली सहानुभूति प्राप्त नहीं होती तो उसकी सक्रियता का दम शनैः शनैः टूटने लगता है और फलतः उसके जीवन का ढर्रा बदल जाता है। इस प्रकार की सहानुभूति प्रत्येक व्यक्ति नहीं प्रदान कर सकता। इसकी क्षमता उसमें ही होती है जो स्वतः चेतनाशील होता है, जिसकी तर्क बुद्धि प्रौढ़ होती है, जो जीवन के मूल्यों की विवेचना कर सकता है, जिसमें दूसरे को अपने तर्क के समीप खींचने के लिए अपेक्षित धैर्य होता है तथा जो पीड़ित व्यक्ति के निकट तक पहुँचने का अधिकारी स्वयं को समझता है।

माँ के ममतापूर्ण आग्रह की तीव्रता के फलस्वरूप उत्पन्न दुश्चिन्ताओं की व्याधि से परेशान अजीज जीवन-संघर्ष के प्रति अपनी आसक्ति से विरक्त-सा होता जाता था। कार्यरत रहने की वह लगन

मृत-सी हो रही थी जिसके कारण वह साधारण व्यक्तियों द्वारा उपेक्षित परिस्थितियों में निहित महत्त्वपूर्ण घटनाओं का एक नायक स्वयं बन बैठा था। कर्तव्य-पथ से दूर ले जाकर पटक देनेवाली इस स्थिति की स्मृति जब कभी उज्जीवित होती तो उसकी वेदना तीव्र हो उठती थी और उसे अपनी मनोदशा उस व्यक्ति की मनोदशा-सी लगती जो स्वभावतः अन्याय का विरोधी होता है किन्तु जो अपनी आँखों के सामने अन्याय होता देखकर भी विकलांग होने के कारण उसका प्रतीकार नहीं कर पाता और पड़ा-पड़ा छटपटाया करता है। इस वेदनापूर्ण स्थिति से मुक्ति पाने की आकांक्षा बरबस उसका ध्यान राकेश की ओर आकृष्ट कर लेती। उसे अपनी समस्या का हल राकेश के पास दिखाई देता। और राकेश था उससे दूर—बहुत दूर। अजीज जानता भी न था कि वह है कहाँ।

एक दिन अजीज बैठे-बैठे राकेश से अपने परिचय और अपनी घनिष्ठता का ताना-बाना लेकर स्मृतियों के करघे की सहायता से घटनाओं की चादर बुन रहा था। तभी उसे अंकित नजर आया था अपने मानस पटल पर राकेश का यह वाक्य जो उसने जाते-जाते कहा था,—'मुझे सूनी पहाड़ियों में भटकने के लिए छोड़ दो। वहीं राहत मिलेगी मुझे।' यहीं अवरुद्ध हो गयी थी विचार-धारा अजीज की और वह नये सिरे से सोचने लगा था,—'कहाँ हो सकती हैं ये सूनी पहाड़ियाँ? कश्मीर की घाटी में ये हो नहीं सकतीं। जम्मू-कश्मीर के बाहर सूनी पहाड़ियों पर घूमने से उसका उद्देश्य पूरा हो नहीं सकता। तो क्या वह जम्मू में है? यदि जम्मू में हो भी तो उसका पता कैसे लग सकता है?

अजीज सोचता रहा-सोचता रहा, लेकिन उसे कोई उपाय नजर न आया। हारकर, अच्छिापूर्वक उसने अशोक और क्षेमेन्द्र से सहा-

यता लेने का निर्णय किया और इस उद्देश्य से ही क्षेमेन्द्र के घर जा पहुँचा। उसे देखकर क्षेमेन्द्र को पहले तो अपनी आँखों पर ही विश्वास नहीं हुआ, फिर उसने पूछा—'बीमार थे क्या?'

अजीज ने उत्तर दिया,—'यही समझ लो। इस समय मैं एक विशेष काम से आया हूँ। मुझे लगता है कि राकेश कहीं न कहीं जम्मू में है। यदि वह वहीं हो तो उसे किस प्रकार ढूँढ़ा जा सकता है?'

अजीज और राकेश के पारस्परिक मैत्री संबंध से क्षेमेन्द्र भली-भांति परिचित था। जिस प्रकार राकेश अकस्मात् चला गया था, उसका ज्ञान भी उसे था ही, अतः अजीज का प्रश्न सुनकर उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। वह सोच में पड़ गया। प्रश्न था ही ऐसा। सहसा उसका उत्तर देना किसी के लिए सम्भव न था। कई मिनट तक क्षेमेन्द्र चुपचाप बैठा रहा। इस बीच मस्तिष्क में अनेक विचार उठे और लुप्त भी हो गये। कोई कारगार उपाय सूझ ही न पड़ता था।

अजीज कभी उत्सुकतापूर्वक क्षेमेन्द्र की ओर देखता, कभी आँखें झुकाकर स्वयं चिन्ता-निमग्न हो जाता। ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता, क्षेमेन्द्र से सहायता मिलने की उसकी आशा त्यों-त्यों अधिकाधिक क्षीण होती जाती थी। अंततः क्षेमेन्द्र ने शांति भंग की और कहा,—'मुझे ऐसा कोई उपाय नजर नहीं आता जिसके सम्बन्ध में निश्चित रूप से यह कहा जा सकता हो कि वह कारगर होगा ही। सोचता हूँ कि किसी प्रकार यदि जम्मू में प्रचलित समाचार-पत्र में यहाँ की घटनाओं से सम्बंधित विशेष समाचार प्रकाशित किया जा सके तो सम्भव है कुछ काम चल जाय।'

अजीज ने तत्काल कोई उत्तर हीं दिया। कुछ सोचकर बोला—'अखबार से मेरा कोई सम्बंध नहीं है। समाचार में आकर्षण कैसे

पैदा हो सकता है, यह भी मैं नहीं जानता। समाचार प्रकाशित करना भी मेरे बूते के बाहर की बात है।'

क्षेमेन्द्र ने कहा,—'इन कठिनाइयों को हल भी किया जा सकता है। प्रश्न यह है कि समाचार क्या हो?'

सहसा अजीज को गुलरुख की याद आ गयी। वह सोचने लगा,—'क्यों न गुलरुख के सम्बन्ध में ही कोई समाचार प्रकाशित करा दिया जाय। इससे यह भी पता चल जायगा कि राकेश उसकी ओर किस सीमा तक आकृष्ट है।' उसने अपना विचार क्षेमेन्द्र के सामने रखा तो क्षेमेन्द्र ने पूछा,—'गुलरुख के सम्बन्ध क्या में प्रकाशित करना चाहते हो!'

अजीज फिर चिन्ता में पड़ गया। सोचने लगा—'घटना यदि गढ़ी जाय तो गुलरुख से अनुमति लेनी होगी। सम्भव है, उसको इस प्रकार के कार्य पर आपत्ति हो। आपत्ति न भी हुई तो हिचक तो वह सकती ही है। राकेश को संयोगवश कहीं यह पता लग गया कि मनगढ़ंत बातें प्रकाशित करायी गयी हैं तो उस पर उलटा असर भी हो सकता है। फिर, इस कार्रवाई का कारण यदि गुलरुख पूछ बैठी तो क्या होगा? सही कारण बताने पर न जाने वह क्या सोचने लगे। मेरी नीयत पर भी शक हो सकता है। उसे यह हुआ तो उसे नयी मानसिक वेदना का शिकार होना पड़ सकता है। इससे उसकी दशा और भी खराब हो जायगी, योंही मुरझा गयी है। नयी विपत्ति उसकी जिन्दगी को खतरे में डाल सकती है। जीवन की ओर से उदासीनता उसकी बढ़ती जाती है। मोह-माया शायद किसी के लिये रह नहीं गयी है। दशा हो गयी है उसकी मशीन-सी, जो चलती है, काम करती है लेकिन जिसमें प्राण नहीं रहते।'

अजीज चिन्ता में पड़ा ही था कि अशोक भी पहुँच गया वहाँ। उसे और क्षेमेन्द्र को गुमसुम और चिंतित देखकर उसे आश्चर्य हुआ। एक-दो मिनट तक मौन रहकर वह दोनों की ओर देखता रहा। फिर बोला,—'कोई नयी बात पैदा हो गयी है क्या? किस चिन्ता ने दबोच रखा है?'

बिना भूमिका बाँधे क्षेमेन्द्र ने अशोक को सभी बातें बतायीं तो अकस्मात् उसके मुँह से निकल पड़ा—'यह कौन-सी बड़ी बात है। इतनी-सी बात के लिए इतनी गम्भीर चिन्ता!'

झोंक में अशोक कहने को तो यह बात कह गया लेकिन उसके समाप्त होते ही स्वतः उसकी मुद्रा भी गम्भीर हो गयी और वह सोचने लगा,—'यह क्या कर डाला मैंने? जिस राज को अब तक छिपा रखा था, उसे इस प्रकार प्रकट करना क्या उचित होगा?'

आशान्वित होकर उसकी ओर देखते हुए जब अजीज पूछ बैठा कि 'तुम क्या कहना चाहते हो' तो उसे आगे कुछ सोचने का भी मौका न मिला। वह उलझन में पड़ गया। उसकी परेशानी क्षेमेन्द्र की निगाहों से छिपी न रही। उसने कहा,—'क्या बात है? सहसा परेशान क्यों हो गये तुम? लगता है कि किसी ऐसी बात के आधार पर तुमने आश्वासन दे डाला है जिसे कहने में तुम्हें हिचक हो रही है।'

अशोक ने बिना प्रतिवाद किये शांत भाव से क्षेमेन्द्र की धारणा की यथार्थता स्वीकार कर ली और सुचिता के चित्र से सम्बंधित सभी बातें—हस्त-निर्मित चित्र के गुम होने की घटना छोड़कर सिलसिलेवार अजीज और क्षेमेन्द्र को सुना दीं। उसकी बातें सुनकर अजीज और क्षेमेन्द्र आश्चर्यचकित हुए बिना न रह सके। जिस राज ने राकेश के

जीवन की गति अवरुद्ध-सी कर रखी थी, उसे अशोक जानता है। इसकी कल्पना भी न की थी उन्होंने। इससे भी बढ़कर आश्चर्य की बात तो यह थी कि सब कुछ जानते हुए भी अशोक ने यह राज अब तक छिपा रखा था! अजीज बोला,—'इस राज को छिपाकर तुमने अच्छा काम किया या बुरा, यह मैं नहीं बता सकता। इस मौके पर भी तुमने इसे छिपाया नहीं, इसे एहसान मानता हूँ। बड़ी भारी मुश्किल हल हो गयी। अखबारों में तसवीर आसानी से छपवायी जा सकती है। उस पर निगाह पड़ने पर राकेश यहाँ आये बिना रह नहीं सकता।'

अजीज के चुप होने पर क्षेमेन्द्र ने अशोक से पूछा—'सुचिता की लाश देखने की बात तुमने अब तक छिपा क्यों रखी थी अशोक?'

अशोक ने उत्तर दिया,—'ऐसा क्यों किया, यह मैं स्वयं नहीं जानता। सम्भव है इसके फलस्वरूप राकेश को होने वाली पीड़ा की कल्पना करके इससे उसे बचाने के लिए ही मैंने जबान न खोली हो।'

क्षेमेन्द्र ने कहा,—'कारण चाहे जो भी रहा हो मैं समझता हूँ कि तुमसे भूल हुई।'

अजीज की ओर देखकर अशोक बोला—'यही सही, लेकिन इस समय तो यह भूल भी काफी सहायक सिद्ध हो रही है। सुचिता का चित्र जितनी आसानी से राकेश को यहाँ खींचकर ले आ सकता है, उतनी आसानी से और कोई शक्ति उसे यहाँ नहीं खींच सकती।'

यह बात यहीं समाप्त हो गयी। यह तय हुआ कि सुचिता का चित्र जम्मू के अखबारों में प्रकाशनार्थ भेज दिया जाय और विशेष विवरण प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्ति की तुष्टि के लिए उसके नीचे अशोक का पता दे दिया जाय।

अजीज को अपना मस्तिष्क हल्का हुआ लगा। भारी हृदय से वह क्षेमेन्द्र के घर गया था, बोझ उतार कर वापस हुआ। जाते-जाते इसके लिए वह क्षेमेन्द्र और अशोक का धन्यवाद करना न भूला। उसे क्या मालूम था कि विपत्ति ने उसका पीछा नहीं छोड़ा है और पुराना लिबास उतार कर नये लिबास में वह पुनः उसके पीछे लग गयी है।

अजीज लौटकर घर पहुँचा। सदर दरवाजा पार करके वह कमरे में दाखिल हुआ ही था कि माँ के कराहने की आवाज कानों में पड़ी। उसका कलेजा धड़कने लगा। जब से उसने होश सम्भाला था, माँ को अस्वस्थ नहीं देखा था उसने। वह झपट कर माँ के पास पहुँचा शरीर पर हाथ रखने से पहले ही घबराया-सा बोला—'तुम कराह क्यों रही हो अम्मा?'

खातून बीवी ने उत्तर नहीं दिया। करवट बदल कर मुँह भी फेर लिया। अजीज ने माँ के माथे पर हाथ रखा तो अंगारे की तरह दहकता पाया। उसका होश-हवास गुम हो गया। न तो मुँह से आवाज निकली, न यह समझ में आया कि किया क्या जाय। घर में उसके सिवा खातून बीवी के पास और कोई था नहीं। वह हटता था तो डाक्टर के पास खबर तक नहीं पहुँच सकती थी। कई मिनट तक वह किंकर्तव्यविमूढ़-सा खड़ा रहा था। अंत में उसने कलेजा कड़ा किया और एक भारी कम्बल खातून बीवी के शरीर पर डालकर डाक्टर को बुलाने के लिए तेजी से घर से बाहर निकल गया।

बहुत जल्दी करने पर भी डाक्टर के साथ आध घंटे से पहले लौट न सका। इतनी देर में वह बदहवास हो चुका था। उसकी दशा देखकर पहले डाक्टर ने उसे ही चेतावनी दी और साफ-साफ कह दिया कि 'हालत यही रही तो तुम माँ की देखभाल ठीक से न कर

सकोगे। इस प्रकार उसकी दशा में सुधार तो नहीं होगा, उल्टे वह और अधिक खराब हो सकती है। ज्वर काफी है। जब तक वह उतार पर नहीं आता कुछ कहा नहीं जा सकता।'

अजीज ने डाक्टर की चेतावनी उसी प्रकार चुपचाप सुन ली जिस प्रकार छोटी कक्षा का छात्र रोबदार अध्यापक की फटकार सुनता है। डाक्टर ने अपना काम किया और आवश्यक हिदायत देकर चला गया।

अजीज माँ की चारपायी के पास बैठकर माँ की नींद की प्रतीक्षा करने लगा था। डाक्टर पाउडर के किस्म की दवा दे गया था और कह गया था कि 'इससे नींद आ जायगी। तब तुम दवाखाने से दवा ले जाना।'

डाक्टर के जाने के पन्द्रह-बीस मिनट बाद खातून बीवी सो गयीं। अजीज आहिस्ता से उठकर दवा लेने चला गया। दवाखाने से लौटकर आने में उसे यद्यपि बीस-पचीस मिनट ही लगे होंगे तथापि इस बीच खातून बीवी की नींद टूट चुकी थी और वह पड़ी-पड़ी प्यास से छटपटा रही थीं अजीज ने लौटकर कराहती हुई माँ को अपना गला सहलाते देखा। दवा को एक ओर रखते हुए वह चारपायी पर माँ के पास बैठ गया और बोला,—'क्या तकलीफ है अम्मा! तुम इतना घबरा क्यों रही हो? डाक्टर ने कहा है कि बुखार जल्द ही उतर जायगा।'

पुत्र की आवाज सुनकर माँ की बन्द आँखें खुल गयीं। रुद्ध कंठ-स्वर अजीज के कानों में पड़ा। माँ कह रही थी,—'तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गये थे बेटा? प्यास की वजह से गले में काँटे पड़ गये हैं।'

माँ को पानी देने के लिए अजीज अपने स्थान से उठा तो उसे स्मरण आया कि डाक्टर ने ठंढा पानी न देने की हिदायत सख्ती से

दी है। पानी वह तब तक गरम कर नहीं सका था। अपनी असहाया-वस्था पर उसे बड़ा क्रोध आया लेकिन क्रोध उतार किस पर सकता था। उसे पीकर रह गया और जल्दी-जल्दी आग जलाने का प्रबंध करने लगा। दियासलाई की डिबिया से उसने काँटी निकाली ही थी खातून बीवी की घरघराती हुई आवाज पुनः कान में पड़ी—'पानी ले आने में इतनी देर! प्यास की वजह से मेरा दम निकला जा रहा है।'

अजीज का हाथ रुक गया। उसने सोचा—'पानी को गरम करने में कुछ न कुछ देर लगेगी। इस बीच माँ पानी के लिए छटपटाती रहेगी। थोड़ा-सा ठंढा पानी पिला देने पर प्यास शांत हो जायगी और फिर पानी को गरम करने का मौका मिल जायगा।' अपने स्थान से उठकर वह घड़े के पास पहुँचा और गिलास में पानी भरने लगा। गिलास आधा ही भरा होगा कि घड़ा पकड़ने वाला हाथ ही ढीला पड़ गया और घड़ा उलट कर गिर पड़ा। आवाज हुई तो खातून बीवी ने पूछा—'क्या बात है? किस मुसीबत में पड़ गये तुम? पानी तो पिला दो बेटा।'

उधर उलटे हुए घड़े पर आँखें जमाकर अजीज सोच रहा था, 'डाक्टर ने कहा था कि भूलकर भी ठंढा पानी मत पिलाना। सर्दी बढ़ सकती है। निमोनिया होने का खतरा है।' अजीज सिहर उठा। खाली हाथ वह माँ के पास पहुँचा और बोला,—'कुछ देर तक सब्र करो अम्मा। पानी गरम करके देता हूँ।'

अपनी बात समाप्त करके वह पुनः दमकले के पास जा पहुँचा। उधर चारपायी पर पड़ी खातून बीवी कह रही थीं—'एक घंटा हो गया। प्यास से तड़प रही हूँ। थोड़ा ठंडा पानी ही दे दो, फिर गरम कर लेना।'

इसका जवाब अजीज सोच चुका था। वह कुछ न बोला। उसने आग जलायी और फिर पानी के गर्म होने की प्रतीक्षा करने लगा। खातून बीवी कह रही थीं—'बहू घर में होती तो यह जहमत तुम्हारे गले न पड़ती और मेरी प्यास भी बुझ जाती।'

सुख का दिन देखते-देखते बीत जाता है, दुख का दिन बीतता ही नहीं, पहाड़ हो जाता है। घड़ी को देखते-देखते जब अजीज थक कर चूर हो जाता तो सूरज ढलता और खत्म न होने वाली रात की काली छाया सिर पर मंडराने लगती। बड़ी मुश्किल से रात कटती। इस प्रकारके सात दिन और सात रातें व्यतीत करने के बाद अजीज की दशा ऐसी हो गयी मानों वह स्वयं काफी दिनों तक रुग्ण रहा हो। नींद किसी दिन पूरी न हो सकी थी। कभी माँ को दवा देते समय और कभी पानी पिलाते समय उसकी उनींदी आँखों की पलकें आप से आप बन्द होने लगतीं। ज्वर की तीव्रता ने माँ की नींद हराम कर रखी थी। रात-दिन तीमारदारी में लगे रहनेवाले बेटे को नींद छोड़ना ही नहीं चाहती थी।

अंततागत्वा अजीज ने यह महसूस किया कि 'गाड़ी इस प्रकार नहीं चल सकती और शीघ्र ही किसी की मदद न ली गयी तो माँ का जीवन संकट में पड़ जायगा।' इच्छा न रहते हुए भी उसने गुलरुख से सहायता लेने का निश्चय किया किन्तु यह सोचकर शीघ्र ही उसने अपना निर्णय बदल दिया कि उसकी उपस्थिति का न जाने कैसा असर अम्मा पर पड़े।'

रात प्रतीक्षा में बीती; दिन राहत लेकर आया। डिस्पेंसरी जाने से पूर्व क्षेमेन्द्र से मिलने का निर्णय करके अजीज जल्दी-जल्दी आवश्यक काम निपटाने लगा। अंगीठी पर रखी चाय की केतली में उसने पानी भरा और फिर दवा रखने वाला स्टूल साफ करने लगा। फर्श

साफ करने के लिए झाड़ू भी उसे ही लगानी पड़ती थी। यह काम भी उसने निपटा दिया। तब बिस्तर साफ करने में जुट गया। यह काम आसान न था क्योंकि इसको पूरा करते समय रूबरू माँ से सामना हो जाता था जिसकी आँखों में भरा उलहना कलेजे में टीस पैदा कर जाता था।

केतली में भरे पानी में तेज उबाल आया तो उसमें से सों-सों की आवाज निकलने लगी। थके-हारे अजीज की आँखें तब बरबस केतली की ओर घूम गयीं और दूसरे ही क्षण चाय तैयार करने की गरज से वह अंगीठी के पास पहुँच गया।

खातून बीवी को चाय पिलाने के बाद अजीज अपना प्याला भर ही रहा था कि दरवाजा थपथपाने की आवाज कान में पड़ी। उसने खाली प्याला, खाली ही छोड़ दिया और केतली को जमीन पर रख-कर दरवाजे की ओर चल पड़ा।

दरवाजा खोलते ही इश्तियाक पर नजर पड़ी तो उस हालत में भी अजीज आश्चर्य प्रकट किये बिना न रह सका और आपसे आप उसके मुँह से निकल गया—'तुम!'

'हाँ मैं', इश्तियाक शीघ्रता से बोला—'मल्का झंझट में फँस गयी है। मुमकिन है, पुलिस उसके विरुद्ध बेहूदा मुकदमा दर्ज कर बैठे। मैं तुम्हारी मदद चाहता हूँ।'

'जाओ इश्तियाक,' अजीज ने जवाब दिया—'एक हफ्ते से अम्मा बिस्तर पर पड़ी है। चौबीस घंटा उसकी देख-रेख मुझे ही करनी पड़ती है। मैं कुछ नहीं कर सकता।'

अपनी बात समाप्त करके अजीज दरवाजा बन्द करने लगा तो इश्तियाक ने पास पहुँच कर उसका हाथ पकड़ लिया और बोला—'तुम्हें कहीं जाना न होगा। अशोक के नाम इस आशय का पत्र

लिखने से ही काम चल जायगा कि वह मल्का के खिलाफ किसी तरह की कारवाई के लिए जिद न करे।'

बिना कुछ सोचे ही अजीज ने बेरुखी से कहा—'किसी भी हालत में मल्का की मदद करने लिए मैं तैयार नहीं हूँ। तुम जा सकते हो।'

अजीज अपनी बात पूरी कर भी नहीं पाया था कि उसे धक्का देकर इश्तियाक अन्दर घुस गया और 'अम्मा-अम्मा' चिल्लाता हुआ खातून बीवी के कमरे की ओर भागा। अजीज भी उसके पीछे दौड़ा लेकिन उसे पकड़ न सका। इश्तियाक उससे पहले ही खातून बीवी के पास पहुँच गया। वह रात को पल भर भी सो न सकी थी, इसलिए इस समय उसकी आँखें लग गयी थीं। 'अम्मा-अम्मा' की रट लगाते हुए इश्तियाक ने उसे जोर से झकझोरना शुरू किया। तब तक अजीज भी वहां पहुँच चुका था। इश्तियाक की हरकत देखकर वह बेतरह क्रोधित हो उठा। उसने उसकी गरदन पकड़ी और बलपूर्वक घसीट कर दरवाजे पर ले आया। हाँफते-हाँफते अजीज ने कहा—'बदतमीजी की हद हो चुकी। अब चुपचाप चले जाओ, वरना बुरी तरह पेश आऊँगा।'

इस अपमान से इश्तियाक तिलमिला उठा। उसकी आँखें अंगारे बरसने लगी। नथूने फूल उठे। उसने एक बार घूरकर अजीज की ओर देखा और फिर तेजी से पीछे लौट गया।

बात यह थी कि इश्तियाक द्वारा सुचिता का चित्र गायब किये जाने का शक पैदा होने के बाद से ही अशोक ने मौके-मौके पर उस पर नजर रखना आरम्भ कर दिया था। एक दिन उसे मल्का और इश्तियाक के बीच होनेवाली बातचीत सुनने का अवसर मिल गया था। तब से उसके शक ने और जोर पकड़ लिया था और उसे ऐसा लगा था कि पास किसी की तसवीर है जिसके बारे ने इश्तियाक को

भी कुछ न कुछ मालूम है।' इस अनुमान की यथार्थता आँकने के लिए दो दिन पूर्व वह नजर बचाकर मल्का के बँगले में घुस गया था। उस समय इश्तियाक और मल्का बातचीत में मशगूल थे। और कोई यह जान न सका था कि कमरे में एक ओर पड़े सुचिता के चित्र पर अशोक की निगाह पड़ गयी है।

चोरी का पता लगाने में प्राप्त अपनी सफलता का हाल अशोक ने क्षेमेन्द्र को सुनाया। दोनों ने मल्का के फँसने का अच्छा अवसर देख-कर उससे लाभ उठाने में एक क्षण का भी विलम्ब न किया। उस दिन क्षेमेन्द्र की राय से अशोक ने चोरी की रिपोर्ट पुलिस थाने में लिखवा दी और दूसरे दिन क्षेमेन्द्र ने अपने प्रभाव का उपयोग करके मल्का के बँगले से चोरी का माल बरामद करवा दिया। यही वह मामला था जिसके सम्बन्ध में सहायता प्राप्त करने के लिए इश्तियाक, अजीज के घर गया था।

अजीज के कानों में इस मामले की भनक तक न पड़ी थी; क्योंकि सात-आठ दिनों से वह बीमार माँ की सेवा-सुश्रूषा में उलझा हुआ था। कल्पना इसकी करने का प्रश्न ही नहीं उठता था, क्योंकि सुचिता के हस्तनिर्मित चित्र और उसको चुराये जाने की घटना की उसे तनिक भी जानकारी न थी। वस्तुस्थिति का पता उसे होता तो संभव था कि वह इश्तियाक के साथ दूसरी तरह पेश आता। लेकिन होनी को कौन टाल सकता है?

इश्तियाक को मल्का की उतनी चिन्ता नहीं थी जितनी चिन्ता अपनी थी; क्योंकि चित्र उसने ही मल्का को दिया था। पुलिस के समक्ष मल्का का इस आशय का बयान उसे भी चक्कर में डाल सकता था। मल्का से स्वतः कुछ कहने या उसे कुछ समझाने का साहस उसमें रह नहीं गया था। 'चित्र चोरी का और इश्तियाक के जीवन

से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है'—यह जानकर मल्का यों ही बेतरह क्रुद्ध हो चुकी थी। ऐसी दशा में इश्तियाक की चिकनी-चुपड़ी बात उसे जहर सी लगती, यह निश्चित था यह आसार इश्तियाक से छिपा नहीं रह गया था। यही कारण है कि स्वयं कुछ न कहकर उसने अजीज से मदद लेने की कोशिश की। जिस रूप में और जैसा टका-सा जवाब उसे वहाँ मिला, उससे वह क्रुद्ध अवश्य हुआ लेकिन उसने अपने मस्तिष्क का सन्तुलन नहीं खोया और अजीज के घर से चला तो कैम्पबेल के होटल में पहुँच कर ही उसने दम लिया।

कैम्पबेल के दिमाग में इश्तियाक ने यह बात अच्छी तरह बैठा दी कि यदि मल्का की मदद नहीं की गयी तो परिणाम अच्छा न होगा। इससे उसका हौसला तो टूटेगा ही, शौकिया जासूसी करनेवालों का दिमाग भी आकाश छूने लगेगा।

मामला यद्यपि चोरी का था तथापि वह षड्यन्त्रमूलक राजनीति में भी उलझा हुआ था। कैम्पबेल इस तथ्य को नजरअन्दाज न कर सका और तुरन्त उच्च शासनाधिकारियों के सलाहकार अपने गोरे मित्रों से सम्पर्क स्थापित करके मल्का की सहायता करने का कार्य आरम्भ कर दिया।

सिर्फ एक घंटे के अन्दर कैम्पबेल को यह सूचना मिल गयी कि मामला रफा-दफा कर दिया गया और अब मल्का के सामने किसी प्रकार का खतरा नहीं रह गया है।

मल्का को बचाने की चिंता से मुक्त होते ही अजीज से बदला लेने के लिए इश्तियाक छटपटाने लगा। अपमान का बदला हाथों-हाथ चुकाने के लिए वह पागल हो उठा। उसकी दुष्ट बुद्धि का सहारा पाकर पैशाचिक वृत्तियाँ बल खाने लगीं। वह मन ही मन अत्यधिक क्रूर बन गया। उसके सामने न तो मनुष्यता का प्रश्न रह गया, न

विवेक का। ये सब प्रतिहिंसा की भावना की धधकती ज्वाला में पड़ कर भस्म हो गये थे। इसी ज्वाला में इश्तियाक, शीघ्रातिशीघ्र अजीज और उसके साथियों को भी झोंक देना चाहता था ताकि उन्हें भी झुलसते हुए वह अपनी आँखों से देख सके।

कल्पना के सहारे उसने अपनी जगह अजीज और मल्का के स्थान पर गुलरुख की तसवीर खड़ी की। मंजिल की राह उसे नजर आ गयी। मुस्कराहट का रूप धारण करके पैशाचिकता उसके ओठों पर थिरकने लगी। पैरों और हाथों में असुरों-सी शक्ति का अनुभव किया उसने और मुट्ठियाँ बाँध कर एकान्त में ही अट्टहास कर बैठा। गनीमत थी कि चारों ओर दीवारें थीं, अतः वे काँप कर रह गयीं। जीवितप्राणी कोई होता वहाँ तो अचेत होकर गिरे बिना न रहता शायद।

शैतान जाग उठा। जागते ही उसने कहर ढा दिया इश्तियाक के सधे हुए विषैले प्रचार ने वातावरण विषाक्त कर दिया। गुलरुख के लिए दम लेना भी मुश्किल हो गया। वह जिधर से गुजरती, लोग उधर अँगुलियाँ उठाते। निगाहें उसकी जिधर उठतीं, उधर उसे भोंड़ी और बदसूरत शकलें मजाक उड़ाती दिखाई देतीं। कान उसके जिधर घूमते, उधर से ही क्रूरता से भरी खिलखिलाहटी की तीक्ष्ण आवाज उसके कानों में पड़ने लगती। उसका रास्ता चलना मुश्किल हो गया। कहीं खड़ी होना दुश्वार हो गया। बात तो वह किसी से कर ही नहीं सकती थी। अस्पताल पहुँचती तो थोड़ी राहत मिलती, दो दिनों के बाद वहाँ भी कानाफूँसी आरम्भ हो गयी।

दिलेर जवांमर्द की जिन्दगी को भी फना करनेवाला हैवानियत से भरा यह खौफनाक नज्जारा देख कर गुलरुख अपने दिमाग पर काबू न रख सकी और घर लौटी तो पलंग पर पड़ गयी। रोते-रोते

हिचकी बँध गयी, आँखें सूज कर लाल हो गयीं। स्वास्थ्य यों ही गिरा हुआ था। नयी मुसीबत ने गजब ढा दिया। सुबह की नम हवा में अठखेलियाँ करने वाले अधखिले फूल-सी मोहक दिखाई देने वाली गुलरुख की दशा हो गयी काँटों से बिंध कर मुरझाने वाले फूल-सी।

माँ की देखभाल में सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से क्षेमेन्द्र से अजीज को मल्का के घर से सुचिता के चित्र की बरामदगी तथा इस मामले पर पुलिस की लीपा-पोती का समाचार तो मिल गया था लेकिन गुलरुख के सम्बन्ध में उसे कोई बात ज्ञात न हो सकी थी। माँ की सेवा-सुश्रूषा करने तथा डिस्पेंसरी से दवा लाने में ही वह उलझा रहता। क्षेमेन्द्र से सहायता मिलने लगी तो होश-हवास कुछ दुरुस्त हुआ। लेकिन बदकिस्मती ने उसे पुनः धर दबाया। माँ की हालत सुधरने के बजाय और बिगड़ने लगी। इस परिवर्तन ने उसके साहस में दरार डाल दी। भाग्यवश क्षेमेन्द्र और अशोक ने स्थिति काफी सँभाल रखी थी, अन्यथा अजीज स्वयं पड़ जाता।

उस दिन रात को जब हड्डियों तक में चुभनेवाली तेज हवा को हरहराहट एक क्षण के लिए भी रुकती न थी, अजीज घर के अन्दर कमरे में पड़े लम्प की रोशनी कायम रखने में व्यस्त था। लम्प बार-बार बुझने की आशंका उत्पन्न कर देता। ऐसे ही मौके पर क्षेमेन्द्र ने अजीज को सूचना दी,—'माँ बुला रही है।'

अजीज ने लैम्प की ओर इस प्रकार देखा जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी पालतू जानवर के संकटापन्न हो जाने पर उसके जीवन की रक्षा का प्रयास करते समय बाध्य हो कर बीच में ही उसके पास से हटते समय, उसे देखता है। वह खातून बीवी के पास जाकर बैठ गया और उसका सिर सहलाने लगा। खातून बीवी ने बड़ी कठिनाई से

कंठ स्वर उभाड़ कर कहा,—'मेरी हालत अच्छी नहीं है अजीज। न जाने किस समय दम निकल जायगा। एक ही ख्वाहिश बाकी है, वह पूरी हो जाय तो मौत दुःख न देगी।'

अजीज के मुँह से आवाज न निकली। क्षेमेन्द्र एकटक उसकी ओर देखता रहा और फिर बोला,—'जीवन के अन्तिम क्षण गिनती दिखाई देने वाली माँ की वह कैसी तमन्ना है, जो तुम पूरी नहीं कर सकते और जिसने तुम्हारा मुह बन्द कर रखा है?'

अजीज ने उत्तर नहीं दिया। अपने स्थान पर खड़ा होकर बोला वह,—'मैं बदकिश्मत हूँ अम्मा। जिन्दगी भर तुम्हारे लिए भार बना रहा। इस समय भी बना हूँ। अब सहा नहीं जाता। कोशिश करता हूँ। शायद तुम्हारी तमन्ना पूरी हो जाय।'

किसी की बात की प्रतीक्षा किये बिना अजीज तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ गया। वहाँ पहुँचा ही था कि उसके पैर थम गये। वह घूम पड़ा और अपने स्थान पर ही रुककर बोला—'अम्मा चाहती है कि उसकी आँखों के सामने गुलरुख से शादी कर लूँ। उसे यहाँ ले आने की कोशिश करने जा रहा हूँ। अम्मा का खयाल रखना क्षेमेन्द्र।'

अजीज सीधा अस्पताल जा पहुँचा। वहाँ उसने गुलरुख का नाम लिया कि कर्मचारी घूर-घूर उसे सन्देह और आशंका की दृष्टि से देखने लगे। अजीज को प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि किसी अशुभ-समाचार की सूचना देती दिखाई दी। उसकी समझ में कुछ न आया। वह हक्का-बक्का-सा हो गया। संयोगवश एक रहमदिल कर्मचारी को उसका मातमी चेहरा देखकर रहम आ गया और उसने अजीज को बताया कि 'गुलरुख छुट्टी पर है और अस्पताल नहीं आ रही है।'

एक क्षण भी रुके बिना, तेजी से रास्ता तय करते हुए अजीज कुछ ही देर में गुलरुख के घर जा पहुँचा। सदर दरवाजा बन्द था। बाहर से नजर आने वाली खिड़कियाँ भी बंद थीं। मकान के नीचे-ऊपर अजीब-सी मनहूसित छायी हुई थी। अजीज का कलेजा बैठने लगा। तरह-तरह की आशंकाएँ दिल और दिमाग पर आघात करने लगीं। धड़कते हुए कलेजे से उसने दरवाजा थपथपाया। कोई उत्तर नहीं मिला। दूसरी बार उसने दरवाजे पर जरा जोर से आघात किया उत्तर फिर भी नहीं मिला। तब वह अपनी पूरी शक्ति से दरवाजे पर अपना हाथ पटकने लगा। इस बार उसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। किसी के पैरों की हल्की-हल्की आहट उसके कानों में पड़ी। वह सीढ़ियाँ उतरने वाले का इन्तजार करने लगा। एक-दो मिनट बाद ही दरवाजा खुल गया और उसकी दृष्टि पड़ी सामने खड़ी गुलरुख पर जिसके रूखे बाल बिखरे हुए थे, आँखें सूजी हुई थीं, ओठों पर पपड़ियाँ जम गयी थीं, कपोलों पर जमे आँसू ने सूखकर मटमैले धब्बों का रूप पकड़ लिया था, और भरेपूरे मुँह की जगह हड्डियों का ढाँचा मात्र नजर आ रहा था।

अजीज ने गुलरुख को देखा तो उसे पैरों के नीचे की धरती खसकती मालूम हुई। जिह्वा में रक्त का संचार रुक गया। मस्तिष्क में टेलीफोन के तारों की झनझनाहट भर गयी। उसकी संज्ञा लुप्त-सी हो रही थी, तभी रुग्ण गुलरुख बोली,—'आइये।'

अजीज ने अपना कदम आगे बढ़ाया ही था कि गुलरुख अचेत होकर गिर पड़ी। उसका गिरना था कि अजीज की गुम होनेवाली चेतना उलटे पैरों वापस लौट आयी। चरित्रगत उसकी इस विशेषता ने गुलरुख के प्राण बचा लिये। वह उसे तत्काल उठाकर कमरे में ले गया और पलंग पर उसे लिटाने के पश्चात् पानी खोजने लगा।

पंद्रह-बीस मिनट लगाकर उपचार करने के बाद अजीज को सफलता मिली। गुलरुख ने आँखें खोल दीं, अजीज ने राहत की साँस ली। उसने कमरे में आने के पश्चात् पहली-बार महसूस किया कि वातावरण दम घोंटनेवाला है। प्रकाश और हवा का अभाव था वहाँ। दो रोशनदान थे। कुछ हवा और थोड़ा प्रकाश उनसे ही मिल रहा था। उसने सभी खिड़कियाँ खोल दीं। कमरे में प्रकाश आया। ताजी हवा मिली। दम में दम मालूम हुआ। तब उसकी दृष्टि कमरे में पड़ी वस्तुओं पर पड़ी। न तो पहले-सी सफाई थी, न सजावट। सभी वस्तुएँ उधर-उधर बिखरी हुई थीं। कोई ऐसा स्थान नजर नहीं आ रहा था जहाँ धूल न पड़ी हो। वह समझ न सका कि यह दुर्दशा क्यों हुई। किसकी वजह से गुलरुख को यह दिन देखना पड़ा, यह पूछने का भी समय नहीं था। घर पर माँ लबेजान पड़ी थी। गुलरुख के होश में आते ही, अजीज का ध्यान माँ की ओर चला गया। तभी याद आया—'मैं गुलरुख को लेने आया हूँ।'

गुलरुख जा कैसे सकती थी? वह स्वयं ही बेदम होकर पड़ी थी। अजीज अपनी आँखों से सब कुछ देख रहा था। वास्तविक बात जबान पर न आयी। उनसे महसूस किया कि खाली हाथ ही लौटना पड़ेगा। परिणाम की कल्पना ने मस्तिष्क का चक्कर काटा तो वह सिहर उठा।

गुलरुख बोली,—'बैठेंगे नहीं आप।'

अजीज ने तुरंत जवाब दिया—'बैठने का समय नहीं है। माँ लबेजान पड़ी है। तुम बेहोश न होती तो मैं अब तक लौट गया होता।'

'माफ कीजियेगा,' गुलरुख बोली,—'मैं बदकिस्मत किसी के काम न आ सकी। आप जाइये। ऐसी हालत में माँ को छोड़कर आना मुनासिब न था।'

अजीज लौट गया। रास्ते भर बर्छी बनी अशुभ कल्पनाएँ उसका कलेजा बेधती रहीं। मन ही मन दुआएँ माँगता अजीज घर के समीप पहुँचा ही था कि सामने से अशोक बदहवास-सा आता दिखाई दिया। उसकी सूरत देखकर अजीज काँप उठा। अशोक उसके पास पहुँचकर रुक गया। उसने सहानुभूति भरी आँखों से एक बार अजीज की ओर देखा, फिर बिना कुछ कहे गरदन झुका ली। शंकित हृदय से उसने पूछा,—'क्या बात है अशोक, तुम बोलते क्यों नहीं ?'

दबी हुई जबान से अशोक ने जवाब दिया,—'माँ चल बसीं अजीज।'

अजीज को काठमार गया। आँखें उसकी अंतरिक्ष पर टँग गयीं। सहारा देकर अशोक उसे घर की ओर ले चला तो अजीज बोला,—'मुझे छोड़ दो अशोक। डाक्टर लेकर फौरन गुलरुख के घर चले जाओ। मौत की छाया शायद उसपर भी पड़ने वाली है।

गुलरुख को मानसिक संताप की चक्की में पीसने के बाद अजीज की ओर ध्यान देना इश्तियाक ने आवश्यक नहीं समझा, क्योंकि मल्का पर अपने प्रभाव का सिक्का जमाने तथा उसे काबू में करने के लिए भी वह बुरी तरह व्याकुल था। अजीज से उलझने पर इस कार्य में देर हो सकती थी। यह उसे गवारा न था, अतः गुलरुख को सामने से हटते देखकर वह मल्का की ओर झुका। इश्तियाक ने उससे मुलाकात की उस समय जब वह गम्भीरता-पूर्वक अपने जीवन की गुत्थियों पर विचार करने में व्यस्त थी।

११

इश्तियाक को सामने देखकर मल्का ने बात न की। इश्तियाक ने इसकी परवाह न की। वह स्वयं बात करनेके लिये उद्यत होकर उसके पास पहुँचा था। मल्का का रुख देखकर वह क्रुद्ध हुआ अवश्य लेकिन तरह दे गया और बोला,—'भूल के लिए मैं माफी चाहता हूँ।'

मल्का जानती थी कि उत्तर दिये बिना पिंड न छूटेगा, अतः उसने जवाब दिया,—'आशा है कि भविष्य में इस प्रकार की भद्दी भूल न होगी।'

इश्तियाक ने सोचा था मल्का तमतमायेगी, क्रुद्ध होगी, गलती का कारण पूछेगी; तब बातचीत को खींचने का अवसर आप से आप मिल जायगा। मल्का के दो टूक जवाब ने उसके अनुमान पर पानी फेर दिया। सहसा वह यह सोच न सका कि बातचीत नये सिरे से कैसे शुरू की जाय। फलतः बाध्य होकर कुछ देर तक उसे चुप रह जाना पड़ा। मन ही मन कुछ सोच-समझ कर बोला इश्तियाक—'मुझसे नाराज हो?'

मल्का ने कहा,—'मुझे कोई शिकायत नहीं है। भूल इंसान से ही होती है। इससे सबक न लेने की भूल नहीं होनी चाहिये।'

इश्तियाक फिर मात खा गया। यह देखकर वह झुँझला उठा कि बात को आगे बढ़ने देने के लिए मल्का तैयार नहीं है। उसने मन-चाही करने की जिद पकड़ ली और बोला,—'गलती का फल भोगने से मैं पीछे नहीं हटा। मामला रफा-दफा कराने में काफी मेहनत करनी पड़ी।'

'शुक्रिया,' मल्का ने कहा,—'एहसान याद रखूँगी।'

'एहसान की कोई बात नहीं है,' इश्तियाक ने सिलसिला जारी रखा, 'यह तो मेरा फर्ज था।'

यह सुनकर अंततः मल्का तमतमा ही उठी और बोली—'एक औरत की जिन्दगी हराम कर देना भी फर्ज है शायद।'

तीर निशाने पर बैठा देखकर इश्तियाक मन ही मन मुस्करा उठा। उसने कहा,—'तुम क्या कह रही हो! तुम्हारी जिन्दगी की राह का रोड़ा कब बना हूँ मैं?'

तीव्र दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए मल्का ने कहा,—'मेरा मतलब गुलरुख से है।'

'ओह, अब समझा।' हँसते हुए बोला इश्तियाक,—मर्द के मुकाबले औरत झुकती है औरत की ही ओर। काश्, हालात समझ सकती।'

'खूब समझती हूँ' आवेश में बोली मल्का,—'उसका गुनाह यही है कि वह एक बेपनाह औरत है।'

'आवेश में धोखा खा रही हो मल्का' इश्तियाक ने कहा,—'अजीज को कुचलने के लिए गुलरुख को कुचलना जरूरी था।'

इसके बाद मल्का के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसने अजीज से अपनी मुलाकात और उसकी फटकार का पूरा हाल मल्का को सुना दिया। तैश में वह गुलरुख के विरुद्ध अपने षड्यन्त्र की सफलता का समाचार भी बता बैठा और यह अनुमान प्रकट करने से भी बाज न आया कि 'तुम्हें खतरे में देखकर मुझे तो तकलीफ हुई थी, गुलरुख की दुर्दशा देखकर उसका अनुभव अब उसने जरूर कर लिया होगा।'

इश्तियाक की बात सुनकर मल्का क्रोधित अवश्य हो गयी लेकिन क्रोध उसने प्रकट किया नहीं। कुछ कहती तो बात बढ़ सकती थी। इसके लिये वह तैयार न थी। चाहती थी कि इश्तियाक जल्द से जल्द उसकी आँखों से दूर हो जाय। साफ-साफ कुछ कहना सम्भव

न था। इश्तियाक एक खतरनाक षड्यन्त्र में उसका साथी है—यह बात वह भूली नहीं थी। वह चुप ही रह गयी।

कदम-कदम पर बात को सीचने की स्थिति से इश्तियाक भी ऊब गया। दूसरे अवसर की प्रतीक्षा करने का निर्णय करके उसने भी कदम पीछे हटा लिया और बोला,—'फिर मिलूंगा मल्का। इस समय मार्लिन के पास जाना जरूरी है। सम्भव है कि कोई नयी प्लान लेकर जल्दी ही तुम्हारे पास आना पड़े।'

इश्तियाक चला गया। मल्का ने राहत की साँस ली। यह राहत बहुत दिनों तक बनी न रह सकी। जिस मार्ग पर वह चल चुकी थी, वह काटों से भरा था। पीछे लौटना सम्भव नहीं था। एक ही स्थान पर रुकी वह रह नहीं सकती थी। आगे बढ़ने पर काँटों का सामना करना अनिवार्य था। काटों को बिछाने के लिए ही मार्लिन ने इश्तियाक को बुलाया था।

मल्का से बातचीत करने में जितना समय लगने का अनुमान इश्तियाक ने लगाया था, मल्का की अनिच्छा के कारण उतना समय लगा नहीं, इसलिए इश्तियाक निर्धारित समय से पहले ही मार्लिन के होटल में जा पहुँचा। उस समय वह अनुपस्थित थी। फलतः इश्तियाक को उसका इन्तजार करना पड़ा।

निर्धारित समय से पाँच मिनट पूर्व मार्लिन और कैम्पबेल होटल में पहुँच गये। इश्तियाक ने उन्हें आते देखा था अवश्य, फिर भी उनका सामना नहीं किया था उसने। समय पर उपस्थित होने की तत्परता प्रकट करने का अवसर हाथ में आया देख कर वह चूक जाने के लिए तैयार नहीं था। यह मार्लिन और कैम्पबेल पर अपनी योग्यता का सिक्का जमाने की उसकी इच्छा का ही परिणाम था। यों चूक हो चुकी थी उससे कई बार। मार्लिन होटल में अनुपस्थित न होती

तो इस बार उसे समय पर काम न करने का उलाहना उसे सुनना पड़ता।

ठीक समय पर इश्तियाक मार्लिन के सामने उपस्थित हुआ। घड़ी की ओर देखते हुए मार्लिन ने कहा,—'घड़ी देख कर आज पहली बार तुमने काम किया है। तत्परता के लिए धन्यवाद।'

जवाब में इश्तियाक मुस्करा कर रह गया। कैम्मबेल ने कुर्सी की ओर संकेत करते हुए उससे बैठ जाने का आग्रह किया। स्वामिभक्त नौकर की भाँति इश्तियाक ने चुपचाप कैम्पबेल का भी आग्रह मान लिया। कैम्पबेल बोला,—'आजकी बातचीत बहुत महत्त्वपूर्ण होगी, साथ ही खतरनाक भी।'

इश्तियाक ने उत्सुकतापूर्वक कैम्पबेल की ओर देखा। तभी मार्लिन बोल उठी,—'लड़ाई अब बन्द होने ही वाली है। या यह समझ लो कि कश्मीर कमीशन के प्रस्ताव के अनुसार युद्ध-विराम की घड़ी आ पहुँची है।'

मार्लिन चुप हो गयी। बात पूरी करने के लिए कैम्पबेल ने अपना मुँह खोला। उसने कहा,—'अब काम करने का अपना तरीका हमें बदलना होगा। हमें लोगों में दहशत पैदा करनी होगी ताकि आंतरिक शान्ति भंग हो जाय।'

इश्तियाक ने पूछा,—'क्या करना होगा?'

कैम्पबेल ने जवाब दिया,—'समय पर पता चल जायगा। इस समय हमें अपनी ताकत आगे का प्रबन्ध पूरा करने में लगानी है ताकि लड़ाई बन्द होने पर राष्ट्र संघ के पर्यवेक्षकों की नियुक्ति के बाद ही हम अपना काम शुरू कर सकें।'

मार्लिन ने बात आगे बढ़ायी,—'युद्ध-विराम के बाद पाकिस्तान से यहाँ विस्फोटक पदार्थ लाने की व्यवस्था की जायगी। ये पदार्थ विस्फोट की स्वचालित व्यवस्था से संयुक्त होंगे।'

मार्लिन चुप हो गयी। इश्तियाक टकटकी लगाकर उसकी ओर देखता रहा। कैम्पबेल ने कहा,—'पहला काम यह है कि विस्फोटक सामग्री एकत्र करने का सुरक्षित स्थान खोज लिया जाय। इसके बाद सामान प्राप्त करने की कार्रवाई करनी होगी।'

मार्लिन ने इश्तियाक से कहा,—'स्थान खोजने का काम तुम्हें करना होगा।'

कुछ सोचकर इश्तियाक ने कहा,—'इस काम में सेठ चाँदमल से कुछ मदद प्राप्त हो सकती है?'

कैम्पबेल ने पूछा,—'किस तरह की मदद चाहते हो?'

इश्तियाक ने उत्तर दिया,—'सेठ चाँदमल किसी काम की आड़ में अपनी ओर से उन व्यक्तियों को भारत से यहाँ भेज दें जिनका नाम-पता उन्हें मुझसे प्राप्त हो।'

मार्लिन ने कहा,—'तुम्हारा अभिप्राय क्या है?'

इश्तियाक ने जवाब दिया,—'पाकिस्तान के कुछ लोगों से मैं सम्पर्क स्थापित करूँगा जो पूर्वी पाकिस्तान की सीमा चुपके से पार करके भारत में दखिल हो जायँगे। उन्हें ही यहाँ बुलाना होगा। सेठ चाँदमल की मदद मिलने पर उन्हें पुलिस की निगाह से बचाना आसान होगा।'

इश्तियाक की योजना सुनकर तत्काल मार्लिन या कैम्पबेल ने कोई मत प्रकट नहीं किया। दोनों चुपचाप उसपर विचार करने लगे। इस बीच इश्तियाक की नजर दूसरी ओर घूमी तो दोनों ने आँखों के इशारे से एक दूसरे को कुछ समझाया और तब कैम्पबेल ने कहा,—'तुम्हारी योजना पर किस हद तक अमल करना सम्भव है, इस पर विचार करना होगा। इस काम में कुछ समय लग सकता है। तबतक तुम्हें खामोश रहना होगा।'

इश्तियाक ने मौन रहकर अपनी सहमति प्रकट कर दी और जाने लगा तो मार्लिन ने उसे रोक लिया। अपने स्थान से उठकर वह आल-मारी के पास गयी और उसमें से नोटों का एक बंडल निकालकर इश्तियाक की ओर बढ़ाती हुई बोली—'अपने दोस्तों से, मेरा मतलब अजीज और उसके दोस्तों से है—निपटने का तुम्हारा काम जारी हैं न इश्तियाक ? अखबारवाले का उपद्रव तो शांत हो गया। अजीज का मुँह बन्द करना आवश्यक है।'

नोटों का बंडल जेब के हवाले करते हुए इश्तियाक ने कहा,—'इस बार अजीज को गहरा धक्का लगा है। जल्दी ही उसे अगला सबक भी मिल जायगा।'

शिष्टाचार की रस्म अदा करनेके बाद इश्तियाक चला गया। मार्लिन पुनः कैम्पबेल के सामने आकर बैठ गयी और बोली,—'इश्तियाक अब जरा तेजी से सोचने लगा है।'

मुस्कराकर कैम्पबेल ने कहा,—'बात कुछ ऐसी ही है। उसका सुझाव बुरा नहीं है लेकिन प्रश्न यह है कि सेठ चाँदमल को राजी कैसे किया जायगा।'

मार्लिन ने मुस्कराकर कहा,—तुमने अभी सेठ चाँदमल को पहचाना नहीं कैम्पबेल। जिस प्रकार इश्तियाक ने सीधे-सीधे अपना प्रस्ताव पेश कर दिया, उसी प्रकार हम भी सेठ चाँदमल के सामने इसको पेश कर दें, तो वह भड़क जायगा, लेकिन यदि उसी भूमिका के साथ काम हुआ जिसके सहारे अखबार के मामले में हम उससे अपना उल्लू सीधा करा सके तो सेठ का फँसना मुश्किल नहीं है।'

कैम्पबेल ने कुछ परेशानी जाहिर करते हुए कहा,—'लेकिन यह काम होगा कैसे ?'

मार्लिन ने जवाब दिया,—'लम्बे लाभवाले चोरी के व्यापार की लालच दिखाकर। मैं सामने बैठकर शराब का दौर शुरू करूँगी। तुम तमाशा देखते चलना।'

मार्लिन और कैम्पबेल हुकूमत की नस पर काबू रखने वाले पूँजीपतियों के एजेण्ट थे। पाकिस्तान से उन्हें दौलत मिलती थी। दौलत के हाथ दोनों बिके हुए थे। उनका ईमान था धन। उनका धर्म था धन। इसके लिए वे कुछ भी कर सकते थे। बुद्धि दोनों के पास थी, संयोगवश मार्लिन के पास सौन्दर्य भी था। इसका सहारा लेकर सेठ चाँदमल ऐसे लोगों को बेवकूफ बनाने में उसे देर नहीं लगती थी। सेठ चाँदमल की सबसे बड़ी दुलर्बता थी धन की प्यास। जवानी के बुझते हुए चिरागे-हविस का स्थान दूसरा था। मार्लिन इस दोनों दुर्बलताओं को जानती थी—पहचानती थी। इसे लाभ उठाना भी आता था। बदले में उसे शराब जरूर पीनी पड़ती थी। शराब पीने में वह अभ्यस्त थी। होश-हवास केवल सेठ चाँदमल का गुम होता था, मार्लिन और कैम्पबेल के लिए यह खुला हुआ हथकंण्डा था। सेठ चाँदमल को यह पता नहीं चलता था कि उन्हें बेवकूफ बनाया जा रहा है। कारण सिर्फ इतना ही था कि जिस समय सेठ पर नशा बुरी तरह सवार हो जाता, मार्लिन उसके निकट, काफी निकट हो जाती थी —उसके और सेठ चाँदमल के बीच सिर्फ नशे की दीवार रह जाती थी।

यही कारण है कि मार्लिन ने जब कैम्पबेल के समक्ष अपनी सफलता पर विश्वास प्रकट किया तो वह संदेह न व्यक्त कर सका। वह मार्लिन की शक्ति से परिचित था और उसका कायल हो चुका था। इस ओर से वह निश्चिन्त था। चिन्ता थी उसे केवल इस बात की कि श्रीनगर से नयी दिल्ली और नयी दिल्ली से श्रीनगर मार्लिन का

आना-जाना कहीं सन्देह का कारण न बन जाय। एक और खतरा उसकी निगाह में खटकता रहता था। नयी दिल्ली हो चाहे श्रीनगर, मार्लिन की शान-शौकत में रत्ती भर कमी नहीं होती थी। आर्लाशान होटल में पेरिस की मनचली धनाढ्य सुंदरियों की भांति ठाट-बाट से रहने का नशा उस पर चौबिस घन्टे सवार रहता था। तेज निगाहवाले बुद्धिमान व्यक्ति के मन में सन्देह उत्पन्न करने के लिए उसका यह रवैया ही पर्याप्त था। कैम्पबेल यह समझता था लेकिन कुछ कर नहीं सकता था। जब-जब उसने अपना सन्देह प्रकट किया, मार्लिन ने हँसकर उसे टाल दिया।

मार्लिन अपने लिए तनिक भी चिन्तित न थी। उसे चिन्ता थी इश्तियाक और मल्का के सम्बन्ध में। उसे भय था कि इश्तियाक किसी दिन मल्का पर किसी प्रकार की ज्यादती न कर बैठे। मल्का के घर से पुलिस द्वारा सुचिता के चित्र की बरामदगी की घटना मार्लिन की आँखों में खटकने लगी थी और उसकी धारणा थी कि यह किसी न किसी दिन कोई न कोई नया गुल खिलाकर रहेगी। उस स्थिति को वह बचाना चाहती थी और चाहती थी कि मल्का और इश्तियाक के बीच व्यक्तिगत रूप में चाहे जितनी तफावत उत्पन्न हो जाय, इसका प्रभाव पाकिस्तान की सहायता के लिये आयोजित कार्य पर न पड़े। यों यह विश्वास तो उसे था कि इश्तियाक या मल्का कोई फन्दे से बाहर नहीं हो सकता, फिर भी वह मामला और पक्का कर लेना चाहती थी। इश्तियाक के उसकी ताजी भेंट का कारण भी यही था। वह यह समझती थी कि एक बार विस्फोटक पदार्थ के संग्रह की सुरक्षा का भार उठा लेने पर इश्तियाक के लिए मनमाने ढंग से काम करना सम्भव न रहेगा क्योंकि यही एक अपराध उसे जीवन पर्यन्त के लिए सीकचों के पीछे फेंक देने के लिए काफी था।

इश्तियाक को इस कूटनीति पर मगजपच्ची करने का अवकाश न थ। उसमें और चाहे जो दुर्बलता हो, धुन का पक्का वह जरूर था। पाकिस्तानकी सहायता करने और पाकिस्तान में कश्मीर के विलय की स्थिति उत्पन्न करने के लिए वह हृदय से इच्छुक था। इस काम में वह ढिलाई कर नहीं सकता था। फिर भी मल्का पर काबू पाने की धुन के कारण इसमें ढिलाई होने की आशंका उत्पन्न हो गयी थी। इसका ज्ञान उसे स्वतः नहीं था। धुन की जो बात सामने आती उसमें पिल पड़ना उसका स्वभाव था। वह अवकाश के समय मल्का को रास्ते पर लाने की कोशिश में लग जाता था और जब दूसरा काम सामने आ जाता तब उसमें भिड़ जाता था। मल्का से पिछली बार की भेंट के बाद उसके दिमाग में यह नयी बात पैदा हो गयी थी कि गुलरुख के प्रति उसका रुख इतना अधिक सहानुभूतिपूर्ण क्यों हो गया है। इसकी जानकारी हासिल करने के लिए भी वह कृतसंकल्प हो गया था। यही कारण है कि मार्लिन के होटल से बाहर निकलने के बाद इच्छा रहते हुए भी वह मल्का के घर न जाकर, गुलरुख के मकान की ओर चल पड़ा।

इश्तियाक सड़क पर ही था कि उसकी दृष्टि अशोक के साथ गुलरुख के मकान से बाहर आनेवाले राकेश पर पड़ गयी। उसे देखकर इश्तियाक को आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह समझता था, राकेश हमेशा के लिए श्रीनगर छोड़ चुका है। वह कुछ तैश में भी आ गया और बिना कुछ सोचे-समझे राकेश के सामने पहुँच कर तन गया और बोला, —'तुम फिर आ गये!'

घृणा से उसकी ओर देखते हुए राकेश ने कहा,—'हाँ, अब लौटकर कहीं जाऊंगा भी नहीं।'

'अच्छा!' दुष्टतापूर्ण मुस्कराहट को ओठों पर लाकर इश्तियाक

ने कहा,—'इश्क शायद ज्यादा जोर मारने लगा है।'

इश्तियाक की बात समाप्त भी नहीं हो पायी थी कि राकेश ने कसकर एक तमाचा उसके मुँह पर जड़ दिया। इतने से ही इश्तियाक क्रोधान्मत्त हो उठा और छुरा निकालकर फुर्ती से राकेश की ओर झपटा। ऐन मौके पर अशोक ने आगे बढ़कर इश्तियाक की कलाई पकड़ ली। इससे आक्रमण में बाधा अवश्य पड़ी लेकिन इश्तियाक को दबाया नहीं जा सका। अशोक की तुलना में वह अधिक शक्तिशाली था। उसने झटका देकर अपनी कलाई छुड़ा ली लेकिन साथ ही आक्रमण करने का अपना विचार भी उसने त्याग दिया और छुरा सम्हालते हुए बोला,—'होशियार रहना। इश्तियाक से दुश्मनी का गहरा मूल्य चुकाना पड़ेगा।'

इश्तियाक फिर एक क्षण के लिए भी नहीं रुका और लौट गया। अशोक के दिल में चिन्ता उत्पन्न हो गयी। उसने कहा,—'यह अच्छा नहीं हुआ।'

राकेश ने उत्तर दिया,—'जो होना था, हो चुका। अब देखा जायगा।'

रास्ते में न तो अशोक ने कुछ कहा, न राकेश ही बोला। दोनों चुपचाप अजीज के घर जा पहुँचे। अकस्मात् राकेश को सामने देखकर अजीज को आश्चर्य हुआ। उसके मुँह से केवल एक शब्द ही निकला,—'तुम!'

अजीज को देखकर राकेश सन्न रह गया। उसकी जवानी को लकवा-सा मार गया था। उमड़ी हुई मांस पेशियां ढीली पड़ गयी थीं। मुख पर हमेशा नजर आने वाली सुर्खी, स्याही में बदलती दिखाई दे रही थी।

राकेश ने कहा,—'तुम्हारी हालत क्या हो गयी है?'

बीच में ही अशोक बोल उठा,—'मैंने अब तक जान-बूझकर तुम्हें कुछ नहीं बताया था; क्योंकि मैं चाहता था कि चिन्ता और दुश्चिता के चक्कर में फँसने के पहले एक बार तुम गुलरुख से मिल लो। बड़ी दुःखद परिस्थितियों में अजीज की माँ का अन्त हो चुका है।'

राकेश ने यह सुना तो अवाक् रह गया। खातून बीवी से उसे भी काफी मोहब्बत थी, अतः दिल पर गहरी चोट भी लगी और आँखों में दो बूँद आँसू आ गये।

राकेश के आग्रह पर अशोक ने उसे एक-एक बात बता दी। सारी कहानी सुनने के बाद राकेश ने खातून बीवी की मौत के लिए स्वयं को उत्तरदायी समझा। अपराधी-सा बोला राकेश,—'मुझे क्षमा करो अजीज! मेरी किस्मत ही फूटी हुई है। मैं न केवल स्वयं दुःख भोग रहा हूँ बल्कि जिसकी सहानुभूति प्राप्त करता हूँ, किसी न किसी वजह से उसपर भी वज्र गिर पड़ता है।'

उसकी विह्वलता को शांत करने की कोशिश करते हुए अजीज ने कहा,—'मौत पर कोई काबू नहीं पा सका। खुदा की यही मर्जी थी। मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है राकेश।'

राकेश चुप रह गया। अजीज ने ही पुनः शांति भंग की और बोला,—'सुचिता के बारे में अशोक ने सब कुछ बता दिया होगा?'

'हाँ।' राकेश ने कहा,—'काश श्रीनगर न लौटता!'

कमरे में कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। अजीज, राकेश और अशोक—तीनों सिर झुकाकर चुप बैठे रहे। कोई देखता तो यही समझता कि मातम मना रहे हैं।

इस बार भी अजीज ने ही शांति भंग की। उसने पूछा,—'कब आये?'

यह प्रश्न सुनकर राकेश को इश्तियाक की हिमाकत याद आ गयी। उससे हुई झड़प का विवरण सुनाते हुए राकेश ने कहा,—'अब श्रीनगर छोड़कर नहीं जाऊँगा। माँ की मौत के लिए किसी न किसी हद तक इश्तियाक भी जिम्मेदार है। उसकी खूँखार आँखें अब तुम्हारी ओर लगी हैं। बदकिस्मती से तुम्हारी माँ के काम नहीं आ सका लेकिन तुम्हारे काम आने की कोशिश करूँगा।'

अजीज ने कहा—'तैश में गलती न कर बैठना राकेश। तुम्हारी आवश्यकता मुझसे अधिक गुलरुख को है।'

राकेश ने उत्तर नहीं दिया, प्रतिवाद नहीं किया, सहमति नहीं प्रकट की। मुरझायी हुई कली की भाँति बिस्तर पर पड़ी गुलरुख का चित्र उसकी आँखों के सामने नाचने लगा। बात यहीं समाप्त हो गयी।

कई दिन बीत गये। अजीज के बार-बार कहने पर भी राकेश घर से बाहर नहीं निकला। उसके दिमाग में विचित्र प्रकार की हल-चल मची थी। सुचिता का पता न लगने तक, उसे यही विश्वास था कि सुचिता के अतिरिक्त उसे और किसी की चिन्ता नहीं है, जब यह निश्चित हो गया कि सुचिता इस दुनिया में नहीं रही, तब भी उसने जीवन के मोह को हृदय के एक कोने में सिमटा पाया। जो गुलरुख की याद मात्र से स्पंदित हो उठता था। वह यह अनुभव करने लगा था कि गुलरुख ने उसके हृदय पर स्वयं को अंकित कर दिया है। इसके फलस्वरूप उसके समक्ष एक नयी समस्या उत्पन्न हो गयी थी। अजीज की माँ को वह भी माँ की तरह प्यार करने लगा था। मृत्यु से पूर्व की उसकी अंतिम इच्छा के अनुसार आचरण करना वह अपना नैतिक कर्तव्य समझता था। इधर अजीज उसके पीछे पड़ा था और बार-बार गुलरुख से भेंट करने का आग्रह करता था। इस आग्रह में जो इच्छा निहित थी, राकेश उससे अपरिचित नहीं था।

घर पर बैठे-बैठे उसने परिस्थितियों के नागपाश से मुक्त होने के उपाय पर सैकड़ों बार विचार किया लेकिन मुक्ति का मार्ग एक बार भी उसे नजर नहीं आया। अंततः उसने स्वयं को भाग्य के कदमों पर डाल देने का निर्णय किया और परिस्थितियों का मूक दर्शक बने रहना स्वीकार कर लिया—इस रूप में कि 'जब जिधर पैर घूम जाय, उधर ही चल पड़ना होगा।'

राह से भटका हुआ मनुष्य कभी-कभी अनजान में ही राह पर भी पहुँच जाता है और उसकी तात्कालिक कठिनाइयाँ आप से आप दूर हो जाती हैं। राकेश के साथ भी यही हुआ। शालीमार में दिल बहलाने के उद्देश्य से घूमते समय संयोगवश उसकी मुलाकात वहाँ मल्का से हो गयी। यह मुलाकात भी हुई विचित्र परिस्थितियों में। मल्का और मार्लिन वहाँ पहले से ही घूम रही थीं। अचानक फौवारे के पास मार्लिन का पैर फिसल गया और वह गिर पड़ी। उसे पैर में चोट भी आ गयी। इसलिए वह लौट गयी। उसे बचाने का प्रयास करते समय मल्का के पैर के अँगूठे का नाखून उखड़ गया था। अँगूठे से रक्त बह रहा था। दूर से यह सब देखने वाला राकेश निष्प्रयोजन ही उसके पास से गुजर रहा था कि उसकी निगाहें खून पर पड़ गयीं। भद्रतावश उसने मल्का का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराया। धन्यवाद करने के लिए मल्का ने उसकी ओर देखा तो उसे पहचान लिया और आश्चर्य प्रकट करते हुए बोली—'आप!'

राकेश—'जी, मेरा नाम राकेश है।'

मल्का—'जानती हूँ, लेकिन आप तो....

राकेश—'यहाँ से चला गया था। यही तो कहना चाहती हैं आप?'

मल्का—'कब आये?'

राकेश—'कई दिन हो गये !'

मल्का—'कई दिन हो गये ।'

राकेश—'हाँ, क्या इश्तियाक ने आपको बताया नहीं ?'

राकेश की व्यंग्योक्ति का अभिप्राय मल्का समझ गयी, फिर भी वह रुष्ट नहीं हुई । सुचिता के चित्र की बरामदगी के बाद न जाने कितनी बार वह अजीज अथवा उसके किसी मित्र से बातें करने के लिए इच्छुक हो चुकी थी । अपनी स्थिति पर असन्तोष भी उमड़ चुका था उसके हृदय में एकाधिक बार ।

उसने कहा—'मैं माफी चाहती हूँ । मुझे नहीं मालूम था कि वह चित्र आपकी बहन का था जो बारामूला के हादसे के दौरान में अपनी जान खो चुकी है ।'

राकेश ने वार्ता को जारी रखने का अवसर हाथ से जाने नहीं दिया । उसने कहा--'मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं है । बहन की मौत एक राज था जिसे केवल अशोक ही जानता था ।'

मल्का—'और आप ?'

राकेश—'इस राज का पता मुझे भी अशोक ने ही बताया ।'

मल्का—'बहुत मोहब्बत थी उससे ?'

राकेश—'हाँ । अब उसके जिक्र से फायदा ही क्या !'

मल्का—'दुःख होता है ?'

राकेश--'नहीं, बहुत-सी बातें याद आ जाती हैं ।'

मल्का ने बातचीत का सिलसिला जारी रखा तो राकेश ने भी पाकिस्तानियों के आक्रमण से उत्पन्न स्थिति और उसका शिकार होने-वालों का अत्यन्त करुण चित्र निस्संकोच होकर खींच दिया उसके सामने । पाकिस्तान-अधिकृत क्षेत्र के कश्मीरियों की दुर्दशा के सम्बन्ध में उसने जो कुछ सुना था वहाँ से लौटनेवालों के मुँह से, वह भी बता

दिया उसने। अन्त में उसने यह भी कह डाला—'गुलरुख को शायद आप भूली न होंगी। इन बातों से उसका कोई लगाव नहीं है, फिर भी उसे इनके जाल में फँस कर दुर्दशा का शिकार होना पड़ा है।'

राकेश की बातें सुनते-सुनते मल्का गम्भीर हो गयी थी। गुलरुख का नाम सामने न आता तो सम्भव था, वह चुप रह जाती। इसके प्रकरण ने पुनः उसका मुँह खोल दिया और वह बोली—'मुझे उससे हमदर्दी है।'

राकेश ने चोट की—'इश्तियाक से कह दीजियेगा, उलझने के लिए बहुत लोग पड़े हैं। उस गरीब को परेशान करने में कोई फायदा नहीं है।'

मल्का ने जवाब दिया—'आपकी सलाह पर अमल करने की कोशिश करूँगी! क्या मैं यह मान लूँ कि पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर क्षेत्र की दशा के सम्बन्ध में आपने जो कुछ कहा है, वह प्रचार मात्र नहीं है?'

राकेश बोला—'आप वहाँ के सम्बन्ध में मुझसे अधिक जानकारी हासिल कर सकती हैं।'

मल्का ने कहा—'कोशिश करूँगी।'

बात समाप्त हो गयी। राकेश चला गया। विचारों में डूबी मल्का वहाँ से हिली नहीं। राकेश की एक-एक बात तेजी से उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रही थी।

राकेश यह सोच कर प्रसन्न था,—'मुझसे मल्का की मुलाकात का हाल इश्तियाक को मालूम होगा तो वह जल-भुन उठेगा। उसके दिमाग का पारा यों ही चढ़ा है।' उसे यदि मल्का की विचार-दिशा का आभास मात्र मिल गया होता तो वह शायद प्रसन्न न होता, क्योंकि मल्का ने इश्तियाक से इस मुलाकात का जिक्र करने की बात

तक नहीं सोची। उसने अपनी पूरी शक्ति यह समझने में लगा दी थी, —'राकेश ने जो कुछ कहा है, उसमें कहाँ तक सचाई है? यह इलजाम कहाँ तक ठीक है कि पाकिस्तानी सैनिक और कबायली कश्मीरा औरतों को देखते हैं तो उनकी दशा भूखे भेड़ियों-सी हो जाती है?'

मल्का सहसा किसी निर्णय पर पहुँचना नहीं चाहती थी। पुरुष का वहशियाना स्वरूप यद्यपि वह कई बार देख चुकी थी, तथापि जो जंगलीपन उसने इश्तियाक में देखा था, वह उसके लिए नया था। अपने प्रति उसकी भावना का अर्थ तो उसकी समझ में आता था लेकिन गुलरुख के प्रति कसाई की भांति उसके व्यवहार का मतलब वह चेष्टा करके भी समझ नहीं पायी थी।

इश्तियाक के चरित्र ने मल्का की बुद्धि के निर्णयात्मक पक्ष का मार्ग अवरुद्ध कर रखा था। सोचती थी मल्का—'यहाँ एक इश्तियाक है। राकेश का कहना यदि ठीक हो तो वहाँ अनेक इश्तियाक होंगे।' इस कल्पना ने उसकी आँखों के आगे अत्यन्त भयावना चित्र खींच दिया जिसमें वासना-विमूढ़ पुरुषों के जंगली स्वरूप से समस्त नारियाँ अत्यधिक करुणा-जनक रूपों मे अंकित थीं।

मल्का का दिल उचट गया। वह घर लौट आयी और पलंग पर जा पड़ी। स्मृतियों ने उसकी जीवन-गाथा का एक-एक पृष्ठ उसकी आँखों के सामने उलटना आरम्भ कर दिया।

मल्का की उम्र पचीस और छब्बिस साल के बीच रही होगी। इस उम्र में ही उसने भारत के विभाजन से पूर्व पढ़ी लिखी और तेज बुद्धि वाली अत्यन्त रूपवती वेश्या के रूप में लाहौर में काफी ख्याति अर्जित कर ली थी। अपने कदमों पर गिरे न जाने कितने अंग्रेज अफसरों को वह ठोकर लगा चुकी थी, न जाने कितने भारतीय ताल्लु-

केदार केवल उसकी बातों के सब्ज बाग में खोकर ही अपनी-अपनी बुद्धि का मजाक उड़वा चुके थे। अपनी तृष्णा की तृप्ति के लिए उसने भले ही दो-चार व्यक्तियों का दामन पकड़ लिया हो लेकिन कोई पुरुष उसकी इच्छा के बिना उसको स्पर्श तक नहीं कर सका था, फिर भी कोई नाराज होकर नहीं लौटा था उसके दर से।

भारत का विभाजन हुआ, पंजाब में साम्प्रदायिकता की ज्वाला भड़की। मनुष्य-मनुष्य की हड्डियाँ चबाता नजर आने लगा। नारी की सुन्दरता वहशियों की हविस की पूर्ति का साधन मात्र हो गई। होनी चाहिए थी नारी, फिर वह भले ही मुसलिम क्यों न रही हो—लाहौर को केवल अपनी जागीर समझ कर उसे उजाड़ने वाले उस पर भी टूट पड़ते थे। ऐसे ही मुसलिम गुण्डों से त्राण पाने के लिए मल्का ने एक अँग्रेज अफसर का सहारा लिया था। इस अँग्रेज अफसरने उसका परिचय कराया था अनेक ऐसे पाकिस्तानी अधिकारियों से जिन्होंने कश्मीर को हड़पने की अपने नेताओं की साजिश सफल करने का बीड़ा उठा लिया था। उन्होंने जासूसी करने और षड्यंत्र रचने के कार्य में सहयोग करने का प्रस्ताव मल्का के सामने रखा। बुद्धि कौशल को माँजने की तृष्णा का अनुभव सदा करने वाली मल्का ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। समय पर उसने लाहौर छोड़ा और नयी दिल्ली पहुँची। कुछ दिनों तक वहाँ रही, फिर पाकिस्तानी अधिकारियों के निर्देश के अनुसार कुछ गोरी चमड़ी वालो की सहायता से कश्मीर में आकर बस गयी।

सन्ध्या की उदासी ने जब अन्धकार का रूप धारण कर खिड़की के मार्ग से कमरे में प्रवेश किया तो मल्का की तन्द्रा टूटी। उसने पलंग छोड़ दिया और खिड़की पर आकर खड़ी हो गई। सुदूर क्षितिज के पास दिखाई देनेवाले कुछ सितारे, उसे बुझते हुए अंगारों-से लगे।

उनके पास ही मँडरानेवाला काले बादल का एक छोटा-सा टुकड़ा कयामत का पैगाम बना हुआ था। आकाश में बची-खुची सफेदी, काली चादर खींचती चली जा रही थी, मानों मातम में शामिल होने की तैयारी कर रही हो। यह सब देखकर मल्का की उदासी घनीभूत हो गयी। ऐसे विकट एकाकीपन का अनुभव सम्भवतः उसे जीवन में पहली बार हुआ था। उदासी, न समाप्त होनेवाली दूरी बन गयी थी। दूरी भी ऐसी थी जिसको कदमों से नापते समय हर कदम पर आक्रोश का अनुभव होता था।

मल्का यह बरदाश्त न कर सकी और घर से बाहर निकल आयी। कदम जिधर उठे, उधर वह बढ़ चली। कोई और वक्त होता तो घूरकर देखनेवालों की ओर बिना मुस्कराये वह नहीं रहती। इस समय उसे कुछ सुझाई न देता था। रास्ता भी नजर आता तो उतना ही जितने पर अगला कदम पड़नेवाला होता। चाल ऐसी थी मानों शरीर में शक्ति ही न रह गयी हो। काफी देर तक उसकी दशा यही रही। आँखें खुलीं तब जब संयोगवश अस्पताल पर नजर पड़ गयी। उसने रुककर इस प्रकार अस्पताल की इमारत की ओर देखा जिस प्रकार कोई भूली हुई घटना की स्मृति ताजी करनेवाली वस्तु की ओर देखता है। गुल-रुख उसकी नजरों के सामने घूमने लगी। दिल उसे राहत की मंजिल समझने लगा और वह चल पड़ी इस मंजिल की ओर—निरुद्देश्य, निर्लक्ष्य!

गुलरुख शाल ओढ़कर अंगीठी के पास बैठी थी। उसके हाथ में कोई पुस्तक थी। आँखें उसके पन्ने पर टिकी थीं। तभी मल्का की आवाज उसके कानों में पड़ी। वह उठकर दरवाजे पर आयी। उसने दरवाजा खोला। सामने मल्का को देखकर उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। लेकिन मल्का तो सामने खड़ी ही थी। भ्रम

टिका नहीं। गुलरुख बोली,—'नाचीज को कैसे याद किया ?'

मल्का ने कहा,—'अंदर आ सकती हूँ ?'

गुलरुख दरवाजा छोड़कर एक ओर हट गयी। मल्का अन्दर चली आयी।

ऊपर कमरे में पहुँचकर मल्का ने कहा,—'तुम्हें आश्चर्य तो अवश्य हुआ होगा लेकिन इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। नारी चाहे जितनी भी क्रूर हो, उसके हृदय का कोई न कोई कोना कोमल अवश्य रहता है।'

अनमनी-सी बोली गुलरुख —'काफी दिनों तक बीमार पड़ी थी। डाक्टर ने पूरी तरह आराम करने की सलाह दी है।'

मल्का ने कहा, —'मुझसे नफरत है ?'

गुलरुख बोली,—'नफरत से मुझे परहेज है।'

'मैं माफी चाहती हूँ।'

'किसलिए ?'

'बेजा रास्ते पर चलने से इश्तियाक को रोक न सकी।'

'वह अब भी इस रास्ते पर ही चल रहा है।'

'शायद आगे भी चलता रहेगा।'

'तुम्हारा उस पर कोई वश नहीं है ?'

'नहीं।'

एक-दो मिनट तक रुककर गुलरुख ने पूछा,—'फिर तुम उसके वश में क्यों हो ?'

'कोई किसी के वश में नहीं है गुलरुख,' मल्का ने जवाब दिया—'परिस्थितियों के इस तमाशे का अर्थ कभी न कभी तुम्हारी समझ में आ जायगा। बहस करने के लिए नहीं आयी हूँ।'

'फिर क्यों आयी हो ?'

'यह बता सकना भी मुश्किल है।'

'जासूसी के शौक ने तो जोर नहीं मारा?'

'बेरहम न बनो गुलरुख।'

गुलरुख ने कहा,—'रहम की भावना का मजाक उड़ाने से क्या फायदा! जुल्म और सितम का पहाड़ ढानेवालों का दामनगीर बनकर रहम को समझने का दावा कोई कैसे कर सकता है।''

इस व्यंगोक्ति से शायद पहली बार मल्का के दिल पर आघात पहुँचा। उसने पीड़ा का अनुभव किया। प्रतिवाद न करने में उसे राहत छिपी मालूम हुई। वह चुप रह गयी। उसने गर्दन भी झुका ली और गुलरुख को देखने के बजाय वह धरती की ओर देखने लगी।

गुलरुख पुनः बोली, इन्सान फौलाद का बना हुआ नहीं है, मल्का। उसके दिलपर चोट पहुँचती है तो वह कराहता है जरूर। पाकिस्तानियों ने मेरे भाई को कतल किया है। तुम शायद समझ न सको लेकिन यह सही है कि मैं खून के आँसू बहाया करती हूँ। मेरी तरह हजारों हस्तियाँ बेकसी की चौखट पर सर पटकने के लिए मजबूर की गयी हैं। इस पर भी कोई यह समझता हो कि महज मुसलमान होने की वजह से हम जुल्म और सितम को नजरअन्दाज करके कश्मीर को पाकिस्तान के खूनी हाथों में सौंप देना गवारा कर लेंगे तो यह उसकी भूल है। उससे अलग रहने के लिए कश्मीरी बहुत बड़ी कीमत चुका चुके हैं। अब पाकिस्तान के साथ रहना उन्हें हो गवारा हो सकता है, फिरकापरस्ती ने जिन्हें अंधा बना दिया और जिनकी निगाह में इंसानियत खुदगर्जी के अलावा और कुछ नहीं है।'

तैश में गुलरुख जोर देकर यह सब कह गयी। आवेश के कारण शारीरिक दुर्बलता को भी भूल गयी वह। चुप हुई तो हाँफने लगी। मल्का ने इस दशा की ओर संकेत करते हुए कहा—'अभी काफी

कमजोर हो गुलरुख । ताकत हासिल करने की कोशिश करो ।'

मल्का ने ताना मारा या सही बात कही—गुलरुख यह समझ न सकी । शक दूर करने का मौका भी नहीं दिया मल्का ने । अपनी बात समाप्त करके वह चली गयी । दरवाजा पार करके उसने सड़क पर कदम रखा ही था कि सामने से सर्द हवा का एक झोंका आया और उसके मुख-प्रदेश को स्पर्श करके आगे चला गया । मल्का ने अनुभव किया—हृदय पर पड़ा बोझ कुछ हल्का हो गया है । वह सोचने लगी—किसी की फटकार सुनने का ही इन्तजार था क्या ?

मल्का सोचती रही—सोचती रही, लेकिन उसे उत्तर नहीं मिला ।

१२

लगातार दो घण्टे से वर्षा का ताँता लगा था। पानी रुकने का नाम ही नहीं लेता था। जहाँ जरी-सी भी ढाल थी वहीं बरसाती नाला उबाल खाता दिखाई देता था। अन्धकार का कुछ पूछना नहीं था, हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता था। आकाश में भीमकाय काले-काले बादलों की भीड़ उमड़ी हुई थी। प्रतिस्पर्द्धियों की भांति ये बादल एक-दूसरे से टकराते तो घोर गर्जन के साथ बिजली चमक उठती और लगता कि एक दूसरे पर हुंकार के साथ निर्ममतापूर्वक प्रहार करने वाले परस्पर विरोधी क्रोधोन्मत्त दस्युओं की आँखों से लपटें निकल रही हैं।

ऐसे ही समय में पानी से सराबोर होकर अजीज घर लौटा तो राकेश ने लापरवाह रहने का उलाहना देते हुए उसकी खूब भर्त्सना की। अजीज ने जवाब नहीं दिया। उसने कपड़े बदले और अंगीठी के पास जाकर बैठ गया। राकेश को सन्देह हुआ-सर्दी तो नहीं लग गयी। वह उसके पास जाकर बैठ गया और बोला—'कुछ देर रुक जाते कहीं तो कुछ नुकसान हो जाता ? जान-बूझ कर मुसीबत मोल लेने से क्या फायदा।'

अजीज ने कहा—'मुसीबत जो मोल लेनी थी, ले चुका। अब हाथ-पैर से बेकाम होना बाकी है।'

'जीवन से इतनी निराशा !'

'अब जीवन में रह ही क्या गया है।'

'अजीज !'

'मैं इस जिन्दगी से ऊबता जा रहा हूँ राकेश।'

'माँ की मौत का सदमा सँभाल नहीं सके हो अभी।'

'वह चली गयी। अब वापस नहीं आ सकती। उसकी चिन्ता करने से क्या होगा।'

'तुम क्या कह रहे हो ?'

'मुझे चिन्ता उसकी सता रही है जो जीवित है और...।'

'चुप क्यों हो गये ?'

'....और जो धीरे-धीरे मौत की ओर बढ़ रही है।'

'तुम्हारा मतलब गुलरुख से है ?'

'हाँ।'

'उसका स्वास्थ्य तो अब काफी सुधर गया है।'

'यह एक खतरनाक धोखा है।'

हैरान-सा बोला राकेश—'मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझ सका।'

वेदना निःसृत करने वाली मुस्कान के साथ अजीज ने कहा—'तुम समझ भी नहीं सकते राकेश ! जो अपनी ही जिन्दगी की ओर से गाफिल रहना चाहता हो, उसे दूसरे का खयाल कैसे रह सकता है। तुम्हें धोखा हो सकता है लेकिन मुझे नहीं। मैं देख रहा हूँ कि गुलरुख स्वस्थ नहीं है किन्तु स्वस्थ होने का बहाना कर रही है।'

राकेश ने जबान नहीं हिलायी। वह चुप हो गया। अन्तर्द्वन्द्व के कारण उसके ओठ जकड़ गये। हृदय में एक तूफान उठा जिसने उसके शरीर के सारे तन्तुओं को कस कर झकझोर दिया। कल्पना जगत में एक ओर तपेदिक से बुरी तरह आक्रांत रोगिणी की भाँति गुलरुख दिखाई दे रही थी और दूसरी ओर खातून बीवी का मजार। वह गुलरुख की ओर बढ़ता तो मजार की मिट्टी उसका दामन पकड़ने के लिए उड़ती दिखाई देती और मजार की ओर बढ़ता तो गुलरुख का दम टूटता दिखाई देने लगता।

राकेश अन्तर्वेदना से कराह उठा—'मेरी जिंदगी तुम्हारे सहारे की भीख माँगने के लिए आंचल पसार कर खड़ी है अजीज।'

अजीज ने जवाब दिया—'जो अपनी माँ की आखिरी ख्वाहिश को भी लुटा देने के लिए तैयार हो वह और कर ही क्या सकता है ?'

'मुझे इतनी बड़ी कुरबानी नहीं चाहिये,' राकेश ने कहा—'मेरे प्रति अपने स्नेह का त्याग कर दो। यही काफी होगा।'

'इंसान जिंदा अजीज को ठोकर मारकर किसी की लाश से चिपका नहीं रहता राकेश।' अजीज ने समझाने की कोशिश की और बोला—'माँ की जिन्दगी को बचाने के लिए किसी की तमन्नाओं के सब्ज बाग में खिजा बनकर जाने के लिए मैं तैयार हो गया था। जब माँ रही ही नहीं तो यह गुनाह क्यों करूँ। गुलरुख को मुझसे नहीं, बल्कि तुमसे मोहब्बत है।'

राकेश को ऐसा लगा जैसे उसके सिर पर किसी ने हथौड़ा पटक दिया हो। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। आवाज कंठ तक आकर रुक गयी। अजीज ने मौके से लाभ उठाने की कोशिश की और बोला—'इश्तियाक ने यदि गुलरुख को बदनामी के भय की कँटीली झाड़ियों में न फँसा दिया होता तो वह खामोश रह कर तुम्हारी याद में अपनी सारी जिन्दगी काट देती राकेश, लेकिन दोहरा गम बरदाश्त करना उसकी ताकत के बाहर है। उसे तुम्हारा सहारा न मिला तो मौत उसे अपने आगोश में ले लेगी। तुम इन्सान होकर मौत की हमदर्दी-सी सहानुभूति भी नहीं दिखा सकते ?'

वर्षा बन्द हो चुकी थी। आकाश तब भी बादलों से घिरा था सर्द हवा भी चल रही थी। अंगीठी के पास अजीज और राकेश खामोश बैठे थे।

राकेश ने शांति भंग की - 'तुम माँ से कहा करते थे कि अभी युद्ध चल रहा है। न जाने कब क्या हो जाय। ऐसे समय शादी करना मुनासिब न होगा।'

अजीज ने कहा—'युद्ध-विराम के कारण अब स्थिति बदल गयी है। जंग होने का कोई आसार नहीं रह गया है। न जाने कब तक मुकदमेबाजी होती रहेगी।'

राकेश जवाब देने ही वाला था कि धड़धड़ाते हुए अशोक आ पहुँचा। वह बेतरह घबराया हुआ था। आते ही उसने कहा—'क्षेमेन्द्र कल इश्तियाक के पीछे-पीछे कहीं गया था। वह अब तक नहीं लौटा है। मुझे लगता है कि वह किसी संकट में पड़ गया।'

अशोक की बात सुनकर भी राकेश गुमसुम रहा, लेकिन अजीज चौंक उठा। उसने कहा—इश्तियाक के पीछे-पीछे गया था लेकिन क्यों ?'

अशोक ने उत्तर दिया—'मुझे अधिक कुछ नहीं मालूम है। वह जल्दी में था। जाते-जाते उसने यही कहा था कि यहाँ चोरी-चोरी बारूद और शस्त्र लाये जा रहे हैं इसमें इश्तियाक का भी हाथ है। आज मैं उसका पीछा नहीं छोड़ूंगा। मुझे लौटने में देर हो जाय तो अजीज को खबर दे देना।'

यह सुनकर अजीज चिन्ता में पड़ गया। पुलिस को सूचना देने का कोई पुष्ट आधार था नहीं। क्षेमेन्द्र किस ओर गया था, अशोक को यह भी नहीं मालूम था। उसकी समझ नहीं आया कि क्या करना चाहिये। उसने पूछा—'तुमने पता लगाया था कहीं?'

अशोक ने कहा—'मैं केवल मार्लिन के होटल में गया था। पता चला है कि वह कहीं बाहर गयी है। कैम्पबेल का भी पता नहीं है। मुझे और कुछ नहीं मालूम।'

'मल्का है यहाँ?'

'यह मैं नहीं बता सकता।'

अजीज अपने स्थान पर खड़ा हो गया। रेक के पास जाकर उसने चेस्टर पहना और बरसाती कोट सम्हालते हुए बोला—'मैं मल्का के घर जा रहा हूँ राकेश। तुम अशोक को साथ लेकर मार्लिन और कैम्पबेल का पता लगाने की कोशिश करो। मुलाकात यहीं होगी।'

अजीज चला गया? कुछ ही देर बाद राकेश और अशोक भी घर से बाहर निकल गये।

आध घंटे में ही अजीज पहुँच गया मल्का के घर के पास लेकिन मल्का वहाँ थी नहीं। उसके घर का दरवाजा बन्द था। अजीज कुछ देर तक तो सड़क पर टहलता रहा, फिर वह एक ओर चला गया। उसने एक-एक कर इश्तियाक के सारे अड्डे छान डाले लेकिन कहीं भी कोई सूत्र हाथ न लगा। घूमते-घूमते दो घंटे बीत गये। वह पुनः

मल्का के मकान की ओर लौटा। इस बार भी निराशा ही हाथ लगी। लाचार होकर वह घर लौट आया। यही दशा राकेश और अजीज की भी हुई। उन्हें भी खाली हाथ घर लौटना पड़ा। परेशानी और दुश्चिन्ता तीनों मित्रों को दबोचने लगी।

अजीज ने कहा—'क्षेमेन्द्र इधर कई दिनों से मिला नहीं। यह कह सकना भी मुश्किल है कि उसकी निगाह कहाँ थी।'

अशोक बोला—'युद्ध-विराम के बाद से सफेद रंग की मोटरों का आना-जाना देखकर उसमें कौतूहल उत्पन्न हुआ था। इन मोटरों के बारे में जानकारी हासिल करने का शौक पैदा हो गया था उसमें। उसके दिमाग में कौन-सी बात चक्कर काट रही थी, यह तो मैं नहीं जानता। इतना ही याद है कि एक बार उसने कहा था—'युद्ध-विराम के रूप में सम्भवतः एक नयी आफत आ गयी।'

अजीज ने कहा—'यह बात हमें किसी नतीजे पर नहीं पहुँचाती। 'नयी आफत' के जिस रूप की कल्पना मैंने की है, उससे भी कोई मदद नहीं मिलती।'

राकेश ने अजीज से पूछा—'तुम क्या सोचते हो?'

अजीज ने उत्तर दिया—'सुरक्षा-परिषद के प्रस्ताव के अनुसार लड़ाई को बन्द हुए काफी समय गुजर चुका है। यह सही है कि सफेद रंग की मोटरों का यहाँ आना-जाना भी काफी बढ़ गया है। इनका इस्तेमाल करने वाले गोरी चमड़ी के हैं। इनमें से कुछ हमारे एक-दो बहुत बड़े-बड़े रहनुमाओं के काफी नजदीक पहुँच गये हैं। भीतर ही भीतर क्या बात चल रही है, यह मैं नहीं जानता। ताज्जुब की बात यही दिखाई दे रही है कि कल तक हमारे जो रहनुमा कश्मीर को भारत का अविभाज्य अंग बताते थे, वे भी अब 'सेल्फडिटरमिने-

शन' (स्वभाग्य निर्णय) के हक की बात करने लगे हैं। बड़ी-बड़ी सभाओं में उन्होंने इस अधिकार का दावा किया है।'

राकेश ने पूछा---'सर्वसाधारण पर इसका असर क्या हुआ ?'

अजीज ने कहा--'यह बता सकना मुश्किल है। इतना ही कह सकता हूँ कि इसकी वजह से कश्मीर को आजाद मुल्क के रूप में देखने का कुछ लोगों सपना जोर का पकड़ने लगा है। मुझे यह इलजाम बे-बुनियाद नहीं दिखाई देता कि हमारे कुछ नेताओं के गोरी चमड़ी-वाले सलाहकार उन्हें सब्ज बाग दिखाने में सफल हुए हैं। सुना तो मैंने यहाँ तक है कि उन्होंने कश्मीर के आजाद होने पर उसे बहुत दौलत दिलाने का वादा किया है।'

अजीज के चुप हो जाने पर अशोक ने कहा—'मैं एक बात भूल ही गया था। क्षेमेन्द्र ने बात ही बात में एक बार कश्मीर के आर्थिक विकास की भी चर्चा की थी और कहा था, कश्मीर के कुछ नेताओं के दिमाग में यह जहर भरा जा रहा है कि भारत को विदेशों से जो आर्थिक सहायता मिल रही है, उसका नाम मात्र का अंश वह कश्मीर में खर्च कर रहा है। कश्मीर यदि आजाद हो जाय तो अपने विकास के लिए उसे विदेश से काफी धन प्राप्त हो सकता है।'

अशोक के चुप हो जाने पर अजीज ने कहा—'जो बात तुम्हारे सामने क्षेमेन्द्र ने कभी कही थी, आज कश्मीर की घाटी में आम तौर से उसकी चर्चा हो रही है। कूटनीति से भरी ऐसी बातों की चर्चा 'पब्लिक' आपसे आप नहीं करती। साजिश तो हो रही है लेकिन नतीजा क्या होगा, यह नहीं कहा जा सकता। कुछ भी हो, इन बातों से क्षेमेन्द्र का पता लगाने में कोई सहायता नहीं मिलती।'

अशोक ने कहा—'पुलिस से सहायता नहीं मिल सकती ?'

अजीज ने जवाब दिया—'सुचिता के चित्र की बरामदगी का

मामला भूल गये क्या ? इतने छोटे से मामले में हम शिकस्त खा चुके हैं। क्षेमेन्द्र का गुम होना तो बहुत बड़ी बात है।'

ठीक इस समय श्रीनगर से दूर मुजफ्फराबाद की सीमा के समीप से जीप पर गुजरते हुए कैम्पबेल से मार्लिन कह रही थी—'क्षेमेन्द्र को रास्ते से हटाने के लिए इश्तियाक पूरी तरह तैयार है लेकिन मल्का ने उसका रास्ता रोक रखा है। वजह कुछ भी हो, अजीज उसे नाराज नहीं करना चाहता।'

कैम्पबेल ने कहा—'मुझे पहले ही आशंका थी। इस प्रकार के काम में जब कहीं प्रेम और मोहब्बत का फिसाना शुरू होता है तो कुछ न कुछ अड़चन पड़ ही जाती है। इस मर्ज का इलाज न किया गया तो कभी न कभी हमारे लिए संकट पैदा हो जायगा।'

'तुम्हारा कहना ठीक है कैम्पबेल', मार्लिन ने कहा—'हम खतरा मोल नहीं ले सकते। आज रात को मल्का मुजफ्फराबाद से लौट आयेगी। उसे फिर श्रीनगर भेज देना होगा।'

कैम्पबेल ने पूछा—'और तब ?'

मार्लिन ने गम्भीर होकर कहा—'अपने रास्ते से मल्का को हमें हटाना होगा।'

'मार्लिन !'

'दूसरा कोई रास्ता नहीं है कैम्पबेल।'

'फिर सोच लो।'

'काफी पहले से सोच रही हूँ।'

'लेकिन यह खतरनाक कदम होगा मार्लिन।'

'मल्का का गुमराह होना और भी खतरनाक हो सकता है।'

'लेकिन यह काम करेगा कौन ?' माथे पर हाथ फेरते हुए कैम्पबेल ने कहा—'मल्का का दुश्मन इश्तियाक के गुस्से से बच नहीं

सकता। इस साजिश में हमारा हाथ होने का शक भी इश्तियाक को हो गया तो गजब हो जायगा।'

'यह मैं भी समझ रही हूँ', मार्लिन बोली—'इसलिए ऐसा रास्ता ढूँढ़ना होगा कि इश्तियाक स्वयं मल्का का कातिल बन जाय। तब उसकी जबान बन्द रहेगी। ऐसे लोगों को अपनी जान से बहुत मोहब्बत होती है।'

कैम्पबेल ने पूछा—'यह सब होगा कैसे ?'

मार्लिन ने उत्तर दिया—'इसको सोचना होगा। मेरी समझ से अर्जीज को किसी प्रकार क्षेमेन्द्र तक खींच लाना चाहिए।

कैम्पबेल ने कहा—'मैंने तुम्हारा मतलब नहीं समझा।'

मार्लिन बोली—'तब इश्तियाक को यह समझाना होगा कि उसकी जिन्दगी खतरे में है और इसका कारण है मल्का ; क्योंकि वह अजीज से मोहब्बत करती है और इसलिए उसके अनुरोध को वह टाल न सकी। अजीज को खुश करने के लिए उसने क्षेमेन्द्र का पता उसे बता दिया और इस बात की तनिक परवाह नहीं की कि इश्तियाक की जिन्दगी खतरे में पड़ जायगी।'

'तुम्हारी सूझ की तारीफ करता हूँ मार्लिन', कैम्पबेल ने कहा—'फिर भी मेरा अनुरोध है कि सभी बातों पर अच्छी तरह सोच लो। विस्फोट के स्वचालित यन्त्रों से युक्त विस्फोटक पदार्थ और शस्त्रास्त्र इस समय इश्तियाक के कब्जे में हैं। क्षेमेन्द्र को फँसाने की गरज से इश्तियाक ने उसे ऐसी राज की बात सुनाने का खतरा लिया। इससे उसके सोचने और काम करने के तरीके का आभास मिल जाता है।'

इसी समय एक पहाड़ी के पास लगी एक सफेद मोटर गाड़ी के समीप पहुँच कर कैम्पबेल और मार्लिन की जीप रुक गई। उस पर

से नीचे उतर कर मार्लिन ने कहा, 'तुम श्रीनगर जाओ कैम्पबेल और मल्का के साथ मेरे वहाँ पहुँचने का इंतजार करो।'

कैम्पबेल ने सड़क का रास्ता पकड़ा। मार्लिन वहीं रुक गयी। योजना के अनुसार दो घंटे के बाद मल्का वहीं पहुँचने वाली थी। उसने अनुमान लगाया कि कैम्पबेल के साथ-साथ इश्तियाक को भी वापस श्रीनगर पहुँच जाना चाहिये।

लगभग निर्धारित समय पर ही मार्लिन के पास मल्का पहुँच गयी। उसके साथ एक व्यक्ति और था। मार्लिन ने उसका धन्यवाद किया और तुरंत मल्का को जीप पर बैठा कर चल पड़ी। मार्ग में उसने मल्का से पूछा—'मुजफ्फराबाद में कई दिन लगा दिये तुमने। बहुत उत्सुक थी वहाँ जाने को तुम।'

मल्का ने जवाब दिया—'काफी दिन हो गये थे। वहाँ जाना आसान था और लाहौर पहुँचना मुश्किल। लाहौर के कुछ व्यापारी वहाँ थे ही। उनसे हालचाल मिल गया। मेल-मुलाकात हो गई। अब तबीयत भी बदल गयी है।'

सामने पड़ने वाले गड्ढे से जीप को बचाने के लिए स्टियरिंग को तेजी से घुमाते हुए मार्लिन ने कहा—'अच्छा हुआ। काम में तेजी लाने के लिए हवा-पानी बदलना जरूरी हो जाता है—विशेष रूप से ऐसी हालत में जब एक ही जगह बहुत दिनों तक लगातार काम करना पड़ता हो।'

मल्का बोली—'हालात को बिना अपनी आँखों से देखे सही माने में आँखें भी नहीं खुलतीं।'

मार्लिन चौंक उठी, लेकिन उसने बड़ी चालाकी से अपनी दुर्बलता छिपाने की कोशिश की। कामयाब हुई या नहीं, यह नहीं कहा

जा सकता क्योंकि मल्का की निगाह उस शीशे पर जमी थी जिसमें मार्लिन की प्रतिच्छाया दृष्टिगोचर हो रही थी।

मार्लिन मे पूछा—'आँखों से देखकर आयी हो। क्या हाल है मुजफ्फराबाद का?'

मल्का ने उत्तर दिया—'युद्ध-विराम का पूरा-पूरा फायदा उठाने की कोशिश की जा रही है। हथियार जमा किये जा रहे हैं, फौज जमा की जा रही है।'

'पब्लिक की क्या हालत है?' मार्लिन ने जिरह के रूप में दूसरा प्रश्न पूछा—'लोग भी खुश हैं न।'

मल्का इस प्रश्न का जवाब नहीं देना चाहती थी। इसका जवाब देना सम्भव भी नहीं था। जो कुछ उसने देखा था, उसका, सही विवरण देना खतरे से खाली न था। मल्का यह समझती थी, अतः बात को टालने की गरज से बोली—'लोगों की खुशी और रंज कहानी होती है। इसमें मुझे दिलचस्पी नहीं है। काम करने वालो में कोई नाखुश नजर नहीं आया।

मार्लिन ने फिर कुछ नहीं पूछा। मल्का के प्रति उसका संदेह बढ़ता जा रहा था। इस कांटे को निकालने की योजना पर ही उसने अपना ध्यान केन्द्रित कर दिया। कुछ ऐसी ही दशा मल्का की भी थी। मुजफ्फराबाद पुंछ की घटनाओं के सम्बन्ध में उसने राकेश के मुँह से जो कुछ सुना था, हालत उससे भी अधिक खराब थी। पुंछ में होने वाले अत्याचार को जान कर उसके रोंगटे खड़े हो चुके थे। वहाँ के एक क्षेत्र में ही लगभग पाँच बार मार्शल-ला (फौजी कानून) लागू किया जा चुका था। पुलिस और प्रशासन की आलोचना करने के अपराध में चार-पाँच हजार व्यक्ति जेलों में ठूँस दिये गये थे। जनता की आवाज बुलंद करने वाले एक नेता कमान खान मोहम्मद

का सिर कलम कर दिया गया था, लेकिन कहा जाता था यह कि वह सीमा के उस पार चले गये हैं। पुलंद्री जेल में छत्तीस व्यक्तियों के रहने लायक दो कमरों में तीन सौ चालीस व्यक्ति ठूंस दिये गये थे। जेल में प्रतिदिन अट्ठारह सौ गैलन पानी की आवश्यकता थी लेकिन मिलता था पानी केवल आठ सौ गैलन। गाँवों में महिलाओं पर न केवल बलात्कार किया गया था, बल्कि उनके वक्षःस्थल और गुप्तांगों पर पुलिस अधिकारियों ने प्रहार भी किया था, उनके उरोज पुलिस वालों ने खींचे थे यह कह कर कि यहाँ हथगोले छिपाये हुए हैं। सूने गाँव में पंजाब कांस्टेबुलरी के सदस्यों द्वारा नाबालिग बालकों के साथ अप्राकृतिक दुष्कर्म किये जाने की घटना भी मल्का ने सुनी थी। जमीन का लगान वसूल करने के लिए पाँ-पाँच रुपये में बकरियाँ और दस-दस रुपये मे बैल तो नीलाम किये ही गये थे।

इन घटनाओं के सम्बन्ध में सुनी गयी एक-एक बात मल्का के दिमाग में चक्कर काट रही थी। जैसे-जैसे स्मृति अधिकाधिक ताजी होती जाती, वैसे-वैसे घृणा का आवेग बढ़ता जाता था। मल्का को इस तरह के जुल्म और सितम से नफरत थी। उसे बुद्धिमान होने का दावा करने वाले पुरुषों को खिलौना बनाकर उनका मजाक उड़ाने का शौक था। उनकी सरगर्मी और सावधानी पर चालाकी से पानी फेरने के उपायों पर विचार करने में उसे मजा आता था। षड्यन्त्र को चालाकी से नियोजित करके उसे कामयाब बनाने में उसकी दिल-चस्पी थी। वह बुद्धि का खेल-खेलना चाहती थी, इसलिए श्रीनगर में रहकर पाकिस्तान की ओर से जासूसी करने का काम उसने स्वीकार कर लिया था। कश्मीर, भारत के साथ रहे या पाकिस्तान के, इसमें उसे तनिक भी दिलचस्पी न थी। बुद्धि की दौड़ में पुरुष को पछाड़ने में उसे मजा आता था और इसके लिए वह कभी-कभी क्रूर भी हो

जाती थी, लेकिन प्रकृत्या वह क्रूर नहीं थी। विशेषतः नारी समाज के लिए उसके हृदय में काफी सहानुभूति थी, क्योंकि वह मानती थी कि नारी को पुरुष ने खिलौना बना रखा है। तबीयत होती है तो वह उससे दिल बहलाता है अन्यथा ठोकर मारकर उसे चूर-चूर कर देता है। गुलरुख के प्रति उसकी सहानुभूति की वजह उसकी यह भावना ही थी। मुजफ्फराबाद में नारी पर होनेवाले अत्याचार की कहानी राकेश के मुँह से सुनकर वह गम्भीर भी हुई थी इस वजह से ही। वहाँ जाकर उसने जो कुछ अपनी आँखों देखा और पुंछ में ढाये गये जुल्म की जो कहानी सुनी तथा उसके जो निशान देखे, उनसे उसका हृदय घृणा और क्रोध से भर उठा था। इन इलाकों के मुकाबले में उसे श्रीनगर कहीं अधिक अच्छा लगा, जहाँ, नियमित जीवन में कोई गड़बड़ी नहीं थी। किसी प्रकार का जुल्म नहीं था, जहाँ खुले-आम औरत की इज्जत पर हमलावर होने की हिम्मत नहीं कर सकता था कोई।

मार्लिन यह सोच रही थी कि मल्का और इश्तियाक को खतरनाक साबित होने से कैसे रोका जा सकता है। मल्का सोच रही थी कि जिस उद्देश्य से मेरा कोई मतलब नहीं है, उसकी पूर्ति के लिए किये जानेवाले गुनाह में शामिल रहना क्या मेरे लिए उचित है?

जीप तब भी अपने रास्ते पर चली जा रही थी।

दो दिनों की यात्रा के बाद मार्लिन के साथ मल्का श्रीनगर पहुँची। वह अपने निवास-स्थान पर चली आयी और मार्लिन जा पहुँची अपने होटल में। वहाँ कैम्पबेल उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। मार्लिन को देखकर उसने उसका अभिवादन किया और बोला—'यात्रा कैसी रही मार्लिन?'

'सुविधापूर्ण प्रबन्ध के लिए धन्यवाद।' मार्लिन ने कहा—'इश्तियाक पहुँच गया है न?'

कैम्पबेल ने जवाब दिया—'इश्तियाक अपने काम में लगा है। सेठ चाँदमल की सहायता से पाकिस्तान के चार आदमी भी यहाँ बसाये जा चुके हैं। किसी प्रकार की कोई गड़बड़ी नहीं है। केवल क्षेमेन्द्र का मामला सिरदर्द बना हुआ है। आज उसके सम्बन्ध में वह मल्का से बात करने वाला है।'

मार्लिन ने कहा—'मल्का घर पहुँच चुकी होगी। कुछ पता है कि इश्तियाक उससे कब मिलेगा?'

घड़ी की ओर देखकर कैम्पबेल ने जवाब दिया—'मेरा खयाल है, दो घण्टे के अन्दर-अन्दर वह मल्का के घर पहुँच जायगा।'

बात यहीं समाप्त हो गयी। सफर की थकावट के लिए मार्लिन ने कुछ देर तक आराम करने की इच्छा प्रकट की। कैम्पबेल उठकर चला गया।

उधर मल्का अपने घर का दरवाजा पार कर ही रही थी कि अशोक की नजर पड़ गयी जो क्षेमेन्द्र का पता लगाने के लिए बराबर उसके मकान का चक्कर काटा करता था। अविलम्ब इसकी सूचना अजीज को देने के लिए वह नगर में मिलने के निमित्त निर्धारित स्थान की ओर रवाना हो गया।

अपने कमरे में पहुँच कर मल्का ने न तो हाथ धोया, न पैर। खिड़कियाँ खोलकर वह पलङ्ग पर लेट गयी। सफर की थकावट की वजह से उसका शरीर टूट रहा था, लेकिन दिमाग में अजीब उथल-पुथल तब भी मची हुई थी, जो आँखों के बन्द होने पर और भी तीव्र हो उठती थी।

मल्का कभी आँखें बन्द करती, कभी आँखें खोल कर एक टक छत

की ओर देखने लगती। कभी वह दायीं करवट घूमती और कभी बायीं करवट। इस प्रकार आध घण्टा बीत गया। तब नींद ने जोर मारा। उसकी पलकें आपसे आप झुकने लगीं। लेकिन उसे सोने का अवसर न मिला। इसी समय दरवाजा थपथपाने की आवाज उसके कानों में पड़ी। उसने अनुमान लगाया कि इश्तियाक आया होगा। वह जानती थी कि बिना दरवाजा खुलवाये इश्तियाक कभी नहीं टला। इच्छा न होते भी वह पलङ्ग पर से उठी और उसने नीचे आकर दरवाजा खोला। बाहर इश्तियाक की जगह अजीज को देखकर उसे कुछ आश्चर्य हुआ। फिर भी वह समझ गयी कि क्षेमेन्द्र की खबर लेने ही अजीज यहाँ आया है।'

अजीज ने कहा—'मैं दो बातें करना चाहता हूँ।'

मल्का बोली—'यहीं, इस वक्त ही?'

अजीज ने जवाब दिया—'हाँ, इस समय ही। एतराज न हो तो कमरे में चल सकता हूँ।'

कमरे में पैर रखते हुए अजीज की ओर देखे बिना मल्का ने कहा—'इश्तियाक से झगड़ा होने के बाद पहली बार आये हैं आप! जमाना गुजर गया उस घटना को।'

अजीज बोला—'अपनी मर्जी के खिलाफ काम करने के लिए इंसान कभी-कभी मजबूर हो जाता है।'

मल्का ने कहा—'और ऐसी मजबूरी का कारण प्रायः साधारण नहीं होता।'

'तुम ठीक कहती हो मल्का।'

'नाचीज की याद कैसे आयी?'

'मैं सौदा करने आया हूँ।'

'मैंने मतलब नहीं समझा।'

'मैं क्षेमेन्द्र को चाहता हूँ।'

मल्का धीरे से अजीज की ओर घूम पड़ी। वह खड़ा-खड़ा धरती ओर देख रहा था। मल्का बोली—'आप अब तक खड़े हैं!'

अजीज ने आँखें उठायीं और मल्का के मुख पर जमा दीं। उसने कहा—'मैं रुकना नहीं चाहता।'

'क्यों?'

'उलझन बढ़ सकती है।'

'इश्तियाक का डर है?'

'मैं बुजदिल नहीं हूँ।'

'फिर?'

'मौका बचाना चाहता हूँ।'

मल्का चुप हो गयी तो अजीज ने कहा—'क्षेमेन्द्र का पता पाने के लिए मैं कोई भी कीमत अदा कर सकता हूँ।'

अनजान बनकर मल्का ने कहा—'आप ऐसे बातें कर रहे हैं मानों क्षेमेन्द्र को मैंने कहीं छिपा रखा है। बात क्या है, यह तो बताइये।'

'नादान न बनो मल्का,' संजीदगी जाहिर करते हुए अजीज ने कहा—'तुम यह जानती हो कि इश्तियाक ने क्षेमेन्द्र को नाजायज तरीके से कहीं रोक रखा है।'

हँसते हुए मल्का बोली—'इतने बड़े इलजाम का एक छोटा सा सबूत भी है आपके पास?'

अजीज ने उत्तर दिया—'मुझे अफसोस है, सबूत मेरे पास नहीं है। इतना ही कह सकता हूँ कि किसी कारणवश इश्तियाक के पीछे क्षेमेन्द्र लगा था। तब से उसका पता नहीं है। इश्तियाक की कोई कार्रवाई तुमसे छिपी नहीं रह सकती।'

'यह भ्रम है।'

'मल्का .....?'

'हाँ।'

'क्या तुम सच बोल रही हो ?'

'मेरे उत्तर में भी तो आपका यही प्रश्न निहित हो सकता है।'

'मल्का, मैं बहस नहीं करना चाहता।'

'मैं आपको मजबूर भी तो नहीं कर रही हूँ।'

'क्षेमेन्द्र के स्थान पर मैं स्वयं को सुपुर्द कर दूँ तो....?'

मल्का ने एक बार कड़ी निगाह से अजीज को देखा लेकिन दूसरे ही क्षण वह मुस्करा पड़ी और बोली—'हिम्मत और चालाकी, दोनों की तारीफ करती हूँ।'

कुछ झल्लाकर अजीज ने कहा—'तुम्हारा स्वरूप नारी का है किन्तु भावना पुरुषोचित।'

लापरवाही से मल्का ने जवाब दिया—'यदि वास्तविकता यही हो तो जिम्मेदारी पुरुष-समाज पर ही होगी।'

'मजबूर हूँ, बहस नहीं करना चाहता।'

'मेरा कोई आग्रह भी नहीं है बहस के लिए।'

'इतनी कठोर न बनो मल्का।'

'समय पर आप अपनी भूल समझ जाँयगे।'

'मैं इन्तजार नहीं कर सकता।'

मल्का कुछ कहने ही वाली थी कि इश्तियाक द्वारा पुकारे जाने की आवाज सुनायी दी। मल्का का चेहरा गम्भीर हो गया। अजीज का मजाक उड़ाने में जो प्रसन्नता हुई थी, वह गायब हो गयी। वह तेजी से कुछ सोचने लगी। फिर अजीज की ओर देखकर बोली—'आप कुछ समय के लिए उस आलमारी के पीछे छिप जाइये।'

आश्चर्य-चकित अजीज बोला—'क्यों ?'

व्यग्र-सी मल्का बोली—'बहस बाद में कर लीजियेगा।'

'इश्तियाक को आने दो। मुझे डर नहीं है।'

'बहादुरी फिर दिखा दीजियेगा। इस समय नहीं।'

'लेकिन तुम परेशान क्यों हो?'

झल्लाकर अजीज को आलमारी की ओर ढकेलते हुए मल्का ने कहा—'मैं कहीं भाग नहीं रही हूँ। जो कुछ पूछना हो, बाद में पूछ लीजियेगा।'

यह तमाशा अजीज की समझ में न आया। उसने कुछ देर तक इन्तजार करना ही उचित समझा। इसमें लाभ भी था। वह मल्का के निर्देश के अनुसार आलमारी के पीछे छिप गया। मल्का नीचे चली गयी और कुछ मिनटों के अन्दर इश्तियाक के साथ वापस लौट आयी।

कुर्सी खींचकर उस पर बैठते हुए इश्तियाक ने कहा—'काफी देर तक आवाज लगानी पड़ी।'

अँगड़ाई लेकर नींद की खुमारी का बहाना करते हुए मल्का ने कहा—'सफर के कारण थक गयी थी, इसलिए नींद कुछ गहरी हो गयी थी।'

'सफर कैसी रही?'

'अच्छी थी।'

'अब तो जल्दी पाकिस्तान जाने का इरादा नहीं है न?'

'पाकिस्तान कहाँ जा सकी।'

हँस कर बोला इश्तियाक,—'अरे, पुंछ और मुजफ्फराबाद को भी पाकिस्तान ही समझो। एक दिन श्रीनगर और जम्मू भी पाकिस्तान में शामिल हो जायगा।'

मल्का मुस्करा कर रह गयी। उसने अपना कोई विचार नहीं प्रकट

किया। इश्तियाक ने कहा,—'तुमने मेरी बात पर विचार किया? क्षेमेन्द्र को बहुत-सी बातें मालूम हो गयी हैं। अनिश्चित समय तक उसे रोक रखना सम्भव नहीं है। उसे छोड़ देने पर हम मुसीबत में फँस सकते हैं।

इतनी ही देर में इश्तियाक से बातें करने के लिए मल्का पूरी तरह तैयार हो चुकी थी। उसने अपने अंग-अंग पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था। बात करते-करते चेहरे को मादक बनाना उसके लिए आसान हो गया था। बायीं ओर गर्दन झुकाकर, आँखें पूरी तरह फैलाते हुए उसने कहा—'मेरी समझ में नहीं आता कि क्षेमेन्द्र को कौन-सी नयी बात मालूम हो गयी है। हम पाकिस्तान से बारूद और हथियार लाते हैं, यही न जानता है वह। यह कोई नयी बात नहीं है। क्षेमेन्द्र और उसके दोस्त बहुत दिनों से, यों कह लो कि वर्षों से जानते हैं कि हम पाकिस्तान के मददगार है। क्या कर लिया किसी ने? सुचिता के चित्र की बरामदगी के छोट-से मामले में भी उनकी एक नहीं चली। तुम नाहक परेशान हो रहे हो इश्तियाक। मददगार बहुत बड़े-बड़े लोग हैं। युद्ध-विराम के बाद हमारी ताकत और बढ़ गयी है। कैम्पबेल और मार्लिन का दिमाग सही रहना चाहिये। फिर कोई हमारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता।'

इश्तियाक ने कहा—'तुम्हारी सलाह से हौसला नहीं बँधता। वह खतरनाक मालूम होती है। दुश्मन को छोटा समझकर, उस पर रहम करना अपने लिए ही गुनाह माना जाता है मल्का।'

मल्का ने चट जवाब दिया—'गुनाह ने हमारी आदत की शकल अख्तियार कर ली है। पैसे का मुँह देखकर दूसरों के लिए हम गुनाह करते हैं। इंसानियत का मुँह देखकर क्या अपने लिए गुनाह नहीं कर सकते? घबराने की कोई बात नहीं है इश्तियाक। एक तमाशा यह भी

रहेगा। क्षेमेन्द्र और उसके दोस्त याद करेंगे कि मुकाबला दानेदार दुश्मन से पड़ा है।'

'जिस खतरनाक दौर से हम गुजर रहे हैं, उसमें इस तरह की शायरी के लिए कोई जगह नहीं है।' इश्तियाक ने मल्का को कायल करने की कोशिश करते हुए कहा—'तुम्हारी हिम्मत की मैं तारीफ करता हूँ लेकिन तुम्हारी राय से सहमत नहीं हो सकता।'

मल्का ने दूसरे शस्त्र का सहारा लिया—'कभी-कभी परिस्थिति स्वयं मनुष्य की परीक्षा ले लेती है। क्या मैं यह समझ लूँ कि मेरे कहने पर भी तुम जरा-सा खतरा मोल नहीं ले सकते?'

परेशान-सा बोला इस्तियाक—'तुम्हारे लिए मैंने क्या नहीं किया मल्का! अजीज से झगड़ा मोल लिया, बेकसूर गुलरुख का जीना दुश्वार किया, श्रीनगर में रहकर पाकिस्तान की मदद करने का खतरा तो मोल ले ही रहा हूँ। अब और क्या चाहती हो तुम?'

हँसकर बोली मल्का—'अब तक जो कुछ किया है तुमने, उसमें स्वयं तुम्हारे लिए कहीं कोई खतरा नहीं था। मैं क्या जानती नहीं तुम्हें! ऐसे छोटे-छोटे काम तुमने सैकड़ों बार पूरे किये होंगे।'

'तुम चाहती क्या हो?'

'क्षेमेन्द्र को छोड़कर—तमाशा देखने दो।'

'और मैं इनकार करूँ तो?'

'फिर कुरबान होने के लिए तैयार रहने का दावा तो न कर सकोगे?'

'और तुम्हारी बात मान लूँ तो?'

'तुम्हारे दावे पर यकीन हो जायगा।'

'मैं कीमत चाहता हूँ।'

'कीमत होगी क्या?'

'तुम ।'

'कीमत ज्यादा है ।'

'लेकिन सौदा इस कीमत पर ही हो सकता है ।'

'दावा मोहब्बत का और उतर आये सौदेबाजी पर !'

'मुझे जलील न करो मल्का ।'

'मोहब्बत को बदनाम मत करो इश्तियाक ।'

'मोहब्बत की कशिश ही उसे बदनाम कर रही है । मैं बेक-सूर हूँ ।'

'यह मोहब्बत का अपमान है ।'

'इस अपमान से तुम उसे बचा सकती हो !'

'मोहब्बत कुरबानी सिखाती है; बदले में कुछ चाहती नहीं ।'

'मल्का,' कुछ तैश में आकर बोला इश्तियाक—'बेवकूफ बनकर मोहब्बत का सबक सीखने नहीं आया हूँ । इससे ज्यादा खुशामद मुझसे नहीं हो सकती ।'

बाजी हाथ से निकलती देखकर मल्का अपनी जगह से उठकर इश्तियाक के पीछे चली गयी और उसके दोनों कंधों पर अपने हाथ रखकर बोली–'बदकिस्मती ने मेरा साथ कभी नहीं छोड़ा । राह भूलती हूँ तो लोग हाथ छोड़ देते हैं । हाथ पकड़ कर राह पर लाने का सब्र किसी में नहीं दिखाई दिया ।'

इश्तियाक ने कोई जवाब नहीं दिया । वह घूमकर खड़ा हो गया । कुछ देर तक वह मल्का की आँखों में आँखें डालकर उसे देखता रहा । मल्का ने उसे खुली छूट दे दी । इश्तियाक ने उसकी ठुड्डी पर हाथ रखकर उसकी गर्दन उठाने की कोशिश की तो वह आग भड़काने वाली अदा के साथ तेजी से पीछे हट गयी । इश्तियाक ने कहा—'अब जा रहा हूँ मल्का । अपने फैसले पर एक बार और विचार कर लो ।

मेरा खयाल है कि तुम्हारी बात मानने पर मार्लिन और कैम्पबेल भी नाराज हो जायँगे। जानती हो न, उन्हें नाराज करने का नतीजा क्या होगा। साजिशों का चक्कर हमारी आजादी को छीन चुका है।'

'मायूस होने की जरूरत नहीं है इश्तियाक'—'मल्का ने कहा—'परवाना एक बार खतरा उठाता है। शमा हमेशा जला करती है।'

इश्तियाक ने मुसकरा कर मल्का की ओर देखा और चला गया। मल्का उसे दरवाजे तक पहुँचा आयी और फिर दरवाजा बन्द करके लौट आयी।

आलमारी की आड़ से यह नाटक देखनेवाला अजीज अपना होश-हवास खो बैठा था। जिस समय मल्का ने उसे अपने पास बुलाया, वह किंकर्तव्यविमूढ़-सा दिखाई दे रहा था। मल्का भी आवश्यकता से अधिक गम्भीर थी। बीती हुई घटनाएँ उसके दिमाग में चक्कर काट रही थीं और वह यह समझने की कोशिश कर रही थी कि 'आखिर यह सब हो गया कैसे।'

कुछ मिनटों तक शांत रहने के बाद अजीज के मुख पर अपनी आँखें जमाकर मल्का बोली—'अब कोई बात छिपी नहीं रह गयी है। नाटक खत्म हो चुका। परिस्थिति आपके सामने है। फैसला आप कर लीजिये।'

अजीज ने कहा—'फैसला करने से पहले मैं एक सवाल का जवाब चाहता हूँ।'

मल्का ने कहा—'कोशिश करूँगी।'

'तुम बदल कैसे गयी?'

'पाकिस्तान के जुल्म को अपनी आँखों से देखकर।'

'क्या तुम इससे नावाकिफ थी?'

'हाँ।'

'यहाँ आयी कैसे ?'

'दिमाग की लड़ाई का शौक यहाँ खींच लाया।'

'अब क्या इरादा है ?'

'यह भी बताना होगा ?'

'मैंने समझा नहीं।'

खिड़की के पास जाकर सुदूर क्षितिज की ओर देखते हुए मल्का ने कहा—'जानती हूँ कि कोई ताकत मुझे बचा नहीं सकती। अब तक पाकिस्तान की मदद के लिए दिमाग से कसरत करती रही। अब यही काम उन्हें बेवकूफ बनाने के लिए करूँगी जिन्हें अपनी जिन्दगी का दुश्मन समझूँगी।'

'मल्का।'

'क्या चाहते हैं आप ?'

'क्या मैं मदद कर सकता हूँ।'

'मदद भी क्या पूछकर की जाती है ?'

'मुझे रास्ता नहीं दिखाई देता।'

'यह भी मेरा ही गुनाह है।'

'इसका मतलब ?'

तेजी से अजीज की ओर घूमकर एक ही साँस में मल्का बोली—'मेरी खूबसूरती और जवानी न जाने कितने लोगों की आँखों पर नशा बनकर छा चुकी है। गुनाहों का बोझ मेरे सिर पर लदा न होता तो शायद आप भी·····'

'मल्का।' अजीज बीच में चिल्ला उठा—'अजीज खुदगर्ज नहीं है।'

'गलती के लिए माफी चाहती हूँ।' मल्का ने धीरे से पश्चात्ताप

प्रकट किया। आँखों से आँसू की एक बूँद निकली और जमीन पर गिरकर अस्तित्व खो बैठी।

इधर भावुकता अजीज के हृदय में उबाल खाने लगी। आगे बढ़कर मल्का का हाथ पकड़कर अपने सीने पर रखने की उसकी इच्छा बार-बार जोर पकड़ती थी और बार-बार अजीज उसे बलपूर्वक दबा देता था। इस स्थिति की कल्पना तक नहीं की थी उसने। अकस्मात् इस अकल्पित स्थिति का सामना होने के कारण वह घबरा-सा गया और इस घबराहट के कारण ही क्षेमेन्द्र की मुक्ति की बात भी भूल बैठा। मल्का ने उसे सोते से जगाया यह कहकर कि 'इश्तियाक ने क्षेमेन्द्र को कहाँ छिपा रखा है, यह मैं नहीं जानती। फिर भी कोशिश करूँगी कि वह आपके पास जल्द से जल्द पहुँच जाय।'

मल्का के चुप होने पर अजीज यंत्रवत् आप से आप बोल उठा—'तुमने मुझे खरीद लिया मल्का।'

अनमनी-सी मल्का बोली—'इसका सबूत ?'

अजीज ने उत्तर नहीं दिया। खिड़की के बाहर नजर आनेवाले असीम नीलाकाश की ओर देखते हुए उसने मल्का की ओर अपना हाथ बढ़ा दिया। मल्का को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह आँखें फाड़-फाड़कर अजीज की ओर देखती रही। फिर उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं---शायद अजीज को अपनी आँखों में कैद करने की गरज से।

कश्मीर घाटी में तथाकथित 'आजाद-कश्मीर' क्षेत्र के अन्तर्गत सीमावर्ती ग्राम हिल्लन में पाकिस्तान के पुलिस और सैनिक अधिकारियों ने विध्वंसक कार्रवाइयों का केन्द्र कायम कर रखा था। मुजफ्फराबाद से पुलिस अधिकारी बराबर इस गाँव में आते रहते और कश्मीर तथा जम्मू के इलाके में विध्वंसक कार्रवाई के लिए पञ्चमांगियों को शिक्षित करते। ये शिक्षित पञ्चमांगी पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र से कश्मीर की घाटी को मिलाने वाली पहाड़ी दर्रों के मार्ग से चुपके-चुपके रात्रि में सीमा-पुलिस की नजर बचाकर सीमा के इस पार भेज दिये जाते। इन्होंने घाटी से लेकर श्री-

१३

नगर तक आतंकमूलक कार्रवाइयों का ताँता बाँध रखा था। फलतः यहाँ की जिन्दगी संशय के झूले में झूलने लगी थी। आशंका ने टाँगें पसार रखी थीं। शान्ति और व्यवस्था के प्रति विश्वास क्रमशः ढीला होता जाता था। लड़ाई का मोर्चा तो ठंढा हो चुका था लेकिन लगता था कि उसकी गर्मी श्रीनगर और कश्मीर की घाटी में चली आयी है।

इस परिस्थिति में ही इश्तियाक के पंजे से क्षेमेन्द्र का बच कर निकल आना अशोक और राकेश के लिए कम आश्चर्यजनक नहीं था। वे समझ नहीं पा रहे थे कि अजीज ने कौन-सा जादू कर डाला जिसने असम्भव को सम्भव बना दिया। रह-रह कर उनका ध्यान अजीज की इस बात की ओर आकृष्ट हो जाता था कि 'मुझे पूरी आशा है कि क्षेमेन्द्र जल्दी ही हमारे पास पहुँच जायगा।' इससे अधिक अजीज ने किसी को कुछ बताया नहीं था। यद्यपि उसे मल्का की बात पर तनिक भी अविश्वास नहीं था तथापि समय से पहले मुँह न खोलने का फैसला उसने कर लिया था। जब क्षेमेन्द्र आ गया तब अजीज ने दूसरी भविष्यवाणी सुनायी—'मार्लिन, इश्तियाक आदि का गिरोह टूटना निश्चित है। इन्तजार है केवल समय का।'

क्षेमेन्द्र ने ही सब से पहले इसका प्रतिवाद किया—'मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं होता अजीज। मुझे लगता है कि पंचमांगियों की ताकत दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है। अपनी युक्ति में मुझे कोई रहस्य नहीं मालूम होता। मल्का मुझ से जिरह करने आयी थी। इसके दौरान में ही उसने इश्तियाक के कान में कोई ऐसी बात कह डाली।जससे वह कुछ घबरा-सा गया। जल्दी में उसने कोठरी बन्द कर दी और वह स्टूल निकालना भूल गया जो मल्का को बैठाने के लिए वह लाया था। इस स्टूल का सहारा पाकर ही मैं मुक्त हो

सका। न स्टूल रहता न मैं खिड़की तक पहुँच पाता। इसके बिना मुक्ति की कोई आशा न थी।'

अजीज ने उत्तर में कहा—'यह बहुत बड़ा राज है। समय पर सब कुछ मालूम हो जायगा। इस समय केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि मल्का की जिन्दगी खतरे में है। उसे हम बचा न सके तो यह हमारी सबसे बड़ी पराजय होगी।'

राकेश ने कहा—'इसका अर्थ यही हो सकता है कि क्षेमेन्द्र को मुक्त कराने में मल्का ने तुम्हारी मदद की है और किसी कारणवश यह राज इश्तियाक से छिपा नहीं रह सकता।'

अजीज ने कहा—'तुम्हारा अनुमान ठीक है राकेश।'

राकेश ने कहा—'यदि यह ठीक है तो फिर यह भी गलत नहीं है कि सहायता प्राप्त करने के बदले में तुम्हें गहरा मूल्य चुकाना होगा। मल्का जिन्दगी भर सौदा करती रही है।'

'मूल्य मुझे अवश्य चुकाना पड़ा है', अजीज ने उत्तर दिया—'लेकिन यह कहना उचित न होगा कि मल्का ने मूल्य माँगा था।'

राकेश—'खैर यह मूल्य क्या है?'

अजीज—'मैंने स्वयं को मल्का के हवाले कर दिया है।'

अजीज का उत्तर सुनकर क्षेमेन्द्र, अशोक और राकेश आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी ओर देखने लगे। राकेश ने कहा—'तुम क्या कह रहे हो अजीज!'

'आश्चर्य की कोई बात नहीं है राकेश', अजीज ने गम्भीरता से जवाब दिया—'मल्का बदल चुकी है। जो कुछ मैंने किया उसकी शक्ति को बनाये रखने के लिए वही करना आवश्यक था, यद्यपि इसके लिए उसका कोई आग्रह नहीं था।'

राकेश ने कहा—'इसका अर्थ यह हुआ कि मल्का ने स्वेच्छा से

क्षेमेन्द्र को मुक्त कराना स्वीकार कर लिया था और उसके अहसान का बदला चुकाने के लिए तुमने उसका हाथ पकड़ लिया।'

अजीज ने उत्तर दिया—'तुम्हारा यह खयाल गलत है कि मैंने अहसान का बदला चुकाने के लिए कुछ किया। वह दिल की आवाज थी जो आपसे आप निकल गयी।'

यह सुन कर मित्रों ने बातचीत का पूरा विवरण बताने का आग्रह किया अजीज से। उसने यह आग्रह स्वीकार कर लिया और घटना का विवरण सिलसिलेवार सुना दिया।

अजीज के चुप हो जाने पर क्षेमेन्द्र बोला—'तुम्हारी कुरबानी भुलायी न जा सकेगी अजीज। मल्का की रक्षा करना मैं अपना पहला कर्तव्य समझता हूँ। तुम क्या चाहते हो?'

अजीज ने कहा—'तुमसे अधिक मेरी सहायता राकेश कर सकता है।'

'इससे पहले मैं अपना संशय दूर कर लेना चाहता हूँ'—राकेश ने कहा—'यदि यह सही है कि मल्का ने सच्चे हृदय से हमारी सहायता करना स्वीकार कर लिया है तो फिर वह हमें सभी राज बता सकती है और हम उसकी सहायता से इश्तियाक और मार्लिन आदि के देश-द्रोहात्मक कार्यों का भण्डा फोड़ करके गिरफ्तार करा सकते हैं।'

अजीज ने उत्तर दिया—'मैं तुम्हारे संशय को निराधार नहीं बताना चाहता राकेश। लेकिन मुझे लगता है कि तुम वस्तु तथ्य को समझने में भूल कर रहे हो। फिलहाल यह नहीं मानना चाहिए कि मल्का को हमसे सहानुभूति है। बात सिर्फ यह है कि पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र में पाकिस्तानियों के आत्याचार ने उसे मर्माहत किया है। उनके गुनाह में वह हाथ नहीं बटाना चाहती।'

अशोक अब तक चुप था। मन ही मन वह घटनाओं की समीक्षा

कर रहा था, इस बार उसने अपना मौन तोड़ा और कहा—'नारी का चरित्र सदा से पुरुष के लिए पहेली रहा है। पुरुष कभी भी नारी को ठीक-ठीक समझ नहीं सकता। इसके बावजूद इस तथ्य पर विवाद कम है कि नारी का हृदय पुरुष के हृदय की अपेक्षा अधिक कोमल होता है। अपवाद की बात मैं नहीं कहता। किन्तु मल्का इस श्रेणी में नहीं आती। अन्तिम बार उसने गुलरुख से जिस प्रकार वार्ता की थी, उसे तुम भूले न होंगे राकेश। उसमें इस धारणा को यथार्थ सिद्ध करने वाला प्रमाण है कि गुलरुख के प्रति इश्तियाक के दुर्व्यवहार से वह दुःखी थी। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर क्षेत्र में महिलाओं के प्रति जैसा दुर्व्यवहार हो रहा है, उसे देखकर वह विक्षुब्ध हो उठी हो तो हमें इस पर आश्चर्य न होना चाहिये।'

राकेश ने पुनः शंका प्रकट की—'मल्का के गुनाहों का अन्त नहीं है। क्या सम्भव नहीं है कि अजीज की भावुकता को लक्ष्य करके उसने उसका लाभ उठाने की कोशिश की हो? अजीज का यह दावा, 'मैं खुदगर्ज नहीं हूँ', क्या उसे जाल फैलाने का मौका नहीं देता था? इसका प्रमाण क्या है कि अजीज ने यदि उसकी ओर अपना हाथ न बढ़ाया होता तो भी क्षेमेन्द्र को मुक्त कराने का वादा पूरा करती? फिर यह सन्दिग्ध है कि क्षेमेन्द्र को उसने ही मुक्त कराया।'

अजीज यद्यपि मन ही मन क्षुब्ध हो उठा था, तथापि उसने अपना क्षोभ प्रकट नहीं होने दिया और शांतिपूर्वक बोला—'फूँक-फूँककर कदम रखने की तुम्हारी भावना की मैं कद्र करता हूँ राकेश। कहना इतना ही चाहता हूँ कि जीवन में प्रतिक्षण अविश्वास की भावना से काम करना व्यावहारिक बुद्धि की बात नहीं है। मुझे दुःख है कि मैं तुम्हारी शंका पूरी तरह दूर नहीं कर पा रहा हूँ, इसलिए यह आग्रह भी नहीं करता कि मल्का की बात पर सबको पूरी तरह विश्वास करना चाहिये।

मैंने अपना संदेह प्रकट किया है और मैं चाहता हूँ कि यदि वह संकटापन्न होती है तो उसे हमारी सहायता प्राप्त हो। केवल यह मान लेने पर ही विवाद समाप्त हो जायगा।'

राकेश ने फिर कुछ नहीं कहा। कुछ देर तक सन्नाटा छाया रता परिस्थिति में कल्पित और आश्चर्यजनक परिवर्तन ने सभी के मस्तिष्क को झकझोर रख था। विशेषतः क्षेमेन्द्र के मस्तिष्क में तूफान उठा हुआ था। उसने जो कुछ अपनी आँखों से देखा और कानों से सुना था, वह उसे भूला नहीं था। उसमें उसे एक नया संकट निहित नजर आता था। इश्तियाक से बदला चुकाने का जोश भी जोर मार रहा था। इस पर ही वह विचार कर रहा था।

अजीज की मानसिक दशा भी कम विचित्र न थी। आगत संकट से मल्का की रक्षा करना वह अपना नैतिक कर्तव्य समझता था। परिस्थितियों को देखते हुए इस कर्तव्य का पालन सकना कर उसके लिए सम्भव न था। वह यह भी नहीं जानता था कि मल्का का इरादा क्या है। उसके अहसान का बदला चुकाने के लिए उसकी पूरी कीमत अदा करने को वह अवश्य तैयार था लेकिन मल्का को यह कीमत स्वीकार थी या नहीं, यह समझने का कोई जरिया उसके पास नहीं था। मल्का को हटा कर उसकी रक्षा का प्रबन्ध करने की बात भी दिल में जमती नहीं। इश्तियाक किस किस राज को जानता है, मल्का से उसका सम्बन्ध क्या है, उसे फँसाने में किस राज से इश्तियाक कितना फायद उठा सकता है—इन बातों की भी जानकारी उसे नहीं थी। राज और षड़यंत्र का पर्दाफाश करने में मल्का किस हद तक सहायक हो सकती थी, यह भी वह समझ नहीं पा रहा था। शासन में मची आंतरिक उथल-पुथल पर ध्यान देते हुए वह विश्वास के साथ यह भी नहीं कह सकता था कि समय पड़ने पर प्रशासन से सहायता

मिल ही जायगी। प्रशासन पर मार्लिन और कैम्पबेल के बढ़ते हुए प्रभाव से वह अपरिचित नहीं था। उसे यह भी शक था कि यदि इश्तियाक अपना बुखार मल्का पर न उतार सका तो वह गुलरुख से बदला लेगा। उसका काम करने का ढंग वह देख चुका था। वह इश्तियाक की इस धारणा से अपरिचित नहीं था कि गुलरुख को तंग करने पर और लोग स्वतः ही परेशान हो जायेंगे। यही कारण था कि वह मल्का की रक्षा का प्रबंध करने से पहले गुलरुख को बचाने का भी इंतजाम कर लेना चाहता था। गुलरुख यदि अपने स्थान से हटने को तैयार होती तो इसमें कोई कठिनाई नहीं थी। लेकिन गुलरुख ने तो शायद घुलते रहने की कसम खा रखी थी। अजीज मानता था कि राकेश ही उसमें जीवित रहने की लालसा उत्पन्न कर सकता है। इधर राकेश इस प्रसंग को उठने ही नहीं देता था।

राकेश की बुद्धि ने शायद जवाब दे दिया था। वह यह समझ नहीं पा रहा था कि खातून बीवी की अंतिम इच्छा के प्रति अपने कर्तव्य का पालन वह कैसे करे। मल्का और अजीज के बीच की नयी परिस्थितियों से पूर्व अजीज को अंततः राजी करने की जो थोड़ी-सी आशा शेष थी, उसका भी दम घुटता दिखाई देता था उसे। इस परिस्थिति के फलस्वरूप उसके अंतर में कर्तव्य और प्रेम के बीच गहरा द्वन्द्व छिड़ गया था। गुलरुख से उसे भी मोहब्बत थी। उसमें वह अपने जीवन के बुझते दीपक को प्रज्ज्वलित रखने वाला तत्त्व देख चुका था। फिर भी वह इस बात को जबान पर नहीं लाना चाहता था, क्यों कि वेदना सहते रहने में ही उसे सुख का अनुभव होने लगा था। गुलरुख के प्रति अपनी चिंता को वह उसका हाथ अजीज को पकड़ा कर समाप्त करना चाहता था। यह रास्ता बंद होते देख कर

उसकी रही-सही बुद्धि भी गायब हो गयी और वह अन्तर्द्वंद्व का जड़ दर्शक मात्र रह गया था।

अशोक का किसी बात से सीधा कोई लगाव नहीं था। वह मानता था कि परिस्थितियों ने उसे तटस्थ मध्यस्थ बना दिया है। इस दृष्टि से वह मन ही मन सभी बातों पर विचार कर रहा था और ऐसा हल खोजन के प्रयत्न में था जो अजीज और राकेश को स्वीकार हो सके। अन्ततः उसने ही सन्नाटा तोड़ा और बोला—विलम्ब करने पर हम धोखा खा सकते हैं। समझता हूँ कि मल्का की रक्षा का प्रबंध होना ही चाहिये। क्षेमेन्द्र के गायब होने की घटना से विरोधियों के शिविर में हलचल मच गयी होगी। यदि कोई दुर्घटना घटने ही वाली है तो मेरा अनुमान है कि दो-तीन दिन के अंदर ही घट जायगी।'

अजीज ने कहा, 'केवल यही बात नहीं है अशोक। तुम देख रहे हो न, इस समय अजीब राजनीतिक संकट भी उत्पन्न हो गया है। मन्त्रिमण्डल की स्थिति खतरे में दिखाई पड़ रही है। विदेशी सलाहकारों की मंत्रणा ने गम्भीर आंतरिक संकट उत्पन्न कर रखा है। कब क्या हो जायगा, यह कोई नहीं कह सकता। इस स्थिति का भी सामना हमें करना है। निस्संदेह इस समय मुझे लगता है कि प्रशासन पर मार्लिन और कैम्पबेल का प्रभाव हमारी अपेक्षा अधिक है। हमारी जरा-सी चूक गुलरुख के लिए भी संकट बन सकती है।'

गुलरुख का नाम सुनते ही राकेश एक बार और उद्विग्न हो उठा और बाजी हाथ से निकल जाने वाले खिलाड़ी की भांति हताश-सा बोला—जिस प्रकार मल्का को बचाने का प्रयत्न किया जा सकता है, उसी प्रकार गुलरुख की रक्षा का भी प्रबंध हो सकता है।'

अजीज ने उसे समझाने की कोशिश की। उसने कहा—'गुल-

रुख और मल्का की मानसिक स्थितियाँ एक-सी नहीं हैं राकेश। यह तथ्य हमें याद रखना चाहिये। मेरी समझ से गुलरुख या तो एकांत में शान्ति का अनुभव करती है या तुम्हारी मौजूदगी में। मल्का के सम्बन्ध में इस प्रकार की किसी अड़चन का सामना हमें नहीं करना है।'

राकेश उत्तर न दे सका। वह भारी बोझ के असह्य दबाव का अनुभव कर रहा था। वेदना से उसका हृदय भर उठा था। शान्ति उसे खल रही थी—बोल वह सकता था नहीं। क्षेमेन्द्र ने शान्ति भंग की तो उसने राहत की साँस ली। वह कह रहा था—'कुछ दिनों तक गुलरुख को कहीं आने-जाने न दिया जाय। उसके घर पर निगरानी हम रख ही सकते हैं।'

इसका प्रतिवाद करते हुए अजीज ने कहा—'संकट का सामना साहस से करने के बजाय क्या हमें बुजदिली दिखानी चाहिये? मैं मानता हूँ कि परिस्थितियों के कारण गुलरुख हमारे काफी नजदीक आ गयी है। फिर भी, यह याद रखना चाहिये कि उसके जीवन को नियन्त्रित कर सकने का अधिकार हम में से किसी को प्राप्त नहीं है।'

राकेश कुछ उबल-सा पड़ा और बोला—'यह बात किसी पर भी लागू हो सकती है।'

अजीज ने जवाब दिया—'आवश्यकता पस्तहिम्मत हो कर गुबार जाहिर करने की नहीं किन्तु गम्भीर होकर विचार करने की है। कारण चाहे जो हो लेकिन हम सब समान उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक-दूसरे के निकट आ चुके हैं और जो झंझट हम मोल ले चुके हैं, उसका सामना करने के लिए एक के निमित्त दूसरे की सहायता और उसके सहयोग को आवश्यक समझते हैं। इसके फलस्वरूप हमारा कार्य समय पर एक दूसरे की सलाह के कारण स्वतः नियन्त्रित हो जाता है।

यह परिस्थितियों के विकास का स्वाभाविक परिणाम है। गुलरुख की स्थिति से इस स्थिति की तुलना नहीं की जा सकती।'

अशोक को यह विवाद निरर्थक लगा। उसने अजीज की ओर देखते हुए कहा—'आखिर तुम चाहते क्या हो?'

अजीज ने उत्तर नहीं दिया और राकेश की ओर देखने लगा। वह उसके मनःस्ताप से अनभिज्ञ नहीं था, अतः चाहता था कि बात-चीत के क्रम से ही स्वाभाविक रूप में राकेश उसके विचार के निकट पहुँच जाय ताकि उसके मस्तिष्क का बोझ और बढ़ न सके।

अपनी ओर अजीज की दृष्टि जमी देखकर राकेश भी उसका अभिप्राय समझ गया। उसने बात को टाल जाना ही उचित समझा। बहाना उसने सोच लिया था। कहा उसने, 'इस विषय पर विवाद से कोई लाभ न होगा। तत्काल किसी निर्णय पर पहुँचना भी मेरे लिए सम्भव नहीं है। एक-दो दिन में मैं तुम्हें अपना उत्तर दे दूँगा अजीज।'

राकेश का स्वर भारी था। उससे आभास मिलता था कि वह अपनी इच्छा से नहीं किन्तु बाध्य होकर बोल रहा है। अजीज से यह छिपा न रहा। उसने उसका आग्रह स्वीकार कर लेना ही उचित समझा। उसने कहा—'मैं नहीं चाहता कि एक अहम सवाल पर तुम जल्दीबाजी में कोई फैसला कर डालो। अच्छी तरह सोच लेना ही मुनासिब है। लेकिन यह भूल न जाना की हमारे पास समय नहीं है। देर होने से नुकसान हो सकता है।'

अजीज के चुप हो जाने पर क्षेमेन्द्र ने कहा—'यदि तुम्हारा अनुमान सही है तो हमें चुपचाप न बैठे रहना चाहिये। मुसीबत किस समय घहरा उठेगी, यह कौन कह सकता है।'

'फिलहाल मल्का के बँगले पर निगरानी रखने के सिवा हम और

कुछ नहीं कर सकते।' यह कहकर अजीज अपने स्थान पर उठ खड़ा हुआ। यह संकेत था वार्ता के समाप्त होने का। वह समाप्त हो भी गयी। क्षेमेन्द्र चला गया अजीज के साथ। अशोक ने उसे सूचित किया कि 'मैं होटल जा रहा हूँ।' राकेश उस समय भी अपने स्थान पर ही बैठा रहा।

होटल पहुँच कर अशोक ने सुचिता का हस्तनिर्मित चित्र उठाया और सीधे गुलरुख के घर जा पहुँचा। वह कुछ ही देर पहले घूम कर वापस लौटी थी। चित्त उसका अशोक को स्वस्थ दिखाई दिया, फिर भी बातचीत का सिलसिला शुरू करने के लिए उसने यही कहा—'अब स्वास्थ्य कैसा है?'

कुर्सी उसकी ओर खींच कर गुलरुख ने कहा—'अच्छा है। चाय पियेंगे?'

'नहीं। इस समय मैं एक विशेष काम से आया हूँ।'

गुलरुख कुछ बोली नहीं और अशोक की बात सुनने के लिए तैयार हो गयी। अशोक ने सुचिता का चित्र उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—'इस चित्र को पहचानती हो?'

चित्र हाथ में लेकर उसे देखते हुए गुलरुख ने कहा—'अच्छा चित्र है। आपने बनाया है?'

'चित्र जिसका है, उसे पहचानती हो?'

'नहीं।'

'यह सुचिता का चित्र है।'

'सुचिता कौन?'

'राकेश की बहन।'

'पता लग गया इसका?'

'हाँ।'

गुलरुख के चेहरे पर प्रसन्नता की आभा दौड़ गयी। उत्सुकता-पूर्वक उसने पूछा—'कहाँ है वह ?'

अशोक ने उत्तर दिया—'जहाँ से लौट कर कोई आता नहीं।'

गुलरुख उदास हो गयी। उसने कहा—'यही बताने आये थे आप ?'

'नहीं।'

'फिर ?'

'चित्र देने आया हूँ।'

'वजह ?'

'तुम्हारे पास इसे देखकर शायद राकेश को राहत मिलेगी।'

गुलरुख ने अशोक के प्रस्ताव का प्रतिवाद नहीं किया। सुचिता का चित्र उसने ले लिया। अशोक ने कहा –'मेरा अनुमान है कि राकेश आता होगा।'

अशोक चला गया। उसकी यह आखिरी बात गुलरुख के कानों में गूंजने लगी—राकेश आता होगा। स्मृतियाँ ताजी होने लगीं। बहन के प्रति भाई की विह्वलता का वह रूप उसके सामने स्पष्ट हो गया जो उसने राकेश से अस्पताल में अपनी पहली भेंट के अवसर देखा था। सोचने लगी गुलरुख –बहन की मौत का समाचर वज्र बन कर गिरा होगा हृदय पर। कैसे सहा होगा यह सदमा राकेश ने ! जिन्दगी कभी-कभी कितनी बेपीर हो जाती है।

विचारों ने रुख बदला। राकेश से मुलाकात की एक-एक घटना ताजी होने लगी। गुलरुख हो गयी चिन्ता-निमग्न। सामने पड़ा था सुचिता का चित्र। कभी वह उसकी ओर देखती, कभी अपनी स्थिति पर विचार करती। कभी भाई की मौत याद आ जाती और कभी राकेश की याद। वह कब तक बैठी रही इस प्रकार, यह उसे ज्ञात

नहीं। उसकी तन्द्रा टूटी तब, जब राकेश आ पहुँचा और आते ही बोला—'किसका चित्र देख रही हो गुलरुख !'

गुलरुख चित्र के सामने से हट गयी। राकेश ने उसे देखा तो क्षण भर के लिए स्तब्ध रह गया। फिर गुलरुख की ओर देखकर कहा उसने—'यह कली थी, जो खिलने के पहले ही मुरझा गयी।'

गुलरुख ने कहा—'याद है आपको, पहले भी एक बार ऐसी ही बात कही थी आपने ?'

'और तब जवाब दिया था तुमने—अब मेरी स्थिति का अन्दाज लगा सकते हैं आप'—राकेश ने उत्तर दिया।

'हाँ।'

'गुलरुख !'

'जी।'

'तुम पहेली ही बनी रहोगी ?'

'जिन्दगी जब मौत का दामन पकड़ने लगती है, तब यही होता है।'

'कभी तुमने तुझे गुमराह बताया था, आज मैं तुम्हें गुमराह बताता हूँ।'

'काश्, मैं इस तरह ही गुमराह रह सकती !'

'इस तरह अपने पर जुल्म करने की वजह ?'

'मैं जवाब नहीं दे सकती।'

'क्यों ?'

'कभी-कभी औरत बेजबान हो जाती है।'

'—और अक्सर शबाब के पहले दौर में।'

'जिन्दगी का यह राज आप भी जानते हैं ?'

'कुछ सुनना भी चाहता हूँ।'

'क्या ?'

'वह राज जो तुम दिल में छिपा कर बैठी हो।'

गुलरुख ने गर्दन झुका ली। जवाब उसे सूझ नहीं पड़ा। वह सुचिता के चित्र को देखने लगी।

'क्या देख रही हो ?' राकेश का प्रश्न था।

'जवाब ढूँढ़ रही हूँ।' उत्तर था गुलरुख का।

'मिला जवाब ?'

सुचिता के चित्र के सामने से एक बार पुनः हट कर गुलरुख ने कहा—'कभी-कभी तसवीर भी बोलती है।'

'लेकिन तसवीर की आवाज हर आदमी नहीं सुन सकता।' राकेश ने कहा—'तुम्हें भी सुचिता मासूम मालूम होती है ?'

'नहीं,' गुलरुख ने जवाब दिया—जुल्म और सितम का शिकार होनेवाली एक मासूम हस्ती की दर्द भरी आवाज।'

'गुलरुख,' बोला राकेश—'यह आवाज क्या वही नहीं सुनता जो स्वयं जुल्म का शिकार होता है ?'

राकेश की बात खत्म होते-होते गुलरुख की आँखों से आँसू की दो बूँदें गिरीं और सुर्ख रुखसार पर थम कर शबनम की तरह चमकने लगीं। विह्वल होकर कहा गुलरुख ने—'किस गुनाह की सजा मिल रही है मुझे ? मैं भी इन्सान हूँ। मेरे जिस्म में भी दिल है—पत्थर नहीं है। जो सवालों की बर्छियाँ बरदाश्त करती रहूँगी और मुँह से उफ् तक न करूँगी !'

गुलरुख फूट-फूट कर रोने लगी। राकेश इस परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार न था। वह हतबुद्धि-सा हो गया। इधर गुलरुख ने सुचिता का चित्र उठाया और राकेश की ओर उसे बढ़ाते हुए बोली—'इसे ले जाइये। मुझे छोड़ दीजिये मेरी किस्मत पर।'

'तुम रो रही हो गुलरुख !'

'कमजोर औरत और कर ही क्या सकती है ?'

'लेकिन यह कमजोरी क्यों ?'

'क्योंकि मैंने गुनाह किया है ।'

'गुनाह....!'

'हाँ, गुनाह । मोहब्बत का दूसरा नाम गुनाह ही है ।'

बोलते-बोलते थमे हुए आँसू फिर उमड़ पड़े । गुलरुख ने अपना मुँह दोनों हाथों में छिपा लिया और तेजी से खिड़की के पास चली गयी ।

राकेश जो सुना चाहता था, वह उसने सुन लिया । फिर भी उसकी जबान हिली नहीं, मुँह खुला नहीं । सुचिता का चित्र हाथ से गिरा तो वह काँप उठा । लगा उसे कि निर्जीव चित्र भी उसकी बेरहमी देखकर उससे दूर हो जाना चाहता है । उसने चित्र को उठाने की कोशिश की तो हाथ काँपने लगा । हाथों की दुर्बलता समझने की कोशिश की उसने तो पैर थर-थराने लगे, संज्ञा जवाब देने लगी । राकेश हो गया—अचेत, बेहोश ।

गुलरुख ने यह देखा तो वह घबरा गयी । चाहती थी वह कि राकेश को उठा कर पलँग पर लिटा दे लेकिन शरीर की दुर्बलता उसकी इच्छा के मार्ग में बाधक थी । उसने चटसे एक गिलास में पानी लिया और राकेश के मुँह पर छींटा देने लगी । दस मिनट तक लगातार उपचार करने के बाद वह राकेश को होश में ला सकी ।

गुलरुख बैठी थी राकेश के सिरहाने, अतः उसकी आँखों को खुलते हुए उसने तो देख लिया लेकिन राकेश की आँखें तत्काल गुलरुख को देख न सकीं और बेसब्री से इधर-उधर घूमने लगीं तो जा पड़ीं सुचिता के चित्र पर जो पैरों के निकट पड़ा था । इच्छा रहते हुए भी राकेश अपनी दृष्टि चित्र पर से हटा न सका । जैसे-जैसे उसकी आँखें

चित्र पर गड़ती जाती थीं, वैसे-वैसे अपने प्रति घृणा से उसका मन भरता जाता था, मानो वह कह रहा था—अच्छा हुआ जो सुचिता मर गयी। बची होती तो तुम्हारी डाँवाडोल बुद्धि के कारण न जाने उसे कैसे-कैसे मानसिक क्लेशों का शिकार होना पड़ता।

राकेश में चित्र को देखते रहने का साहस न रहा। घबरा कर उसने आँखें बन्द कर लीं और रोगी की बेदम आवाज-सी आवाज में बोला—'इस चित्र को मेरी नजरों से दूर हटा दो गुलरुख, वरना मैं पागल हो जाऊँगा।'

आँखें खोले बिना ही दो मिनट बाद उसने पूछा—'चित्र हटा दिया गुलरुख।'

गुलरुख ने जवाब दिया—'हाँ।'

पहली-सी मुद्रा में राकेश बोला—'न जाने क्यों मुझे रग-रग में पीड़ा मालूम होती है। मैं सोना चाहता हूँ। सो सकता हूँ? तुम्हें आपत्ति तो नहीं है।'

हृदय को पत्थर का बना कर चुप रह गयी गुलरुख। उसने उत्तर नहीं दिया और एक टक राकेश के मुँह की ओर देखने लगी।

राकेश ने पुनः कहा—'तुमने जवाब नहीं दिया।'

लबालब भरी नयन कटोरितों से निकल कर बाहर टपकने के लिए मचलने वाले आँसुओं को बलपूर्वक रोक कर गुलरुख ने कहा—'आँखें खोलिए।'

राकेश ने आग्रह स्वीकार कर लिया। गुलरुख की आँखें उसके मुँह पर जमी ही थीं। पलभर में आँखें चार हो गयीं और राकेश जीवन में पहली बार स्वयं को परित्यक्त समझने वाली नारी की वेदना-विदग्ध अन्तरात्मा का दर्शन कर सका। यह कहते हुए उसने धीरे-धीरे पुनः अपनी आँखें बन्द कर लीं—'सो रहा हूँ इस उम्मीद के साथ कि तुम्हारे जगाने पर आँखें खुल जायँगी।

क्षेमेन्द्र का पलायन कश्मीर-विरोधी षड्यंत्र के संयोजन की शक्ति को चुनौती था। इस चुनौती का भी सामना करना पड़ सकता है, इसकी कल्पना इश्तियाक ने नहीं की थी। फलतः क्षेमेन्द्र की मुक्ति का समाचार मिलते ही वह घबरा गया और इसके सम्भावित परिणाम से बचने का मार्ग देख सकने की लालसा लेकर वह मार्लिन के पास जा पहुँचा।

१४

मार्लिन उस समय कैम्पबेल के साथ किसी गम्भीर मंत्रणा में संलग्न थी। इश्तियाक को बदहवास देखकर दोनों की गम्भीरता और अधिक बढ़ गयी। उसके मुँह से क्षेमेन्द्र के

पलायन का समाचार सुन कर दोनों ही चौंक उठे और तत्काल एक-दूसरे की ओर अर्थ-गम्भीर दृष्टि से देखने लगे।

मार्लिन ने इश्तियाक को वहीं बैठा दिया और स्वयं कैम्पबेल को लेकर दूसरे कमरे में चली गयी। वहाँ उसने कैम्पबेल से कहा—'इस प्रकार क्षेमेन्द्र का भाग जाना एक खतरनाक घटना है। हमारी योजना खटाई में ही पड़ी रह गयी।'

कैम्पबेल ने कहा—'घटनाओं की रफ्तार बहुत तेज हो गयी है। इतनी ही तेजी से यदि हमने काम न किया तो हमारे लिए भी संकट उत्पन्न हो सकता है। इस समय इस पर विचार करना व्यर्थ है कि क्षेमेन्द्र कैसे भागा। यहीं से हमें आगे की कार्रवाई आरम्भ कर देनी चाहिए।'

सशंक मार्लिन बोली—'मन्त्रिमण्डल के आन्तरिक मतभेद की प्रतिक्रिया देखे बिना क्या मल्का को छेड़ना उचित होगा?'

कैम्पबेल ने तुरन्त उत्तर दिया—'प्रतिक्रिया ऐसी भी हो सकती है कि हमें तुरन्त श्रीनगर छोड़ देना पड़े। इसलिए उसके प्रकट होने से पूर्व ही इश्तियाक और मल्का का फँस जाना ही बेहतर होगा। प्रतिक्रिया हमारे अनुकूल हुई तो अपना साज हम पुनः सजा लेंगे। वह प्रतिकूल हुई तो अपना मार्ग हमें निष्कंटक मिलेगा।'

मार्लिन ने कहा—'तुमने कहा था कि जल्दी ही आश्चर्यजनक घटनाएँ घट सकती हैं।'

कैम्पबेल ने जवाब दिया—'मैं अब भी अपने विचार पर कायम हूँ। उपप्रधान मन्त्री और उनके दोनों सहयोगियों का ज्ञापक शेख अब्दुल्ला (प्रधान मन्त्री) और उसकी प्रतिलिपि सदरेरियासत के पास पहुँच चुकी है। इसके परिणाम के दो रूपों की कल्पना मैं कर सकता हूँ—या तो शेख अब्दुल्ला को दूसरा मन्त्रिमण्डल बनाना होगा·

या स्वतः उन्हें ही मन्त्रिमण्डल से हट जाना होगा। क्या होगा, यह कहा नहीं जा सकता। स्थिति नाजुक है, इतनी नाजुक कि हम मौके का इन्तजार भी नहीं कर सकते।'

दोनों ने बातचीत समाप्त कर दी और इश्तियाक के पास चले आये। मार्लिन ने उससे पूछा—'क्षेमेन्द्र भागा कैसे?'

इश्तियाक ने कहा—'खिड़की के रास्ते से।'

मार्लिन—'क्या खिड़की तक वह पहुँच सकता था?'

इश्तियाक—'नहीं, स्टूल की मदद से यह मुमकिन हो सका।'

मार्लिन—'स्टूल कमरे में था?'

इश्तियाक—'स्टूल मल्का ने बैठने के लिए मँगवाया था।'

मार्लिन—'स्टूल कमरे में कैसे रह गया?'

कुछ सोचकर इश्तियाक ने कहा—'मल्का ने हिल्लन गाँव से कुछ एजेण्टों के आने की सूचना दी और कहा कि उनसे तुरन्त मिलना जरूरी है। उसने मेरे जवाब का इन्तजार नहीं किया और हाथ पकड़ कर कमरे से बाहर ले आयी। बाहर निकल कर मैं स्टूल को हटाना भूल गया और मैंने ताला बन्द कर दिया।'

मार्लिन ने पूछा—'हिल्लन से आने वाले एजेण्टों से मुलाकात हुई?'

'नहीं', इश्तियाक ने उत्तर दिया—'मल्का के कथनानुसार हमें देर हो गयी थी।'

मार्लिन ने कैम्पबेल की ओर देखा जिसके माथे पर सिकुड़न पड़ चुकी थी। वह इसका अर्थ समझ गयी। फिर भी शंका की गुञ्जाइश न रहने देने के लिए उसने कैम्पबेल से पूछा—'तुम क्या समझते हो?'

इश्तियाक की ओर देखते हुए कैम्पबेल ने जवाब दिया—'मुझे

लगता है कि हिल्लन से एजेण्टों के आगमन का समाचार इश्तियाक को धोखा देने का बहाना था।'

यह सुनकर इश्तियाक आश्चर्य से चौंक उठा। उसने कहा—'क्या आप यह कहना चाहते हैं कि मल्का ने जानबूझ कर क्षेमेन्द्र को भागने का मौका दिया?'

कैम्पबेल ने उसी प्रकार गम्भीरता से उत्तर दिया—'हाँ। इसलिए ही क्षेमेन्द्र को बराबर बचाती रही। तुमने अपनी गफलत से सबको खतरे में डाल दिया है इश्तियाक।'

इश्तियाक को इतमीनान न हुआ। शक मिटाने के लिए उसने पूछा—'लेकिन इसमें मल्का का फायदा क्या है? क्षेमेन्द्र क्या उसे खतरा नहीं पहुँचा सकता?'

इसबार मार्लिन ने कैम्पबेल को जवाब देने से रोक दिया और स्वयं बोली,—'क्या यह सम्भव नहीं है कि तुमसे छुटकारा पाने के लिए मल्का ने अजीज वगैरह से सौदा किया हो और कीमत के रूप में क्षेमेन्द्र को मुक्त करना स्वीकार कर लिया हो?'

इश्तियाक सहसा आवेश में आ गया। उसकी भौंहों पर बल पड़ गये। ओठ उसके सिकुड़ने लगे। उसने दाँत पर दाँत जमाये रखने की कोशिश करते हुए कहा,—'यदि यह सच है तो मल्का को अपने गुनाह की कीमत चुकानी होगी।'

कैम्पबेल इस स्थिति का ही इंतजार कर रहा था। अवसर मिलते ही वह बोल उठा,—'इस समय हम खतरनाक दौर से गुजर रहे हैं इश्तियाक। हमें फूँक-फूँक कर कदम रखना होगा। तुम्हें शायद नहीं मालूम लेकिन हम जानते हैं कि सरकार के जिन सलाहकारों की सहायता हमें मिलती रही है, सरकार के ही कुछ लोगों को उन पर सन्देह हो गया है। इस मामले को लेकर मंत्रिमण्डल में फूट पैदा हो गयी

है। तीन मंत्रियों ने संयुक्त रूप से प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला के पास एक ज्ञापक (मेमोरेण्डम) भेजा है। जानते हो इसमें क्या लिखा है ?

आश्चर्यचकित इश्तियाक ने अनभिज्ञता प्रकट की तो कैम्पबेल ने कहना शुरू किया,—'मैं उसका विवरण तुम्हें सुना देना चाहता हूँ ताकि तुम यह समझ सको कि बचाव के काम में एक मिनट की भी देर हमारी जिन्दगी को खतरे में डाल सकती है।'

कैम्पबेल ने चमड़े का अपने बेग खोला और उसमें से एक कागज निकाल कर बोला —'यह ज्ञायक का पूरा विवरण है। मैं संक्षेप में मुख्य अंश सुना देता हूँ जो इस प्रकार है—आप (शेखअब्दुल्ला) ने भारत के साथ कश्मीर के सम्बन्ध में दरार डालने की कोशिश निरंकुशतापूर्ण ढंग से की। यद्यपि यह सही है कि अपने भविष्य का निर्णय करने का अधिकार अंततः जनता को ही प्राप्त है, तथापि आप के द्वारा असंतोष और उलझन की जो स्थिति आज उत्पन्न की जा रही है, उसका परिणाम अनिवार्यतः आत्मनिर्णय के अधिकार के उपभोग की दशा के लिए घातक होगा। इन परिस्थितियों में यह अवश्यम्भावी प्रतीत होता है कि स्वार्थी विदेशी शक्तियाँ अपने स्वार्थ की पूर्ति में इनका अनुचित लाभ उठायें। मिर्जा अफजल बेग निरन्तर संकीर्ण और साम्प्रदायिक नीति का अनुसरण करते रहे हैं। दुर्भाग्यवश मंत्रिमण्डल में आप उनकी नीति और जनता में उनके कार्यों का समर्थन करते हैं।'

कुछ सोचता-सा बोला इश्तियाक —'इसका मतलब यह हुआ कि सरकार में फेर-बदल होकर रहेगा।'

'हाँ,' कैम्पबेल ने कहा—'बहुत मुमकिन है कि यह फेर-बदल हमारे हक में हो। इस हालत में वे भी हमारे दुश्मन हो जायेंगे जो आज दोस्त हैं। परिणाम की कल्पना तुम कर सकते हो।'

कुछ परेशानी महसूस करते हुए इश्तियाक ने पूछा—'हमें क्या करना चाहिए ?'

कैम्पबेल ने समझाया—'फिलहाल हमारे खिलाफ किसी के पास कोई सबूत नहीं है। मल्का को छोड़कर न तो कोई हमारा राज बता सकता है, न किसी को हमारे अड्डों का पता लग सकता है।'

गम्भीर होकर इश्तियाक ने कहा—'इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे रास्ते में केवल मल्का ही काँटा है।'

'हाँ।'

'यह काँटा निकाल दिया जाय तो हमारे लिए खतरा न रहेगा।'

'हाँ।'

अपने स्थान से उठते हुए इश्तियाक ने कहा—'रात हो गयी है। सुबह तक इंतजार करना होगा। इतने समय में मैं यह पता लगा लूँगा कि मल्का की नीयत किस हद तक खाम है। उसने सचमुच यदि गुनाह किया ही होगा तो उसे सजा भी मिलेगी। मौके का इंतजार हर हालत में करना ही होगा।'

इश्तियाक चला गया। मार्लिन ने कहा—'किसी भी समय हमें अकस्मात् हटना पड़ सकता है। तुमने कुछ प्रबंध किया है कैम्पबेल ?'

कैम्पबेल ने जवाब दिया—'सेठ चाँदमल से बराबर सहायता मिल रही है। इसमें बाधा उत्पन्न न हुई तो हम इच्छानुसार किसी भी समय श्रीनगर से बाहर जा सकते हैं। अब मैं जा रहा हूँ। सुबह पुनः मुलाकात होगी।'

भविष्य की घटनाओं के सम्बन्ध में मार्लिन और कैम्पबेल के अनुमान यद्यपि काफी यथार्थ थे, तथापि उन्हें यह आशा नहीं थी कि रात बीतने से पहले कश्मीर का शासन पलट जायगा और कश्मीर को स्वतंत्र प्रदेश बनाने का ख्वाब देखनेवालों का सपना मिट्टी में मिल

जायगा। इसका कारण यह था कि सदरेरियासत द्वारा शेख अब्दुल्ला को लिखे गये पत्र की प्रतिलिपि मार्लिन या कैम्पबेल किसी के हाथ न लगी थी। इसी पत्र के साथ-साथ मंत्रिमंडल को भंग करने का भी आदेश था।

दूसरे दिन प्रातः साढ़े चार बजे का समय होगा। रात की कालिमा तब भी दूर नहीं हुई थी। सूर्य की किरण के फूटने का समय दूर था। सारा श्रीनगर गहरी नींद में सोया था। उस समय भी सदरे रियासत के प्रासाद को उस कक्षा में रोशनी हो रही थी, जहाँ प्रतिदिन अंधकार का राज्य रहता था। इस कक्षा में कश्मीर को शेख अब्दुल्ला सरकार के भाग्य का निर्णय करने वाले लगभग आध दर्जन व्यक्ति उपस्थित थे। इनमें बख्शी गुलाम मोहम्मद भी शामिल थे। सदरे रियासत के आदेशानुसार इसी कक्षा में इसी समय उन्होंने प्रधान मंत्री-पद की शपथ ग्रहण की। इस प्रकार बिना शोर-गुल के केवल पाँच मिनट के अन्दर कश्मीर की सरकार बदल गयी।

समय पर सूर्य चमका। नव-विहान के सन्देशवाहक पक्षी कलरव करने लगे। बर्फीली पहाड़ियाँ बाल सूर्य की रक्तिम किरणों से दीप्त हो उठीं। तभी सारे नगर में यह बात फैल गयी कि शेख अब्दुला के भाग्य का सितारा डूब गया और प्रधान मंत्री के पद पर बख्शी गुलाम-मोहम्मद आरूढ़ हो गये है। इससे सनसनी फैली, हलचल भी हुई लेकिन कहीं भी किसी ने शासन को चुनौती देने का साहस नहीं किया। शान्ति और व्यवस्था तब भी बदस्तूर कायम थी। सच तो यह है कि शासन-परिवर्तन से लोग प्रसन्न थे। धुकधुकी पैदा हो गयी थी उनके कलेजे में जो पाकिस्तान के एजेण्ट थे, जिस पत्तल में खाते थे, उसमें ही छेद किया करते थे। इश्तियाक, कैम्पबेल और मार्लिन आदि की गणना ऐसे ही लोगों में थी।

कैम्पबेल को मंत्रिमंडल में परिवर्तन का समाचार ज्यों ही मिला,

त्यों ही उसने अपना बिस्तर-बोरिया बँधवा दिया और मार्लिन के होटल में जा पहुँचा। मार्लिन घबरायी हुई थी और कैम्पबेल का इन्तजार ही कर रही थी। उसे देखकर कुछ उत्तेजित-सी बोली मार्लिन—'बाजी हाथ से निकल गयी कैम्पबेल। अब क्या सोच रहे हो?'

कैम्पबेल ने उत्तर दिया—'मैं अपनी तैयारी कर चुका हूँ। तुम भी फौरन तैयार हो जाओ। सेठ चाँदमल की सहायता से एक ऐसी कार मेरे कब्जे में है जिस पर तुरन्त किसी को शक नहीं हो सकता। मैंने इसी समय श्रीनगर से बाहर चले जाने का फैसला किया है।'

मार्लिन ने चुपचाप कैपम्बेल की सलाह स्वीकार कर ली। पैंतालीस मिनट के अन्दर वह तैयार हो गयी और होटल का बिल चुकता करके अपने साज-सामान के साथ कैम्पबेल का हाथ पकड़ कर होटल से बाहर चली गयी।

उसके जाने के लगभग पन्द्रह मिनट बाद इश्तियाक होटल में पहुँचा, वह घबराया हुआ था। उसकी मनोदशा जेल से भागने वाले खूँखार कैदी की मनोदशा-सी हो रही थी। होटल में मार्लिन के कमरे का दरवाजा बन्द देखकर उसका माथा ठनका। तब वह मैनेजर के कमरे में पहुँचा जहाँ उसे पता चला कि उसके आगमन से पूर्व ही कैम्पबेल के साथ मार्लिन जा चुकी थी। होटल का बिल भी उसने चुका दिया था। यह देख-सुनकर इश्तियाक झल्ला उठा। उसका क्रोध भी भड़क गया और वह बुदबुदा उठा—'खुदगर्ज!'

मार्लिन के होटल से निकल कर इश्तियाक कैम्पबेल के होटल में पहुँचा। वहाँ भी उसे पता चला कि मार्लिन और कैम्पबेल जा चुके हैं। चोरों की भाँति अपने संरक्षकों का पलायन उसे अपशकुन लगा। तरह-तरह की आशंकाएँ उसके मस्तिष्क पर सवार हो गयीं। चिन्ताएँ उसे डँसने लगीं। जाग्रत अवस्था में भी उसकी दशा ऐसी हो गयी, मानो वह भयानक ख्वाब देख रहा हो। वह चलता जा रहा था लेकिन

सड़क उसे नजर नहीं आ रही थी। पुलिस, हवालात, अदालत, जेल और फाँसी का फंदा—उसे यही सब नजर आ रहा था। अंततः वह बुरी तरह घबरा उठा। उसकी हालत पागल प्राणी-सी हो गयी और वह अपनी पूरी शक्ति के साथ सड़क पर दौड़ने लगा।

मल्का के मकान के पास पहुँचते-पहुँचते उसके पैर आप से आप थम गये। वह मकान के दरवाजे पर पहुँच कर रुक गया और दरवाजे को ऐसी क्रूर दृष्टि से देखने लगा मानो वह उसका घोर शत्रु हो। उसने अपनी पूरी शक्ति से दरवाजे पर कसकर एक लात जमायी। न जाने कहाँ से आसुरी-शक्ति आ गयी थी उसके शरीर में कि पहले ही प्रहार में दरवाजा करकरा उठा। दूसरे प्रहार ने उसे बेकार कर दिया। वह अन्दर घुसा और धड़धड़ा कर सीढ़ियाँ पार करता हुआ मल्का के कमरे में जा पहुँचा। वहाँ उसे मल्का नजर नहीं आयी। उसके स्थान पर बैठी थी गुलरुख। क्रूर जल्लाद की तरह कड़क कर बोला इश्तियाक—'मल्का कहाँ है?'

गुलरुख उसे देखकर सहम जरूर गयी थी फिर भी उसने शांति से उत्तर दिया—मुझे नहीं मालूम।'

कुचले जानेवाले सर्प की तरह फुफकार उठा इश्तियाक—'मुझे उसका पता बता दो, वरना जान से मार डालूँगा।'

गुलरुख ने उसी तरह जवाब दिया—'कह तो दिया कि मैं नहीं जानती।'

उसकी आवाज बन्द हुई ही थी कि क्रोधोन्मत्त इश्तियाक ने कमर में छिपाया हुआ छुरा निकालकर उसके सहित हाथ हवा में तान दिया। खिड़की की राह से आनेवाली सूर्य की किरणें उसके चमचमाते फल पर पड़ीं तो चिनगारियाँ फूटती नजर आयीं। कदम आगे बढ़ाते हुए गर्ज कर इश्तियाक ने कहा—'अब भी समय है। मौत को गले लगाने की कसम न खा रखी हो तो उसका पता बता दो।

गुलरुख ने इस बार उत्तर ही नहीं दिया तो इश्तियाक का क्रोध काबू से बाहर हो गया। बिजली की-सी तेजी से आगे झपटकर उसने गुलरुख का गला अपने फौलादी पंजे में जकड़ लिया और मल्का का पता बताने के लिये उसे मजबूर करने लगा। इस पर भी गुलरुख विचलित न हुई तो खून उसकी आँखों में उतर आया। उसकी हत्या करने के इरादे से उसने छुरा ताना ही था कि चीखती हुई मल्का आलमारी के पीछे से निकल कर उसके सामने खड़ी हो गयी। शिकार को सामने देखकर इश्तियाक की आँखें खूँखार भेड़िये की आँखों की तरह चमकने लगीं और गुलरुख को छोड़ कर वह भूखे बाज की तरह मल्का पर झपटा। ऐन वक्त पर गुलरुख उसके और मल्का के बीच में आ गयी और मल्का के वक्षःस्थल पर गिरता दिखाई देने वाला छुरा गुलरुख का दाहिका मोढ़ा चीरकर रह गया। इश्तियाक और भी खूँखार हो उठा। झटका देकर उसने गुलरुख को जमीन पर फेंक दिया और मल्का पर वार करने के लिए छुरा पुनः ऊपर ताना। लेकिन इस बार हाथ उठा तो उठा ही रह गया। किसी के मजबूत हाथ ने पीछे से उस कलाई पकड़ ली।

इश्तियाक ने उलट कर पीछे देखा तो उसे नजर आया अजीज जिसके दूसरे हाथ में रिवालवर चमक रही थी। राकेश झपट कर घायल गुलरुख का सिर अपनी गोद में ले चुका था। अशोक और क्षेमेन्द्र उस पर काबू पाने के लिए तैयार खड़े थे।

खयाली दुनिया की फौलादी इमारत के स्थान पर इश्तियाक को खण्डहर नजर आने लगा। मल्का शत्रु पक्ष से मिल गयी थी। मार्लिन और कैम्पबेल भाग चुके थे। मददगार कोई रह नहीं गया था। उसने चुपचाप पराजय स्वीकार कर ली और छुरा जमीन पर फेंक दिया।

—तभी गुलरुख से कह रहा था राकेश—'आँखें खोलो गुलरुख ठोकर खाने के बाद अब आदमी बन गया हूँ।'

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पोस्ट बक्स नं० ७०, ज्ञानवापी,
वाराणसी ।

मूल्य : चार रुपये मात्र

कवर-मुद्रक : विद्यामन्दि , (प्राइवेट)लि०, ज्ञानमन्दिर, वाराणसी ।